प्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

प्रत्यङ्गिरा-अनुष्ठान की सम्पूर्ण पद्धति
वैदिक एवं तन्त्रोक्त

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

551

श्रीप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

(साङ्गोपाङ्ग-प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणपद्धतिः)

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० रामप्रिय पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

© सर्वाधिकार सुरक्षित—इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे—इलेक्ट्रानिक, यान्त्रिक, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यन्त्र में भण्डारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है ।

श्रीप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

ISBN : 978-93-81484-47-0

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष : 0542-2335263

e-mail : csp_naveen@yahoo.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण: 2016

मूल्य : 700.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)

गली नं. 21-ए, अंसारी रोड

दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष : 011-23286537

e-mail : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

•

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

•

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

सम्पादकीय

कलिकाल में मनुष्य तप से हीन, वेदपाठ से हीन और अल्पायु होते हैं। अत्यधिक क्लेश के कारण मानसिक तथा शारीरिक रूप से अत्यन्त कमजोर होकर वे अत्यधिक परिश्रम करने में असमर्थ हो गये हैं।

तपःस्वाध्यायहीनानां नृणामल्पायुषामपि।
क्लेशप्रयासाशक्तानां कुतो देहपरिश्रमः॥

कलिकाल में गृहस्थ लोग, साधु, महात्मा समस्त जीव अत्यन्त कष्ट से युक्त तथा अत्यन्त कुण्ठित होकर आपस में इर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभादि से लिप्सित हो कर व्यवहार कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनके कष्टों से यदि कोई छुटकारा दिला सकता हैं तो महामहामाहेश्वरीपराभगवती महाकालिका की ही अङ्गभूता देवी प्रत्यङ्गिरा ही हैं। ये ही इस कलिकाल जीवों की रक्षा करने में समर्थ हैं। समस्त स्त्रीपुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की रक्षा के लिए शुभ फल देनेवाली महाविद्या प्रत्यङ्गिरा ही हैं।

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।
नर-नारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥

यह देवी अपने भक्तों का अभीष्ट सिद्ध करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। जगत् के समस्त जीवों की निःस्पृह भाव से रक्षा करती हैं।

साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणी!।
त्वद्वाक्यंन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः॥

इस चराचर जगत् में चार प्रकार के जीवों की सृष्टि होती है—

उद्भिज, श्वेदज, अण्डज, जरायु।

उद्भिज प्रणियों में वे जीव आते हैं जो भूमि को फोड़ कर पैदा होते हैं तथा अपना पोषण करते हुए जीवित रहते हैं। जैसे—पेड़, पौधे एवं समस्त वनस्पतियाँ इत्यादि। जिसमें ईश्वर के एक अंश का ही विस्तार होता है।

श्वेदज प्राणियों में जूँ, खटमल इत्यादि जीव आते हैं। जो पसीने से अथवा गन्दगी इत्यादि से उत्पन्न होते हैं। जिसमें पोषण करने के साथ साथ गमनादि क्रिया भी होती है। इनमें ईश्वर के दो अंशों का विस्तार होता है।

अण्डज प्राणियों में वे जीव आते हैं जो अण्डों से उत्पन्न होते हैं। जिसमें नभचर तथा

जलचारादि आते हैं। जिसमें पोषण, गमन और श्रवणादि क्रियायें होती है। इस प्रकार के जीवों में ईश्वर के तीन अंशों का विस्तार होता है।

जरायु प्राणियों में वे जीव आते हैं जिनकी उत्पत्ति जार (नाल) के साथ होती है। जिसमें समस्त चौपाये पशु और द्विपाये मनुष्यादि आते हैं। इन सभी प्रकार के प्राणियों में चेतन पूर्ण पुरुष का क्रमशः एक अंश, दो अंश, तीन अंश तथा जारज प्राणियों में चार अंश विकसित होता है। जारज प्राणियों में अन्य सभी की अपेक्षा सोचने समझने का विशेष गुण होता है। जारजों में (द्विपायों में) कभी कभी पांचवें अंश के चेतन का भी विकास देखा जाता है, जिससे वह पूर्ण चेतन से अपना सम्बन्ध बना कर अपने में चेतनता का क्रमशः अधिकाधिक विकास करके पूर्णता को प्राप्त करता है। इसी अधिकता के कारण मनुष्य सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ कहलाता है। लेकिन यही मनुष्य अपने साथ पशुता को भी जोड़ कर अपने विचार की क्षमता का उपयोग बन्द कर काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, भय और जुगुप्सादिकों के आवेग में पूर्णतः लिप्त करके अपने समस्त समानधर्मी जीवों का शत्रु तथा विरोधी हो जाता है। आज का मनुष्य अपनी अत्युत्तम विशेषताओं का परित्याग करके पशुओं के समान केवल क्षुधापिपासादि पूर्ति में प्रवृत्त होकर अपने जीवन को भयग्रस्त बना रहा है। आज का मनुष्य सदैव ईर्ष्यादि से ग्रस्त होकर अपनी जाति, कुल और धर्म का शत्रु हो गया है तथा समाज में एक दूसरें की हानि करने के लिए सदैव प्रवृत्त रहता है। इस कारण सारा संसार दुःखमूलक हो गया है। इस परिस्थिति में मनुष्य की इस अवस्था से रक्षा के लिए तथा उसका भला करने के लिए श्रीपितृचरण स्व० प्रोफेसर वायुनन्दनपाण्डेय जी के पूर्व निर्देशानुसार तथा उनकी असीम अनुकम्पा से प्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या प्रबन्ध का लेखन हुआ, जिसका प्रकाशन श्रीनवनीत दास गुप्त जी प्रकाशक, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के द्वारा जनकल्याणार्थ किया गया है। सभी जन इसके माध्यम से अपने जीवन को भयमुक्त कर शान्तिमय सुख प्राप्त करें तथा अपने जीवन को सुखमय बना सकें यही इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य है। **शुभं भवतु।**

श्रावण शुक्ला पञ्चमी सम्बत् २०६७ **रामप्रिय पाण्डेय**

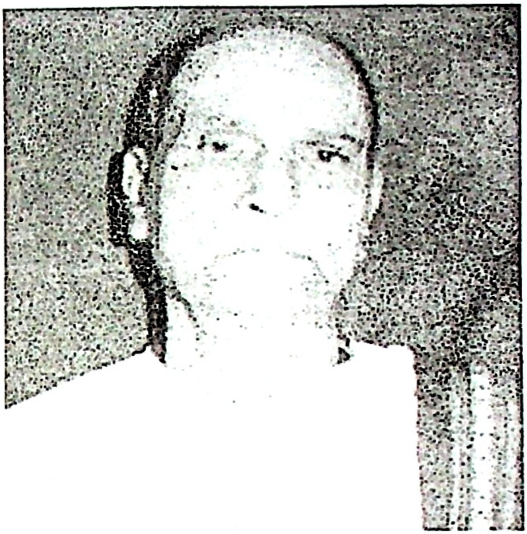

स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

काश्यामुपेत्यविधिवत्-तपसाऽलेन, प्राप्तश्रियः सकलशास्त्रविचारदक्षान्।
अध्यापनेन सततं कृतशास्त्ररक्षान्, श्रीवायुनन्दनबुधान् प्रणमामि नित्यम्॥१॥
पूर्वं नमस्त्रिमुनिशास्त्रविचक्षणाय, साहित्यमर्मविदुषे कृतिने ततश्च।
मीमांसया दलित-दुर्व्यसनाय पश्चात्, श्रीवायुनन्दन! महामतये नमस्ते॥२॥
शास्त्राण्यधीत्य बहवः कटुकैर्विवादैर्ग्रस्तान्तरास्तु समयं क्षपयन्ति नित्यम्।
श्रौतप्रभाविलसिता गुरवो मदीया, श्रीविश्वनाथपदभक्तिजुषः किलासन्॥३॥
साहित्यशास्त्रसुरवृक्ष-विवर्धनेन, तस्यामृताभफलदान-मनोहरेण।
सत्रेण भारतधरा किल यस्य भाति, तस्मै बृहस्पतिनिभाय नमो नमस्ते॥४॥
ये ब्रह्मवंशविभुताकलितान्तरङ्गा, आचारतश्च भृतभूरि-विभूतिभङ्गा।
गङ्गावगाहन-शिवार्चनतत्परास्ते, श्रीवायुनन्दनबुधा गुरवो जयन्ति॥५॥
भस्मत्रिपुण्ड्रविलसच्छुभविग्रहाणां, विद्याविलासविगलन्मधुवाग्झराणाम्।
पाण्डेयवर्य-विदुषां पदयोर्नतिर्नौ, भूयादहर्निशममङ्गल-नाशनाय॥६॥
काश्यां विपश्चित्तुलासु सभासु सभ्या, यद्यन्निधौ विधृतमौननिभा अभूवन्।
तान् विश्वनाथपदपङ्कजभृङ्गभूतान्, श्रीवायुनन्दनगुरून् सततं स्मरामि॥७॥
जाज्वल्यमाननिजपावन-विग्रहेण, लोकोत्तरेण महसा च तपोबलेन।
श्रीविश्वनाथपदमाशुगतं भवन्तः, ध्यात्वा पितः! वयमहो कृतिनो भवामः॥८॥

परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

●

।।श्रीः।।

श्रद्धासुमनाञ्जलिः

साहित्योदधिमज्जितोऽतिगहनान् ग्रन्थान् समालोचयन्,
शास्त्राभ्यासपरायणः प्रतिदिनं स्वाध्यायशीलः सुधीः।
शृङ्गारादिरसैः सदार्द्रहृदयो विद्वद्वरेण्याऽग्रणीः,
वन्द्यः पण्डितवायुनन्दनकविर्विश्वेश्वरोपासकः॥१॥
रामे भक्तियुतो यथाऽमितबली वायोः सुतः कीर्तिमान्,
रामाभ्यां समधीतवाननलसः शास्त्रं तथा बुद्धिमान्।
प्राप्नोद् व्याकरणे पटुत्वमचिरं विद्योतितो ज्योतिषा,
सत्संस्कारमथाग्रहीद् द्विजकुलस्याप्यत्र बाल्ये ब्रती॥२॥
विद्याम्बोधिनिमज्जनोद्धुरमना सारस्वतः साधकः,
काशीं मुक्तिकरीमुपेत्य विदुषः कालीप्रसादादसौ।
विज्ञातुं समुपस्थितः प्रमुदितः शास्त्रार्थतत्त्वं परं,
पातुं काव्यसुधारसं च रुचिरं श्रेयस्करं दुर्लभम्॥३॥
काश्यां संस्कृतशिक्षणेऽतिनिपुणोऽयं विश्वविद्यालये,
आचार्येति प्रतिष्ठिते गुरुपदे संशोभितोऽभूदहो।
आदर्शश्च समस्तशिक्षकगणस्यादर्शयन् सुन्दरम्,
छात्राध्यापनतरः समभवद् विजयते वाणीसुतः सात्त्विकः॥४॥
श्रीवायुनन्दन-पाण्डेयं ज्ञानमार्तण्डरूपिणम्।
आचार्यप्रवरं भक्त्या भूयो भूयो नमाम्यहम्॥५॥

श्रद्धासुमनाञ्जलिः परमपूज्यश्रीपितृचरणगुर्वर्पणमस्तु

भूमिका

कलिकाल में मनुष्य अपनी दुर्वृत्तियों से प्रभावित होकर अपने ही समाज के प्राणियों को दुराग्रह पूर्ण शिकार बना रहे हैं। मनुष्य सनातन धर्म की अशिक्षा से युक्त तथा संस्कार हीन हो गये हैं। यही संस्कारहीनता तथा सद्धर्म के अभाव से मनुष्य आसुरी प्रवृत्तियों के प्रभाव में रेशम के कीड़े की तरह अपने ही बनाये हुए जाल में फँस कर रह गया है। वह अपने ही बनायें हुए जाल में उलझने के कारण उसमें जीवन भर फँसकर केवल दु:खरूपी भवसागर में अपना सब कुछ नष्ट करके असहाय हो गया है। सभी मनुष्य आसुरी वृत्तियों तथा राक्षसी प्रवृत्तियों में सतत प्रवृत्त है, आपस में ही एक दूसरे का शत्रु बन कर अपने ही जीवन को असुरक्षित करके भययुक्त बना लिया है। ऐसे वातावरण में मनुष्य को सुरक्षित तथा भयमुक्त जीवन प्रदान करनेवाली एक मात्र भगवती प्रत्यङ्गिरा देवी ही है। यही भगवती अपने भक्त के जीवन को भयमुक्त तथा सुरक्षित कर सुखी बनाती है। यह विद्या शत्रुओं का शमन ही नहीं करती है बल्कि उसकी शत्रुता का शमन कर उसकी शत्रुत्व की भावना को ही नष्ट कर देती है। दूसरे के द्वारा किये गये अहितकारी कृत्यों को सद्य: नष्ट कर साधक को अजातशत्रु बना देती है। ये इतनी उग्रदेवी हैं, जो अपने भक्तों की शत्रुता तथा शत्रुओं को नष्ट करने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। प्रत्येक मनुष्य मात्र को इस भगवती की उपासना अवश्य करनी चाहिए। देवी ने स्वयं ही कहा भी है—

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।
नरनारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥१॥
राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां च महेश्वर!।
विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणार्थसाधिनी॥२॥
महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च।
व्याघ्रदंष्ट्राकराघाते नदीनदसमुद्रगे॥३॥
श्मशाने दुर्गमे घोरे सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अभिचारेषु सर्वेषु रणे राजकुलेषु च॥४॥
धारिता पाठिता देवि! समीहितफलप्रदा।
पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान्॥५॥
सौभाग्यजननीं नित्यं नृणां वश्यकरीं तथा।
तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ! कथयस्व मयि प्रभो!॥६॥

समस्त स्त्री-पुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की सुरक्षा के लिए शुभ फल देने वाली महाविद्याप्रत्यङ्गिरा ही सबको धारण करना चाहिए, ये प्रत्यङ्गिरा महाविद्या माण्डलिक राजाओं, दीनजनों तथा विद्वानों का एवं द्विजजातिमात्र का विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करती हैं। भयङ्कर से भयङ्कर महाभय उपस्थित होने पर, बिजली एवं अग्नि के द्वारा भय उपस्थित होने पर, व्याघ्र के द्वारा आक्रमण की स्थिति में, मारणादि अभिचार में, सभी प्रकार के संग्राम एवं राजकुलों द्वारा आपत्ति की स्थिति उत्पन्न होने पर इस विद्या के धारण तथा पाठजपादि करने से साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। यही समस्त सौभाग्य को प्रदान करने वाली, सभी लोगों को वश में करनेवाली देवी है।

यह महाविद्या प्रत्यङ्गिरा समस्त ग्रहबाधा, परकृत समस्त अभिचार, समस्त दुष्टों का मर्दन करनेवाली तथा सारे पापों को विनष्ट करनेवाली हैं। मनुष्यों को समस्त सौभाग्य प्रदान करती और पुष्टि देती हैं। घोर अरण्य में, महाभयानक तूफान में, राजद्वार एवं दुर्भिक्ष आदि महाभय के उपस्थित होने पर इस महाविद्या के स्वयं पाठ करने तथा अन्यों से पाठ कराने से सारी कार्य सिद्धियों का लाभ होता है।

देवी प्रत्यङ्गिराविद्या सर्वग्रहनिवारिणी।
मर्दिनी सर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी॥१॥
सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकरी तथा।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च॥२॥
राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता॥३॥
लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन॥४॥
धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम्।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता॥५॥
गृहे चैवाऽष्टसिद्धिश्च देवराक्षसपन्नगाः।
न तस्य पीड़ां कुर्वन्ति ये चाऽन्ये पीडकग्रहाः॥६॥
विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वाऽर्चिता सदा।

योगादि करनेवाला व्यक्ति यदि इस महाविद्या के यन्त्र तथा मन्त्र को धारण करता है, तो निश्चय ही उसके योग में कोई विघ्न नहीं आते, इस विद्या के प्रभाव से उसकी सदैव ही रक्षा होती है तथा सहज ही सारे कार्य पूरे हो जाते हैं। यह महाविद्या प्रत्यङ्गिरा धारण करने तथा अर्चन पूजन करने से शुभ फल देने वाली कही गयी है। महाविद्या प्रत्यङ्गिरा की आराधना करने से साधक के घर में समस्त सिद्धियाँ स्वयं ही रहती हैं तथा साधक की अनुचरी बन जाती हैं। ये प्रत्यङ्गिरा देवी घोर रूप से सदैव अपने साधक की रक्षा करती

हैं, उपासना करने पर अपने साधक के ही अङ्ग में सदैव निवास करती हैं तथा उसकी सदैव रक्षा करती हैं। अपने भक्त का सभी प्रकार से कल्याण करती है।

अङ्गं अङ्गं प्रत्यङ्गं, प्रत्यङ्गे भवा ई: शक्ति: प्रत्यङ्गी, प्रत्यङ्गी भवा यस्या सा शक्ति: प्रत्यङ्गिरा।

यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता।
सिद्धा सुसिद्धा नित्या विद्येयं परमा स्मृता॥
श्रीमतां घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी।

विधानपूर्वक प्रत्यङ्गिरा देवी का अनुष्ठान करने से साधक के सारे शत्रु विनष्ट हो जाते हैं। साधक जिस किसी पदार्थ का स्पर्श करता है, जो कुछ भी खाता है, वह सब अमृत हो जाता है। प्रत्यङ्गिरा के साधक की कभी दारुण अथवा अकाल मृत्यु नहीं होती है, इनकी उपासना से दूसरे के द्वारा किये गये अभिचार, भूतप्रेतादि, यक्षराक्षसवेतालादि कृत समस्त-दु:खदायी फल सद्य: समाप्त हो जाते हैं, साधक लक्ष्मी तथा वसुधा को भी प्राप्त करता है, प्राणापहारक शत्रु भी उस साधक के वशीभूत हो जाते हैं, इस विद्या का अनुष्ठान करने वाला इस विद्या के प्रभाव से समस्त विद्याओं महाविद्याओं को सहज ही निर्विघ्नतापूर्वक प्राप्त कर लेता है। पूर्व काल में इस विद्या का समुचित अनुष्ठान करके देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त की था, इस विद्या के प्रभाव से मूर्ख भी वागीश तथा निर्धन और महादरिद्र भी धनवान् हो जाता है।

परंब्रह्म परमात्मा परमेश्वर भूतभावन विश्वनाथ परमशिव सकल और निष्कल भेद से दो स्वरूपोंवाले हैं तथा उनकी परमाशक्ति भी परमेश्वर के समान ही सकल एवं निष्कल भेद से दो प्रकार की है, निष्कलब्रह्म महाकाल की निष्कलशक्ति महाकाली जो प्रधानभूता हैं उन्हीं में संयुक्त रहती हैं, वे ही सकलब्रह्म सदाशिव की अंकभूता परमा पराशक्ति सकलरूपा परमाशक्ति स्वरूपिणी हैं। ये ही त्रिगुणात्मिका रूपिणी हैं। यही त्रिगुणात्मिका रूपिणी देवी ही इस निखिल संसार की जनिका हैं, सम्पूर्ण संसार इन्हीं में इन्हीं से उत्पन्न होता है, इनमें ही संसार उत्पन्न होने में ये ही प्रधान कारणभूता हैं ये ही इस समग्र संसार की पालिका हैं, संसार इन्हीं में स्थित रहता हैं, ये ही संसार की पोषिका तथा रक्षिका भी हैं और अन्त में सम्पूर्ण संसार का इन्हीं में लय हो जाता है, ये ही इस संसार की संहाकर्त्री भी हैं, इन्हीं त्रिगुणात्मिका शक्ति से युक्त होकर सदाशिव भी त्रिगुणात्मभाव से इस संसार की सृष्टि-स्थिति-लय में प्रवृत्त होते हैं, इन्हीं त्रिगुणात्मिका परमाशक्ति के गुणभेद से सतोगुणारूपा महाकाली रजोगुणारूपा महाकाली एवं तमोगुणारूपा महाकाली हैं। इसी सतोगुणरूपा महाकाली को ही महाकाली, रजोगुणरूपा महाकाली को ही महालक्ष्मी तथा तमोगुणरूपा महाकाली को महासरस्वती के नामों से ही सप्तशती शास्त्र सम्बोधित करते हैं। ये देवी नित्यरूपा हैं, सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का रूप है तथा उन्होंने समस्त विश्व को व्याप्त कर रखा

है, तथापि उनका प्राकट्य अनेक प्रकार से होता हैं, वे नित्य और अजन्मा हैं, लेकिन जब लोककल्याण का कार्य साधन करना होता है, तब वे विभिन्न रूपों में प्रकट होती हैं। उस समय देवी (उत्पन्ना) उत्पन्न हुई कहलाती हैं।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम॥१॥
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याभिधीयते॥२॥

त्रिगुणात्मिका परमेश्वरी की सतोगुणरूपा शक्ति महाकाली से परंब्रह्म संयुक्त होकर विष्णुरूप से जगत् का पालन करते हैं, रजोगुणरूपा शक्ति महालक्ष्मी से संयोग करके परंब्रह्म ब्रह्मारूप से जगत् की सृष्टि करते हैं तथा तमोगुणरूपा शक्ति महासरस्वती से संयोग करके ही परंब्रह्म रुद्ररूप से जगत् का संहार करते हैं। इन्हीं गुणभेद से कार्य में भी भेद हो जाते हैं, कार्य तथा गुण भेद से एक ही परंब्रह्म ब्रह्मा-विष्णु तथा रुद्र रूप में सृष्टि-स्थिति तथा लयादि कार्यसम्पादन में प्रवृत्त रहते हैं। ये निष्कलब्रह्मरूपिणी शक्ति महाकाली ही मूलप्रकृतिरूपा हैं।

त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः॥२॥
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥३॥
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठामहाश्रियः॥४॥
खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-शङ्ख-भुशुण्डिभृत् ।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ॥५॥
एषा सा वैष्णवी माया माहाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्॥६॥
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी॥७॥
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥८॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
सुचित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभग्यशालिनी।९॥

अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्त्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात्॥१०॥
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः॥११॥
शक्तिर्दण्डश्चर्मचापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥१२॥
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्॥१३॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुशले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥१५॥
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी॥१६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय॥१७॥

कार्य भेद से गुण संयोग में तत्तद् सकलरूप ग्रहण करके विभिन्न रूप में प्रकट होकर तत्तद् कार्य में मूल कारण रूप से व्याप्त हैं। कालिका पुराण में पार्वती कथा प्रसङ्ग में प्रायः सर्वत्र पार्वती ही काली नाम से सम्बोधित हैं, निष्कलरूपाशक्तिमहाकाली ही सकलरूपापार्वती हैं। पूर्व काल में हिमवान् के द्वारा निष्कलरूपा शक्ति महाकाली की आराधना करने पर प्रसन्न होकर हिमवान् के यहां पार्वती रूप से निष्कलरूपा शक्ति महाकाली ही अवतरित हुईं, ये निष्कलरूपा शक्ति महाकाली ही महागौरी नाम से विख्यात हैं, ये महागौरी ही सर्वस्वरूपिणी महामहामाया योगनिद्रारूपिणी हैं।

कथं गिरिसुता काली बभूव जगतां प्रसूः।
दाक्षायणी त्यक्ततनुः कथमाप हरं पतिम्॥
(का० पु० ४१/१)

ततः सा कालिकादेवी योगनिद्रा जगन्मयी॥
(का० पु० ४१/३९)

नीलोत्पलदलश्यामा ही हिमसुता महागौरी पार्वती हैं, जिन्होंने कठोर तप करके हर का वरण किया तथा हिमालय पर कालिका नाम से ख्यातिलब्ध थीं।

तां तु नीलोत्पलदलश्यामां हिमवतः सुताम्।
कालीति नाम्ना हिमवानाजुहाव कृतोदने॥

बान्धवैस्तु समस्तेस्तन्नाम्ना सा पार्वतीति च।
कालीति च सा नाम्ना कीर्तिता गिरिनन्दिनी॥

(का० पु० १४/४७-४८)

ये काली ही शम्भू की शरीरार्ध धारिणी हैं, ये ही भगवान् भूतभावन महाकाल सदाशिव की वामाङ्गभूता शरीरार्धव्यापिनी हैं।

काली भूत्वा स्वर्णगौरी शरीरार्ध च शङ्करम्।
प्राप्तामोदा तदात्मानं सन्तुष्टा च जगन्मयी॥

(का० पु० ४५/१६२)

निष्कलरूपा महामहाब्रह्मरूपिणी महाकाली ही पार्वती रूप में श्यामवर्णा थीं। शिव के बार-बार काली कहने पर कालान्तर में तपस्या के तदुपरान्त विधातावरप्रदान के अनन्तर महागौरीरूप में परिवर्तित हो गयी।

स मां श्यामलवर्णेति बहुशः प्रोक्तवान् भवः।
स्यामहं काञ्चनाकारा वाल्लभ्येन संयुता॥

(का० पु० २९/४२)

शरीरे मम तन्वङ्गी सिते भास्यसितद्युतिः।
भुजङ्गीवासिता शुभ्रे संश्लिष्टा चन्दने तरौ॥
चन्द्रज्योत्स्नाभिसम्पृक्ता तामसी रजनी यथा।
रजनीवासिते पक्षे दृष्टिदोषं ददासि मे॥

(का० पु० २७/६०-६१)

सकलरूप धारिणी नीलोत्पलदलश्यामा ब्रह्मरूपिणी महाकाली का ही नाम महागौरी है, जिनका निवास स्थान कैलाश स्थित शिव धाम है, वही शिव के साथ सुखपूर्वक रमणस्थल है।

गृहाण हर! गौरीं त्वं महाकालीं मनोहराम्।
कैलासं कारयित्वा च विहरस्व यथासुखम्॥

(दे० भा० ३/६/६५)

निष्कलरूपा महाभगवती नीलोत्पला ब्रह्मस्वरूपिणी महामाहेश्वरी कालिका ही सृष्टि के आदि में विभिन्न रूपों को ग्रहण करती हैं, उन्हीं की अङ्गभूता महादेवी भगवती प्रत्यङ्गिरा हैं, कार्य भेद से महादेवी प्रत्यङ्गिरा भी विभिन्न भेद वाली हैं, भद्रकालीरूपा, कौशिकीरूपा, शत्रूनिषूदिनीरूपा इत्यादि सभी भद्रकाली के ही विभिन्न रूप हैं। इस प्रकार से कालिका का ही अपरपर्याय पार्वती है।

तस्यां विनिर्गतायां तु कष्णाभूत् साऽपि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥

(मार्कण्डेय पु० ८२/४४)

पार्वती के शरीर से कौशिकी देवी के निकल जाने के बाद ही पार्वती काले रंग की हो गयी और कालिका नाम से प्रसिद्ध हो गयीं तथा पार्वती के शरीर से निकलनेवाली कौशिकी देवी ही प्रत्यङ्गिरा नाम से प्रसिद्ध हो गयीं, इन्हीं को काली, भद्रकाली इत्यादि नामों से जाना जाता है।

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मसीवर्णमभूत्तदा॥१॥
भ्रुकुटिकुटिलात्तस्य ललाटफलकाद् द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपासिनी॥२॥

(मार्कण्डेय पु० ८२/४-५)

तात्पर्य यह है कि कालिका से ही काली (प्रत्यङ्गिरा) का प्रादुर्भाव हुआ है, इन दोनों के कार्य में भिन्नता है। कालिका धूम्रलोचन, शुम्भ-निशुम्भ, तथा रक्तबीज का वध करती हैं, तो काली चण्ड-मुण्ड का वध करती हैं, कालिका का ही अपर नाम चण्डिका है तो काली का चामुण्डा है, इन चामुण्डा भद्रकाली को ही प्रत्यङ्गिरा कहते हैं।

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशासितभी दंष्ट्रा भूयात्विभूत्या मम भद्रकाली॥

भगवती प्रत्यङ्गिरा की उपासना शास्त्रो में कई रूपों में निर्देशित है, जिसमें प्रथम कौशिकी प्रत्यङ्गिरा, जिसका विस्तार रुद्रयामल में वर्णित है। जिसकी विधि पूर्व में प्रस्तुत है, द्वितीय अन्नपूर्णा की अङ्गभूता हैं जिसका विस्तार विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। आत्म विस्तार के लिए रुद्रयामलोक्त प्रत्यङ्गिरोपासना है, जिसको ही मुख्य मान कर प्रस्तुत प्रबन्धशास्त्र का विस्तार किया गया है, इसी के सेवन से आत्मविस्तार सम्भव है, यही आत्मविस्तार तथा आत्मसंरक्षण की प्रधान महाविद्या है, अतः मनुष्य को अपने कल्याण के लिए इसी महाविद्या का आश्रय ग्रहण करना चाहिए।

भगवती प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र-मन्त्रादि का सेवन तथा अनुष्ठान शत्रुओं के द्वारा किये गये कुकृत्यों को नष्ट करने में सर्वथा उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है। भगवती प्रत्यङ्गिरा की उपासना के लिए कोई पूर्ण विधि उपलब्ध नहीं थी, यत्र तत्र तन्त्रग्रन्थों के मूल भाग का ही अंश मिलता है, उसमें उपासनात्मक पद्धति अनुपलब्ध है, श्रद्धावान् पुरुष उपासना करके लाभान्वित हो कर सुखी तथा सात्त्विक जीवन का लाभ ले सकें, ऐसी कामना के साथ तथा विद्वानों के आग्रह पर लोककल्याण हेतु श्रीविश्वनाथस्वरूप परम पूज्य सततस्मरणीय स्वपितृचरण स्व० प्रोफेसर श्रीवायुनन्दन पाण्डेयजी के आदेश से प्रस्तुत प्रबन्ध ग्रन्थ का लेखन कार्य हुआ। जनसामान्य इसका लाभ लेकर अपना जीवन सरल एवं सफल बना सकें, महादेवी की कृपा से सुरक्षा और सुख दोनों प्राप्त कर सकें महादेवी से यही प्रार्थना है। यद्यपि इस ग्रन्थ के लेखन में पूर्ण सतर्कता का व्यवहार किया गया है, फिर भी टंकणादि

की त्रुटियाँ सम्भव हैं, अतः इस उपासना में पूर्णतः शिक्षा-दीक्षा के बाद ही प्रवृत्त होना चाहिये। किसी भी उपासना में जब तक समस्त विषयों का पूर्ण ज्ञान न हो जाये, तब तक उपासना तथा पुरश्चरण में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए, अन्यथा घोर अनर्थ हो जाता है। प्रस्तुत विधि तान्त्रिक है तथा साधकों के लिए उपयोगी है।

प्रायः बहुत से विद्वान् प्रत्यङ्गिरामहाविद्या का जपानुष्ठान करते तथा कराते हैं, उनके लिए भी दूसरी प्रत्यङ्गिरा जो पार्वती की अङ्गभूता हैं, उनकी वैदिकविधि भी प्रस्तुत की गयी है, जिसका आश्रय ग्रहण कर कर्मकाण्डी विद्वान् अपना तथा जनसाधरण का कल्याण कर सकते हैं। यह प्रत्यङ्गिरा पूर्ववर्णित प्रत्यङ्गिरा से अतिरिक्त है, जिसका आंशिक स्वरूप आगे संवर्धित है। तन्त्र ग्रन्थों में अन्य प्रकार की भी प्रत्यङ्गिरा उपलब्ध हैं, जिसका भी यहाँ परिशिष्ट रूप में उल्लेख प्रस्तुत किया गया है।

सकलब्रह्मस्वरूपा श्रीसदाशिव की वामाङ्गभूता महागौरी ही इस चराचर जगत् के प्राणियों की पोषिका तथा रक्षिका हैं, ये महागौरी ही अन्नपूर्णारूपा (पार्वती) हैं तथा इन्हीं की अङ्गरूपा भूमि तथा लक्ष्मी हैं, इन्हीं महागौरी की प्रसन्नता से ही प्राणियों को भूमि और लक्ष्मी की अनुकम्पा प्राप्त होती है, इन्हीं महागौरी भगवती अन्नपूर्णा की अङ्गभूता भूमि के ही अंशभूता परकृत्यनिवारण करने वाली श्रीप्रत्यङ्गिरा हैं, जिनका स्वरूप इस प्रकार से तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित है।

आशाम्बरा मुक्तकुचा घनच्छविर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा।
दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिताहितान्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता॥

आशा-आकाशाम्बरा हैं, **अम्बरमावरणं वस्त्रं-आकाशं शून्यात्मकम्** अर्थात् निरावरण भूता हैं, **मुक्तकुचा कुचसंकोचे मुक्तरूपा, संकोचं क्षुद्ररूपत्वं मुक्तं पूर्ण-व्यापकस्वरूपम्** पूर्ण व्यापकरूपा, **कुचस्तने मुक्ता पालने मुक्ता स्वतन्त्ररूपा मातृवत् पालने दक्षा** माता के समान पालन में मुक्तकुचाओं वाली, **स सहिताः घनच्छविः घनवत् घनीभूतच्छविः छविः सहिताः चर्माः त्वचाः** घनवत् घनिभूताच्छवि तथा त्वचाओं वाली, **असिकरा करा किरणावलिभिः असि खड्गवत् तीक्ष्णाः** जिनके तेज की किरणें खड्ग के समान अतितीक्ष्ण, **करौ हस्तौ असि खड्गौ** हाथ में खड्ग धारण किये हुए, **शङ्करतेजसेरिता शङ्करतेजयुता** शङ्कर के तेज से युक्त, **प्रत्यङ्गिरा नामधेया देवी** प्रत्यङ्गिरा नाम वाली देवी, **दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिता अग्रे भवा वक्त्रा अग्रवक्त्रस्थिता दंष्ट्रा अहितान्वया अहितकारिणः दुष्टजनाः ग्रसिता खादिता** अपने मुख के आगे के दाँतों से अपने भक्त के अहित कार्य में संलिप्त जनों को भक्षण करती हुई विचरण करने वाली देवी हैं।

निर्वस्त्रा, मेघ के समान छविवाली त्वचा से युक्त, मुक्त स्तनोंवाली हाथ में खड्ग धारण की हुई, शङ्कर के तेज से युक्त, दाँतों से अपने भक्तों का अहित करनेवाले उनके शत्रुओं को भक्षण करती हुई प्रत्यङ्गिरा देवी हैं।

सकलस्वरूपा महागौरी श्रीदेवी की अंकभूता परकृत्यविमर्दिनी प्रत्यङ्गिरा का समर्चन भी महागौरी पीठ पर होता है, अलग से स्वतन्त्र आवरण यन्त्र नहीं है।

अन्नपूर्णासने चार्चेदङ्गलोकेश्वरायुधः।
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत्॥

(म० म० ९ त० ९३)

ये अन्नपूर्णा पीठ वाली प्रत्यङ्गिरा अत्यन्त सरल हैं, सहज ही प्रसन्न होकर अपन भक्तों की रक्षा करती हैं, इनकी उपासना भी अत्यन्त सरल है, मात्र अयुतसङ्ख्या ही जप पुरश्चरण है, मात्र सहस्र हवन, शत तर्पण तथा एक ब्राह्मणभोजन है, इतने से ही प्रसन्न हो जाती हैं तथा मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद प्रयोग में केवल शत जप, शत ही हवन तथा शत ही मार्जन (अभिषेक) है। इनकी विधि अत्यन्त सरल है, इस विधि से कोई भी आर्तव्यक्ति ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठान करा सकता है, यह अनुष्ठान एक ही दिन में सम्पन्न होता है।

भगवती भद्रकाली की ही अङ्गभूता पञ्चमहाभूतात्मिका प्रत्यङ्गिरा जो महाऽकाश, महावायु, महाअग्नि, महाजल, महापृथ्वी तथा महापर्वत रूपा हैं, अतिशयतेजस्विनी, अतिभयङ्करा खड्ग तथा शूल धारण करने वाली हैं, जो अपने भक्त के शत्रुओं को शमन करने के साथ-साथ उनको नष्ट तक कर देने के लिये सदैव तत्पर रहती हैं।

सिंहारूढाऽतिकृष्णाङ्गी ज्वालावक्त्रां भयङ्कराम्।
शूलखड्गकरां वक्त्रे-दधतीं नूतने भजे॥

किसी भी स्वरूपवाली देवी हों, सभी किसी न किसी प्रकार से भगवती भद्रकाली की ही अङ्गस्वरूपा होकर विभिन्न रूपवाली हैं अर्थात् सभी भद्रकाली की ही अंश हैं।

कृष्णवर्णां बृहद्रूपां रक्तकुञ्चितमूर्धजाम्।
शिरं कापालमालाञ्च विकर्शीं घूर्णिताननाम्॥१॥
रक्तनेत्रामतिक्रुद्धां लम्बजिह्वामधोमुखीम्।
दंष्ट्रकरालवदनां नेत्रभ्रुकुटितेक्षणाम्॥२॥
ऊर्ध्वदक्षिणहस्तेन बिभ्रतीञ्च परश्वधम्।
अधोदक्षिणहस्तेन विभ्राणां शूलमूर्ध्वगाम्॥३॥
तथोर्ध्ववामहस्तेन धारयन्तीं तथाङ्कुशम्।
अधोवामकरेणाथ विभ्राणां पाशमेव च॥४॥

अथर्ववेद में भी जिस प्रत्यङ्गिरा भगवती का उल्लेख है, वे भी महादेवी भद्रकाली की ही अङ्गभूत शिवारूपा ही हैं।

सिंहारूढां कृष्णवस्त्रां भीषणां नीलविग्रहाम्।
ज्वालामुखीं शूलकरां ग्रसितां रिपुमञ्जसाम्॥१॥

व्याघ्रचर्माम्बरधरां सितशार्दूलवाहिनीम्।
विकरालमुखीं तिग्मां द्रष्ट्रां क्रुद्धातिभीषणाम्॥ २॥
दधतीं छुरिकावज्रशूलतोमरकाङ्कैः।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गीं नीलकुञ्चितकुन्तलाम्॥ ३॥
भयङ्करीति दुष्टानां भक्तनामभयङ्करीम्।
चिन्तनीयां सदैवारीन् चेतसा परमेश्वरीम्॥ ४॥

भद्रकाली रूपिणी तथा भौमिकी प्रत्यङ्गिरा के बाद पाञ्चमहाभूतरूपा प्रत्यङ्गिरा, अथर्ववेदीय प्रत्यङ्गिरा, सहस्राक्षरारूपा प्रत्यङ्गिरा की भी विधि लोककल्याणार्थ इस ग्रन्थ में उल्लिखित की गयी हैं। प्रस्तुत प्रबन्ध ग्रन्थ में श्रीकाशीविश्वनाथ तथा माता अन्नपूर्णा की अनुकम्पा प्राप्त है। विद्वज्जन श्रीकाशीविश्वनाथ माता अन्नपूर्णा की अनुमति प्राप्त कर लोक कल्याण की भावना से इस विधि का आश्रय लेकर समाज में समस्त प्राणियों का हित करें, इसी कामना के साथ यह प्रबन्ध श्रीकाशीविश्वनाथस्वरूप मेरे परमपुण्य जनक गुरु स्व० डॉ० वायुनन्दनपाण्डेयजी को समर्पित है, जिनकी परमकरुणामयी कृपा इस ग्रन्थ पर रही है। आशा है विद्वज्जन इसका लाभ अपना तथा लोक जनहित में करेंगे।

विद्वच्चरणचञ्चरीक,
डॉ० रामप्रियपाण्डेय

श्रीगणेशस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः। आचम्य प्राणायामं कृत्वा। न्यासं कुर्यात्।
ॐ गं वक्रतुण्डाय नमः दक्षिणहस्ते न्यस्यामि।
ॐ गं शूर्पकर्णाय नमः वामहस्ते न्यस्यामि।
ॐ गं विघ्नेशाय नमः ओष्ठे न्यस्यामि।
ॐ गं गजाननाय नमः सम्पुटे न्यस्यामि।
ॐ गं लम्बोदराय नमः दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ गं एकदन्ताय नमः वामपादे न्यस्यामि।
ॐ गं ब्रह्मणस्पतये नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ गं शिवतनुजाय नमः चिबुके न्यस्यामि।
ॐ गं विनायकाय नमः दक्षिणनासिकायां न्यस्यामि।
ॐ गं ज्येष्ठराजाय नमः वामनासिकायां न्यस्यामि।
ॐ गं विकटाय नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ गं कपिलाय नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ गं धरणीधराय नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ गं आशापूरकाय नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ गं महोदराय नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ गं धूमकेतवे नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ गं मयूरेशाय नमः ललाटे न्यस्यामि।
ॐ गं स्वानन्दाय नमः दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।
ॐ गं सच्चित्सुखधाम्ने नमः वामबाहौ न्यस्यामि।

सदात्मरूपं सकलादिभूतममायिनं सोऽहमचिन्त्यबोधम्।
अनादिमध्यान्तविहीनमेकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१॥
अनन्तचिद्रूपमयं गणेशं अभेदभेदादिविहीनमाद्यम्।
हृदिप्रकाशस्य धरं हृदिस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२॥
समाधिसंस्थं हृदियोगिनां यः प्रकाशरूपेण विभान्तमेतम्।
सदानिरालम्बसमाधिगम्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥३॥

स्वबिम्बभावेन विलासयुक्तं प्रत्यक्षमायां विविधस्वरूपम्।
स्ववीर्यकं तत्र ददाति यो वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥४॥
त्वदीयवीर्येण समर्थभूतं स्वमायया संरचितञ्च विश्वम्।
तुरीयकं ह्यात्मप्रतीतिसंज्ञं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥५॥
त्वदीयसत्ताधरमेकदन्तं गुणेश्वरं यं गुणबोधितारम्।
भजन्तमत्यन्तमजं त्रिसंस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥६॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन सुषुप्तिसंज्ञं रचितं जगद् वै।
समानरूपं ह्युभयत्र संस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥७॥
तदेकविश्वं कृपया प्रभूतं द्विभावमादौ तमसा विभान्तम्।
अनेकरूपं च तथैकभूतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥८॥
ततस्त्वया प्रेरितनादकेन बभूव सूक्ष्मं जगदेकसंस्थ।
सुसात्त्विकं स्वप्नमनन्तमाद्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥९॥
तदेव स्वप्नं तपसा गणेशं सुसिद्धरूपं विविधं बभूव।
सदैकरूपं कृपया च तेऽद्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१०॥
त्वदाज्ञया तेन त्वया हृदिस्थं तथा सुसृष्टं जगदंशरूपम्।
विभिन्नजाग्रन्मयमप्रमेयं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥११॥
विभिन्नजाग्रद्रजसां विभान्तं विलोकितं तत्कृपया स्मृतेन।
बभूव भिन्नं च सदैकरूपं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१२॥
सदेव सृष्टा प्रकृतिस्वभावात्तदन्तरं त्वं च विभाति नित्यम्।
धियः प्रदाता गणनाथ एकं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१३॥
त्वदाज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे प्रकाशरूपाणि विभान्ति खे वै।
भ्रमन्ति नित्यं स्वविहारकार्याः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१४॥
त्वदाज्ञया सृष्टिकरो विधाता त्वदाज्ञया पालक एव विष्णुः।
त्वदाज्ञया संहरको हरोऽपि तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१५॥
यदाज्ञया भूमि जलेत्र संस्थे यदाज्ञया यः प्रवहन्ति नित्यम्।
स्वतीर्थसंस्थश्च कृतः समुद्रः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१६॥
यदाज्ञया देवगणा दिविस्था ददन्ति वै कर्मफलानि नित्यम्।
यदाज्ञया शैलगणाः स्थिरा वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१७॥
यदाज्ञया शेषधराधरो वै यदाज्ञया मोहप्रदश्च कामः।
यदाज्ञया कालधराऽर्यमा च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१८॥
यदाज्ञया वाति विभाति वायुः यदाज्ञयाऽग्निर्जठरादिसंस्थः।
यदाज्ञयेदं सचराचरं च तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥१९॥

यदन्तरे संस्थितमेकदन्तं तदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपो हृदिबोधकं यः तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२०॥
सुयोगिनो य्योगबलेन साध्यं प्रकुर्वते कः स्तवनेन स्तौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः॥२१॥

फलश्रुतिः

एकदन्त उवाच

भवत्कृतं मदीयं यत् स्तोत्रं प्रीतिप्रदं च यत्।
भविष्यति न सन्देहः सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१॥
यं यमिच्छति तं तं वै दास्यामि स्तोत्रपाठतः।
पुत्रपौत्रादिकं सर्वं कलत्रं धनधान्यकम्॥२॥
गजाश्वादिकमत्यन्तं राज्यभोगादिकं ध्रुवम्।
भुक्तिं मुक्तिञ्च योगं वै लभते शान्तिदायकम्॥३॥
मारणोच्चाटनादीनि राजबन्धादिकं च यत्।
पठतां शृण्वतां नृणां भवेन्न बन्धनादिकम्॥४॥
एकविंशति वारं यः श्लोकानैवेकविंशतीन्।
पठेच्च हृदि मां स्मृत्वा दिनानि त्वेकविंशतीन्॥५॥
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु वै भवेत्।
असाध्यं साधयेन्मर्त्यः सर्वत्र विजयी भवेत्॥६॥
नित्यं यः पठति स्तोत्रं ब्रह्मभूतः स वै नरः।
तस्य दर्शनतः सर्वे देवाः पूता भवन्ति च॥७॥

त्रैलोक्यमोहनं नाम श्रीगणेशस्तोत्रं परिपूर्णमस्तु

●

विषय-सूची

सम्पादकीय ३
स्तुतिकुसुमाञ्जलिः ५
श्रद्धासुमनाञ्जलिः ६
भूमिका ७
श्रीगणेशस्तोत्रम् १७
विषयसूची २०

तान्त्रिकविधिः

मङ्गलाचरणम् १
गुरुपूजनम् १
यज्ञभूमिपूजनम् २
तत्त्वशोधनम् २
आचमनम् ३
सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः ३
द्वारदेवतापूजनम् ४
यज्ञभूमिसंस्कारम् ५
व्यापकन्यासः ६
देहरक्षान्यासः ७
भूतशुद्धिविधिः ९
स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः १०
इष्टदेवताप्रतिष्ठा १२
प्राणशक्तिपीठदेवतान्यासः १४
श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतापूजनयन्त्रम् १८
यन्त्रप्रतिष्ठाविधिः १९
मातृकान्यासः २०
अन्तर्मातृकान्यासः २१
मानसोपचारपूजनविधिः २१
चक्रन्यासः २२
चक्रतत्त्वन्यासः २३
बहिर्मातृकान्यासः २३
सृष्टिन्यासः २७
स्थितिन्यासः २९
संहारन्यासः ३०
तत्त्वन्यासः ३२
मन्त्रसंस्कारविधिः ३२
शापोद्धारः ३३
उत्कीलनम् ३३
चेतनम् ३३
आह्लादिनीम् ३४
तेजोद्दीपनीम् ३४
मन्त्राभ्यजननम् ३४
सूतकनिवारणम् ३४
उभयसूतकत्यागः ३५
मन्त्रप्रत्यक्षम् ३५
प्राणास्थापनम् ३५
मन्त्रस्पन्दनवह्निः ३५
मन्त्रदीपनम् ३६
मन्त्रताडनम् ३६
मन्त्रनिबोधनम् ३६
मन्त्र-अभिषेचनम् ३७
मन्त्रदाहनम् ३७
मन्त्रविमलीकरम् ३७
मन्त्रपुनर्जीवनम् ३७
मन्त्रप्रोक्षणम् ३८
मन्त्रआप्यायनम् ३८

मन्त्रतर्पणम्	३८	पञ्चगव्यकरणम्	८२
मन्त्रपुनर्दीपनम्	३८	तत्त्वशुद्धिः	८२
मन्त्रगोपनम्	३८	प्रधानकलशस्थापनम्	८३
अन्तःपूजनविधिः	३९	पीठस्थदेवतास्थापनं पूजनम्	९०
प्राणायामविधिः	३९	वह्निमण्डलपूजनम्	९१
कुण्डलिनीध्यानम्	३९	अर्कमण्डलपूजनम्	९१
अक्षमालाजपविधिः	४१	सोममण्डलपूजनम्	९२
वर्धनीकलशस्थापनविधिः	४९	पीठशक्तिपूजनम्	९३
वर्धनीकलशधारणचक्रः	४९	बहिःपूजाविधिः	९४
वर्धनीकलशस्थापनम्	४९	अग्न्युत्तारणपूर्वकमूर्तिप्रतिष्ठाविधिः	९५
गङ्गाद्यावाहनम्	५१	आकर्षणीमुद्रालक्षणम्	९६
कलशपूजनम्	५२	आवाहनीमुद्रालक्षणम्	९७
कलशप्रार्थना	५४	पद्ममुद्रालक्षणम्	९८
पात्रासाादनश्रीपात्रस्थापनञ्च	५६	स्थापनीमुद्रालक्षणम्	९८
कवचमुद्रालक्षणम्	६४	सन्निधानमुद्रालक्षणम्	९८
मत्स्यमुद्रालक्षणम्	६४	सन्निरोधनमुद्रालक्षणम्	९९
योनिमुद्रालक्षणम्	६४	सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम्	९९
धेनुमुद्रालक्षणम्	६४	अवगुण्ठनमुद्रालक्षणम्	१००
अर्घ्यस्थापनम्	६५	सकलीकरणमुद्रालक्षणम्	१००
श्रीमत्प्रत्यङ्गिरायन्त्रोद्धारम्	६७	अमृतीकरणमुद्रालक्षणम्	१०१
श्रीप्रत्यङ्गिरायन्त्रप्राणप्रतिष्ठाविधिः	६८	परमीकरणमुद्रालक्षणम्	१०१
गुरुपंक्त्यावाहनस्थापनम्	६८	लेलिहानमुद्रालक्षणम्	१०२
रश्मिदेवताआवाहनस्थापनम्	७१	अष्टमुद्राप्रदर्शनम्	१०२
शिवाग्न्यावाहनस्थापनम्	७१	योनिमुद्रालक्षणम्	१०२
ब्रह्माद्याष्टशक्त्यावाहनस्थापनम्	७२	महायोनिमुद्रालक्षणम्	१०३
स्तम्भिन्याष्टशक्त्यावाहनस्थापनम्	७३	खड्गमुद्रालक्षणम्	१०३
अष्टभैरवावाहनस्थापनम्	७४	मुण्डमुद्रालक्षणम्	१०३
अष्टभैरव्यावाहनस्थापनम्	७५	डमरुमुद्रालक्षणम्	१०४
दशदिग्पालावाहनस्थापनम्	७६	त्रिशूलमुद्रालक्षणम्	१०४
वटुकाद्यावाहनस्थापनम्	७७	वरमुद्रालक्षणम्	१०४
क्षेत्रकीलनम्	७८	अभयमुद्रालक्षणम्	१०४
दिग्पालादिबलिदानम्	७८	प्रत्यङ्गिरागायत्री	१०४
रक्षोघ्नकर्म	८०	विविधोपचारपूजनम्	१०५

आवरणपूजनम्	११६
नारिकेलबलिदानम्	१२९
वटुकादिबलिः	१३०
अखण्डदीपपूजनम्	१४४
पुस्तकपूजनम्	१४५
जपविधिः	१४७
दिग्बन्धनम्	१४८
मालासंस्कारविधिः	१४९
मालायामातृकाविन्यासः	१५०
मालायामिष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः	१५७
जपसंस्कारः	१६०
श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्रनामार्चनम्	१६१
सहस्राक्षरनाममन्त्रजपम्	१६२
स्तोत्रात्मकमालामन्त्रजपम्	१९७
श्रीप्रत्यङ्गिराकवचम्	२०१
श्रीप्रत्यङ्गिरापटलः	२०४
श्रीमद्प्रत्यङ्गिरापद्धतिः	२१४
श्रीमद्प्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रम्	२२५
होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम्	२३८
अग्निप्रार्थना	२४०
गणेशप्रार्थना	२४१
हवने दिग्रक्षणम्	२४१
अग्निमातृकान्यासः	२४४
अग्निजिह्वान्यासः	२४६
इष्टशक्तिन्यासः	२४९
अग्निपीठशक्तिपूजनम्	२५०
अग्निप्राणप्रतिष्ठा	२५४
अग्न्यावरणार्चनम्	२५५
कुशकण्डिकापात्रासादम्	२५८
ब्रह्मावरणम्	२५९
अग्निसंस्कारः	२६०
सप्तजिह्वाहुतिः	२६१
षडङ्गाहुतिः	२६२
अग्निमूर्त्याहुतिः	२६२
दिग्पालाहुतिः	२६२
दिग्पालास्त्राहुतिः	२६३
दिव्यौघगुरुहवनम्	२६४
सिद्धौघगुरुहवनम्	२६४
मानवौघगुरुहवनम्	२६४
रश्मिदेवताहवनम्	२६५
ब्रह्माद्यष्टशक्त्याहवनम्	२६५
स्तम्भिन्याद्यष्टशक्त्याहवनम्	२६६
अष्टभैरवादिहवनम्	२६६
अष्टभैरव्यादिहवनम्	२६६
दशदिग्पालादिहवनम्	२६७
दशदिग्पालपत्न्याहवनम्	२६७
दशदिग्पालायुधहवनम्	२६७
वटुकादिहवनम्	२६८
खड्गाद्यस्त्रहवनम्	२६८
प्रधानहवनम्	२६८
प्रधानदेवतातर्पणम्	२६८
प्रधानदेवतामार्जनम्	२६८
कर्मसमर्पणम्	२६८
क्षमापनप्रार्थना	२६९
कुमारीसुवासिनीपूजनम्	२७०
छागादिबलिदानम्	२७५
लौहखड्गपूजनम्	२७६
बलिगायत्री	२७६
नीराजनविधिः	२७८
दीपज्योतिपूजनम्	२७८
पुष्पाञ्जलिविधिः	२७९
भवानीस्तुतिः	२७९
काल्यष्टकम्	२८०
प्रार्थना	२८२

वैदिकविधिः	
स्वस्तितिलकधारणम्	२८४
पञ्चगव्यप्रासनम्	२८४
पवित्रीधारणम्	२८४
यज्ञभूमिपूजनम्	२८५
शिखास्पर्शनम्	२८५
श्रीगुरुस्मरणम्	२८५
स्वस्तिवाचनम्	२८५
प्रधानसङ्कल्पः	२८८
गणेशाम्बिकापूजनम्	२८९
गणेशाथर्वशीर्षः	३०३
देव्याथर्वशीर्षः	३०६
स्वस्तिकलशस्थापनम्	३१२
स्वस्तिकलशप्रतिष्ठा	३१३
स्वस्तिकलशपूजनम्	३१५
पुण्याहवाचनम्	३२१
पुण्यकारकमन्त्रः	३२४
अभिषेकः	३३१
षोडशमातृकास्थापनम्	३३३
षोडशमातृकापूजनम्	३३८
सप्तघृतमातृकास्थापनम्	३४७
सप्तघृतमातृकापूजनम्	३४९
आयुष्यमन्त्रपाठः	३५८
साङ्कल्पिकेनविधिनानान्दिश्राद्धम्	३५९
आचार्यादिवरणम्	३६५
आचार्यवरणम्	३६५
ब्रह्मावरणम्	३६६
उपद्रष्टावरणम्	३६६
गाणपत्यवरणम्	३६६
सदस्यवरणम्	३६७
ऋत्विकवरणम्	३६७
नियमनिवेदनम्	३६७
रक्षोघ्नकर्म	३६८
पञ्चगव्यकरणम्	३७०
सर्वतोभद्रचक्रः	३७१
सर्वतोभद्रदेवानां स्थापनम्	३७२
सर्वतोभद्रदेवानां पूजनम्	३७८
अन्तःपूजाविधिः	३८५
कुण्डलिनीध्यानम्	३८५
शिवशिवाध्यानम्	३८७
पीठदेवतापूजनम्	३८७
पीठशक्तिपूजनम्	३९०
प्रधानकलशस्थापनम्	३९२
प्रधानदेवताप्रतिष्ठा	३९६
मूर्तिप्रतिष्ठाविधिः	३९७
इष्टपूजनम्	३९७
दैनिकबलिदानम्	४०७
वटुकबलिदानम्	४०८
योगिनीबलिदानम्	४१०
गणेशबलिदानम्	४१२
क्षेत्रपालबलिदानम्	४१४
राजराजेश्वरबलिदानम्	४१६
कालबलिदानम्	४१८
मृत्युबलिदानम्	४१९
पीठस्थदिग्पालबलिदानम्	४२०
भूतादिबलिदानम्	४२२
अखण्डदीपपूजनम्	४२४
पुस्तकपूजनम्	४२५
जपविधिः	४२६
जपसंस्कारः	४२७
श्रीप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रः	४२८
अग्निस्थापनम्	४३२
पञ्चभूः संस्कारः	४३२
अग्निसंस्कारः	४३२

ग्रहमण्डलचक्रम्	४३५	नवग्रहाणां बलिदानम्	४९६
ग्रहमण्डलदेवतास्थापनम्	४३६	एकतन्त्रेणग्रहाणां बलिदानम्	४९६
ग्रहमण्डलदेवतापूजनम्	४४४	सूर्याय बलिदानम्	४९६
असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्	४५२	चन्द्रमसे बलिदानम्	४९६
कुशकण्डिकाविधिः	४६२	भौमाय बलिदानम्	४९७
हवनप्रकरणम्	४६६	बुधाय बलिदानम्	४९८
सूयादिग्रहाणांहवनम्	४६६	बृहस्पतये बलिदानम्	४९८
असङ्ख्यातरुद्रहवनम्	४६९	शुक्राय बलिदानम्	४९९
प्रधानदेवताहवनम्	४६९	शनैश्चराय बलिदानम्	४९९
आवाहितदेवतानां होमः	४७३	राहवे बलिदानम्	५००
अग्निपूजनम्	४७९	केतवे बलिदानम्	५००
स्विष्टिकृद्धोमः	४७९	पञ्चलोकपालादि बलिदानम्	५०१
भूरादिनवाहुतिः	४८०	एकतन्त्रेणलोकपालानां बलिदानम्	५०१
कुमारीसुवासिनीपूजनम्	४८०	गणेशाय बलिदानम्	५०२
छागादिबलिदानम्	४८५	दुर्गायै बलिदानम्	५०२
नीराजनविधिः	४८८	वायवे बलिदानम्	५०२
घन्टापूजनम्	४८८	आकाशाय बलिदानम्	५०३
दीपज्योतिपूजनम्	४८९	अश्विनीकुमारौ बलिदानम्	५०४
आरती	४८९	वास्तोस्पतयेबलिदानम्	५०४
पुष्पाञ्जलिविधिः	४९०	क्षेत्रपालाय बलिदानम्	५०४
हवनाङ्गबलिदानम्	४९१	पूर्णाहुतिः	५०६
एकतन्त्रेणदिग्पालानांबलिदानम्	४९१	वसोर्द्धारा हवनम्	५०७
इन्द्राय बलिदानम्	४९१	अग्निप्रदक्षिणा	५०८
अग्नये बलिदानम्	४९२	हवनीयभस्मधारणम्	५०८
यमाय बलिदानम्	४९२	विभिन्नदानादिसङ्कल्पः	५०९
निर्ऋतये बलिदानम्	४९३	ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्	५०९
वरुणाय बलिदानम्	४९३	यजमानायश्रेयोदानम्	५०९
वायवे बलिदानम्	४९४	आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्	५०९
सोमाय बलिदानम्	४९४	आचार्याय गोदानम्	५०९
ईशानाय बलिदानम्	४९५	ब्रह्मणे वृषभदानम्	५१०
ब्रह्मणे बलिदानम्	४९५	गाणपत्ये अश्वदानम्	५१०
अनन्ताय बलिदानम्	४९५	उपद्रष्टायगन्त्रीदानम्	५१०.

सदस्याणां सुवर्णदानम्	५१०
भूयसीदक्षिणादानम्	५१०
ब्राह्मणभोजनम्	५११
आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम्	५११
महागणपतिपूजनम्	५११
महागौरीपूजनम्	५११
स्वस्तिकलशदेवतानांपूजनम्	५११
षोडशमातृकानांपूजनम्	५१२
सप्तघृतमातृकानांपूजनम्	५१२
सर्वतोभद्रदेवतानांपूजनम्	५१२
प्रधानकलशस्थदेवानां पूजनम्	५१२
श्रीप्रत्यङ्गिरापूजनम्	५१२
ग्रहमण्डलस्थदेवतानांपूजनम्	५१७
असङ्ख्यातरुद्राणांपूजनम्	५१७
नीराजनम्	५१७
पुष्पाञ्जलि:	५२०
आवाहितदेवतानां विसर्जनम्	५२१
प्रार्थना	५२१
आचार्याय प्रधानपीठदानम्	५२१
यजमान-अभिषेक:	५२२
छायापात्रदानम्	५२३
अपराधक्षमापनम्	५२३
यजमानरक्षाबन्धनम्	५२४
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्	५२४
यजमानतिलकम्	५२४
यजमान-आशीर्वाद:	५२४
यजमानपत्नी-आशीर्वाद:	५२५
परिशिष्टभाग: १	
कौशिकीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोग:	५२६
सङ्कल्प:	५२६
विनियोग:	५२६
ऋष्यादिन्यास:	५२७
हृदयादिन्यास:	५२७
कराङ्गन्यास:	५२७
मातृकान्यास:	५२७
अन्तर्मातृकान्यास:	५२८
चक्रन्यास:	५२९
चक्रतत्त्वन्यास:	५३०
बहिर्मातृकान्यास:	५३०
मन्त्रपदन्यास:	५३३
मातृकापुटितपदन्यास:	५३४
मन्त्रपदपुटितमातृकान्यास:	५३६
मन्त्रवर्णन्यास:	५३८
मातृकापुटितमन्त्रवर्णन्यास:	५४१
मन्त्रवर्णपुटितमात्रृकान्यास:	५४५
जपविधि:	५४८
श्रीप्रत्यङ्गिरावर्म	५५०
श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्	५५३
प्रत्यङ्गिरापटल:	५५६
कौशिकीप्रत्यङ्गिरापद्धति:	५६२
परिशिष्टभाग: २	
परकृत्यानिवारिणीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोग:	५६६
सङ्कल्प:	५६६
विनियोग:	५६६
ऋष्यादिन्यास:	५६७
हृदयादिन्यास:	५६७
कराङ्गन्यास:	५६७
मातृकान्यास:	५६७
अन्तर्मातृकान्यास:	५६८
चक्रन्यास:	५६९
चक्रतत्त्वन्यास:	५७०
बहिर्मातृकान्यास:	५७०
मातृकान्यास:	५७१
मन्त्रबीजन्यास:	५७३

मूलमन्त्रव्यापकन्यासः	५७३
जपविधिः	५७३
मूलमन्त्रः	५७५
पद्धतिः	५७५
स्तोत्रम्	५७७

परिशिष्टभागः ३

शत्रूनिषूदिनीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः	५८०
सङ्कल्पः	५८०
विनियोगः	५८०
ऋष्यादिन्यासः	५८१
हृदयादिन्यासः	५८१
कराङ्गन्यासः	५८१
मन्त्रपदन्यासः	५८१
मूलमन्त्रव्यापकन्यासः	५८२
जपविधिः	५८२
मूलमन्त्रः	५८४
पटलस्तोत्रम्	५८४

परिशिष्टभागः ४

अथर्ववेदीयसिद्धदुर्गाप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः	५८६
सङ्कल्पः	५८६
विनियोगः	५८६
ऋष्यादिन्यासः	५८७
हृदयादिन्यासः	५८७
कराङ्गन्यासः	५८७
मूलमालामहामन्त्रः	५८७
स्तोत्रपद्धतिः	५८८

परिशिष्टभागः ५

सिद्धप्रत्यङ्गिरासहस्त्राक्षरमन्त्रप्रयोगः	५९०
सङ्कल्पः	५९०
विनियोगः	५९०
ऋष्यादिन्यासः	५९१
हृदयादिन्यासः	५९१
कराङ्गन्यासः	५९१
सहस्त्राक्षरीमूलमन्त्रः	५९१

परिशिष्टभागः ६

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिराविधिः	५९४
सङ्कल्पः	५९४
विनियोगः	५९४
ऋष्यादिन्यासः	५९५
हृदयादिन्यासः	५९५
कराङ्गन्यासः	५९५
मन्त्रपदन्यासः	५९५
मन्त्रवर्णन्यासः	५९६
मूलमन्त्रः	५९७
जपाङ्गोत्तरन्यासः	५९८
मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिरापद्धतिः	६००
पुरश्चरणम्	६०१
मेरुतन्त्रोक्तयन्त्रम्	६०१

परिशिष्टभागः ७

साम्बसदाशिवपूजनम्	६०२

परिशिष्टभागः ८

उपासना में उपयोगी बातें	६१३
शान्ति आदि षट्कर्म	६१३
शान्तिकर्म	६१३
वश्यकर्म	६१४
स्तम्भनकर्म	६१५
विद्वेषणकर्म	६१५
उच्चाटनकर्म	६१५
मारणकर्म	६१५
षड्कर्मों में ज्ञेय	६१७
देवता	६१७
देवताओं के वर्ण	६१७
ऋतु	६१८
दिशा	६१८

दिन	६१८	तर्पण एवं भक्ष्य वस्तुयें	६२१
आसन	६१८	पात्र	६२२
विन्यास	६१८	सावधानियाँ	६२२
मण्डल	६१८	निष्काम उपासना एवं ज्ञान प्राप्ति	६२२
मुद्रा	६१९	पुरश्चरण से पहले भविष्य विचार	६२२
अक्षर	६१९	शुभस्वप्न	६२३
भूतोदय	६१९	अशुभस्वप्न	६२३
समिधा	६२०	दुःस्वप्न के बाद पुरश्चरण रीति	६२३
माला	६२०	मन्त्रसिद्धि के लक्षण	६२३
अग्नि	६२०	मन्त्रसिद्धि के बाद कर्तव्य	६२३
लेखनद्रव्य	६२१	पुरश्चरण के बाद कर्तव्य	६२४
कुण्ड	६२१	विशेष बातें	६२४
स्त्रुवा-स्त्रुची	६२१	परिशिष्टभागः ९	६२५
लेखनी	६२१	पूजनोपयोगीसामग्री	६२५

॥ श्रीः॥

श्रीप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

नित्य-अवश्यकरणीयकर्म

मङ्गलाचरणम्

शिवोत्सङ्गे समासीनां लालयन्तीं विनायकम्।
विद्याकल्पलताबीजं वन्दे सर्वार्थदां शिवाम्॥

शिव के साथ दिव्यासन पर बैठी हुई, अपने पुत्र गणेश का लालन करती हुई, विद्याकल्पलता के बीजरूप शिवा भगवती पार्वती की सभी प्रकार के अर्थबोध के लिए वन्दना करता हूँ।

गुरुपूजनम्

प्रातः नित्य स्नानादिकृत्य से निवृत्त होकर श्रीगुरु, इष्टदेवता तथा दिग्पालों को नमन करके सन्ध्यावन्दनादि करने के पश्चात् सर्वप्रथम गुरुमण्डलसहित श्रीगुरु का ध्यानपूर्वक मानसोपचार पूजन करे—

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरानद्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्॥१॥

श्रीनाथादि तीनों गुरुओं, गणपति, तीनों पीठों के अधिपति भैरवों, मानवौघदिव्यौघ-सिद्धौघों, तीनों वटुकों, दूतीक्रम मण्डलों के समस्त गुरुओं के दोनों चरणों का वन्दन करता हूँ। बयासी तथा चौसठों प्रकार के वीरों पाँच प्रकार के वीरावलियों के साथ मालिनीमन्त्रराज के सहित समस्त गुरुओं के साथ गुरुमण्डल की वन्दना करता हूँ॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥२॥

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महादेव महेश्वर शिव हैं, गुरु ही साक्षात् ब्रह्म हैं, इसलिए श्रीगुरु को नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—श्री गुरुदेवाय नमः ध्यायामि। स्वगुरु का नाम पूर्वक ध्यान करे जैसे—**श्रीविश्वनाथाय गुरुदेवाय नमः ध्यायामि।**

ॐ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।

ॐ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।

ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

इस मन्त्र से कुशादि निर्मित पवित्री धारण करे।

ॐ पवित्रेस्त्थोवैष्णव्यौसवितुर्व्वःप्प्रसवउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥

पवित्री धारण के पश्चात् यज्ञभूमि पूजन करे।

यज्ञभूमिपूजनम्

पुरश्चरण स्थान में जाकर द्वारों पर गन्धाक्षत से अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भँ भद्रकाल्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दाहिने चौखट पर गन्धाक्षत चढ़ाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ भैरवाय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के वायें चौखट पर गन्धाक्षत चढ़ाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ लम्बोदराय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के उपरी चौखट पर गन्धाक्षत चढ़ाये।

तत्त्वशोधनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ऊपरिलिखित मन्त्रों से आचमन करने के बाद मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करे, फिर प्राणायाम में एक बार मन्त्र का मानस जप करते हुए जो नासिका उस समय चल रही हो, उससे वायु को मन्त्र जपकाल तक धीरे-धीरे फेफड़े में भरे तथा चार बार जप करते हुए वायु को रोक कर फिर धीरे-धीरे दो बार जप करते हुए बाहर निकाल दे यथा

एक बार मूलमन्त्र जप करके पूरक कर, चार बार जप करके कुम्भक करे, दो बार जप करके रेचन करे। सर्वत्र इसी विधि से प्राणायाम करे। तदनन्तर पापनिवृत्ति के लिए देवी से प्रार्थना करे।

ॐ देवि! त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तक भून्मम।
तन्निस्सरन्तु चित्तान्मे पापं हूँ फट् च ते नमः॥१॥

हे चिद्रूपिणि महादेवि! मैं पाप से आक्रान्त हो गया हूँ, हमारे चित्त में प्रकट होकर समस्त पाप जो हमारे चित्त में समाहित हो गये हैं, उन पापों को निकाल दो, हे हूँ फट् स्वरूपिणी! आपको नमस्कार है॥१॥

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो नवसाक्षिणः॥२॥

सूर्य-सोम-यम-काल तथा पञ्चमहाभूत पृथ्वि-जल-अग्नि-वायु-आकाश कर्म के नव साक्षी देवताओं को नमस्कार है॥२॥

आचमनम्—मूल मन्त्र से तीन बार आचमन करके—

ॐ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा। पात्र में जल ग्रहण करे।

ॐ हूँ फट् स्वाहा। हाथ में जल ग्रहण करे।

ॐ ह्रीँ विशुद्धं सर्वपापानिशमयाशेषविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र से पाद प्रक्षालन करे।

ॐ ह्रीँ स्वाहा। पुनः आचमन करने के पश्चात् अपने ऊपर तिलकादि लगाये।

सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः

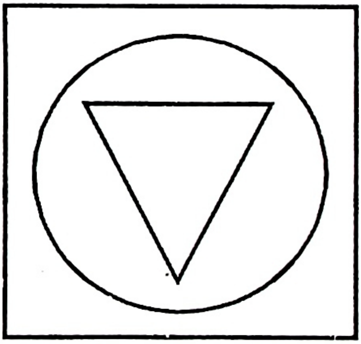

अपने बायें ऊपर के चित्र में निर्दिष्ट मण्डल को बनाये।

ॐ आधारशक्तिभ्यो नमः। गन्धपुष्पाक्षतादि से पूजन करे।

ॐ फट्। प्रक्षालित शंखपात्र को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ नमः। शंखपात्र में जल भरे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे-सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी नदियाँ इस जल में आकर स्थापित होकर सान्निध्य प्रदान करे।

अंकुशमुद्रा के द्वारा सूर्यमण्डल से तीर्थों का जल में आवाहन करे, शंखपात्र स्थित जल में गन्धपुष्पादि छोड़े, पुनः धेनुमुद्रा प्रदर्शित करे उसके बाद मत्स्यमुद्रा प्रदर्शित कर पुनः प्रणव से अट्ठारह बार अभिमन्त्रित करे।

ॐ । अट्ठारह बार अभिमन्त्रित करे।

शिखाबन्धनम्—**ॐ मणिधरिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोकवशंकरि हूँ फट् स्वाहा।**

ॐ उर्ध्वकेशे विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये चामुण्डे चाऽपराजिते॥१॥

ऊपर की तरफ उठी हुए केशों वाली (ऊर्ध्व स्थित केशों में रहने वाली) विरूपाक्षी विरूप नेत्रों (विशेष तृतीय नेत्र) वाली, मांस-रक्त का भोजन करने वाली, अपराजिता (कभी किसी से पराजित न होने वाली), चामुण्डा (काली) देवी हमारे शिखा में निवास कर हमें तेजोवान् बनायें॥१॥

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजःसमन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥२॥

दिव्य तेज से युक्त चिद् स्वरूपिणी महामाया हमारी शिखा में स्थित होकर हमारे तेज की वृद्धि करें॥२॥

द्वारदेवतापूजनम्—

ॐ गँ गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के ऊपरी चौखट पर पूजन करे।

ॐ वँ वटुकाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के बायीं चौखट पर पूजन करे।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के दाहिनी चौखट पर पूजन करे।

ॐ याँ योगिनिभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वार के नीचले चौखट पर पूजन करे।

ॐ गँ गङ्गायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। दाहिने चैखट पर पूजन करे।

ॐ यँ यमुनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। बायें चौखट पर पूजन करे।

ॐ लँ लक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ऊपरी चौखट के ऊपर में पूजन करे।

ॐ सँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नीचे के चौखट पर पूजन करे।

ॐ अँ कँ चँ टँ तँ पँ यँ शँ ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

देहली पर पूजन के बाद दाहिने पैर को आगे करके बायें तरफ से चौखट के किसी भी शाखा को स्पर्श न करते हुए पूजास्थान में प्रवेश करे।

यज्ञभूमिसंस्कारम्

आधारचक्रम्

ॐ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। पूजा स्थान पर जल छिड़के।

ॐ पवित्र वज्र भूमे हूँ फट् स्वाहा। जल छिड़क कर भूमि को पवित्र करे।

भूमि का स्पर्श करते हुए अभिमन्त्रित करे, जहाँ आसन बिछाना हो वहाँ भूमि पर पूजन करके आसन के नीचे त्रिकोण बनाये।

ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहा। चौकोर मण्डल बनाये।

ॐ ह्सौः। आसन के मध्य प्रेत बीज लिखे तथा गन्धाक्षत समर्पित करे।

ॐ अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ विमलासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ पद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वप्रथम कुशा बिछाये अथवा पच्चीस कुशाओं से निर्मित कुशासन को शवरूप मान कर बिछाये, उसके ऊपर कम्बलासन बिछाये।

ॐ ह्सौः स्हौः महाप्रेतपद्मासनाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। पुनः आसन का अर्चन करे।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥

हे पृथ्वि! तुमने समस्त लोकों को धारण किया है तथा तुम्हें विष्णुभगवान् ने धारण किया है, तुम हमें धारण करो और आसन को पवित्र करो।

सिद्धासन से बैठ कर आसन के ऊपर जल छिड़कर पूजन करे।

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के नैर्ऋत्यकोण में पूजन करे।

ॐ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के पूर्वदिशा में पूजन करे।

ॐ धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के दक्षिणदिशा में पूजन करे।

ॐ ज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के पश्चिमदिशा में पूजन करे।

ॐ वैराग्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के उत्तरदिशा में पूजन करे।

ॐ ऐश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के ईशानकोण में पूजन करे।

ॐ अधर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के अग्निकोण में पूजन करे।

ॐ अज्ञानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के नैर्ऋत्यकोण में पूजन करे।

ॐ अवैराग्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के वायव्यकोण में पूजन करे।

ॐ अनैश्वर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। आसन के ईशानकोण में पूजन करे।

ॐ ह्रीँ स्वाहा शरीरं शोधयामि। जल से अपने शरीर का मार्जन करे।

ॐ ह्रीँ स्वाहा वाणीं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ ह्रीँ स्वाहा चित्तं शोधयामि। आचमन करे।

ॐ ह्रीँ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। लेलिहानमुद्रा से पुष्प पकड़ कर हृदय पर स्पर्श करे।

व्यापकन्यासः

सम्पूर्ण शरीर को आठबार मूलमन्त्र जपते हुए स्पर्श करे, दोबार सम्मुख (आगे), दोबार दक्षिणपार्श्व (दाहिने बगल) में, दोबार पृष्ठ भाग (पीठ) तथा दोबार वामपार्श्व (बायें बगल) का स्पर्श कर व्यापक न्यास करे।

देहरक्षान्यासः

मूल मन्त्र से तीन बार न्यास के बाद देहरक्षा न्यास करे।

ॐ गुरुभ्यो नमः दक्षबाहौ न्यस्यामि।

ॐ गँ गणपतये नमः वामबाहौ न्यस्यामि।

ॐ दुँ दुर्गायै नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।

ॐ वँ वटुकाय नमः वामोरौ न्यस्यामि।

ॐ याँ योगिनीभ्यो नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ क्षँ क्षेत्रपालाय नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ पँ परमात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमो भगवतीतिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजन-मनश्चक्षुश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविघ्नपदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमो भगवति ज्वालामालिनीदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः रं रं रं रं रं रं रं हूँ फट् स्वाहा। चारो ओर अग्नि की भावना करे।

ॐ भूर्भुर्वः स्वः। चारो ओर चुटकी बजाकर अपने चारों तरफ दिग्बन्धन करे।

ॐ शताभिषेके शताभिषेके पदे हूँ फट् स्वाहा।

ॐ पुष्पकेतुराजार्हत्पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा। जल से पुष्पाभिमन्त्रण करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

सामान्यार्घ्योदक जल से सभी पूजन सामग्रियों का अभिसिंचन करे, पुष्पों के ऊपर धेनुमुद्रा तथा मत्स्यमुद्रा बनाकर पुष्प शुद्ध हो गये हैं, ऐसी भावना करे।

ॐ वँ। चारो तरफ जल छिड़के।

ॐ हूँ फट् स्वाहा। चारो तरफ क्रोधमयी दृष्टि से देख कर विघ्नों का निस्सारण करे।

ॐ सर्वविघ्नानुत्सारयोत्सारय हूँ फट् स्वाहा।

ऊपर देख कर चारो ओर जल छिड़क कर अन्तरिक्ष मे रहने वाले तथा बायें पैर की एड़ी से तीन बार पृथ्वी पर घात कर भूस्थित समस्त विघ्नों का निस्सारण करे। लावा, रक्तचन्दन, पीलासरसों, तिल, दही, दूर्वा एवं अक्षतादि में से कोई एक पदार्थ लेकर चारो दिशाओं विदिशाओं तथा ऊपर नीचे प्रक्षेप करे।

पूर्वदिशायां—पूर्व दिशा में—

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥१॥

इस स्थान के आश्रित होकर यहाँ सर्वदा निवास बनाये हुए सभी भूत इस स्थान को त्याग करके जहाँ कहीं अन्यत्र चले जायें॥१॥

दक्षिणदिशायां—दक्षिण दिशा में—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये चाऽत्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥२॥

जो भूतादि इस भूमि में स्थित हैं, वे सभी यहाँ से चले जायें और जो विघ्न करने वाले हैं, वे सभी शिव की आज्ञा से नष्ट हो जायें।

पश्चिमदिशायां—पश्चिम दिशा में—

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

सभी दिशाओं में जो भूतपिशाचादि हैं, वे सभी यहाँ से बिना किसी प्रकार का हमसे विरोध किये चले जायें, हमारा सभी से कोई विरोध नहीं है, सभी हमसे कोई विरोध न करें, हम पूजाकर्म प्रारम्भ कर रहे हैं।

उत्तरदिशायां—उत्तर दिशा में—

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्मकरोम्यहम्॥

जो यहाँ स्थित होकर भूतादि एवं राक्षसादि हैं, वे जबतक हम यज्ञ कर्म कर रहे हैं तबतक यहाँ से अन्यत्र कहीं चले जायें।

चारो तरफ पीला सरसों छिड़ककर अपने बायें तरफ अधोलिखित देवताओं का पूजन करे।

ॐ गुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ परमगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अपने दाहिने तरफ गणेशादि देवताओं का पूजन करे।

ॐ गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
प्रणाम करके करशुद्धि करे।

ॐ हूँ। चन्दनयुक्त पुष्प ग्रहण करे।

ॐ ह्राँ। पुष्प से पूरे हाथ का मर्दन करे।

ॐ क्लीँ। दक्षिण हाथ को मलकर बाये हाथ में रखे।

ॐ तत्सत्। बायें हाथ से सूंघ कर।

ॐ हौँ। ईशानकोण में पुष्प को फेंक दे।

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।
मृत्यु-रोग-भय-क्रोधाः पतन्तु रिपु-मस्तके॥

जो हिंसक मेरी हिंसा कर सकते हैं, वे सभी विलय को प्राप्त हो जायें और मृत्यु, रोग, भय, क्रोध आदि सभी हमारे शत्रुओं के मस्तक पर चले जायें।

समस्त विघ्नों और पापों को निस्सारण के लिए पुष्प द्वारा नाराचमुद्रा से अपने मस्तक के ऊपर चारों ओर घुमाकर फेंक दे।

भूतशुद्धिविधिः

भूतशुद्धि प्राणायाम के द्वारा किया जाता है, अतः प्राणायाम करते समय उत्तम विधि का प्रयोग करना ही श्रेयस्कर होता है। सर्वत्र १:४:२ के अनुपात से ही करना चाहिये। मन्त्र तथा बीजों का २० बार उच्चारण करते हुये पूरक करे, पूरक का चतुर्गुणा उच्चारण करते हुये कुम्भक करे तथा पूरक का दोगुणा उच्चारण करते हुये रेचन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मूलशृङ्गाटात्सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ संकोच शरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शिवशक्त्यात्मकं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रीँ सोऽहं हंसः परमशिवं अवतर अवतर सुषुम्नापथेन प्रविश प्रविश मूलशृङ्गाटकं उल्लासयोल्लासय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा।

भूतशुद्धि के बाद प्रतिष्ठाविधि से अपने शरीर में प्रत्यङ्गिरादेवता की प्रतिष्ठा करे।

स्वशरीरे इष्टदेवताप्रतिष्ठाविधिः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामानि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता इष्टदेवताप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋग्यजुसामानि छन्दोभ्यो नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणशक्त्यै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शक्तिभ्यो नमः पदयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्राणशक्त्यै नमः सर्वाङ्गे।

करातक्षरन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ आकाशवायवाग्न्यपभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अँः बुद्धिमनोऽहङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्यक्षरन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ आकाशवायवाग्न्यपभूम्यात्मने हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ अँ: बुद्धिमनोऽहङ्कारचित्तात्मने अस्त्राय फट्।

व्यापकाक्षरन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नाभ्यादारभ्य पादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ हृदयादारभ्य नाभ्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ मस्तकारभ्य हृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ ओजात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ प्राणात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ जीवात्मने नमः न्यस्यामि।

लेलिहानमुद्रा से हृदय पर न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। मूर्धादि से चरणावधि तक व्यापक न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं पीठस्थदेवताभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयादिशक्तिभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः।

हृदय प्रदेश में अष्टदलपद्म आत्मपीठ पर प्राणशक्तिदेवता का न्यास करे।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ पाशाङ्कुशापासृक्कपाले ऋणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥

पाश-चाप-सृक्-कपाल धारण किये हुए, हाथ में त्रिशूल की शोभा से विभूषित रक्तवर्णात्मिका, रक्तमय दिशाओं से युक्त, रक्तकमल पर आसीन देवीप्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ।

लेलिहानमुद्रा से हृदय पर क्रमशः स्थूल, प्राण, मनोमय शरीरों में तीनबार मन्त्र की आवृत्ती कर प्रतिष्ठा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे प्रत्यङ्गिरादेवताया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे प्रत्यङ्गिरादेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः मम शरीरे प्रत्यङ्गिरादेवताया सर्वेन्द्रियाणि-वाङ्मनश्चक्षु-श्श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम देहस्था प्रत्यङ्गिरादेवताया गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

परब्रह्म के संयोग से शिव के पादतल से टपकते हुऐ, अमृतरस का कुण्डलिनी शक्ति को ग्रहण कराकर, सम्पूर्ण शरीर को सिंचित कर आप्लावित करे, पुनः विपरीत क्रम से सगर्भित कुण्डलिनी शक्ति को आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान होते हुए मूलाधार में स्थापित कर कुलकुण्डलिनी शक्ति के शरीर से ही आत्मशिव का प्रसव करा कर स्थापित कराये तथा मूलकुलकुण्डलिनी शक्ति के ही शरीर से ही समस्त मातृका शक्तियों को प्रकट करा कर तत्तत् पत्रों पर स्थापित करे तथा विधिवत् मानसपूजन करे।

इष्टदेवताप्रतिष्ठा

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुःसामाथर्वणछन्दोभ्यः, प्राणशक्तिर्देवता, आँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्रौँ कीलकं मम शरीरे श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषिभ्यो नमः शिरसि। सिर पर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋग्यजुस्सामाथर्वणछन्दोभ्यो नमः मुखे। मुखभाग का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणशक्तिर्देवतायै नमः हृदि। हृदय स्थान पर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ बीजाय नमः गुह्ये। गुह्य स्थान (योनि प्रदेश) का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः। दोनों पैरों का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ कीलकाय नमः नाभौ। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणशक्तिर्देवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे। सिर से पैर तक समस्त अङ्गों का स्पर्श करे।

कराङ्गन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नभोवाय्वाग्निर्जलभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। अङ्गुष्ठ का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः। तर्जनी अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः। मध्यमा अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः। अनामिका अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। कनिष्ठिका अङ्गुलि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नभोवाय्वग्निर्जलभूम्यात्मने हृदयाय नमः। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा। शिर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रोत्रत्वक्नयनरसनाघ्राणात्मने शिखायै वषट्। शिखा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम्। दोनों बाहुओं का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अस्त्राय फट्। चारो तरफ चुटकी बजाते हुए घुमा कर हाथ पर ताली बजाये।

व्यापकन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ पादादारभ्य नाभ्यन्तं न्यस्यामि। पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ नाभ्यादारभ्य हृदयान्तं न्यस्यामि। नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ हृदयादारभ्य मस्तकान्तं न्यस्यामि। हृदय से मस्तक तक स्पर्श करे।

त्वगादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः। त्वचा का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हौँ ओजसात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्राणात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ जीवात्मने नमः। मनसा स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ ॅं शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे। लेलिहानमुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

प्राणशक्तिपीठदेवतान्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मण्डूकाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। योनिप्रदेश पर स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लिङ्गमूल स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कच्छपाय नमः मणिपूरे न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आधारशक्तये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदयप्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ प्रकृतये नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कूर्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अनन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृँ पृथिव्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ रत्नद्वीपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कल्पवृक्षाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मणिमण्डपाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ स्वर्णसिंहासनाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ धर्माय नमः दक्षिणस्कन्धे न्यस्यामि। दक्षिणस्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्ञँ ज्ञानाय नमः वामस्कन्धे न्यस्यामि। वामस्कन्ध का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वैराग्याय नमः दक्षोरौ न्यस्यामि। दक्षोरु का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ ऐश्वर्याय नमः वामोरौ न्यस्यामि। वामोरु का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अधर्माय नमः मुखे न्यस्यामि। मुख का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अज्ञानाय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि। दक्षिण पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अवैराग्याय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अनैश्वर्याय नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि। वाम पार्श्व का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कल्पान्तकायानन्ताय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ पद्माय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आनन्दकन्दाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ संविन्नालाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ वह्निमण्डलाय नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ धूम्रार्चिषे नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ ऊष्मायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ ज्वलिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ ज्वालिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ सुश्रियै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ स्वरूपायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ कपिलायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ हव्यवाहनायै नमः नाभौ न्यस्यामि। नाभि प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ मँ सूर्यमण्डलाय नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ भँ तपिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ बँ तापिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ फँ धूम्रायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ पँ मरीच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ धँ रुच्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ दँ सुषुम्णायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ थँ भोगदायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ तँ विश्वायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ढँ धारिण्यै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ डँ क्षमायै नमः अनाहते न्यस्यामि। हृदय प्रदेश स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अमृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ मानदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ पूषायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ तुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ पुष्ट्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ रत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ धृत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ शशिन्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ चण्डिकायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ कान्त्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ ज्योत्स्नायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ श्रियै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ प्रीत्यै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ अङ्गदायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ पूर्णायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः पूर्णामृतायै नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि। भ्रूमध्य का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ सत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ रजसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ तमसे नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आत्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अन्तरात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ परमात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्ञँ ज्ञानात्मने नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मायातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कलातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विँ विद्यातत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ परतत्त्वाय नमः ललाटे न्यस्यामि। ललाट प्रदेश का स्पर्श करे।

पीठ देवताओं का लेलिहानमुद्रा से न्यास के बाद हृत्पद्म (हृदय प्रदेश में दिव्य-प्रकाशमान स्थल पर कल्पित रक्तवर्ण पद्म) में पीठशक्तियों का न्यास करे, हृदय प्रदेश में अष्टपत्रात्मक कमलपत्रों का ध्यान करके उसके पत्रों पर क्रमशः वामावर्त लेलिहान्मुद्रा मे न्यास करने के बाद उस कमल की मध्य कर्णिका में प्राणशक्ति की स्थापना करके मानसोपचार पूजन करे।

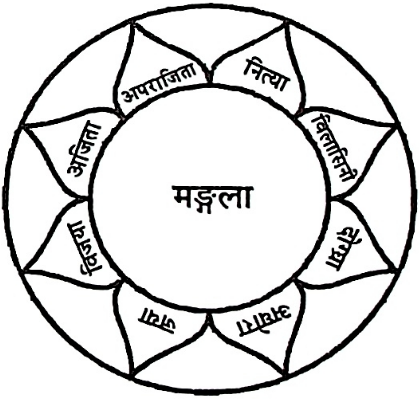

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ जयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ विजयायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ अजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजितायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ नित्यायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ विलासिन्यै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ दोग्घ्रायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ अघोरायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ मङ्गलायै नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रोँ पीठाय नमः हृदये न्यस्यामि। हृदय प्रदेश का स्पर्श करे।

मध्यकर्णिका में प्राणशक्तिदेवी का ध्यान करे।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलंकपालंदधतींकराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश-अंकुश-धनुष-खड्ग-बाण-शूल-कपाल से शोभायमान, रक्तवर्ण तथा तीननेत्रों वाली प्राणदेवी को प्रणाम॥१॥

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुण-सरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥२॥

रक्त के समुद्र में पोत पर उल्लसित अरुण वर्ण के कमल पर अधिरुढ़ हाथों में धनुष-दण्ड-इक्षुद्भव-बाण-अंकुश तथा पञ्चबाण धारण की हुई, रक्त बहते हुए कपालों की माला धारण की हुई, उदयकालिका सूर्य के समान वर्ण वाली त्रिनेत्र परा देवी प्राणशक्ति हमारे लिये सुखकारी हो सदा सर्वत्र हमारे हृदय में वास करें तथा सतत शत्रुओं और कालुष्य से रक्षा करें॥२॥

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतापूजनयन्त्रम्

अपने अन्तःकरण में सहस्रारचक्र के मध्य कर्णिका के केशरों को कल्पवृक्ष के रूप में चिन्तन करते हुए मध्य में विभिन्न प्रकार के रत्नों-मणियों का द्वीप चिन्तन करके विभिन्न प्रकार के रत्नजटित सिंहासन का चिन्तन करते हुये उस पर श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी के श्रीचक्र ध्यान करे अथवा हृदय प्रदेश में अधोलिखित स्वरूपवाला बिन्दु-त्रिकोण-वृत्त-अष्टकोण वृत्त-अष्टदल-अन्तःअष्टदल-त्रिवृत्त एवं भूपुरत्रयात्मक यन्त्र चिन्तन करके लेलिहान मुद्रा से मध्य बिन्दु में श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता तथा यन्त्र के त्रिकोणादि में श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता के परिवार (आवरणदेवताओं) की प्रतिष्ठा करके विधिवत् मानसोपचारात्मक षोडशोपचार विधि से पूजन करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी को समर्पित करे।

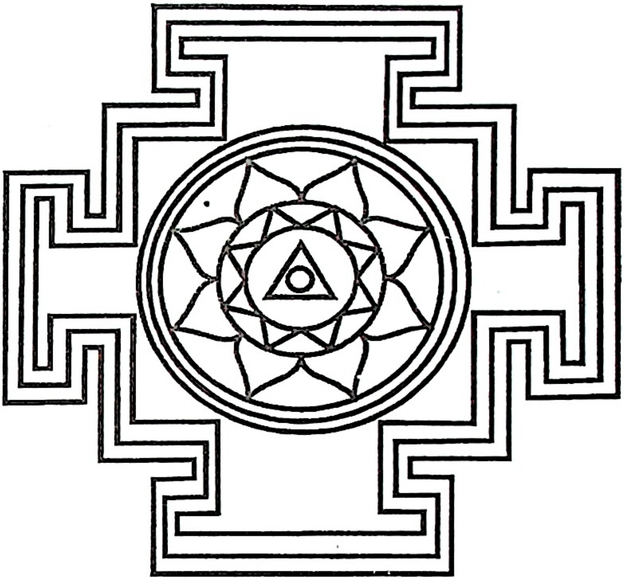

प्राणप्रतिष्ठा—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्तभूपुर त्रयात्मक यन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्तभूपुर त्रयात्मक यन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्तभूपुर-त्रयात्मकयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ध्यानम्—हृदय प्रदेश में दिव्य प्रकाश के रूप में ध्यान करे—

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

खड्ग-कपाल-डमरु और त्रिशूल धारण की हुई, चन्द्रकलाओं को धारण की हुई, ऊपर उठे काले काले केशों वाली, बड़े बड़े दांतों वाली, भद्रकाली हमारे लिए कल्याण करने वाली हो।

ॐ मनोर्जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳬसमिमन्द-धातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोइँम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

मूलमन्त्र:—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।** मूलमन्त्र का अष्टोत्तरशत जप करे।

मातृकान्यासः

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषि:, गायत्री छन्द:, मातृकासरस्वतीदेवता, हलो बीजानि, स्वरा: शक्तय:, क्षं कीलकं, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

प्रणायामः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐं ओँ औँ अँ अः। पूरक करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ। कुम्भक करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ। रेचन करे।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईं गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐं हल्भ्योबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

प्राणायाम तथा कराङ्गन्यास करने के बाद अन्तर्लिपि न्यास करे, **अन्तर्लिपि न्यास** मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा तथा सहस्रार **चक्रों के पत्रों पर** क्रमशः मूलाधार से प्रारम्भ कर सहस्रार चक्र तक किया जाता है।

अन्तर्मातृकान्यासः

ध्यानम्—हृदय प्रदेश में दिव्य प्रकाश बिन्दु में ध्यान करे—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोः यन्मध्यवक्षस्थल,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ।
मुद्राभक्षणगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्ताम्बुजेः,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

पचास लिपियों में विभक्त, समस्त सुख को प्रदान करनेवाली, जो वक्षस्थल **(हृदय)** में रहनेवाली, सभी चन्द्रमौली से निबद्ध होकर खिले हुए स्तनोंवाली, आनन्द **रूपी** अमृत का भक्षण करनेवाली, हाथ में समस्त ज्ञान की व्याख्याओं को धारण किये हुए, फैले हुए प्रकाश के समान, तीन नेत्रोंवाली वाणी के देवता शारदा के रूप में **स्थित** सरस्वती देवी की वन्दना करता हूँ।

मानसोपचारपूजनविधिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः।

मानसोपचार पूजन के बाद षड्चक्रों का न्यास करे—

चक्रन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धुम्राभे षोडशदलपद्मे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदलपद्मे प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदलपद्मे नाभ्योरुपरि मणिपुरे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युत्सन्निभे षड्दलपद्मे स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ शँ षँ सँ ळँ नमः सुवर्णाभे चतुर्दलपद्मे मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ क्षँ नमः द्विदलपद्मे चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते अकखादि त्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते ॐ परबिन्दुभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक बिन्दुचिदात्मक ध्यान करके उससे टपकते हुए अमृत के द्वारां सभी मातृकाओं का तर्पण (सिंचन) करने बाद ध्यान करे।

ध्यानम्—अन्तःकरण में श्लोक वर्णित रूप का ध्यान करे।

> **आधारे लिङ्गनाभे प्रगटितहृदये तालुमूले ललाटे,**
> **द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदले दशारे षड्चतुष्के।**
> **वासन्ते बलमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणां,**
> **हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥**

आधार (मूलाधार) के चार पत्रों में वल प्रत्याहार के रूप में, लिङ्ग (स्वाधिश्ठान) के छः पत्रों में बल प्रत्याहार के रूप में नाभि (मणिपुर) के दश पत्रों में डफ प्रत्याहार के रूप में, हृदये (अनाहत) के द्वादश पत्रों में कठ प्रत्याहार के रूप में, तालुमूल (विशुद्ध) षोडश पत्रों में समस्त स्वर रूप में, ललाटे (आज्ञा) के दो पत्रों में हं, क्षं वर्ण रूप में, सहस्रार में समस्त वर्ण रूप में सभी चक्रकमलदलों वर्ण रूपी वर्णमातृकादेवी को नमस्कार करते हैं नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्वविधि से मानसोपचार पूजन करने के बाद षट्चक्रों के तत्त्वों का न्यास करे—

चक्रतत्त्वन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लँ पृथ्वीतत्त्वाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वँ जलतत्त्वाय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रँ अग्नितत्त्वाय नमः मणिपुरे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यँ वायुतत्त्वाय नमः अनाहते न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हँ आकाशतत्त्वाय नमः विशुद्धचक्रे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हँ ळँ क्षँ मनोबुद्धितत्त्वाय नमः आज्ञाचक्रे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ चिदाहङ्कारात्मने नमः सहस्रारे न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से न्यास करे।

बहिर्मातृकान्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः क्षंकीलकं अखिलाप्तये श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताप्रीतये विनियोगः।

प्राणायामः—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करे—

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्योबीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

साधकों को क्रमशः सृष्टि-स्थिति-संहार भेद से तीन प्रकार से मातृका न्यास करना चाहिये।

स्थित्यादौ तु गृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणाम्।
संहारादौ यतिनाञ्च मातृका न्यासमाचरेत्॥१॥

गृहस्थों को पहले स्थिति क्रम से, ब्रह्मचारियों को सृष्टि क्रम से तथा यतियों को संहार क्रम से मातृका न्यास करना चाहिये॥१॥

नाभावारभ्यते यस्तु हृदये च समाप्यते।
स्थितिन्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्टफलप्रदः॥२॥

नाभि से आरम्भ करके हृदय पर परिसमाप्ति तक दृष्ट तथा अदृष्ट समस्त फल को देने वाला स्थिति न्यास कहा गया है॥२॥

विद्याकामे योनिबीजाद्यः श्रीकामे रमाद्यस्तथा।
वश्येकामाद्यः स्तम्भने स्थिरमाद्यादि विज्ञेयः॥३॥

विद्या की कामना से योनिबीज आगे करके, श्री की कामना से ऐश्वर्यबीज आगे करके तथा वशीकरण की कामना से कामबीज आगे करके, तथा स्तम्भन की कामना से क्रोधबीज आगे करके न्यास करना चाहिये, इस प्रकार सृष्टिस्थितिसंहार न्यास जानना चाहिये॥३॥

विद्या की कामना से **ऐंँ**बीज लगाकर, श्री की कामना से **श्रींँ**बीज लगाकर, वशीकरण की कामना से **क्लींँ**बीज लगाकर, स्तम्भन कार्य में **ह्लींँ**बीज लगाकर अथवा सर्व कामना से त्रितारी **ऐंँ ह्रींँ श्रींँ** युक्त करके न्यास करना चाहिये। ब्राह्मण भक्त अपने ब्रह्मत्व की सिद्धि के लिए अपने गुरु के द्वारा बताये हुए बीजों को लगाकर न्यास करे। अथवा सम्प्रदाय के अनुसार बीजों का चयन करना चाहिए।

ध्यानम्—

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं,
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयीं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्तीं स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥

श्वेत हंस पर आरूढ गगन में भ्रमण करती हुई, दक्षिण हाथ में अक्षसूत्र धारण की हुई, बायें हाथ में दिव्य सुवर्ण के समान ज्ञान प्रदान करने वाली पुस्तक धारण की हुई, वीणा बजाती हुई, शास्त्र विज्ञान के ज्ञानराशि को दिव्य रूप से जपती हुई भारती हमपर प्रसन्न हों।

सिन्दूरकान्तिमसिताभरणां त्रिनेत्रां,
विद्याक्ष-सूत्र-मृगपोत-वरं दधाना।

पार्श्वस्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गी,
ध्याये कराब्जधृत-पुस्तक-वर्णमालाम्॥

सिन्दूर की कान्तिवाले आभूषणों से सुसज्जित, तीन नेत्रोंवाली, विद्यारूपी अक्षमाला धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, सुवर्ण के सदृश अङ्गोंवाली, हाथ में पुस्तक और वर्णमालाओं को धारण करनेवाली सरस्वती देवी का ध्यान करता हूँ।

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्वविधि से मानसोपचारपूजन करे—

सृष्टिन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षँ प्राणात्मनेज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

सृष्टि न्यास करने के बाद स्थिति न्यास करे।

स्थितिन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

स्थिति न्यास करने के बाद संहार न्यास करे।

संहारन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।

मातृका न्यास के बाद तत्त्वन्यास करे—

तत्त्वन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे आत्मतत्त्वाय नमः पादादिनाभिपर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से पैर से नाभि तक स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष विद्यातत्त्वाय नमः नाभ्यादिहृदयपर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से नाभि से हृदय तक स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा शिवतत्त्वाय नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तं न्यस्यामि। लेलिहानमुद्रा से हृदय से शिर तक स्पर्श करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा नमः सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्यामि। मूलमन्त्र से नवबार पूरे शरीरपर स्पर्श करते हुए व्यापकन्यास करे।

न्यासविधिः परिपूर्णम्

•

मन्त्रसंस्कारविधिः

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत**

मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागिरथ्याः पश्चिमे तटे) विक्रमशके वौद्धावतारे---नामसंवत्सरे--अयने--ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्य पवित्रमासे--मासे--पक्षे--तिथौ--वासरे --नक्षत्रे--योगे--करणे--राशिस्थिते श्रीचन्द्रे--राशिस्थिते श्रीसूर्ये--राशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ--गोत्रः--प्रवरः--नामाऽहं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतामन्त्रस्य छिन्नत्वादिपञ्चाशद्दोषपरिहारार्थं आराध्यकर्मणे विघ्नविच्छेदजनितप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीइष्टदेवताप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थं जननादिसंस्काराणि कर्म करिष्ये।

शापोद्धारः

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरा मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को **(हस्रौं)** बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करे—

हस्रौं ॐ हस्रौं, हस्रौं ऐं हस्रौं, हस्रौं ह्रीं हस्रौं, हस्रौं श्रीं हस्रौं, हस्रौं प्र हस्रौं, हस्रौं त्य हस्रौं, हस्रौं ङ्गि हस्रौं, हस्रौं रे हस्रौं, हस्रौं म हस्रौं, हस्रौं म हस्रौं, हस्रौं र हस्रौं, हस्रौं क्ष हस्रौं, हस्रौं र हस्रौं, हस्रौं क्ष हस्रौं, हस्रौं म हस्रौं, हस्रौं म हस्रौं, हस्रौं श हस्रौं, हस्रौं त्रू हस्रौं, हस्रौं न् हस्रौं, हस्रौं भ हस्रौं, हस्रौं क्ष हस्रौं, हस्रौं भ हस्रौं, हस्रौं क्ष हस्रौं, हस्रौं स्वा हस्रौं, हस्रौं हा हस्रौं।

उत्कीलनम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरा मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को **(हस्क्लीं)** बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

हस्क्लीं ॐ हस्क्लीं, हस्क्लीं ऐं हस्क्लीं, हस्क्लीं ह्रीं हस्क्लीं, हस्क्लीं श्रीं हस्क्लीं, हस्क्लीं प्र हस्क्लीं, हस्क्लीं त्य हस्क्लीं, हस्क्लीं ङ्गि हस्क्लीं, हस्क्लीं रे हस्क्लीं, हस्क्लीं म हस्क्लीं, हस्क्लीं म हस्क्लीं, हस्क्लीं र हस्क्लीं, हस्क्लीं क्ष हस्क्लीं, हस्क्लीं र हस्क्लीं, हस्क्लीं क्ष हस्क्लीं, हस्क्लीं म हस्क्लीं, हस्क्लीं म हस्क्लीं, हस्क्लीं श हस्क्लीं, हस्क्लीं त्रू हस्क्लीं, हस्क्लीं न् हस्क्लीं, हस्क्लीं भ हस्क्लीं, हस्क्लीं क्ष हस्क्लीं, हस्क्लीं भ हस्क्लीं, हस्क्लीं क्ष हस्क्लीं, हस्क्लीं स्वा हस्क्लीं, हस्क्लीं हा हस्क्लीं।

चेतनम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरा मन्त्र को **(ईं ऐं ओं)**

बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

ईं ऐं औं ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ईं ऐं औं।

आह्लादनीम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहायुक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को **(ॐ क्लीं नमः)** बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

ॐ क्लीं नमः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ क्लीं नमः।

तेजोद्दीपम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को **(वदवदवाग्वादिनी)** बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

वदवदवाग्वादिनी ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा वदवदवाग्वादिनी।

मन्त्राभ्यजननम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को **(लोमविलोममातृका)** बीज से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ लृँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ।

सूतकनिवारणम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को वाला मन्त्र **(ऐं क्लीं सौः)** से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

ऐं क्लीं सौः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ऐं क्लीं सौः।

उभयसूतकत्यागः

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को प्रणव (ॐ) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन कर एक माला (१०८) जप करे—

ॐ ॐ ॐ, ॐ ऐँ ॐ, ॐ ह्रीँ ॐ, ॐ श्रीँ ॐ, ॐ प्र ॐ, ॐ त्य ॐ, ॐ ङ्गि ॐ, ॐ रे ॐ, ॐ म ॐ, ॐ म ॐ, ॐ र ॐ, ॐ क्ष ॐ, ॐ र ॐ, ॐ क्ष ॐ, ॐ म ॐ, ॐ म ॐ, ॐ श ॐ, ॐ त्रू ॐ, न् ॐ, ॐ भ ॐ, ॐ क्ष ॐ, ॐ भ ॐ, ॐ क्ष ॐ, ॐ स्वा ॐ, ॐ हा ॐ।

मन्त्रप्रत्यक्षम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को लक्ष्मीबीज (**श्रीँ**) से सम्पुटितकर लिखे तथा षोडशोपचारविधि से पूजन करके दस माला (१०००) जप करे—

श्रीँ ॐ श्रीँ, श्रीँ ऐँ श्रीँ, श्रीँ ह्रीँ श्रीँ, श्रीँ श्रीँ श्रीँ, श्रीँ प्र श्रीँ, श्रीँ त्य श्रीँ, श्रीँ ङ्गि श्रीँ, श्रीँ रे श्रीँ, श्रीँ म श्रीँ, श्रीँ म श्रीँ, श्रीँ र श्रीँ, श्रीँ क्ष श्रीँ, श्रीँ र श्रीँ, श्रीँ क्ष श्रीँ, श्रीँ म श्रीँ, श्रीँ म श्रीँ, श्रीँ श श्रीँ, श्रीँ त्रू श्रीँ, श्रीँ न् श्रीँ, श्रीँ भ श्रीँ, श्रीँ क्ष श्रीँ, श्रीँ भ श्रीँ, श्रीँ क्ष श्रीँ, श्रीँ स्वा श्रीँ, श्रीँ हा श्रीँ।

मन्त्र प्रत्यक्ष संस्कार करने के बाद मन्त्र प्राणस्थापन करे—

प्राणस्थापनम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को वाग्भव बीज (**ऐँ**) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

ऐँ ॐ ऐँ, ऐँ ऐँ ऐँ, ऐँ ह्रीँ ऐँ, ऐँ श्रीँ ऐँ, ऐँ प्र ऐँ, ऐँ त्य ऐँ, ऐँ ङ्गि ऐँ, ऐँ रे ऐँ, ऐँ म ऐँ, ऐँ म ऐँ, ऐँ र ऐँ, ऐँ क्ष ऐँ, ऐँ र ऐँ, ऐँ क्ष ऐँ, ऐँ म ऐँ, ऐँ म ऐँ, ऐँ श ऐँ, ऐँ त्रू ऐँ, ऐँ न् ऐँ, ऐँ भ ऐँ, ऐँ क्ष ऐँ, ऐँ भ ऐँ, ऐँ क्ष ऐँ, ऐँ स्वा ऐँ, ऐँ हा ऐँ।

मन्त्रस्पन्दनवह्निः

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को प्रणव पुटित माया बीज (**ॐ ह्रीँ ॐ**) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार विधि से पूजन करके एक माला (१०८) जप करे—

ॐ ह्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ ह्रीँ ॐ।

भोजपत्र पर चन्दन से त्रिकोण बनाकर उसके बाहर अकारादि क्रम से क्षकारान्त

लिखे, अधोमुख शीर्षकोण से वामभुजा पर प्रारम्भ करके वामभुजा पर अँ से अः तक तथा ऊर्ध्व भुजा पर कँ से प्रारम्भ करके तँ तक और दक्ष भुजा पर थँ से प्रारम्भ कर सँ तक लिखकर पूर्ण करे, इस त्रिकोण के मध्य में स्वाहायुक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को प्रणव युक्त हंस मन्त्र (**ॐ सोऽहं हंसः**) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करे—

मन्त्रदीपनम्

ॐ सोऽहं हंसः ॐ ऐं ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ सोऽहं हंसः।

मन्त्रताडनम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को प्रणव तथा फट् युक्त वायु बीज (**ॐ यँ फट्**) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करते हुए ताडन मार्जन करे—

ॐ यँ फट् ऐं ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ यँ फट्।

मन्त्रनिबोधनम्

करबीरपत्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को कूर्चबीज (**हूँ**) से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके पचास माला (५०००) जप करे—

हूँ ॐ हूँ, हूँ ऐं हूँ, हूँ ह्रीं हूँ, हूँ श्रीं हूँ, हूँ प्र हूँ, हूँ त्य हूँ, हूँ ङ्गि हूँ, हूँ रे हूँ, हूँ म हूँ, हूँ म हूँ, हूँ र हूँ, हूँ क्ष हूँ, हूँ र हूँ, हूँ क्ष हूँ, हूँ म हूँ, हूँ म हूँ, हूँ श हूँ, हूँ त्रू हूँ, हूँ न् हूँ, हूँ भ हूँ, हूँ क्ष हूँ, हूँ भ हूँ, हूँ क्ष हूँ, हूँ स्वा हूँ, हूँ हा हूँ।

मन्त्रअभिषेचनम्

भोजपत्र पर रक्तचन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को **(अभिषिञ्चामि)** से युक्त कर लिखे तथा षोडशोपचारपूजन करके दस माला (१०००) जप करते हुए अभिषेक करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अभिषिञ्चामि।

मन्त्रदाहनम्

रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ ॐ रँ रँ ऐँ रँ रँ ह्रीँ रँ रँ श्रीँ रँ रँ प्र रँ रँ त्य रँ रँ ङ्गि रँ रँ रे रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ म रँ रँ मँ रँ रँ र रँ रँ क्षँ रँ रँ र रँ रँ क्षँ रँ रँ म रँ रँ म रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ श रँ रँ त्रू रँ रँ न् रँ रँ भ रँ रँ क्ष रँ रँ भ रँ रँ क्ष रँ रँ स्वा रँ रँ हा रँ
रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ रँ

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को अग्निबीज **(रँ)** से चतुर्दिक सम्पुटित कर चित्रानुसार लिखे (मूलमन्त्र के प्रत्येक वर्णों को अलग अलग लिखे और प्रत्येक वर्णों के मध्य में दो बार रँ बीज लिखे तथा प्रत्येक वर्णों के ऊपर तथा नीचें भी रँ बीज से सम्पुटित करे) तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करे—

रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा रँ।

मन्त्रविमलीकरणम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहायुक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को प्रणव तथा वषट्युक्त शिवबीज **(ॐ ह्रौँ वषट्)** से सम्पुटित करके लिखे तथा षोडशोपचारपूजन कर दसमाला (१०००) जप करे—

ॐ ह्रौँ वषट् ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ ह्रौँ वषट्।

मन्त्रपुनर्जीवनम्

ताम्रपात्र अथवा भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को **(वषट्)** बीज से सम्पुटित करके लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दसमाला (१०००) जप करे—

वषट् ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा वषट्।

मन्त्रप्रोक्षणम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र को प्रणव युक्त **(ॐ क्रौं)** से सम्पुटित करके लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके एक माला (१०८) जप करते हुए कुशा द्वारा प्रोक्षण करे—

ॐ क्रौं ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ क्रौं।

मन्त्रआप्यायनम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को पराबीज **(ह्सौं)** से सम्पुटित कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दसमाला (१०००) जप करे—

ह्सौँ ॐ ह्सौँ, ह्सौँ ऐँ ह्सौँ, ह्सौँ ह्रीँ ह्सौँ, ह्सौँ श्रीँ ह्सौँ, ह्सौँ प्र ह्सौँ, ह्सौँ त्य ह्सौँ, ह्सौँ ङ्गि ह्सौँ, ह्सौँ रे ह्सौँ, ह्सौँ म ह्सौँ, ह्सौँ म ह्सौँ, ह्सौँ र ह्सौँ, ह्सौँ क्ष ह्सौँ, ह्सौँ र ह्सौँ, ह्सौँ क्ष ह्सौँ, ह्सौँ म ह्सौँ, ह्सौँ म ह्सौँ, ह्सौँ श ह्सौँ, ह्सौँ त्रू ह्सौँ, ह्सौँ न् ह्सौँ, ह्सौँ भ ह्सौँ, ह्सौँ क्ष ह्सौँ, ह्सौँ भ ह्सौँ, ह्सौँ क्ष ह्सौँ, ह्सौँ स्वा ह्सौ, ह्सौँ हा ह्सौँ।

मन्त्रतर्पणम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को **(स्वधा)** बीज तथा प्रत्यङ्गिरागायत्री से युक्त कर लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करते हुए दूध, दही, घी, शहद, शक्कर तथा जल से तर्पण करे—

स्वधा ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विद्महे तत् प्रधानाय धीमहि तन्नो देवि प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रचोदयात् प्रत्यङ्गिरादेवतां तर्पयामि।

मन्त्रपुनर्दीपनम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरा मन्त्र को प्रणव युक्त काली बीज ॐ क्रीँ से सम्पुटित करके लिखे तथा षोडशोपचार पूजन करके दस माला (१०००) जप करे—

ॐ क्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ क्रीँ।

मन्त्रगोपनम्

भोजपत्र पर चन्दन से स्वाहा युक्त प्रत्यङ्गिरामन्त्र के प्रत्येक अक्षर को कालीबीज **(क्रीँ)** से सम्पुटित करके लिखे तथा षोडशोपचार पूजन कर दसमाला (१०००) जप करते हुए तर्पण करे—

क्रीँ ॐ क्रीँ, क्रीँ ऐँ क्रीँ, क्रीँ ह्रीँ क्रीँ, क्रीँ श्रीँ क्रीँ, क्रीँ प्र क्रीँ, क्रीँ त्य क्रीँ, क्रीँ ङ्गि क्रीँ, क्रीँ रे क्रीँ, क्रीँ म क्रीँ, क्रीँ म क्रीँ, क्रीँ र क्रीँ, क्रीँ क्ष क्रीँ, क्रीँ र क्रीँ, क्रीँ क्ष क्रीँ, क्रीँ म क्रीँ, क्रीँ म क्रीँ, क्रीँ श क्रीँ, क्रीँ त्रू क्रीँ, क्रीँ न् क्रीँ, क्रीँ भ क्रीँ, क्रीँ क्ष क्रीँ, क्रीँ भ क्रीँ, क्रीँ क्ष क्रीँ, क्रीँ स्वा क्रीँ, क्रीँ हा क्रीँ।

उपर्युक्त प्रकार से संस्कार करके पुन: मूलमन्त्र का विधिवत् पुरश्चरण करने से सद्य: प्रत्यक्ष मन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है।

मन्त्रसंस्कारविधि: परिपूर्णम्

अन्तःपूजाविधिः

बाह्याभ्यान्तर भेद से पूजा दो प्रकार की होती है। सर्वप्रथम आभ्यन्तर पूजा करना अनिवार्य है। मूल मन्त्र से तीन बार आचमन कर तत्त्वाचमन करे।

तत्त्वाचमनम्—जल से मन्त्र बोलते हुए आचमन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

प्राणायामः—मूल मन्त्र को एक बार जपते हुए पूरक, चार बार जपते हुए कुम्भक तथा दो बार जपते हुए रेचन करे, इस प्रकार तीन प्राणायाम करने के बाद कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करे, सर्वप्रथम मूलाधार में चतुर्दल कमल के मध्य कर्णिका के बीच में स्वयंभू लिङ्ग को साढ़े तीन बार लपेटी हुई सूक्ष्म तडितविद्युत की तरह तेजोवान ध्यान करे।

कुण्डलिनीध्यानम्—

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीं,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतां रूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

सोई हुई विद्युत के समान प्रभावाली, भुजग के समान आकृति वाली, साढ़े तीन वलय वाली, सौदामिनी कोटि की आभा वाली, स्वयं भू लिङ्ग को आविष्ट की हुई, इष्टदेवता रूपिणी, मूलाधार निवासिनी, अतिसूक्ष्म कुण्डलिनीशक्ति का ध्यान करता हूँ।

कलयतीति कलिका, कलिका इव कालिका महाकाल शिवे कलयतीति

विचरतीति, शक्तिरूपे वासयतीति कालिका महाकाल कालिका। तडितविद्युताकारा सार्द्धत्रिवलयान्विता परमापराशक्तिः कुण्डलाकृतिरूपा मूलाशक्तिः कुण्डलिनीशक्तिः इति महाकाल कालिका। महाकालकलना शक्तिः कालिका।

सर्व प्रथम गुदा भाग और लिङ्ग मूल के बीच में सीवनी स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी के पुच्छ भाग में ऊपर कन्द स्थान में चतुर्दल कमलात्मक मूलाधार के चारों पत्रों पर वामावर्त क्रम से **वँ शँ षँ सँ** मातृका वार्णों तथा पद्म के मध्य कर्णिका में **ळँ** बीजात्मक पृथ्वीतत्त्व, उसके ऊपर **दीपकलिकाकृति**स्वरूप भूलिङ्गात्मक अङ्गुष्ठ प्रवर प्रमाणात्मक जीव को सार्द्धत्रिवलयान्वित अतिसूक्ष्म विद्युताकृतिरूप कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर **सोऽहं हंसः** मन्त्र से प्रसुप्तकुण्डलिनीशक्ति को जगाकर मानसोपचार पूजन कर उसके मुख में कमल पत्रों पर स्थित समस्तमातृकावर्णों के सहित पृथ्वीतत्त्वात्मक **ळँ** बीज तथा भूलिङ्ग को धारण कराकर मूलाधार के चार अङ्गुल ऊपर लिङ्गमूल स्थान के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही षड्दलात्मक कमल स्वाधिष्ठान चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही क्रमशः **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** मातृका वर्णो के साथ पद्म के मध्य कर्णिका में जलतत्त्वात्मक **वँ** बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर उसके चार अङ्गुल ऊपर नाभि के ठीक सामने रीढ़ की हड्डी में ही दशदलात्मक मणिपुर पद्म के पत्रों पर वामावर्त क्रम से ही **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** मातृका वार्णो के सहित कमल के मध्य कर्णिका में अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज का ध्यान करके समस्त मातृकाओं के सहित अग्निबीज को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर मणिपुर कमल से द्वादशाङ्गुल ऊपर द्वादशदलात्मक अनाहत पद्म के सभी पत्रों पर क्रमशः **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** मातृका वर्णों तथा कमल के मध्य वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज का ध्यान करके मातृका वर्णों के सहित वायुबीज को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर अनाहत चक्र के ऊपर षोडशदलात्मक विशुद्ध चक्र के पत्रों पर वामावर्त क्रम से **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** मातृका वर्णो के सहित चक्र के मध्य कर्णिका में आकाश तत्त्वात्मक **हँ** बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर द्वादशाङ्गुल ऊपर भ्रूमध्य में द्विदलात्मक आज्ञा चक्र के पत्रों पर **हँ** तथा **क्षँ** मातृका वर्णों के सहित मध्य कर्णिका में मनोबुद्धितत्त्वात्मक बीज का ध्यान कर कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराकर आज्ञा चक्र से दो अङ्गुल ऊपर से मूर्धा में सहस्रदलपद्म के समस्त पत्रों पर बीसबार **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ** तक के मातृका वर्णों का वामावर्त क्रम से, मध्य कर्णिका में केशरों को कल्पवृक्ष के रूप में तथा उन कल्पवृक्षों के मध्य में चिदाहङ्कारात्मक परमात्मा सर्वतत्त्वबीजरूपशिव का ध्यान कर समस्त मातृकादि सहित बीज तथा जीव कुण्डलिनी शक्ति का शिव में विलय करा दे और

दोनों के एकभावरूप शिवशक्ति का ध्यान कर मानसषोडशोपचार पूजन करके उनके पादतल से टपकते हुए अमृतद्रव से समस्त शरीरादि का सिंचन करे, पुनः शिवशक्त्यैक्य रूप से शक्ति को अलग करके सहस्रार से आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान से क्रमशः मूलाधार पद्म में लाकर उसके मध्य कर्णिका में स्थापित करके शक्ति के शरीर से ही शुद्धकलिकाकार ज्योति को प्रकट कराकर स्थापित कर उस ज्योति को इष्टदेवता के रूप में ध्यान करे, विधिवत् ध्यान करने के बाद इष्टदेवता का सांकल्पिक रूप से षोडशोपचार विधिवत् मानसपूजन करके अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता को जप समर्पित करे।

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितबालयुग्मभयदां मुण्डस्रजां मालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिरः खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभितिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदाप्रत्यङ्गिराम्॥

मेघ जैसी आभा वाली, निरावरण, त्रिनेत्र धारण करने वाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालो (वालशव) को धारण किये हुए, अभय प्रदान करने वाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करने वाली, उनकें बायें तरफ के ऊपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर (कपाल) शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केशों वाली, शिव के सहित कालिका स्वरूपिणी प्रत्यङ्गिरादेवी की सदा वन्दना करता हूँ।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ भव आत्मनि।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाषिता॥

महादेव की शक्तिरूपिणी देवेशी प्रत्यङ्गिरादेवी का स्वागत है, हमारे आत्मा में सन्निधित्व प्राप्त करे तथा मानसीपूजा को ग्रहण करके यथार्थ को परिभाषित करे।

पूजन कर तत्तद् मुद्राओं को प्रदर्शित कर अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर देवी को समर्पित करे।

अन्त:पूजाविधि: परिपूर्णम्

अक्षमालाजपविधि:

जप के लिए अक्षमाला का ही प्रयोग किया जाता है, इसी माला का अन्त:पूजनादि, ध्यानादि क्रम में प्रयोग किया जाता है, इस माला का ज्ञान किसी भी परमात्म साधक के लिए अतिअनिवार्य है, बिना अक्षमाला ज्ञान के मानसविधि में जप नहीं हो सकता है, बाह्यजपादि उन उपासकों के लिए है, जो साधक तन्त्रविधि से दीक्षा नहीं लेते हैं, उनकों अक्षमालादि का ज्ञान नहीं होता है, उन सम्प्रदायों में अक्षमाला का प्रतीक रुद्राक्ष

की माला का प्रयोग करते है, जिसका समयी कृत्यों में प्रयोग ही नहीं किया जा सकता है, अत: यहाँ केवल अक्षमाला का ही प्रयोग होगा।

अकारादारभ्य क्षकारपर्यन्तमक्षमालाम्। अर्थात् अकार से प्रारम्भ करके क्षकार तक मातृकाओं से मन्त्र युक्त कर मन्त्र जपने को ही अक्षमाला से जप कहते हैं। सर्वप्रथम विशुद्ध चक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए पुन: अनाहत में ककार से प्रारम्भ करके क्रमश: ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक फिर मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक फिर मूलाधार में वकार से सकार **वँ शँ षँ सँ** तक जपने के पश्चात् मूलाधार के मध्य कर्णिका में **ळं** बीज, स्वाधिष्ठान में **वं** बीज, मणिपुर में **रं** बीज, अनाहत में **यं** बीज, विशुद्ध में **हं** बीज, जप करते हुए पुन: विपरीत क्रम से जप करते हुए आकाशतत्त्वात्मक **हँ** बीज वायुतत्त्वात्मक **यँ** बीज, अग्नितत्त्वात्मक **रँ** बीज, जल तत्त्वात्मक **वँ** बीज तथा भूततत्त्वात्मक **ळँ** बीज से युक्त कर जप के पश्चात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, तथा विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित वर्णों के साथ जप करते हुए, अकार तक आये तथा आज्ञा चक्रस्थित उसी दल के मध्यकर्णिका में स्थित हकारात्मक शिवयुक्त क्षकारात्मक इष्टदेवी श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता को जप समर्पण करे यथा आगे निर्देश किया गया है—

विशुद्ध चक्र के षोडश पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

विशुद्धचक्र के पत्रों पर स्थित अकार से अ:कार तक के **अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः** समस्त वर्णों का ध्यान करते हुए ज़प करे।

ॐ अँ ॐ ऐं ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

ॐ आँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ इँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ईँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ उँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ऊँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ॠँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ लृँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ लॄँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ एँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ऐँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ओँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ औँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ अः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

अनाहत के द्वादश पत्रों पर कठ प्रत्याहार के वर्ण

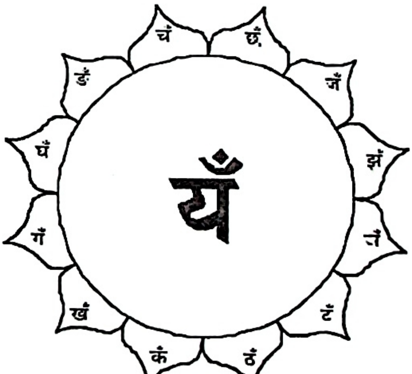

अनाहतचक्र में ककार से प्रारम्भ करके क्रमशः ठकार **कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

ॐ कँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ खँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

ॐ गँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ घँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ चँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ छँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ जँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ झँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ टँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ठँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मणिपुर के दश पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

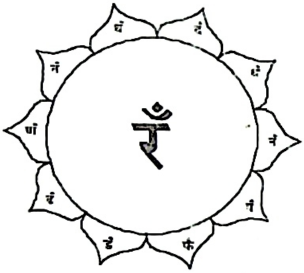

मणिपुर में डकार से फकार **डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ** तक के वर्णो के साथ संयुक्त करके प्रत्येक वर्णो में देवी का स्वरूप ध्यान पूर्वक जप करे।

ॐ डँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्षं स्वाहा।
ॐ णँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ तँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ थँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ दँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ धँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ नँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ पँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्षं मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ फँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

स्वाधिष्ठान के छः पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

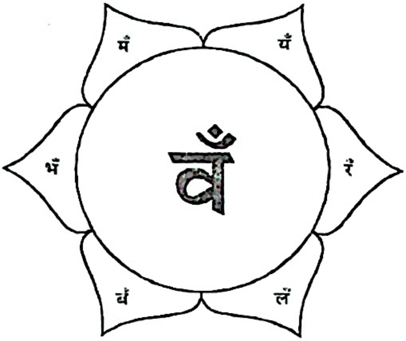

स्वाधिष्ठान में बकार से लकार **बँ भँ मँ यँ रँ लँ** तक के वर्णों के साथ संयोग करके प्रत्येक वर्णों में देवी का स्वरूप ध्यानपूर्वक जप करे।

ॐ बँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ भँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ मँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ लँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मूलाधार के चार पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

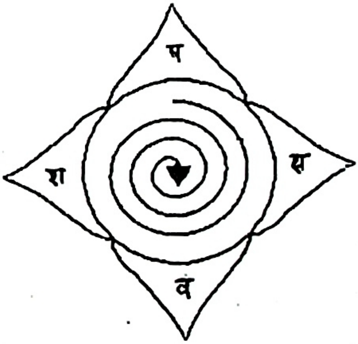

ॐ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ शँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ सँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मूलाधार के कर्णिका में पृथ्वीतत्त्वात्मक ळँ बीज

ॐ ळँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

स्वाधिष्ठान के कर्णिका में जलतत्त्वात्मक वँ बीज

ॐ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मणिपुर के कर्णिका में अग्नितत्त्वात्मक रँ बीज

ॐ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

अनाहत के कर्णिका में वायुतत्त्वात्मक यँ बीज

ॐ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

विशुद्ध के कर्णिका में आकाशतत्त्वात्मक हँ बीज

ॐ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

आज्ञाचक्र के शिवतत्त्वात्मक हँ वर्ण

ॐ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

आज्ञाचक्र के शक्तिस्वरूपी सुमेरु क्षँ बीज का स्पर्श किये बिना ही दर्शन मात्र करके वापस आज्ञाचक्र के हकार से ही शुरु कर जप करे।

आज्ञाचक्र के शिवतत्त्वात्मक हँ वर्ण

ॐ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

विशुद्ध के कर्णिका में आकाशतत्त्वात्मक हँ बीज

ॐ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

अनाहत के कर्णिका में वायुतत्त्वात्मक यँ बीज

ॐ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मणिपुर के कर्णिका में अग्नितत्त्वात्मक रँ बीज

ॐ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

स्वाधिष्ठान के कर्णिका में जलतत्त्वात्मक वँ बीज

ॐ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मूलाधार के कर्णिका में पृथ्वीतत्त्वात्मक ळँ बीज

ॐ ळँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मूलाधार के चार पत्रों पर वस प्रत्याहार के वर्ण

ॐ सँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ शँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

स्वाधिष्ठान के छः पत्रों पर बल प्रत्याहार के वर्ण

ॐ लँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ मँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ भँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ बँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मणिपुर के दश पत्रों पर डफ प्रत्याहार के वर्ण

ॐ फँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ पँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ नँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ धँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ दँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ थँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ तँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ णँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ढँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ डँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

अनाहत के द्वादश पत्रों पर कठ प्रत्याहार के वर्ण

ॐ ठँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ टँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ञँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

ॐ झँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ जँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ छँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ चँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ङँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ घँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ गँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ खँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ कँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

विशुद्धचक्र के षोडश पत्रों पर अः प्रत्याहार के वर्ण

ॐ अः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ औँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ओँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ऐँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ एँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ॡँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ऌँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्षभक्ष स्वाहा।
ॐ ॠँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्षभक्ष स्वाहा।
ॐ ऋँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्षभक्ष स्वाहा।
ॐ ऊँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ उँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ ईँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ इँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ आँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।
ॐ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्षरक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

क्षँकारात्मक प्रत्यङ्गिरास्वरूपिणी इष्टदेवता के बायें हाथ में जप समर्पित करे।

अन्तःपूजाविधिः परिपूर्णम्

●

वर्धनीकलशस्थापनम्

अपने आगे बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्र-चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा के द्वारा निर्माण करके श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्य के लिए पात्राधार के रूप में रख कर आधार पूजन करे, आधार पूजन के बाद सुवर्ण, रजत, ताम्र, नारिकेल या किसी भी धातु का श्रीपात्र (कलश) प्रक्षालित कर आधार पर स्थापित करे, श्रीपात्र तथा विशेषार्घ्यपात्रों का संस्कार करके मूलमन्त्र से पूजन कर कर्पूर, गन्धादि वासितजलपूरित कलश गन्धपुष्पाक्षत से अलंकृत करके मण्डल पर स्थापित करके अधोलिखित प्रार्थना तथा आवाहन करे।

वर्धनीकलशाधारचक्रम्

सर्वप्रथम जल से भूमि को प्रोक्षित कर उसके ऊपर लेलिहानमुद्रा से भूपुर के भीतर वृत्त, षड्कोण, त्रिकोण तथा बिन्दु का निर्माण करके उसके ऊपर कलश स्थापित करे।

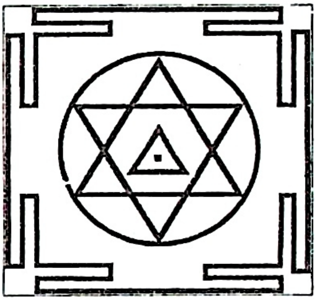

वर्धनीकलशस्थापनम्

भूमिस्पर्श—ॐ मुहीद्यौःपृथिुवीचनऽइुमंय्यइुंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोुभरीमभिः॥

सप्तधान्य विखेरना—ॐ ओषधयुःसमवदन्तुसोमैनसुहराज्ञा॥ यस्मैकृुणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥

कलशस्थापन—ॐ आजिग्घ्रकुलशंमुह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वुसानः सुहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्द्रयिः॥

कलश में जल भरना—ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भुसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतुसदन्यसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओषधीःपूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बुब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजुऽ इत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥

कलश में कुश डाले—ॐ पुवित्रेस्थोव्वैष्णव्यौसवितुर्व्वःप्प्रसुवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पुवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥

कलश में पूंगीफल डाले—ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

कलश में पञ्चरत्न डाले—ॐ परिवाजपतिःकुविरग्ग्निर्हव्यान्यक्रमीत्॥ दधद्द्रत्नानि दाशुषे॥

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्ततागग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहविषाविधेम्॥

युग्मवस्त्राच्छादन—ॐ सुजातोज्योतिषासुहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्ने व्विश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वव्विभावसो॥

पूर्णपात्रस्थापन—ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥

नारिकेलफलस्थापन—ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्पायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

वरुण ध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहुविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।

इस जल में वरुण अपने आयुध, शक्ति तथा परिवार के सहित आकर अवस्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षी (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकायें स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तमहाद्वीप, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं।३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ है, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सहिताः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ, नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्तदुरितों के क्षयकारक हों तथा समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग स्वरूप होकर कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरितों को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें तथा हमारे यजनकार्य की पूर्णता प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

कलशपूजनम्

ध्यानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।**

आसनम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।**

पाद्यम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।**

अर्घ्यम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।**

आचमनम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

स्नानीयम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयंजलं समर्पयामि।**

पुनराचमनीयम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

पयःस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।**

दधिस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।**

घृतस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।**

मधुस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।**

शर्करास्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।**

पञ्चामृतस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।**

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नाना-परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेत्रताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।**

फलादिसमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भव-फलानि समर्पयामि।**

दक्षिणासमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।**

नीराजनसमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।**

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

परिक्रमासमर्पणम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।**

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें, हे पश्चिमदिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले हमारी सदैव रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

विशेषार्घ्य के बाद प्रार्थना करे।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच महोदधि समुद्र था, उसी में समुद्रमन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे विष्णु स्वयं धारण किये॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

हे वरुण! तुम्हारे जल में सभी तीर्थ स्थित है, सभी देवताओं का वास तुम्हारे में है, तुम्हीं सभी भूतों में प्रतिष्ठित हो तथा सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवती होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! (जल से उत्पन्न शरीर) तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करने वाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करने वाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जवतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक हमें सान्निध्य प्रदान करें॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में ज़ल लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों सें जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहित देवताः प्रीयन्तां न मम॥

आवाहन करके मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करे, धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर उस जल से अधोलिखित मन्त्र से पूजनोपयुक्त समस्त सामग्री तथा अपने को अभिसिंचित करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ॐ केशवः पुनातु॥ ॐ नारायणः पुनातु॥

वर्द्धनीकलशस्थापनं परिपूर्णम्

पात्रासादनंश्रीपात्रस्थापनञ्च

वर्धनी कलश के दक्षिणदिशा में वर्धनी पात्र के जल से बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्र-चतुरस्रात्मक मण्डल मत्स्यमुद्रा के द्वारा अधारचक्र का निर्माण करके श्रीपात्र के आधार देवताओं का वामावर्त क्रम से आवाहन स्थापन तथा पूजन करे अथवा यदि धातु निर्मित हो, तो उसे ही स्थापित करके उसपर ही पूजन करे।

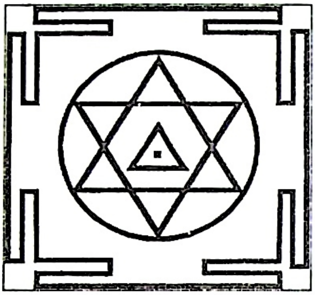

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे नमः। त्रिकोण की निचली रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मां रक्ष रक्ष नमः। त्रिकोण की वाम रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा नमः। त्रिकोण की दक्षिण रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर पूजा करके षट्कोणों पर षडङ्गों का पूजन करे।

ॐ ऐँ हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ श्रीँ शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुँ कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वाङ्गे सर्वाङ्ग-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

चतुर्दिक् दिशाओं में तथा मध्य में पीठों का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूर्णगिरिपीठाय नमः। पूर्वदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उड्डियानपीठाय नमः। दक्षिणदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कामरूपपीठाय नमः। पश्चिमदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जालन्धरपीठाय नमः। उत्तरदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आधारशक्तये नमः। मध्य में।

नमः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा नमः। अभिसिञ्चन तथा प्रक्षालन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपात्रं स्थापयामि।

श्रीपात्र चक्र पर स्थापित करके पूजन करके मध्य में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त लिखकर पूर्ववत् त्रिकोण पर तथा षट्कोण पर षडङ्गों का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे नमः। त्रिकोण की निचली रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष नमः। त्रिकोण की वाम रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा नमः। त्रिकोण की दक्षिण रेखा पर पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर पूजा करके षट्कोण पर षडङ्गों का पूजन करे।

ॐ ऐँ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। अग्निकोण में।

ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। ईशान कोण में।

ॐ श्रीँ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। वायव्य कोण में।

ॐ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुँ कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। नैर्ऋत्यकोण में।

ॐ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि। मध्य में।

ॐ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। चारों दिशाओं में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वाङ्गे सर्वाङ्ग-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि। सम्पूर्ण शरीर पर स्पर्श करे।

पूजन के बाद विलोम मातृका का दशबार जप करे।

क्षँ ळँ हँ सँ षँ शँ वँ लँ रँ यँ मँ भँ बँ फँ पँ नँ धँ दँ थँ तँ णँ ढँ डँ ठँ टँ ञँ झँ जँ छँ चँ ङँ घँ गँ खँ कँ अः अँ औँ ओँ ऐँ एँ ॡँ ऌँ ॠँ ऋँ ऊँ उँ ईँ इँ आँ अँ।

पात्र में दूध तथा जल रखकर त्रिकोणात्मक अर्घ्यपात्र को जल से परिपूर्ण करके शोषण, दाहन एवं संप्लावन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ सर्वदोषं शोषय शोषय स्वाहा। सभी दोषों का शोषण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ सर्वदोषं दह दह स्वाहा। सभी दोषों का दाहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ अमृतं वर्षय वर्षय स्वाहा। अन्तरिक्ष से अमृत स्राव करे।

पात्र के मध्य में वह्निमण्डल का पूजन करे।

वह्निमण्डल

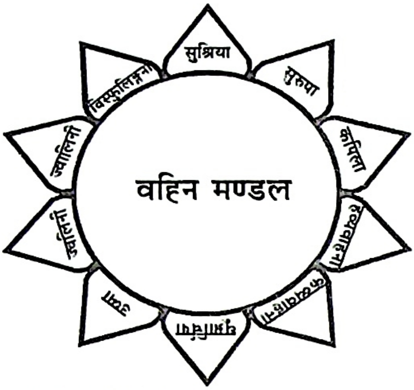

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाँ वीँ वूँ राँ रीँ रुँ रैँ रौँ रः ह स क्ष म ल व र यूँ वह्नि मण्डलात्मने **प्रत्यङ्गिरार्घ्यपात्राधाराय नमः।** वह्नि का पूजन करके वह्नि के धूम्रा, उष्मा, ज्वलिनी, ज्वालिनी, विष्फुलिङ्गिनी, सुश्रिया, सुरूपा, कपिला, हव्यवाहना, कव्यावाहना आदि दशकलाओं का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ धूम्रार्चिषे नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ उष्मायै नमः उष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ सुश्रियै नमः सुश्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ सुरूपायै नमः सुरूपाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ हव्यवाहिन्यै नमः हव्यवाहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ कव्यवाहिन्यै नमः कव्यवाहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

वह्निमण्डल पूजन के बाद अर्कमण्डल का पूजन करे।

अर्कमण्डल

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह स क्ष म ल व र यूँ वसुप्रदत्त प्रत्यङ्गिरादेवता द्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतार्घ्यपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। वामावर्त क्रम से द्वादश **तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीची, ज्वालिनी, रुची, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी, क्षमा आदि** अर्ककलाओं का पूजन करे।

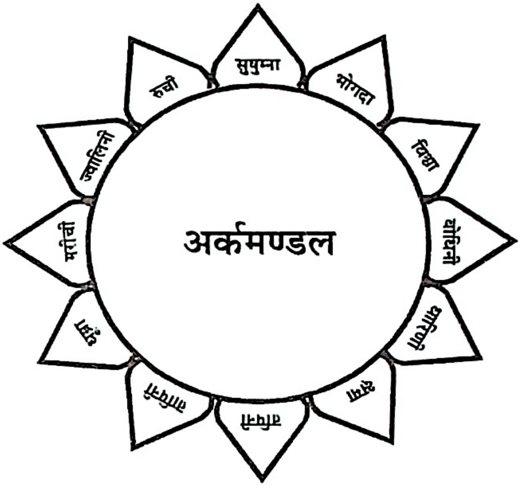

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ मँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ बँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ धँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ दँ सुषुम्नायै नमः सुषुम्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
अर्कमण्डल पूजन के बाद सोममण्डल का पूजन करे।

सोममण्डल

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ साँ सीँ सूँ सैँ सौँ सः स ह क्ष म ल व र यूँ काम प्रदाऽमृतादि षोडशकलात्मने सोममण्डलाय श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतार्घ्यपात्राऽमृताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। वह्नि का पूजन करके सोम के अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, शशी, धृति, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अङ्गदा, पूर्णा, पूर्णामृता आदि षोडशसोमकलाओं का पूजन करे।

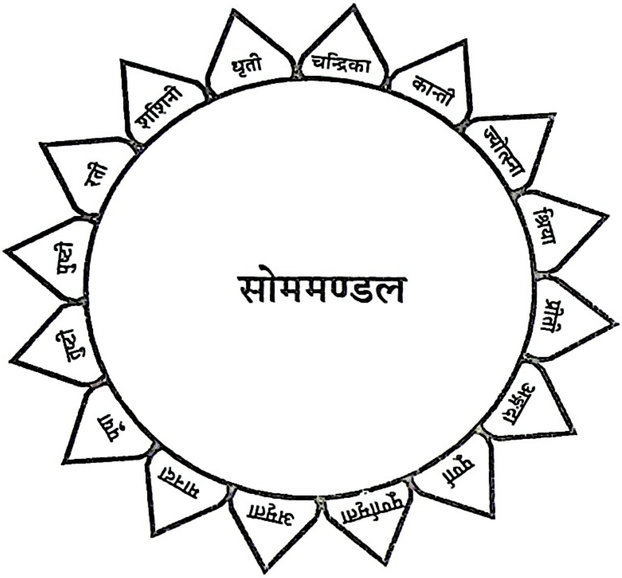

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ शशिन्यै नमः शशिनिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लृँ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लॄँ कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ श्रियै नमः श्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पात्र में सुगन्धितद्रव्य छोड़ कर पात्र में एक त्रिकोण लेलिहानमुद्रा से निर्मित कर

उस त्रिकोण की रेखाओं पर, क्रमशः बायी रेखा पर **अँ** से **अः** तक १६ वर्णों, ऊपरी रेखा पर **कँ** से **तँ** तक १६ वर्णों तथा दाहिनी रेखा पर **थँ** से **सँ** तक १६ वर्णों और मध्य में **हँ ळँ क्षँ** मातृकाओं को तीन खण्डों मे लिखकर पूजन करे।

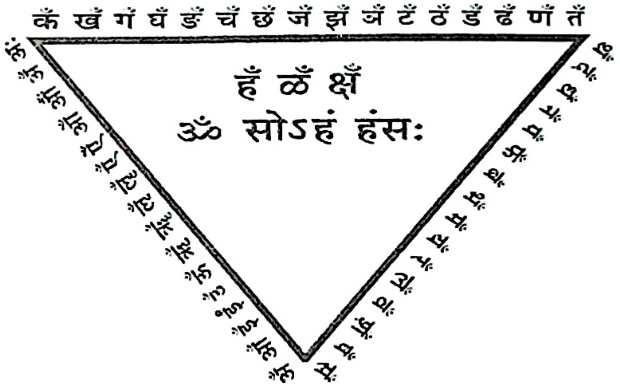

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि। वामरेखा पर पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ मम रक्ष रक्ष प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि। ऊर्ध्वरेखा पर पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि। दक्षरेखा पर पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपादुकां पूजयामि। मध्य में पूजन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥१॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी आदि दिव्यनदियों का दिव्यजल शुद्धोदकस्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें॥१॥

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

ब्रह्माण्ड के उदर में स्थित तीर्थों को सूर्य के किरणों से स्पर्श करके उन तीर्थों को सत्य से युक्त कर हे दिवाकर! मुझे प्रदान करें॥२॥

अङ्कुशमुद्रा के द्वारा तीर्थों का अन्तरिक्ष से आवाहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वौषट्। पुष्प छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वषट्। गालिनीमुद्रा प्रदर्शित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ। धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण करे।

जल में इष्टपूजन कर शङ्खमुद्रा दिखाकर पूर्वादिक्रम से रत्नों का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गगनरत्नेभ्यो नमः। पूर्वदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वर्गरत्नेभ्यो नमः। दक्षिणदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पातालरत्नेभ्यो नमः। पश्चिमदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नागरत्नेभ्यो नमः। उत्तरदिशा में।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ऐँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरी अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। तीन बार जप करने के बाद अष्टोत्तरशत त्र्यम्बक मन्त्र का जप करे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

त्र्यम्बक मन्त्र के जप के बाद अष्टोत्तरशत प्रत्यङ्गिरागायत्री का जप करे।

ॐ प्रत्यङ्गिरायै विद्महे शत्रुनिषूदिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ प्रत्यङ्गिरागायत्री जप के बाद शापविमोचन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शाँ शीँ शूँ शैँ शौँ शः शुकशापविमोचितायै स्वाहा। अष्टोत्तरशत जप करके अमृतेश्वरी का ध्यान करके आनन्दभैरवी आनन्दभैरव का ध्यान कर मानसपूजन करे।

ध्यानम्—

अखण्डैकवरानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्मराच्छन्द स्फुरणामत्र निधेह्यमृतरूपिणी॥१॥

पर मण्डलान्तर्गत आत्मामृत सागर में अखण्डानन्द प्रकाश की किरणावलियों के रूप में कामेच्छा स्फुरणामृत रूप से स्थित॥१॥

सूर्यकोटिप्रतिकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्॥२॥

सूर्य के समान प्रकाशमान, चन्द्रमा के समान सुशीतल, अट्ठारह भुजाओं वाले, तीन नेत्र वाले पञ्चवक्त्र सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥२॥

अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मो परिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्॥३॥

अमृत के समुद्र के मध्य में स्थित, ब्रह्मकमल के ऊपर सभी प्रकार के आभूषणों से सुशोभित, वृषभासन पर आरूढ नीलकण्ठ सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥३॥

कपालखट्वाङ्गधरः घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम॥४॥

हाथ में कपाल, खट्वा, पाश, अंकुश, गदा, मुशल धारण किये हुए घण्टा तथा डमरु का वादन करने वाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥४॥

खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरच्छूल-कुन्तिलम्।
विचित्र-खेटकं-मुण्डं वरदाऽभय-मालिनम्॥५॥

सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त, हाथ में खड्ग, खेटक, पट्टीश, मुद्गर, शूल, कुन्तल, मुण्ड, वर तथा अभय से शोभायमान॥५॥

लोहितं देवदेवेशं भावये साधकोत्तमः।
भावयेच्च सुरादेवीं चन्द्रकोट्युतप्रभम्॥६॥

लोहितवर्ण वाले देवताओं के ईश्वर, परमदेव सदाशिव तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान सुरादेवी (अमृतस्वरूपिणी देवी) के साथ उत्तम साधक ध्यान करते हैं॥६॥

हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्॥७॥

हिमकुन्द (हिमखण्ड) तथा चन्द्रमा के सदृश धवल, पञ्चवक्त्र, तीन नेत्रों वाले, अट्ठारह भुजाओं वाले, सभी प्रकार का आनन्द प्रदान करने वाले सदाशिव का ध्यान करता हूँ॥७॥

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर ध्यान करके पूजन करे—

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय फट् आनन्दभैरवश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरव्यै वौषट् आनन्दभैरवीश्रीपादुकां पूजयामि।

बाये हाथ के अङ्गुठे तथा मध्यमाङ्गुलि से अपद्रव्य निकाल करके उससें आनन्दभैरवी तथा आनन्दभैरव का तर्पण करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कुलस्थामृताकारे सिद्धिज्ञानकरे परे।
अमृतत्त्वं निधेह्यत्र वस्तुनि क्लिन्न रूपिणी॥

ॐ **ऐं** (वाग्रूपिणी, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी ज्ञानशक्ति), **ह्रीं** (इच्छारूपिणी, इच्छा की अधिष्ठातृ देवी इच्छाशक्ति) **श्रीं** (श्रीरूपिणी, ऐश्वर्यो की अधिष्ठातृ श्रीशक्ति) **क्लीं** (कामरूपिणी, कामनाओं की अधिष्ठातृ कामशक्ति) कुलस्थ(कुल में ही रहने वाली) अमृतस्वरूपिणी, सिद्धि तथा ज्ञान प्रदान करने वाली, परमण्डलाधिष्ठातृक्लीस्वरूपिणी हमारे लिए अमृत का प्रवाह करें।

इस प्रकार से अमृतवर्षिणी कुलदेवता का ध्यान कर पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोऽहं हंसः तर्पयामि नमः।

पुनः ध्यान करके तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोऽहं हंसः तर्पयामि नमः।

तर्पण करने के बाद मूलमन्त्र से सात बार जप करके फिर कवचमुद्रा से अवगुण्ठन करे, अस्त्रमुद्रा से संरक्षण करे मत्स्यमुद्रा से आच्छादित करे योनिमुद्रा तथा धेनुमुद्रा का प्रदर्शन करे।

कवचमुद्रालक्षणम्—

सव्यहस्तकृतामुष्ठिः दीर्घाऽधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिने हाथ से बायें हाथ को दीर्घ कर बायें हाथ के अधोमुख तर्जनी को पकड़ कर मुट्ठी बना कर घुमाने से कवचमुद्रा बनती है, जिससे अवगुण्ठन होता है।

मत्स्यमुद्रालक्षणम्—

वामहस्तोपरि संस्थाप्य दक्षहस्तं प्रसारयेत्।
सञ्चालयेत् वामाङ्गुष्ठं तथैव वामतर्जनी॥

वामहस्त के उपर दक्षिणहस्त को प्रसार कर रखे तथा वामहस्त का अङ्गुष्ठ व दक्षिणहस्त की कनिष्ठिका को फैला कर चालन करने से मत्स्य जैसी आकृति बनती है।

योनिमुद्रालक्षणम्—

मिथः कनिष्ठिके बद्धा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वसंश्लिष्ट दीर्घ-मध्यमयोरधः॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥

दोनों कनिष्ठिका को सटा कर उसके ऊपर तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे में आबद्ध करके उसके ऊपर अनामिका को सीधा करके मध्य में रखे तथा उसके ऊपर दोनों अङ्गुष्ठ को मिला कर लगाये इससे योनिमुद्रा बन जायेगी।

धेनुमुद्रालक्षणम्—

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या-धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥

दोनों हाथों की अनामिका एवं कनिष्ठिकाओं को एक दूसरे से मिला कर, तर्जनी और मध्यमा को एक दूसरे से मिलाने से धेनुमुद्रा बनती है, इसकी आकृती गाय के थनों जैसी होती है, इसका प्रयोग अमृतीकरण में होता है।

श्रीपात्र स्थापन के बाद उसी तरह अर्घ्यपात्र की स्थापना करे।

अर्घ्यपात्रस्थापनम्

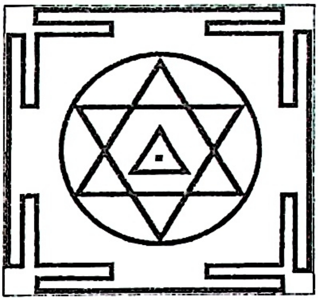

श्रीपात्र स्थापन के पश्चात् श्रीपात्र के दक्षिण भाग में मण्डल बना कर पूजन कर अर्घ्यपात्र (शङ्खपात्र) स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

त्रिकोण के कोणों पर अग्नि का आवाहन करके शङ्ख दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट्। शङ्खपात्राधार तिपाये को प्रच्छालित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ वह्निमण्डलाय नमः वह्निमण्डलश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट्। प्रच्छालित शङ्ख को तिपाये पर रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ अर्कमण्डलाय नमः अर्कमण्डलश्रीपादुकां पूजयामि। अर्कमण्डल का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। मूल मन्त्र से जल भरे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सौँ सोममण्डलाय नमः सोममण्डलश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदेसिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥१॥
ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥२॥

अङ्कुशमुद्रा के द्वारा तीर्थों का अन्तरिक्ष से आवाहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वौषट्। संयोजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तीर्थाय नमः तीर्थमण्डलश्रीपादुकां पूजयामि। गालिनीमुद्रा का प्रदर्शन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वषट्। धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण करके इष्टदेवता का ध्यान करे।

इष्टदेवताध्यानम्

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयात् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

षडङ्गपूजनम्

ॐ ऐँ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ श्रीँ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुँ कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ मम शत्रूणां भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वाङ्गे सर्वाङ्ग-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

अस्त्रमुद्रा से संरक्षण कर, आठबार मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, मत्स्यमुद्रा से आच्छादन करके कुश, अक्षत, तिल, ब्रीही, यव, आज्य, श्वेतसर्षप तथा पुष्प रखकर योनिमुद्रा दिखा कर श्रीपात्र का जल उसमें छोड़े।

पात्रासादनं परिपूर्णम्

श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायन्त्रोद्धारम्

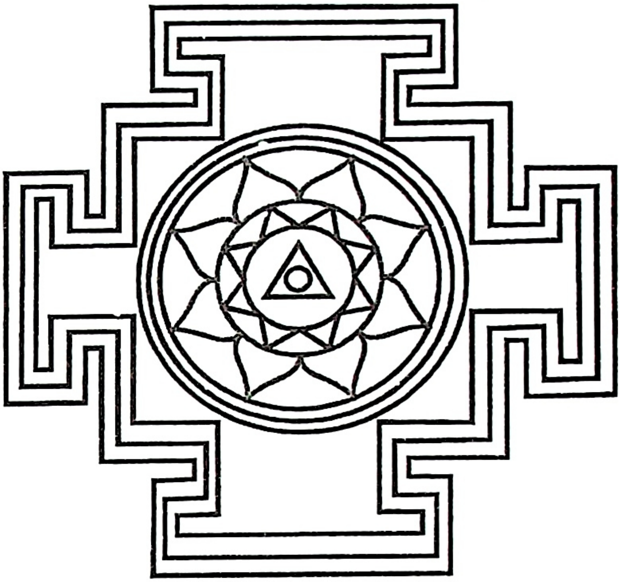

बिन्दुं त्रिकोणं वसुकोण-युक्तं,
पत्राष्ट-यन्त्रञ्च त्रिवृत्तयुक्तम्।
भूगेह-लक्ष्मी-रचितञ्च सिद्धिदं,
प्रत्यङ्गिरा चक्रमेतन्मयोक्तम्॥

यन्त्रनिर्माणम्—अधोलिखित आकृति वाला यन्त्र निर्मित करे—

सर्व प्रथम बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, वृत्त, अष्टदल, तीनवृत्त तथा तीनभूपुर श्रीयुक्त सर्वसिद्धि को देने वाला प्रत्यङ्गिराचक्र नामक यन्त्र बनता है, ताम्रपात्र पर जो एक वितस्त वर्गाकार हो और परिपूर्ण मोटा हो, उस पर अष्टगन्ध, रक्तचन्दन अथवा सिन्दूर से चित्रानुसार यन्त्र उत्कीर्ण करे, ताम्रपात्र के अभाव में भूर्जपत्र पर उत्कीर्ण करे, भोजपत्रादि के यन्त्र पर जलादि स्नान भावनात्मक करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा आसुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहा।

धातुनिर्मितयन्त्र को शुद्धजल, पञ्चामृत पुनः शुद्धजल से स्नान कराकर प्रतिष्ठा करे।

ॐ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया बिन्दु-त्रिकोणाष्ट-कोणाष्टदल-त्रिवृत्त-भूपुर-त्रयात्मक यन्त्रस्य सजीववाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। अष्टोत्तरशत जप करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरायन्त्रप्राणप्रतिष्ठाविधिः

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्त-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्त-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवताया सपरिवाराया सावरणाया साङ्गया सहिताया बिन्दुत्रिकोणाष्टकोणाष्टदलत्रिवृत्त-भूपुरत्रयात्मकयन्त्रस्य सर्वेंद्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ध्यानम्

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्स्पतिर्ब्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञᳬसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

यन्त्र में प्रतिष्ठा के बाद यन्त्रगायत्री का अष्टोत्तरशत जप करे।

ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्॥

अष्टोत्तरशत जप कर, दश बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके, अष्टोत्तरशत आहुती प्रदान कर, बचे हुए घृत को यन्त्रगायत्री से यन्त्र के ऊपर प्रक्षेप कर यन्त्र पर श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता के परिवारस्थ आवरण देवताओं का भूपुर में बायें से दाहिने के तरफ पहले दिव्यौघगुरु फिर सिद्धौघगुरु उसके बाद मानवौघगुरु का विधिपूर्वक आवाहन स्थापन करे।

गुरुपङ्क्त्यावाहनस्थापनम्

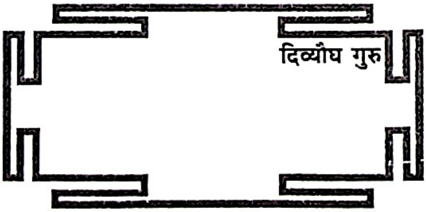

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादेव्यम्बायै नमः श्रीमहादेव्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादेवानन्दनाथाय नमः श्रीमहादेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिपुरानन्दनाथाय नमः श्रीत्रिपुरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भैरवानन्दनाथाय नमः श्रीभैरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

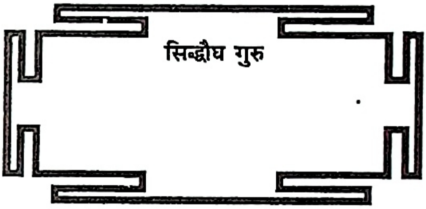

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मानन्दनाथाय नमः श्रीब्रह्मानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूर्णदेवानन्दनाथाय नमः श्रीपूर्णदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चलचित्तानन्दनाथाय नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चलचलानन्दनाथाय नमः श्रीचलचलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुमारानन्दनाथाय नमः श्रीकुमारानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरदानन्दनाथाय नमः श्रीवरदानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्मरदीपानन्दनाथाय नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मायाम्बायै नमः श्रीमायाम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मायावत्याम्बायै नमः श्रीमायावत्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

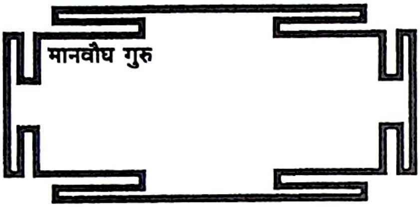

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विमलानन्दनाथाय नमः श्रीविमलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुशलानन्दनाथाय नमः श्रीकुशलानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मत्सेनानन्दनाथाय नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुधाकरानन्दनाथाय नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रह्लादानन्दनाथाय नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सनकानन्दनाथाय नमः श्रीसनकानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वशिष्ठानन्दनाथाय नमः श्रीवशिष्ठानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बोधानन्दनाथाय नमः श्रीबोधानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मीनानन्दनाथाय नमः श्रीमीनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गोरक्षनाथानन्दनाथाय नमः श्रीगोरक्षनाथानन्द नाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भोजदेवानन्दनाथाय नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रजापत्यानन्दनाथाय नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मूलदेवानन्दनाथाय नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रन्तिदेवानन्दनाथाय नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विघ्नेश्वरानन्दनाथाय नमः श्रीविघ्नेश्वरानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हुताशनानन्दनाथाय नमः श्रीहुताशनानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ समयानन्दनाथाय नमः श्रीसमयानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सन्तोषानन्दनाथाय नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वगुरवानन्दनाथाय नमः श्रीस्वगुरवानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

अपने दीक्ष्यगुरु का नामोच्चारपूर्वक पूजन करे, जैसे—यदि गुरु का नाम श्रीविश्वनाथ हो तो **श्रीविश्वनाथानन्दनाथाय नमः श्रीविश्वनाथानन्दनाथ इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ** बोल का पुजन करे।

रश्मिदेवतावाहनस्थापनम्

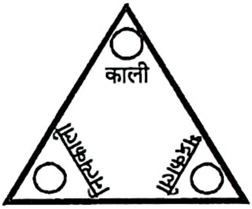

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीनित्यकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीनित्यकाल्यम्बादेवि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीकाल्यम्बादेवि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीभद्रकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीभद्रकाल्यम्बादेवि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

शिवाग्न्यावाहनस्थापनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवाय नमः श्रीशिव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये नमः श्रीअग्नि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

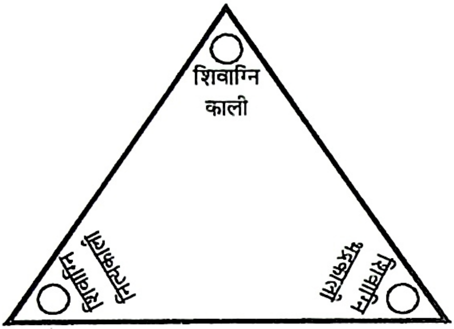

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवाय नमः श्रीशिव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये नमः श्रीअग्नि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ब्राह्म्याद्यष्टशक्त्यावाहनस्थापनम्

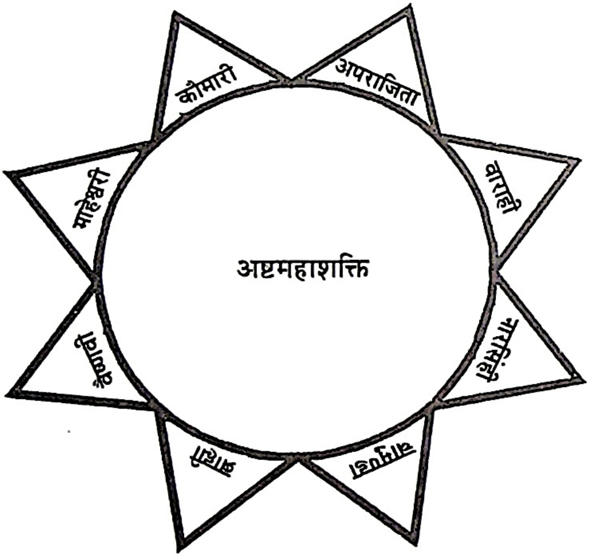

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्राह्म्यम्बायै नमः श्रीब्राह्म्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैष्णव्यम्बायै नमः श्रीवैष्णव्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ माहेश्वर्यम्बायै नमः श्रीमाहेश्वर्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कौमार्यम्बायै नमः श्रीकौमार्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐन्द्र्यम्बायै नमः श्रीऐन्द्र्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाराह्यम्बायै नमः श्रीवाराह्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारसिंह्यम्बायै नमः श्रीनारसिंह्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चामुण्डाऽम्बायै नमः श्रीचामुण्डाऽम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

स्तम्भिन्याद्यष्टशक्त्यावाहनस्थापनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्तम्भिन्यम्बायै नमः श्रीस्तम्भिन्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मोहिन्यम्बायै नमः श्रीमोहिन्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षोभिण्यम्बायै नमः श्रीक्षोभिण्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ द्राविण्यम्बायै नमः श्रीद्राविण्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जृम्भिण्यम्बायै नमः श्रीजृम्भिण्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भ्रामिण्यम्बायै नमः श्रीभ्रामिण्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रौद्र्यम्बायै नमः श्रीरौद्र्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ संहारिण्यम्बायै नमः श्रीसंहारिण्यम्बा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

अष्टभैरवावाहनस्थापनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ असिताङ्गभैरवाय नमः श्रीअसिताङ्गभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुरुभैरवाय नमः श्रीरुरुभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चण्डभैरवाय नमः श्रीचण्डभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रोधभैरवाय नमः श्रीक्रोधभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उन्मत्तभैरवाय नमः श्रीउन्मत्तभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कपालिभैरवाय नमः श्रीकपालिभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भीषणभैरवाय नमः श्रीभीषणभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ संहारभैरवाय नमः श्रीसंहारभैरव इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

अष्टभैरव्यावाहनस्थापनम्

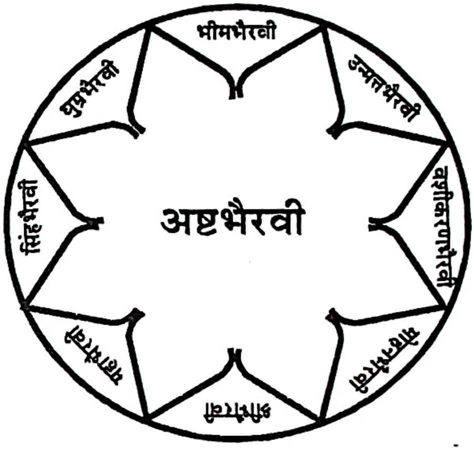

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीभैरव्यै नमः श्रीभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाभैरव्यै नमः महाभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सिंहभैरव्यै नमः सिंहभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धुम्रभैरव्यै नमः धुम्रभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भीमभैरव्यै नमः भीमभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उन्मत्तभैरव्यै नमः उन्मत्तभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ एत्रैं ह्रीँ श्रीँ वशीकरणभैरव्यै नमः वशीकरणभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मोहनभैरव्यै नमः मोहनभैरवी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

दशदिग्पालावाहनस्थापनम्

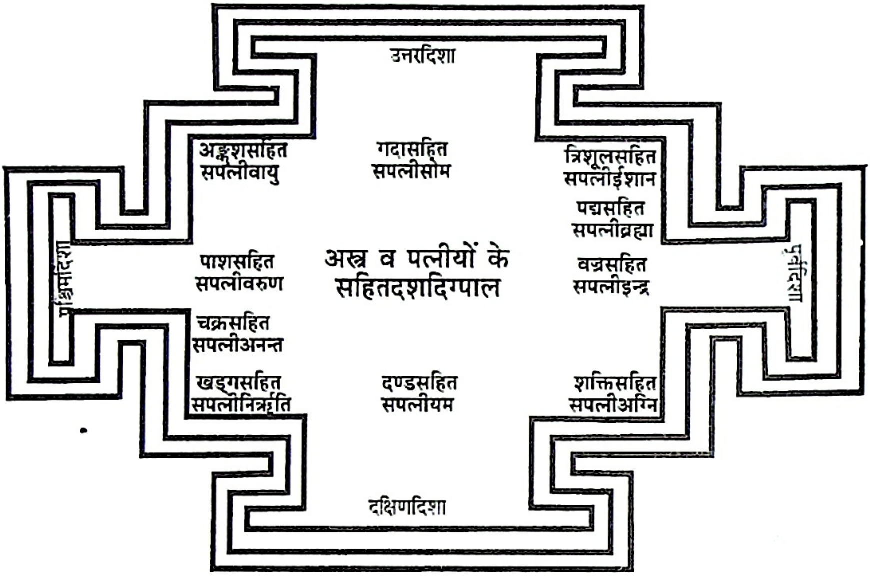

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वज्रसहितसपत्नीन्द्राय नमः वज्रसहितसपत्नीन्द्र इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शक्तिसहितसपत्न्यग्नये नमः शक्तिसहितसपत्न्यग्नी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दण्डसहितसपत्नीयमाय नमः दण्डसहितसपत्नीयम इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खड्गसहितसपत्नीनिर्ऋतये नमः खड्गसहितसपत्नीनिर्ऋति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पाशसहितसपत्नीवरुणाय नमः पाशसहितसपत्नीवरुण इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अंकुशसहितसपत्नीवायवे नमः अंकुशसहितसपत्नीवायु इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गदासहितसपत्नीसोमाय नमः गदासहितसपत्नीसोम इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिशूलसहितसपत्नीईशानाय नमः त्रिशूलसहितसपत्नीईशान इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पद्मसहितसपत्नीब्रह्मणे नमः पद्मसहितसपत्नीब्रह्मा इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चक्रसहितसपत्न्यनन्ताय नमः चक्रसहितसपत्न्यनन्त इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

वटुकाद्यावाहनस्थापनम्

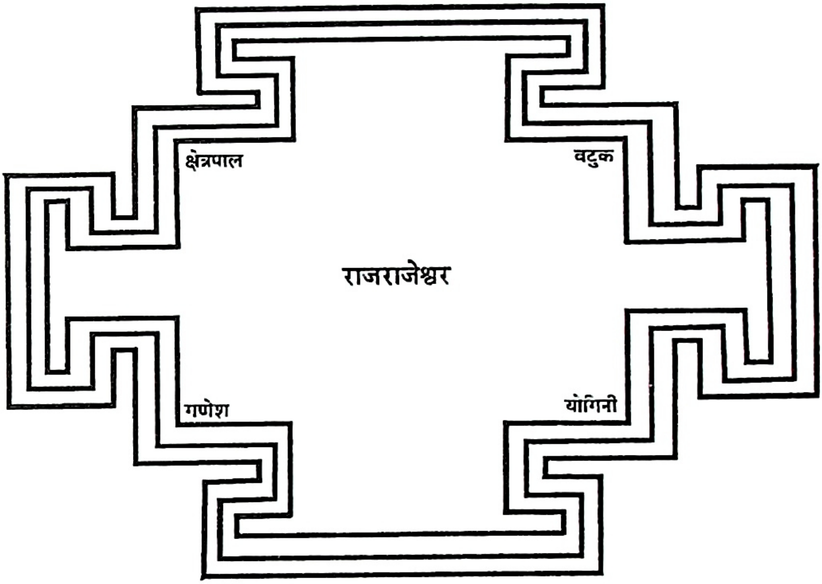

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकाय नमः वटुक इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीभ्यो नमः योगिनी इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणपतये नमः गणपति इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यन्त्रस्थसमस्तदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

श्रीप्रत्यङ्गिरा आवरण देवताओं के आवाहनस्थापन के बाद घी से समस्त देवताओं के लिए हवन करे और प्रत्येक आहुति के बाद अवशिष्ट आज्य यन्त्र के ऊपर प्रक्षेप

करे। हवन के बाद पुनः पूजन करे। एक बार यन्त्र स्थापन के बाद नित्य यन्त्र स्थापन नहीं होगा, केवल पूजन क्रम ही नित्य होता है।

श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायन्त्रोद्धारं परिपूर्णम्

●

क्षेत्रकीलनम्

पीपल, गुलर, प्लक्षा, खैर में से किसी भी काष्ठ की विलस्तमात्र कील लेकर प्रतिष्ठा करने के बाद सुदर्शनास्त्र से अष्टोत्तरशत अभिमन्त्रित कर, पूजन कर, हवन करे, हवन से अवशिष्ट घृत कीलों के ऊपर प्रक्षेपित करे।

ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्। १०८ बार अभिमन्त्रित करे।

हवन मन्त्र—ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट् स्वाहा इदं सुदर्शनास्त्राय न मम।

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु॥१॥
मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे॥२॥

भूमिलोक, अन्तरिक्षलोक, और दिव्यलोक में रहने वाले हमारे मन्त्र की सिद्धि में विघ्न करने वाले भूतादि गण इस स्थान का परित्याग करके दूर अन्यत्र कहीं चले जायें, मैं इस स्थान को उनके लिए कीलित करता हूँ, जिससे हमें निर्विघ्न सिद्धि प्राप्त हो।

मन्त्रों के पाठ पूर्वक दशों दिशाओं में कीलों को गाड़े।

ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्।

प्रत्येक कीलों का पञ्चोपचारादि पूजन करके दिग्पाल, क्षेत्रपाल, गणपति, योगिनी, वटुक को बलि प्रदान करे।

क्षेत्रकीलनं परिपूर्णम्

●

दिग्पालादिबलिदानम्

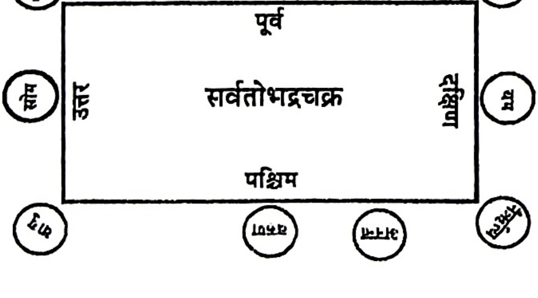

वटुकादि बलिदान के बाद दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं तारराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

रक्षोघ्नकर्म

प्रणायामाचमन करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करे—

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया **प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अस्मिन् श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे रक्षोघ्नं करिष्ये।** पीले सरसों से रक्षोघ्न करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षोहणंवलगहनंवैष्णवीमिदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेनिष्ट्योयम मात्योंनिचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेसमानोयमसमानोनिचखानेदमहंतंवलग मुत्किरामियंमेसबन्धुर्य्यमसंबन्धुर्निचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ पूर्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षोहणौवोवलगहनः प्रोक्षामिवैष्णवान्रक्षोहणौवोवलगहनोऽवन-यामिवैष्णवान्रक्षोहणौवोवलगहनोऽवस्तृणामिवैष्णवान्रक्षोहणौवांवलगहनाऽउप-दधामिवैष्णवीरक्षोहणौ वां वलगहनौपर्य्यूहामिवैष्णवीवैष्णवमसिवैष्णवास्त्थ॥२॥ दक्षिणदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षसांभागोऽसिनिरस्तङ्ग्ँ रक्षऽइदमहङ्ग्ँ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहङ्ग्ँ रक्षोऽव बाधऽइदमङ्ग्ँ रक्षोऽधमन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्प्रोर्णुवाथांवायोवेस्तोकानामग्निराज्ज्यस्यवेतुस्वाहास्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम्॥३॥ पश्चिमदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्क्षोहाविश्श्वचर्षणिरभियोनिमयोंहते॥ द्रोणेसधस्थमासदत्॥४॥ उत्तरदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हों वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वे सभी इस स्थान से कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। जो भूतप्रेतादि विघ्नकरने वाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से अन्यत्र चले जायें अन्यथा नष्ट हो जायें। नैर्ऋत्य कोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान के सभी दिशाओं में जो भूतप्रेतपिशाचों का वास है, वे सभी बिना किसी प्रकार के विरोध किये इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजा कर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्य में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हों, वे सभी इस स्थान का परित्याग कर अन्यत्र कहीं चले जायें, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशान कोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ फट्। ऊपर पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ फट्। भूमि पर नीचे पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

चारों तरफ क्रोधमयी दृष्टि डाल कर चारों तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे तथा भूमि पर तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें। तथा सर्वत्र चारो तरफ पीला सरसों छिड़कें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे पूर्वे रक्षतु। पूर्वदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे आग्नेयां रक्षतु। अग्निकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे दक्षिणे रक्षतु। दक्षिणदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे नैर्ऋत्ये रक्षतु। नैर्ऋत्यकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे पश्चिमे रक्षतु। पश्चिमदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे वायव्ये रक्षतु। वायव्यकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे उत्तरे रक्षतु। उत्तरदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे ऐशान्यां रक्षतु। ईशानकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे ऊर्ध्वे रक्षतु। ऊर्ध्वदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे अधः रक्षतु। अधोदिशा में प्रच्छेप करे।

रक्षोघ्नकर्म परिपूर्णम्

•

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह।। ब्बृहुत्युष्णिहाककुप्सुचीभिं: शम्म्यन्तुत्त्वा।। मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।। मन्त्र से गोमय मिश्रित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आप्प्यायस्वुसमैतुतेव्विश्श्वत:सोमुव्वृष्ण्यम्।। भवाुव्वाजस्यसङ्गथे।। मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दुधिक्राब्ण्णोंऽअकारिषञ्जिुष्णोरश्श्वस्यव्वाुजिन:।। सुरभिनोुमुखा करत्त्प्रणुऽआयूंꣳषितारिषत्।। मन्त्र से दही मिश्रित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तेजोंऽसिशुक्क्रमस्युऽमृतमसिुधामुनामाऽसिप्प्रियंदेुवानाुमनाधृष्टन्देवु यजनमसि।। मन्त्र से गोघृत मिश्रित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ देुवस्यत्वासविुतु:प्रसुवेुऽश्श्विनोर्बाुहुब्भ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्।। मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आपोुहिष्ठ्ठामयो भुवुस्तानऽऊर्ज्जेदधातन।। मुहेरणायुचक्षसे।। योवं:शिवतमोुरसुस्तस्यभाजयतेुहन:।। उुशुतीरिवमाुतर:।। तस्म्माुऽअरंङ्गमामवोुयस्यु क्षयाय जिन्न्वथ।। आपोंजुनयथाचन:।।

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्र: पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञसामग्रीयों का मार्जन प्रोक्षण करें फिर अञ्जली बना कर दो बार स्वस्त्ययन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वुस्तिनुऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवा:ꣳस्वुस्तिन:पूषाव्विश्श्ववेदा:।। स्वुस्तिनुस्ताक्ष्र्योऽअरिंष्ट्टनेमिꣳस्वुस्तिनोुबृहुस्प्पतिर्द्दधातु।। मन्त्र का दो बार पाठ करे तथा हाथों से आवाहनीमुद्रा से देवताओं का आवाहन करे तथा यातुधानों का अपकर्षण करे।

देवा: आयान्तु।। यातुधाना: अपयान्तु।। विष्णोर्देव भूम्यमिमां रक्षस्व।।

पञ्चगव्यकर्म परिपूर्णम्

●

तत्त्वशुद्धिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणापानव्यानोदानसमाना: मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाप्भ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यप्तेजोवायवाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाप्भ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यहंकारमनोबुद्धिश्रोत्राणि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाप्भ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पर्शरूपरसगन्धाकाशानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवाकाशसलिलभूम्यात्मने मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणवाचांसि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाक्पाणिपादपायूपस्थानि मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजाविपाभ्यां भूयासं स्वाहा।

सातबार समस्ताङ्गों का स्पर्श करे।

तत्वशुद्धिः परिपूर्णम्

प्रधानकलशस्थापनम्

बाह्यपूजा में त्रिकोण, षड्कोण, वृत्त तथा भूपूर युक्त लेलिहानमुद्रा से आधार का निर्माण करके उसके ऊपर सर्वप्रथम कलश की स्थापना कर उस कलश में वरुण का विधिवत् स्थापन-पूजन करके उसके ऊपर श्रीप्रत्यङ्गिरदेवता का यन्त्र स्थापित करके यन्त्र के मध्यबिन्दु पर श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता का पूजन करके उस यन्त्र के अन्य समस्त कोणों तथा पत्रों पर देवता के आवरण परिवार का भी विधिवत् अर्चन पूजन करे।

ॐ फट्। कलशपात्र प्रच्छालित करे।

ॐ यँ नमः। मन्त्र से कलशपात्र के दोषों का संशोषण करे।

ॐ रँ नमः। मन्त्र से कलशपात्र के दोषों का दाहन करे।

ॐ वँ नमः। मन्त्र से कलशपात्र में अमृत का संल्पावन करे।

ॐ नमः। जल से मार्जन कर आधारपात्र पर स्थापित कर कलश का संस्कार करे।

भूमिस्पर्श—ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोभरीमभिः॥

सप्तधान्यविखेरना—ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेनसहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥

कलशस्थापन—ॐ आजिग्घ्रकलशंमह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानः सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः॥

कलश में जल भरना—ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओषधीः पूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषष्प्परि॥ एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥

कलश में पञ्चपल्लव डाले—ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥

कलश में कुश डाले—ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्णव्व्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्रथाः॥

कलश में पूंगीफल डाले—ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

कलश में पञ्चरत्न डाले—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्न्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्मैदेवायहविषाविधेम्॥

युग्मवस्त्राच्छादन—ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मव्वरूथमासदत्स्वः॥ व्वासोअग्ग्रे व्विश्श्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो॥

पूर्णपात्रस्थापन—ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ व्वस्नेवविक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥

नारिकेलफलस्थापन—ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्प्पिणीः॥ बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

वरुणध्यान आवाहन पञ्चोपचार पूजन—ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते

यजमानोहुविर्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।

इस जल में वरुण अपने आयुधशक्तिपरिवार के सहित आकर स्थित हों।

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षी (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकायें स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तमहाद्वीप अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सहितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ, नद तथा नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर हमारे समस्त दुरितों के क्षय कारक हो तथा समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग स्वरूप होकर कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें।।७।।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।८।।

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरितों को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें तथा हमारे यज्ञ की पूर्णता प्रदान करें।।८।।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते है, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

प्रधानकलशपूजनम्

ध्यानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।**

आसनम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।**

पाद्यम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।**

अर्घ्यम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।**

आचमनम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

स्नानीयम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।**

पुनराचमनीयम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।**

पयःस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।**

दधिस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।**

घृतस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।**

मधुस्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।**

शर्करास्नानम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।**

पञ्चामृतस्नानम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे **चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।**

ताम्बूलादिसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे **पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।**

फलादिसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भव-**फलानि समर्पयामि।**

दक्षिणासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः **साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।**

नीराजनसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं **समर्पयामि।**

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्र-**पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

परिक्रमासमर्पणम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां **समर्पयामि।**

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें-रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें। हे पश्चिम दिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले हमारी रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसम्बादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच महोदधि समुद्र था, उसी समुद्रमन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे विष्णु स्वयं धारण किये॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

जल से ही सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थों के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, तुम्हीं प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायक।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करने वाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सानिध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले, हे जलाधिनाथ! आपको बार बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करने वाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जबतक हमारे यज्ञकर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती तबतक हमें सान्निध्य प्रदान करें॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों सें जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

आवाहन करके मूल से आठ बार अभिमन्त्रित कर, धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर पीठस्थ देवताओं का पूजन करने के बाद देवीयन्त्र स्थापित करके बिन्दु में देवि का पूजन करे।

प्रधानकलशस्थापनं परिपूर्णम्

●

पीठदेवतास्थापनपूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मण्डूकाय नमः मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कालाग्निरुद्राय नमः कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कच्छपाय नमः कच्छपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आधारशक्तये नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ प्रकृतये नमः प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कूर्माय नमः कूर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ पृथिव्यै नमः पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षीरसमुद्राय नमः क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्ञँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वैराग्याय नमः वैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अवैराग्याय नमः अवैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायानन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पूजन करके कलाओं सहित वह्न्यर्कसोममण्डलों का पूजन करे।

वह्निमण्डलपूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दशकलात्माने अग्निमण्डलाय नमः अग्निमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रार्चिषे नमः धूम्रार्चिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊष्मायै नमः ऊष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुश्रियै नमः सुश्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वरूपायै नमः स्वरूपाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

अर्कमण्डलपूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः सूर्यमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ वँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ घँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ दँ सुषुम्णायै नमः सुषुम्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

सोममण्डलपूजम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः सोममण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं शशिन्यै नमः शशिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्यौत्स्नायै नमः ज्यौत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रियै नमः श्रीयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सत्वाय नमः सत्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं रजसे नमः रजःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं तमसे नमः तमःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं आत्मने नमः आत्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अन्तरात्मने नमः अन्तरात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परमात्मने नमः परमात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानात्मने नमः ज्ञानात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मां मायातत्त्वाय नमः मायातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कलातत्त्वाय नमः कलातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विं विद्यातत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं परतत्त्वाय नमः परतत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठशक्तिपूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आधारशक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकांपूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दोग्घ्राशक्तिभ्यो नमः दोग्घ्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायोग पीठात्मने नमः प्रत्यङ्गिरापीठशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः प्रेतासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रर्ती रक्तवर्णाम्,
रक्तोदन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

रक्त महासागर में अरुणकालिक सूर्य के वर्ण के समान अरुणवर्ण वाले कमल पर विराजमान हाथ में पाश-अङ्कुश-खड्ग-धनुष-बाण-शूल-कपाल धारण किये हुए, तीन नेत्र वाली, भगवती को प्रणाम करता हूँ, हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए, रक्तवर्ण वाली, रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

शरण्ये वरण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येतिपुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि॥२॥

शरणागत होने, वरण करने पर सुकारुण्यपूर्ण, हिरण्यगर्भ से आदि, किसी भी उपाय से न जाने जानी वाली, पुण्यस्वरूपा, कल्याणकर्त्री, भवसागर के भय से भयभीत, हमारी रक्षा करो, हे भवानि! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

पीठशक्तियों के आवाहन स्थापन पूजन के बाद उनका ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे। तथा विभिन्न पदार्थों से यन्त्र पर देवी की विधिवत् पूजा करे।

पीठ शक्ति पूजन के बाद बहिः पुजन करे।

बहिःपूजाविधिः

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदेश्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे––नामसंवत्सरे––यने––ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमेमासे पुण्यपवित्रमासे––मासे––पक्षे––तिथौ––वासरे––नक्षत्रे ––योगे––करणे––राशिस्थिते चन्द्रे ––राशिस्थिते श्रीसूर्ये––राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ––गोत्रः––प्रवरः––शर्मानामाऽहं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीत्यर्थं अर्चनादिकर्म करिष्ये।

तत्त्वाचमनम्—जल से तत्त्वाचमन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य वामदेवऋषिः, अनुष्टुब्छन्दः श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवता ह्रीँ बीजं, हूँ शक्तिः, क्लीँ कीलकं श्रीष्टदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामदेवऋषये नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनुष्टुब्छन्दसे नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ शक्तये नमः पादयोः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ श्रीँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ ऐँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ ह्रौँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ श्रीँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हूँ।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ मां रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धः—चुटकी बजाते हुए चारो तरफ दिग्बन्धन करे—

ॐ ऐँ ह्रौँ श्रीँ ॐ भूर्भुवः स्वः।

सभी तरफ चुटकी बजाये। मूल मन्त्र से तीन बार पूरक, कुम्भक तथा रेचन पूर्वक प्राणायाम करके फिर पूजन करे। पूजन के लिए देवी प्रत्यङ्गिरा की सुवर्ण निर्मित मूर्ति को लाकर उसपर प्रतिष्ठा के लिए घृत का अनुलेपन करके अधोलिखित मन्त्र पाठ करते हुए जल की धारा गिराये।

अग्न्युत्तारणपूर्वक-मूर्तिप्रतिष्ठाविधिः

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्नेपरिंव्ययामसि॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्नेपरिंव्ययामसि॥ पावकोअस्मभ्यꣳशिवोभव॥ ॐ उपज्जमनुप वेतसेऽवतरनदीष्ष्वा॥ अग्ग्नेपित्तमपामसिमण्डूकिताभिरागहिसेमंनोंयज्ञंपावकवर्ण्णꣳ शिवंकृधि॥ ॐ अपामिदंन्ययनꣳसमुद्रस्यनिवेशनम्॥ अन्न्याँस्तेंऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव॥ ॐ अग्ग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेवजिह्व्वया॥ आदेवा न्वक्षियक्षिच॥ ॐ सनःपावकदीदिवोऽग्ग्नेदेवाँ२॥ऽइहावह॥ उपयज्ञꣳहविश्श्चनः॥ ॐ पावकयायश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्रुरुचऽउषसोनभानुना॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरणऽआयोघणेनततृषाणोऽअजरः॥ ॐ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे॥ अन्न्याँस्तेंऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यꣳशिवोभव॥ ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदे व्वेड्बर्हिषदेव्वेड्व्वनसदेव्वेट्स्वर्व्विदेव्वेट्॥ ॐ येदेवादेवानांय्यज्ञियाय्यज्ञियानाꣳसंव्वत्सरीणा मुपभागमासते॥ अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयंपिबन्तुमधुनोघृतस्य॥ ॐ येदेवा देवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य॥ येभ्योनऋतेपवतेधामकिञ्चननते दिवोनऽपृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥ ॐ प्राणदाऽअपानदाव्यानदाव्वर्च्चोदाव्वरिवोदाः॥

अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यंᳬ शिवोभव॥

आकर्षणीमुद्रालक्षणम्—आकर्षणी (अङ्कुश) मुद्रा के द्वारा आकर्षित करे—

ऋतुमध्या मध्यपर्वाक्रान्ता तर्जन्यधोमुखी।
विज्ञेयाङ्कुशमुद्रेयं कुञ्चितामध्यपर्वतः॥१॥

मध्यमा अङ्गुलि सीधा करके उसके मध्यपर्व पर तर्जनी अंगुली को आधा मोड़कर लगाये तथा अनामिका कनिष्ठिका अङ्गुलियों को अङ्गुष्ठ से नीचे करके आबद्ध करने से जो आकृति बनती है, उसे विद्वज्जन अङ्कुशमुद्रा कहते हैं॥१॥

अथवा—दक्षमुष्टिगृहीतस्य वाममुष्टेस्तु मध्यमाम्।
प्रसार्य तर्जन्याकुञ्चेत्सेयमङ्कुशमुद्रिका॥२॥

द्वितीयविधि—मध्यमा अङ्गुलि को सीधा करके तर्जनी को मध्य से मोड़कर शेष अंगुलियों को अंगुष्ठ से आबद्ध करके दहिने हाथ की मुष्ठिका को बायें हाथ की मुष्ठिका से पकड़ने पर जो आकृति बनती है, उसे विद्वान् लोग अङ्कुशमुद्रा कहते है॥२॥

अग्न्युत्तरण के बाद प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से प्रतिष्ठा करे—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः प्रत्यङ्गिरादेवताया इह सुवर्णप्रतिमायां प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः प्रत्यङ्गिरादेवताया इह सुवर्णप्रतिमायां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंसः प्रत्यङ्गिरादेवताया इह सुवर्णप्रतिमायां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥१॥

इसी से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है॥१॥

ॐ अस्मिन् वरानने देवी सुखासीनाक्षरात्मिके।
प्रतिष्ठिता भवात्र त्वं प्रसीद परमेश्वरि॥२॥

सुखासन पर विराजान वरानना अक्षरात्मिका देवी परमेश्वरी यहाँ आकर प्रसन्नता पूर्वक सुवर्णमूर्ति में प्रतिष्ठित होकर हमारा कल्याण करें॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गाय, सायुधाय, सशक्तिकाय, सपरिवाराय इहागच्छ इहागच्छ इह प्रतिष्ठिता भव, प्रतिष्ठोपचारार्थे पुष्पं निवेदयामि।

प्रत्यङ्गिरादेवी की प्रतिष्ठा के बाद मूर्ति को कलश पर स्थापित कर पूजन करे।

ध्यानम्—मूर्ति में भावार्थ पूर्वक ध्यान करे।

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशाऽसितभीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

हाथों में खड्ग, कपाल, डमरु तथा त्रिशूल धारण की हुई, चन्द्रमा की कलाओं से शोभायमान, काले काले फैले हुए केशों वाली, बड़ी बड़ी दांतों वाली भद्रकाली हमारे लिए वर प्रदान करने वाली हों।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: ध्यायामि, ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये, यदि गुरुप्रदत्त यन्त्र पर पूजन कर रहे हों तो आवाहन नहीं करे।

आवाहनम्—आवाहनी मुद्रा के द्वारा पुष्प निवेदन करे—

ॐ अत्मसंस्थामजां शुद्धां त्वां देवी परमेश्वरीम्।
आरण्यमिव हव्यांशं मूर्त्तौ आवाहयाम्यहम्॥

हे देवि परमेश्वरि! आत्मा के भीतर रहने वाली, परमशुद्धा, अजा, अभावों में पूर्ति करने वाली प्रत्यङ्गिरा देवी के मूर्तिस्वरूप का आवाहन करते हैं।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: साङ्गाय, सायुधाय, सशक्तिकाय, सपरिवाराय इहागच्छ इहागच्छ आवाहयामि, आवाहनार्थे पुष्पं निवेदयामि।

आवाहनीमुद्रालक्षणम्—

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
देवाह्वानकारी चैषा मुद्रावाहनसंज्ञिका॥

अनामिका अङ्गुली के मूल में अङ्गुष्ठाग्र भाग का संयोजन करके अञ्जलि का स्वरूप बनाकर देवताओं के आवाहन में प्रयोग की जानेवाली आकृति को विद्वान् लोग आवाहनीमुद्रा कहते हैं।

आसनम्—पद्ममुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ सर्वान्तर्यामिन्यै देवि सर्ववीजमये शुभे।
स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

हे देवि परमेश्वरि! सभी प्राणियों में बीजरूप से निवास करने वाली, सभी शुभों को प्रदान करने वाली, सर्वान्तर्यामी, पर स्थान में अपने आत्मारूप परमशुद्ध आसन का चिन्तन पूर्वक समर्पण करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि।

पद्ममुद्रालक्षणम्—

करोतु सम्मुखीकृत्य-संहतावुन्नताङ्गुली।
तलारन्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्जमुद्रिका॥

दोनों हाथों को आगे की तरफ करके हथेली तथा अङ्गुलियों को भीतर की तरफ झुके हुए तथा अङ्गुष्ठ को तल में मिला देने से जो आकृति बनती है, उसे पद्ममुद्रा कहते है।

स्थापनम्—स्थापनीमुद्रा द्वारा पुष्प समर्पित करे, गुरुप्रदत्त यन्त्र पर प्रतिष्ठा न करे—

ॐ देवि भक्ति-सुलभे परिवार-समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव॥१॥

हे देवि परमेश्वरि! अपने आवरण (परिवार) सहित भक्ति द्वारा प्रसन्न होने वाली, जब तक हम पूजन करते हैं तब तक यहाँ स्थिर रह कर हमारा पूजन ग्रहण करें॥१॥

तवायं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो।
भक्तिस्नेहसमाकृष्टो दीपवत् स्थापयाम्यहम्॥२॥

तुम्हारी सर्वज्ञ महिमामयी मूर्ति भक्ति और प्रेमपूर्वक आवाहित करके दीपकलिकाकृति के समान स्थापित करता हूँ॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः स्थापनं समर्पयामि, स्थापनार्थे अक्षतान् निवेदयामि।

स्थापनीमुद्रालक्षणम्—

अनामामूलसंलग्नां अङ्गुष्ठाग्राञ्जलिरीरिता।
अधोमुखि कृता सैव स्थापनीति निगद्यते॥

अनामिका अङ्गुलि के मूल में अङ्गुष्ठाग्र का संयोजन करके अञ्जलिस्वरूप बनाकर अधोमुख करने पर देवताओं के स्थापन के लिए स्थापनी नाम की मुद्रा कही जाती है।

सन्निधानम्—सन्निधानमुद्रा के द्वारा पुष्प समर्पित करे—

ॐ अनन्याशक्तिदेवेशि मूर्तिशक्तिरियं प्रभो।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे॥

अनन्त शक्तियों की स्वामिनी, देवी परमाशक्ति भक्तों पर अनुग्रह करने में तत्पर रहने वाली इस मूर्ति में प्रविष्ट होकर हमें सान्निध्य प्रदान करो।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, सन्निधानार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

सन्निधानमुद्रालक्षणम्—

अश्लिष्टमुष्टियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः॥

दोनों हाथों से अलग अलग मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिला कर निर्मित आकृति का देवताओं का सन्निधान के लिए प्रयोग करते हैं, तन्त्र के ज्ञाता इसे सन्निधानमुद्रा के नाम से कहते हैं।

सन्निरोधनम्—सन्निरोधनमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधः।
आत्मनाचैक-दृप्तां त्वां संरुणद्धि महेश्वरी॥

हे देवेशि! आपके गुणों के ज्ञाता भक्त, आपके कृपा प्रसाद के लिए, आपके आज्ञा से अपनी आत्मा में ऐक्यभाव से ध्यान करते हैं अत: आप आत्मा को सम्पूर्ण रूप से आच्छादित करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इह सन्निरुध्यस्व इह सन्निरुध्यस्व, सन्निरोधनार्थे अक्षतान् निवेदयामि।

सन्निरोधनमुद्रालक्षणम्—

अश्लिष्ठमुष्टियुगला प्रोन्नताङ्गुष्ठयुग्मका।
अङ्गुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता॥

दोनों हाथों से अलग अलग अंगुष्ठ को भीतर की तरफ रख कर मुष्ठिका बनाकर दोनों मुष्ठिकाओं को आपस में अङ्गुलियों के तरफ से मिलाकर निर्मित आकृति का देवताओं के सन्निरोधन के लिए प्रयोग करते हैं विद्वान् इसे सन्निरोधनमुद्रा के नाम से कहते है।

सम्मुखीकरणम्—सम्मुखीकरणमुद्रा द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ आज्ञादुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधकस्य च।
मम ऊनं भवेद् कृत्यं तदाप्याभिमुखी भव॥

साधकों का मन दुर्बोध से ग्रस्त होकर विकल हो जाता हैं उस दुर्मन:स्थिति को समाप्त करने तथा अपने सान्निध्य के लिए हमारे सम्मुख हों।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इहसम्मुखीभव इहसम्मुखीभव, सम्मुख्यर्थे अक्षतान्निवेदयामि।

सम्मुखीकरणमुद्रालक्षणम्—

कनिष्ठिकामूलाङ्गुष्ठसंयोज्यासरलाञ्जलिः ।
हृदि बद्धाञ्जलिमुद्रा सम्मुखीकरणे मता॥

कनिष्ठिका के मूल में अङ्गुष्ठ को समावेशित करके समस्त अङ्गुलियों को सीधा करके अञ्जलि की आकृति से देवताओं का सम्मुखीकरण होता है, तन्त्रशास्त्र के विद्वान् इसे सम्मुखीकरणमुद्रा कहते हैं।

अवगुंठनम्—भ्रामितमुद्रा के द्वारा अक्षत समर्पित करे—

ॐ प्रत्यङ्गवासिनि देवि! जीव-रक्षिणीमेव च।
अवगुण्ठनं पूजार्थं सुहृदया सदा भव॥

जीवों के प्रत्येक अङ्गों में वास करके जीवों की रक्षा करने वाली, पूजा के लिए अवगुण्ठन कर रहा हूँ, हमारे ऊपर सदा प्रसन्न हो।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इह अवगुंठयामि, अवगुंठनार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

अवगुंठनमुद्रालक्षणम्—

सव्यहस्तकृतामुष्ठिः दीर्घाधोमुखतर्जनी।
अवगुण्ठनमुद्रेयममितो भ्रामिता भवेत्॥

दाहिंने हाथ को मुष्ठि की आकृति बनाते हुए तर्जनी अङ्गुलि को सीधा करके नीचे की तरफ करके देवताओं के चारोतरफ घुमाने से भ्रामित करण होता है। विद्वज्जन इस आकृति को अवगुण्ठन या भ्रामितमुद्रा कहते हैं।

सकलीकरणम्—

ॐ दशपीयूषवर्षिण्या पूरयेद्यज्ञविष्ठरम्।
मूर्तौदा यज्ञसम्पूर्तौ स्थिरा भव महेश्वरी॥

दशवर्षावच्छिन्न के द्वारा काते गये सूत से आपके लिए यज्ञविष्ठर निर्माण किया गया है, यज्ञ के सम्पूर्ति के लिए मूर्ति में प्रविष्ठ होकर हे महेश्वरि! स्थिर हो जायें।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ ऐँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ ह्लीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ श्रीँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यासात्मक सकलीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे।

सकलीकरणमुद्रालक्षणम्—

देवाङ्गेषु षडङ्गनां न्यासः स्यात्सकलीकृतिः।
लेलिहाना कृतान्यासः देवताप्रीतिदायिनी॥

देवताओं के हृदय, शिर, शिखा, भुजा, नेत्र तथा चारो तरफ लेलिहानमुद्रा से तत्तद स्थानों पर षडङ्ग न्यास करने को विद्वान् लोग सकलीकरण कहते हैं।

अमृतीकरणम्—धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ स्वभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणार्पिते।
स्वतेज:पुञ्जरेणाशु वेष्टिता भव सर्वत:॥

अपने भक्त के वाणी, मन, चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण में अपने तेज:पुञ्ज से सर्वत: आवेष्टित (व्याप्त)करके स्थिर हों।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: अमृतीकरणं समर्पयामि, अमृतीकरणार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

अमृतीकरणधेनुमुद्रालक्षणम्—

अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठानामिका पुनः।
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता:॥

दोनों हाथों के अनामिका का कनिष्ठिका के साथ तथा मध्यमा का तर्जनी के साथ आपस में संयोजन करने से जो आकृति बनती हैं उसे तन्त्र के ज्ञाता धेनुमुद्रा कहते हैं।

परमीकरणम्—महामुद्रा के द्वारा परमीकरण के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ समुद्भूतं सुसौन्दर्यं सौन्दर्यारुणविग्रहम्।
दिव्यतेजस्सुसम्पन्ना शक्त्यक्षरात्मरूपिणी॥

दिव्यतेज से सुसम्पन्न अक्षरात्मिकारूपिणी, सौन्दर्य से उत्पन्न सौन्दर्यरूपिणी, हमारे हृदय में परमात्मभाव से अवस्थित हों।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: परमीकरणं समर्पयामि, परमीकरणार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

परमीकरणमहामुद्रालक्षणम्—

अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठौ प्रसारितकराङ्गुलि:।
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधै:॥

दोनों हाथों के अङ्गुष्ठ को आपस में ग्रथित (मिला) करके शेष सभी अङ्गुलियों को सरल करके प्रसारित करने से जो आकृति निर्मित होती है तन्त्रज्ञ विद्वान् इसे महामुद्रा कहते हैं।

स्वागतम्—स्वागतमुद्रा के द्वारा स्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवा: स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्यै ते परमेशानी आगतं स्वागतं तथा॥

समस्त देवता अपने कामनाओं की पूर्ति के लिए जिसकी दर्शन की सदैव इच्छा करते हैं उन परम ईश्वरी प्रत्यङ्गिरादेवी का आगमनार्थ स्वागत करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सावरणाय सशक्तिकाय श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेव्यै नम: स्वागतं समर्पयामि, स्वागतार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

सुस्वागतम्—सुस्वागतमुद्रा के द्वारा सुस्वागत के लिए अक्षत निवेदन करे—

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनञ्च मे।
आगता भव देवेशि सुस्वागतमिदं पुनः॥

भक्तों का जीवन जिसके आगमन से सफल हो जाता है और समस्त कामनायें पूरी हो जाती हैं तथा भक्त अनुगृहीत हो जाते हैं उनके आगमन पर सुस्वागत करता हूँ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सावरणाय सशक्तिकाय श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः सुस्वागतं समर्पयामि, स्वागतार्थे अक्षतान्निवेदयामि।

प्राणस्थापनम्—लेलिहानमुद्रा के द्वारा प्राणस्थापन करे—

ॐ सञ्चरन्ति भूताः सर्वे जीवने प्रवहन्ति च।
अरुणाभासुषुम्नाशक्तिः प्राणान् स्थापयाम्यहम्॥

जिसकी कृपा से सभी भौतिक प्राणियों का जीवन चलता रहता हैं उस अरुण आभा वाली सुषुम्ना में प्रवाहित होने वाली प्राणशक्ति की स्थापना करता हूँ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सावरणाय सशक्तिकाय श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः प्राणस्थापनं समर्पयामि, प्राणस्थापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि। लेलिहानमुद्रा से प्राणों का स्थापन करे।

प्राणस्थापनार्थे लेलिहानमुद्रालक्षणम्—

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः।
अनामायां क्षिपे द्धामूर्ध्वंकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्॥१॥

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती हैं इसे जीव न्यास में प्रयोग किया जाता है॥१॥

लेलिहानाममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमुद्रामुच्यते॥२॥

लेलिहानमुद्रा को ऊर्ध्वमुख करने से निर्मित मुद्रा को तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान तत्त्वाख्यमुद्रा कहते हैं॥२॥

अष्टमुद्राप्रदर्शनम्—तत्तद् मुद्राओं से निर्दिष्ट मुद्राओं का प्रदर्शन करे—

ॐ योनिमुद्रामहायोनिः डमरुं खड्गमुण्डं च।
वराऽभयत्रिशूलञ्च दर्शयामि महाशिवे॥

हे महाशिवे! योनिमुद्रा, महायोनिमुद्रा, डमरु, खड्ग, मुण्ड, वर, अभय, त्रिशूल मुद्राओं को तत्तद् मुद्राओं से प्रदर्शित करे।

योनिमुद्रालक्षणम्—योनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्ध्वं संश्लिष्टदीर्घमध्यमयोरधः॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता॥

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अंगुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे तथा कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को नीचे से संश्लिष्ट करने से योनिमुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः योनिमुद्रां प्रदर्शयामि।

महायोनिमुद्रालक्षणम्—महायोनिमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

तर्जन्यनामिके मध्ये कनिष्ठे च क्रमादपि।
करयोर्योजयेच्चैव कनिष्ठामूलभेदतः॥
अङ्गुष्ठाग्रं तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिताः।
अधोमुखीमिमां कृत्वा दर्शयेद् बीजपूर्वकम्॥

दोनों हाथों के अनामिका और तर्जनी अङ्गुलि को आपस में ग्रथित करके उसके ऊपर मध्यमायुगल अङ्गुलि को स्थापित करे, उसके ऊपर उसी तरह से कनिष्ठिका अङ्गुलियुगल को स्थापित करने से महायोनिमुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः महायोनिमुद्रां प्रदर्शयामि।

खड्गमुद्रालक्षणम्—खड्गमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

कनिष्ठेऽनामिके बद्ध्वा स्वाङ्गुष्ठेनैव दक्षतः।
श्लिष्टाङ्गुली तु प्रसृत्ये संदृष्टे खड्गमुद्रिका॥

अङ्गुष्ठ से कनिष्ठिका और अनामिका को आबद्ध करके तर्जनी और मध्यमा को सीधा करने से जो आकृति बनती है, उसे विद्वान लोग खड्गमुद्रा कहते हैं।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः खड्गमुद्रां प्रदर्शयामि।

मुण्डमुद्रालक्षणम्—मुण्डमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

मुण्डोभयहस्तेन विधायोर्ध्वंसमुन्नयेत्।
मुद्रामुण्डाभिधाख्याता सर्वविघ्नविनाशिनी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक दूसरे से सटाकर हाथ को ऊपर की तरफ स्थापित करने पर सभी विघ्नों का विनाश करने वाली मुण्डमुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः मुण्डमुद्रां प्रदर्शयामि।

डमरुमुद्रालक्षणम्—डमरुमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

बद्धमुष्टिकृतं हस्तं चालयेत्स्वयमेव च।
डमरुमुद्राविख्याता दुष्टानां भयकारिणी॥

दोनों हाथ की मुष्ठिका बनाकर एक के ऊपर दूसरा स्थापित कर चलाने से दुष्टों को भयाक्रान्त करनेवाली डमरुमुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः डमरुमुद्रां प्रदर्शयामि।

त्रिशूलमुद्रालक्षणम्—त्रिशूलमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

अङ्गुष्ठेकनिष्ठान्तु बद्धाश्लिष्टाङ्गुलित्रयम्।
प्रसारयेच्च त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता॥

अंगुष्ठ को कनिष्ठिका से आबद्ध करके शेष सभी अंगुलियों को सीधा रखने पर त्रिशूल संज्ञावाली मुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रूणां भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः त्रिशूलमुद्रां प्रदर्शयामि।

वरमुद्रालक्षणम्—वरमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

ऊर्ध्वं प्रसारितं हस्तं आशीर्वादात्मकं तथा।
मुद्रावरदविख्याता भक्तानां सिद्धिदायिनी॥

दक्षिण हाथ को ऊपर की तरफ सीधा करके आशीर्वादात्मक रूप की आकृति भक्तों को सिद्धि प्रदान करने वाली, वरसंज्ञा वाली मुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः वरमुद्रां प्रदर्शयामि।

अभयमुद्रालक्षणम्—अभयमुद्रा बनाकर प्रदर्शित करे—

अधोमुखं प्रसारितं दक्षहस्तं प्रदर्शयेत्।
मुद्रामभय-विख्याता भक्तानां भयहारिणी॥

दक्षिण हाथ को नीचे की तरफ प्रसारने से भक्तों के भय को नष्ट करनेवाली, अभय नामक मुद्रा बनती है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अभयमुद्रां प्रदर्शयामि।

क्रमशः समस्त मुद्राओं को दिखाकर प्रत्यङ्गिरागायत्री का जप करे।

प्रत्यङ्गिरागायत्री—ॐ प्रत्यङ्गिरायै विद्महे शत्रुनिषूदिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्॥ १०८ बार जप करके प्रत्यङ्गिरादेवी के बायें हाथ में समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—

ॐ नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥

ऋतुओं के अनुसार उत्पन्न तरह तरह के सुगन्धित पुष्पों से संग्रहीत पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वरि! ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देव्यै नमः पादयोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। दोनो पैरों पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देव्यै नमः जान्वोः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। दोनों जानुओं पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देव्यै नमः नाभ्यां पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। नाभि पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देव्यै नमः हृदये पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। हृदय पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देव्यै नमः मस्तके पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। मस्तक पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

विविधोपचारपूजनम्

पाद्यसमर्पणम्—

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

आपके पाद के क्षणमात्र के सम्पर्क में आने से परमानन्द हो जाता हैं, उस चरण रज के प्राप्ति के लिए शुद्ध पाद्यपदार्थ समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि। गन्ध उसीर गोरोचन श्यामाक विष्णुकान्ता कमल तथा विविध पुष्पों को समायेजित कर एवं दुर्वा युक्त जल अनामिका अङ्गुष्ठ मिलाकर यन्त्रस्थित भगवती के युगल चरणों में समर्पित करे।

अर्घ्यसमर्पणम्—

ॐ निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि।
शवोपरि स्थिते देवि! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

सभी देवताओं में, सभी निधियों में केवल तुम ही गुणवान् हो, शव के उपर आसीन हे देवि! आपको नमस्कार है, इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिए।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनसमर्पणम्—

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयामीशी शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

वेदों में उल्लिखित ज्ञान के लिए, देवताओं में देवत्व के लिए तथा शुद्धियों में शुद्धि के लिए हे ईश्वरि! आचमन समर्पित है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः मुखे आचमनीयं समर्पयामि। हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमनमुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग, नामाचूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

मधुपर्कसमर्पणम्—

ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे॥

सभी प्रकार के कालुष्य को समाप्त करने के लिए, पूर्णसुखासन पर आसीन हे देवि! आपको मधुपर्क समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न हो।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः मुखे मधुपर्कं समर्पयामि। ताम्र धातु के अर्घ्यपात्र में मधु, घृत, शर्करा युक्त मधुपर्क देवि के संमुख तत्त्वाख्यमुद्रा से (अधोमुख अनामिका, मध्यमा तथा अङ्गुष्ठ से) मधुपर्क निवेदन करे।

स्नानीयंसमर्पणम्—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्यनदियों का दिव्यजल स्नान के लिए समर्पित है, हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पणम्—

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्याः स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्॥

जीव शुद्ध हो या अशुद्ध हो, किसी भी अवस्था में जिसके स्मरण मात्र से ही जीव शुद्ध हो जाता है, उसी शुद्धता के लिए पुनः आचमनीय जल समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पुनरर्घ्यसमर्पणम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः पुनरिदमर्घ्यं समर्पयामि। जल कुशाग्राक्षत, तिलब्रीहि, यवाज्य, पुष्पमिश्रित अर्घ्य शिर पर सर्वाङ्गुलि संयोग से निवेदन करे।

उद्वर्तनसमर्पणम्—

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्॥

सर्व लोकों में परमशुद्धात्मा, हे लोकमाता! उत्तमस्निग्ध पदार्थ स्निग्धता के लिए समर्पित है, इस स्निग्धपदार्थ को ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः उद्वर्तनं समर्पयामि। हरिद्रादि द्रव्य तैल चन्दन संयुक्त उद्वर्तन अधोमुखाङ्गुलि से निवेदित करे।

शुद्धस्नानीयं जलं समर्पणम्—

ॐ परमानन्दबोधाविव निमग्ननिजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदस्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि॥

परमानन्द स्वरूप आत्ममूर्ति स्वरूपिणी आपको साङ्गोपाङ्ग स्नान के लिए शुद्ध जल समर्पित है, हे महेश्वरि! ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः शुद्धस्नानीयमिदं जलं समर्पयामि। स्नानीयमुद्रा से स्नानोदक प्रदान करे।

वस्त्रसमर्पणम्—

ॐ मया चित्रपदाच्छन्नं निजगुह्योरुतेजसे।
निवारणाय विज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहम्॥

हमारा चित्त विभिन्न अज्ञान से आच्छन्न हो गया है, उसका आप अपने तेज से निवारण करके विज्ञान का प्रकाश करने के लिए हे देवि! वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इदं वासः समर्पयामि। वासमुद्रा से प्रदान करे।

यज्ञोपवीतसमर्पणम्—

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण त्रिगुणेश्वरी॥

नव तन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्ति वाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपकों समर्पित करता हूँ, हे महादेवि! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इदं यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उत्तरीयसमर्पणम्—

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकः सदा।
तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्॥

जिस शक्ति का आश्रय ग्रहण करके महादेव इस जगत् का संहार करते हैं, उसी शक्ति की कामना से हे परमेशानि! आपको उत्तरीय प्रदान करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इदमुत्तरीयवासः समर्पयामि।

पुष्पसारसमर्पणम्—

ॐ जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः।
सुरभिगन्धमिदञ्च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम्॥

हे जननि! चम्पकादि पुष्पों के तैलों से निर्मित सुन्दर सुगन्धित, वस्त्रादि पर लगाने योग्य पुष्पसार आपके प्रीत्यर्थ समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इदं पुष्पसारं समर्पयामि।

आभूषणसमर्पणम्—

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥

स्वभाव से ही अनुकूल, सुन्दर अङ्गों वाली, समस्त शक्तियों की आश्रयभूता, हे शिवे! आपके अर्चन के लिए विभिन्न प्रकार के चित्रविचित्र आभूषण समर्पित हैं।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः इदं आभूषणं समर्पयामि।

विन्याससमर्पणम्—

ॐ भावमन्त्रार्थसंयुक्तं वर्णस्वरसमन्वितम्।
मातृकारूपिणि देवि! विन्यासं परिकल्पितम्॥

वाक्यार्थ से युक्त स्वर तथा व्यञ्जनवर्णों से निर्मित मन्त्रस्वरूपिणी हे देवि! मातृका विन्यास समर्पित है।

मातृका से मूल मन्त्र को सम्पुटित करके इष्ट देवता के तत्तदङ्गों में न्यास करे।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ

ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः शिरसि विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः मुखे विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ वँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः कण्ठे विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः हृदये विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः नाभौ विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः जान्वोः विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अ: कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ

यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः जङ्घयोः विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः पादौ विन्यस्यामि।

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ प्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे विन्यस्यामि।

चन्दनसमर्पणम्—

ॐ परमानन्द-सौभाग्य-परिपूर्ण-दिगन्तरे।
गृहाण परमंगन्धं कृपया परमेश्वरी॥

सौभाग्य और परमानन्द से परिपूर्ण दिग्दिगन्तरों में सुगन्धि से व्याप्त, सुन्दर सुगन्ध से युक्त चन्दन समर्पित है, हे परमेश्वरि! कृपापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः चन्दनं समर्पयामि। सभी अङ्गुलियों से लेप करे।

अक्षतसमर्पणम्—

ॐ अक्षतान् धवलान् देवि स्वर्णरौप्यमयीकृतान्।
गृहाण जगदीशानि प्रसीद परमेश्वरि॥

धवल अक्षतों को सुवर्ण रंग से अलंकृत करके हे संसार की ईश्वरि! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके प्रसन्न होईये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पसमर्पणम्—

ॐ तुरीयवनसम्भूतं नानागुणमनोहरम्।
आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्॥

हे देवि! तुरीय वन से उत्पन्न विभिन्न गुणों से युक्त सुन्दर मनोहर आनन्दस्वरूपी उत्तमपुष्प को ग्रहण कीजिये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः एतानि ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि वौषट्।

पुष्पमालासमर्पणम्—

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया हृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

माली के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देवि! इसे ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वादिसमर्पणम्—

ॐ दुर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण जगदीश्वरि॥

अमृततुल्य, मङ्गल प्रदान करने वाले हरे हरे सुन्दर दूर्वा के नूतन अङ्कुर, आपके पूजा के लिए लाया हूँ, हे देवि! प्रसन्नतापूर्वक इसे ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

विल्वपत्राणिसमर्पणम्—

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रितयायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं देव्यर्पणम्॥

भगवान् शिव के तीन नेत्रों के समान तीन पत्रों वाले, तीन जन्मों के पापों को नष्ट करने वाले, विल्वपत्रों को शिव की प्रसन्नता के लिए हे देवि! आपको समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः विल्वपत्राणि समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितां देवीमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करने वाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देवि! ग्रहण करें, यह आपको शान्ति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करने वाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

कुङ्कुमसमर्पणम्—

ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरी॥

दिव्यकान्ति को प्रदान करने वाला, समस्त कामिनियों को प्रसन्नता प्रदान करने वाला, दिव्यकुङ्कुम आपको प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वरि! इसे ग्रहण करके प्रसन्न होइये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः कुङ्कुमं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—

ॐ फट्। धूपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ट पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। धूप पात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। मूल मन्त्र को आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः जयध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा पूजन करे।

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देवि! अपको समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रूणां भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै एष धूपं समर्पयामि।

शङ्ख के जल का प्रक्षेप करके वायें हाथ से घण्टा बादन करते हुए धूपमुद्रा से देवता के नाभि प्रदेश पर धूप का आघ्रापन करे तथा पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

दीपदानसमर्पणम्—

ॐ फट्। दीपक का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। दीपक का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। मेल मन्त्र को आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करने वाला, सुन्दर प्रकाशवान् महादीप बाहर तथा भीतर व्याप्त दीपज्योति हे देवि! आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै दीपं समर्पयामि। दीपदान के पश्चात् पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

नैवेद्यम्—

विविध प्रकार का नैवेद्य साज्यसर्करापायसादि का परिष्कार करके चतुरस्रमण्डल पर स्थापित कर सर्वदोषों का निषेचन करे।

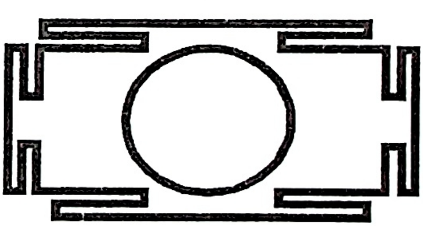

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। मत्स्यमुद्रा से निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ नमः। मण्डल का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। मेल मन्त्र को आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः जयध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा बादन करे।

धेनुमुद्रा दिखकर गन्धाक्षत से नैवेद्य का पूजन करके तत्वाख्यमुद्रा से देवी को नैवेद्य समर्पित करे।

ॐ सत्पात्रसिद्धं सहविर्विधानेन सिद्धं मया।
निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत्॥

शुद्धसत्पात्र में विधानपूर्वक पकाये हुए हवि का मै निवेदन करता हूँ, हे देवेशी! इसे कृपया ग्रहण किजिए।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै नैवेद्यमिदं समर्पयामि। ग्रासमुद्रा से समर्पित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः प्राणाय स्वाहा। प्राणमुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अपानाय स्वाहा। अपानमुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः व्यानाय स्वाहा। व्यानमुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः समानाय स्वाहा। समानमुद्रा दिखाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः उदानाय स्वाहा। उदानमुद्रा दिखाये।

पानीयं जलं समर्पणम्—

ॐ समस्तदेवदेवेशं शुद्धिप्राप्तिकरं परम्।
अखण्डानन्दसम्पूर्णां गृहाण जलमुत्तमम॥

परमशुद्धि प्रदान करने वाला, समस्त देविदेवताओं को अखण्ड आनन्द प्रदान करने वाला शुद्ध जल आपको प्रदान करता हूँ, इसे ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै

नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पानीयं जलं समर्पयामि। चुलुकमुद्रा से पानीय प्रदान करे।

उद्वर्तनसमर्पणम्—

ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं दिव्यं गृहाणमहामाहेश्वरि॥

मलयपर्वत पर उत्पन्न होने वाला दिव्यचन्दन कस्तूरी आदि के गन्धों से युक्त दिव्य उद्वर्तन प्रदान करता हूँ हे देवि! इसे ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः उद्वर्तनकं समर्पयामि। दोनों हाथों से उद्वर्तन प्रदान करे।

ताम्बूलसमर्पणम्—

ॐ नमः। ताम्बूल का अभ्यर्चन करे।

ॐ फट्। चक्रमुद्रा से अभिरक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर संदहन करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। मूल मन्त्र का आठ बार जप कर अभिमन्त्रण करे।

ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लिदलैर्युतम्।
गुवा-भागरितं देवि! ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

लवङ्ग, इलायची, कर्पूर, सुपाड़ी तथा पान के पत्तों से युक्त ताम्बूल आपको समर्पित है, हे देवि! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै ताम्बूलं समर्पयामि। तत्त्वमुद्रा से देवी को ताम्बूल समर्पित करे।

तत्त्वमुद्रालक्षणम्—

तर्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखी।
अनामायां क्षिपेद्वृद्धामूर्ध्वंकृत्त्वा कनिष्ठिकाम्॥१॥

तर्जनी-मध्यमा-अनामिका अंगुलियों को बराबर सीधा करके अधोमुख कर अनामिका को अङ्गुष्ठ से संयोजित करने से लेलिहान नामक मुद्रा बनती है, इसे जीवन्यास में प्रयोग किया जाता है॥१॥

लेलिहानाममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता।
तस्योर्ध्वमुखं कृत्त्वा च तत्त्वाख्यमद्रामच्यते॥२॥

लेलिहानामक इस मुद्रा का जीवन्यास में प्रयोग किया जाता है, लेलिहानमुद्रा को ऊर्ध्वमुख करने से तत्त्वाख्यमुद्रा तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान् लोग कहते हैं।।२।।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—

ॐ नानासुगन्धिसंयुक्तं यथाकालोद्भवं तथा।
मया पुष्पाञ्जलिर्दत्ता गृहाण परमेश्वरी।।

ऋतुओं के अनुसार उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के गन्धों से युक्त पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ, हे देवि! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण कीजिए।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अञ्जलिमुद्रालक्षणम्—

सर्वाङ्गुलिः ऋजुं कृत्त्वा प्रसार्य संयोजयेत्।
हस्तद्वयोः संयोज्यञ्च अञ्जलिमुद्रामुच्यते।।

सभी अङ्गुलियों को सीधा करके हथेली को पसार कर दोनों हाथों को आपस में सटाने से जो आकृति बनती है, उसे अञ्जलिमुद्रा कहते हैं।

परिवारार्चन-आदेशग्रहणम्

ॐ सच्चिन्मयपरे देवि! परामृतचरुप्रिये।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते।।

हे सतोगुणात्मक चिन्मय परदेवता! परमण्डल से द्रवीभूत होने वाले अमृतद्रव से प्रेम करने वाली, अपने परिवार के अर्चन के लिए अनुज्ञा प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अनुज्ञां देहि महेश्वरी। पुष्पाञ्जलि प्रदान करके दायें हाथ से पूजन तथा वायें हाथ से तर्पण करे।

प्रथमावरण-गुरुपंक्तिपूजनम्

दिव्यौघगुरुः—भूपुर के ईशानकोण में दिव्यौघ गुरुओं का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमहादेव्यम्बानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमहादेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीत्रिपुरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीभैरवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सिद्धौघगुरुः—भूपुर के उत्तरदिशा में सिद्धौघ गुरुओं का पूजन करे।

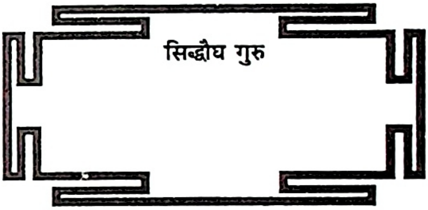

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीब्रह्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीपूर्णदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीचलचित्तानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीचलचलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीकुमारानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्दयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीवरदानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीस्मरदीपानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमायाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमायावत्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

मानवौघगुरुः—भूपुर के अग्निकोण में मानवौघ गुरुओं का पूजन करे।

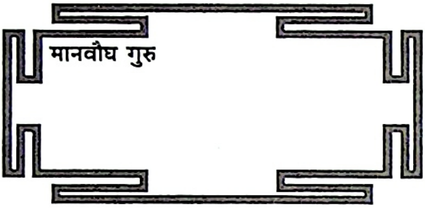

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीविमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीकुशलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमत्सेनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीसुधाकरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीप्रह्लादानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीसनकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीवशिष्ठानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीबोधानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमीनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीगोरक्षानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीभोजदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीप्रजापत्यानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीमूलदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीरन्तिदेवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीविघ्नेशरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीहुताशनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीसमयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीसन्तोषानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीनिजगुरवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

हे शरणागत वत्सले परदेवि! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक प्रथम-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ। योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

अनेन प्रथमावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

द्वितीयावरण-रश्मिदेवतापूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीनित्यकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीनित्यकाल्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीकाल्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः श्रीभद्रकाल्यम्बादेव्यै नमः श्रीभद्रकाल्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

अनेन द्वितीयावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

तृतीयावरण-शिवाग्निपूजनम्

तृतीय आवरण में शिव तथा अग्नि का पूजन करे।

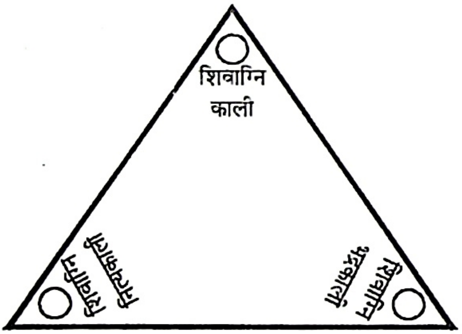

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः ॐ शिवाय नमः शिवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः ॐ अग्नये नमः अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

अनेन तृतीयावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

चतुर्थावरण-अष्टशक्तिपूजनम्

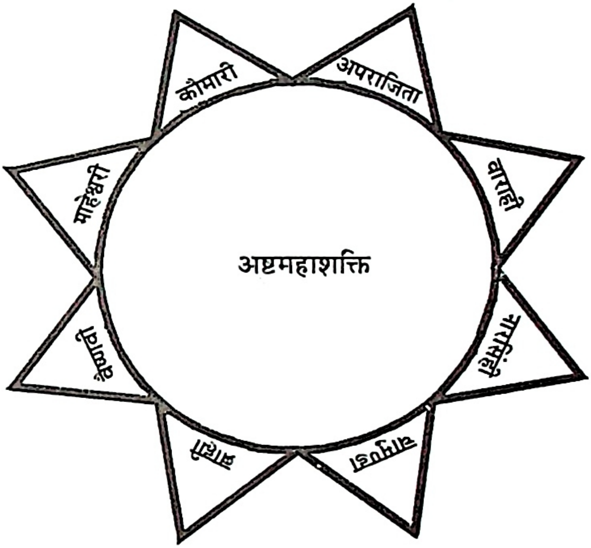

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः कौमार्यै नमः कौमारीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अपराजितायै नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः वाराह्यै नमः वाराहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः नारसिंह्यै नमः नारसिंहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।सामान्यार्घ्य जल से—
एताः चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एताः चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

अनेन चतुर्थावरणदेवता पूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पञ्चमावरण-स्तम्भिन्यादिपूजनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः स्तम्भिन्यै नमः स्तम्भिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः मोहिन्यै नमः मोहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः द्राविण्यै नमः द्राविणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः जृम्भिण्यै नमः जृम्भिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः भ्रामिण्यै नमः भ्रामिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः रौद्र्यै नमः रौद्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः संहारिण्यै नमः संहारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥

षष्ठावरण-अष्टभैरवादिपूजनम्

यन्त्र के अष्टदलों पर क्रमशः वामावर्त क्रम से असितांगभैरव, रुरुभैरव, चण्डभैरव, क्रोधभैरव, उन्मत्तभैरव, कपालभैरव, भीषणभैरव तथा संहारभैरव का गन्धाक्षतपुष्प से पूजन करे।

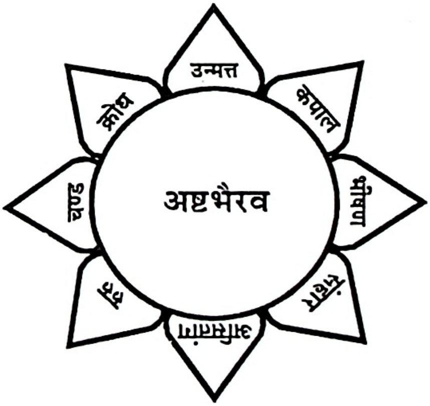

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः कपालभैरवाय नमः कपालभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः संहारभैरवाय नमः संहारभैरवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—**एताः षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।**

एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

अनेन षष्ठावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्॥

हे शरणागतवत्सले परदेवि! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक षष्ठ-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ।

योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

सप्तमावरण-अष्टभैरवीपूजनम्

अष्टभैरवों के बाहर तथा वृत्त के भीतर के अष्ट अन्तःपद्मों में अष्टभैरवियों का पूजन भैरवों की ही तरह से करे।

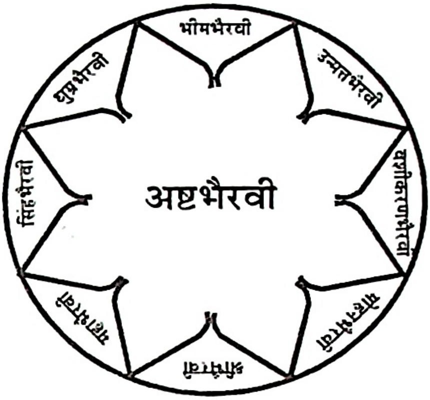

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: श्रीभैरव्यै नम: श्रीभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: महाभैरव्यै नम: महाभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: सिंहभैरव्यै नम: सिंहभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: धुम्रभैरव्यै नम: धुम्रभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: भीमभैरव्यै नम: भीमभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: उन्मत्तभैरव्यै नम: उन्मत्तभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: वशीकरणभैरव्यै नम: वशीकरणभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: मोहनभैरव्यै नम: मोहनभैरवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—एता: सप्तमावरणदेवताभ्यो नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

एता: सप्तमावरणदेवता: साङ्गा: सपरिवारा: सायुधा: सशक्तिका: सवाहना: पूजितास्तर्पिता: सन्तु।

अनेन सप्तमावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलि:—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

हे शरणागतवत्सले परदेवि! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक सप्तम-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ।

योनिमुद्रा से प्रणाम करे।

अष्टमावरण-अस्त्रसहितसपत्निदिग्पालपूजनम्

भूपुर पर पूर्व में अस्त्रसहित सपत्नी इन्द्र, अग्निकोण में अस्त्रसहित सपत्नी अग्नि, दक्षिण में अस्त्रसहित सपत्नी यम, नैर्ऋत्य में अस्त्रसहित सपत्नी निर्ऋति, पश्चिम में अस्त्रसहित सपत्नी वरुण, वायुकोण में अस्त्रसहित सपत्नी वायु, उत्तर में अस्त्रसहित सपत्नी सोम, ईशान में अस्त्रसहित सपत्नी ईश्वर, इसी तरह अस्त्रसहित सपत्नी ब्रह्मा और अनन्त का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः वज्रसहिताय सपत्नीइन्द्राय नमः वज्रसहिताय सपत्नीइन्द्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः शक्तिसहिताय सपत्नीअग्नये नमः शक्तिसहिताय सपत्नीअग्निशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः दण्डसहिताय सपत्नीयमाय नमः दण्डसहिताय सपत्नीयमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः खड्गसहिताय सपत्नीनिर्ऋतये नमः खड्गसहिताय सपत्नीनिऋतिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः पाशसहिताय सपत्नीवरुणाय नमः पाशसहिताय सपत्नीवरुणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः अंकुशसहिताय सपत्नीवायवे नमः अंकुशसहिताय सपत्नीवायुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः गदासहिताय सपत्नीसोमाय नमः गदासहिताय सपत्नीसोमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायैनमः त्रिशूलसहिताय सपत्नीईशानाय नमः त्रिशूलसहिताय सपत्नीईशानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः पद्मसहिताय सपत्नीब्रह्मणे नमः पद्मसहिताय सपत्नीब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः चक्रसहिताय सपत्नीअनन्ताय नमः चक्रसहिताय सपत्नीअनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—एताः अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

अनेन अष्टमावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिः—पुष्पाञ्जलि के बाद योनिमुद्रा से प्रणाम करे—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥

हे शरणागतवत्सले परदेवि! हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करें, भक्तिपूर्वक सप्तम-आवरण का अर्चन समर्पित करता हूँ।

नवमावरण-वटुकादिपूजनम्

अष्टम आवरण के बाद नवमावरण का पूजन करे।

भूपुर के चारों कोणों पर ईशानकोण में वटुक, अग्निकोण में योगिनी, नैर्ऋत्यकोण में गणेश, वायव्यकोण में क्षेत्रपाल, के लिए पूजन करे तथा पीठ के मध्य में श्रीराजराजेश्वर के प्रीति के लिए विधिपूर्वक पूजन-तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः वँ वटुकाय नमः वटुकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः याँ योगिनीभ्यो नमः योगिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः गँ गणपतये नमः गणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः क्षँ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सामान्यार्घ्य जल से—एताः नवमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एताः वटुकयोगिनीगणेशभैरवनवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः पूजितास्तर्पिता सन्तु।

अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

योनिमुद्रा से प्रणाम करने के बाद पुष्पाञ्जलि प्रदान कर देवी को नरिकेल तथा वटुकादि को पायसान्न बलिप्रदान करे।

नारिकेलादिबलिदानम्

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशि स्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवताप्रीतये श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणसिद्धये नारिकेलबलिदानं करिष्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः। नारिकेलबलिमण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेलबलिमण्डल पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलदेयबलये नमः। नारिकेलबलि को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेलबलि पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हुं फट्। नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार मे बलि का स्फोटन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै नमः नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि। हाथ में जल लेकर नारिकेलबलि समर्पित करे।

नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासनमुद्रा से एक हाथ से एक ही बार मे बलि का स्फोटन करे, स्फोटन के बाद नारिकेल जल से प्रधानदेवता और शक्तियों के लिए कम से कम नौ बार तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरां तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ चरकीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ विदारीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ पूतनां तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ पापराक्षसीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा स्फोटितनारिकेल-देयबलिं समर्पयामि।

वटुकादिबलिदानम्—नारिकेल बलिदान के बाद वटुकादि बलिदान करे।-

सङ्कल्पः—**ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः नामाऽहं मम कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीप्रत्याङ्गिरादेव्याः पुरश्चरणसिद्धये चतुर्दिक्षु वटुकादिदेवताभ्यो पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

वटुकबलिः

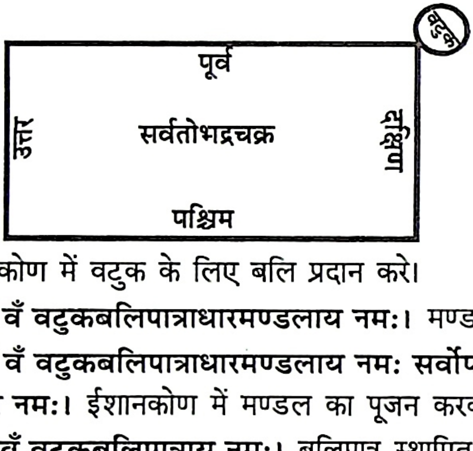

चक्र के ईशानकोण में वटुक के लिए बलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथकपिलजटा भार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशयनाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ करकलित-कपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्था वाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले,यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेताल-सेवितः॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हों और सदैव शान्ति प्रदान करें।

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन बटुकः प्रीयतां न मम।**

योगिनीबलिः

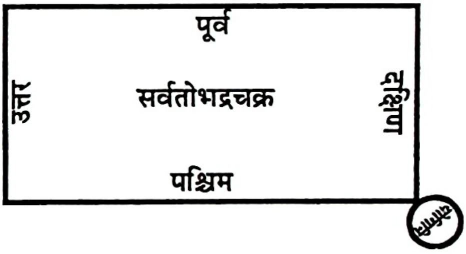

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्वब्रह्माण्डतोया दिविगगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, जल में, पाताल में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, स्थल पर, अनल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ तहाँ रहने वाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहने वाली, धूप दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार का शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाली, षड्चक्रों का भेदन करने वाली, सभी विघ्नों का विनाश करने वाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करने वाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेज वाली, सभी हमें शुभ प्रदान करें॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्पराः।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनियाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करें॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

गणेशबलिः

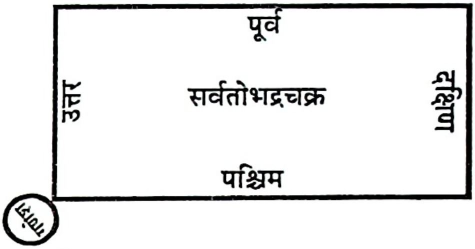

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशवलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशवलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकार त्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्वरजतम तीनों गुणों से अतीत रूपों वाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप (वर्ण) वाले, जिसकी मूर्तिमान, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहने वाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदंतम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेहरूप वाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करने वाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव)

में ही स्थित रहने वाले, आत्म सुख को प्रदान करने वाले, माया विहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ॥२॥

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः॥३॥

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अतिअद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्धि होती हैं॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः॥१॥

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है॥१॥

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः॥२॥

माया विहीन, परशु धारण करने वाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार हैं, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः॥३॥

अनन्तविभवों से युक्त, परमेश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, गुहाग्रज देवता के लिए नमस्कार है॥३॥

पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः॥४॥

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

क्षेत्रपालबलिः

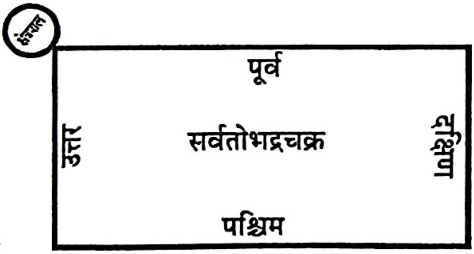

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

प्रार्थना

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदारकौस्तुभधरं शीतांशुचण्डोज्ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥१॥

उदयकालीन सूर्य के समान प्रकाशमान, तीन नेत्र वाले,अङ्गों में रक्त अङ्गराग का अनुलेपन किये हुए, मुस्कराते हुए मुखमण्डल वाले, वर, अभय, कपाल, शूल हाथों में धारण किये हुए, नीलग्रीवा वाले, उदार, कौस्तुभमणि धारण किये हुए, शिर पर शीतल चन्द्र धारण किये हुए, बन्धूक पुष्प के रंग के समान वस्त्र धारण किये हुए, समस्त भय का हरण करने वाले, भैरव देवता का ध्यान करता हूँ॥१॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिं शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥

यक्षरूप वदन वाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करने वाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्ब वाले सुन्दर शुभमुकुट को धारण करने वाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घशरीर वाले, विशाल नखमुख वाले, ऊपर की तरफ विकराल रोमों वाले, समस्त पापों का स्मरण मात्र से नष्ट करने वाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥२॥

करकलितकपालः कुण्डलिदण्डपाणिः,
तरुण-तिमिर-नीलः व्याल-यज्ञोपवीती।
क्रतु-समय-सपर्या-विघ्न-विच्छेद-हेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥३॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्था वाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले, यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, हमारे विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ॥३॥

हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करे।

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञा दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातों वाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करने वाले, भैरव को नमस्कार है, हे भैरव! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वरबलिः

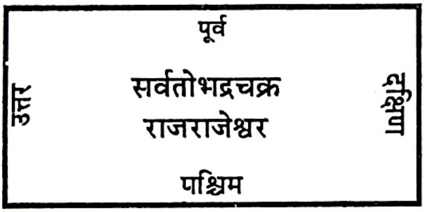

मध्य में राजराजेश्वर को बलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्हौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचार-सहित इमां पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे, स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करने वाले! हे कामदेव का दहन करने वाले! त्रिशूल धारण करने वाले! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करने वाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करने वाले! हमारे नाथ! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥१॥

हे पार्वती हृदयबल्लभ चन्द्रमौले, भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करने वाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करने वाले! इस संसार के गहन दुःखों से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र, लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामी! हे प्रलय काल में भी शेष रहने वाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! इस संसार के गहन दुःख से हे जगदीश! हमारी रक्षा करें॥३॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलास-भुवनाय महेश्वराय, पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करने वाले, महेश्वर, पाँच मुखों वाले, शरण में आने वाले भक्तों की रक्षा करने वाले, हे शर्व! समस्त जगत् के अधिपति, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥१॥

भक्तिप्रियाय भय-रोग-भयापहाय, उग्राय दुर्गभव-सागरतारणाय।

ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले ज्योतिमय, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।

पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

रघुकुल नाथ श्रीराम को परमप्रिय लगने वाले तथा वरप्रदान करने वाले, नाग से प्रेम करने वाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारने वाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर का अपने दुःक्षदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! अपकों नमस्कार है॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

कालबलिदानम्

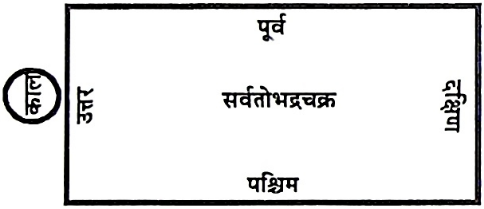

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥
यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥
धर्मराज महाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीड़ां निवारय॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

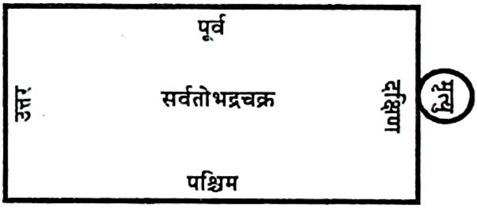

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से दक्षिणदिशा में बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समं विग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

पुष्पाञ्जलिः—हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तु ते॥

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे।

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

दिग्पालादिबलिदानम्

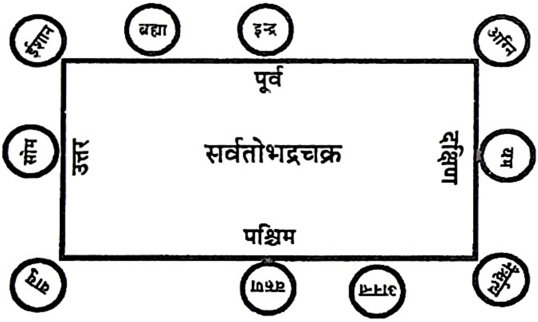

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो ब्रज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यो मे पूर्वगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे आग्नेयगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे दक्षिणगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे नैर्ऋत्यगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं भम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे पश्चिमगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे वायव्यगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे उत्तरगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे ईशानगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे ऊर्ध्वगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे अधोगत: पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्ति: स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे—

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहे॥१॥

पायसो-बलिदानेन, सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होने वाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करें॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां नमम।**

दशदिग्पालादि बलिदान प्रदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न प्रदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष होता है।

भूतादिबलिः

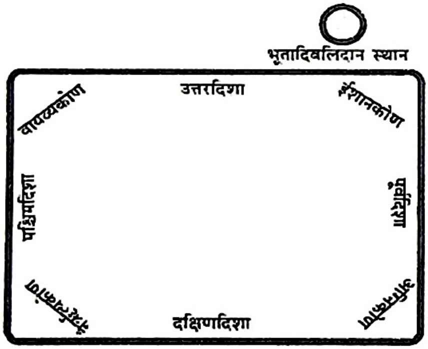

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजनकर बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे।

भूता ये च विघ्नकर्तारो दिविभूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थ संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्नकरने वाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करने वाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावना वाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकडों क्रूर प्रकृति वाले, पाखण्डादि में रत रहने वाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्या वाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहने वाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम स्थल में पहाड़ों की ऊँचाईयों पर, नदियों के तट पर रहने वाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहने वाले, नानारूप को धरकर रहने वाले, बहुतरूपों वाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर उधर विचरने वाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोऽप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करने वाले, जो पिशाचिनी मातायें उग्ररूपों वाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्तरक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करने वाले भूचर, आकाश में रहने वाले नभचर, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण करके सन्तोष प्राप्त करके, अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

पुष्पाञ्जलि प्रदान करने के बाद हाथ पैर धोकर प्राणायामादि करके आगे का कार्य करे।

वहिःपूजादि परिपूर्णम्

●

अखण्डदीपपूजनम्

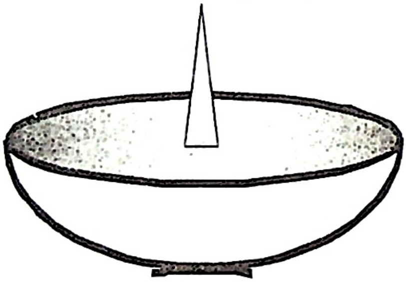

ॐ सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरः ज्योतिः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥१॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करने वाले, महादीप्त बाहर-भीतर सुन्दर प्रकाश के लिए, यह प्रदीप जलाये हैं यथाविधि पूजन ग्रहण करके प्रसन्न होकर हमें प्रकाशित करें॥१॥

भो दीपरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्ताव त्त्वं सुस्थिरो भव॥२॥

हे देवरूप दीप! आप कर्म के साक्षी और विघ्नों का नाश करने वाले हैं, जबतक हमारे कर्म (यज्ञ) की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक आप विधिपूर्वक स्थिर रहें॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः दीपस्थ देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

●

पुस्तकपूजनम्

पुस्तक में सरस्वती का ध्यान कर गन्धाक्षतपुष्प चढ़ायें।

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥१॥

जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधादि देवियों को नमस्कार है॥१॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥२॥

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिवा को नमस्कार है, प्रकृति देवी को नमस्कार है, भद्रा तथा नियति देवी को सतत प्रणाम है॥२॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥३॥

सफेद वर्णवाली, परब्रह्मचिन्तनरूपिणी, सर्वप्रथम रहनेवाली, जगत् में व्याप्त रहनेवाली, वीणा-पुस्तक धारण करनेवाली, अभय प्रदान करनेवाली, बुद्धि की जड़ता को हरनेवाली, हाथ में स्फटिक की माला लिए हुए, पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करनेवाली, परमेश्वरी भगवती शारदा की वन्दना करता हूँ॥३॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥४॥

जो कुन्देन्दुसदृश, तुषार (ओस) के समान सफेद हार धारण की हुई, सफेद शुद्ध वस्त्र को धारण की हुई, हाथों में वीणा, वरमुद्रा और दण्ड धारण की हुई, सफेद कमल

पर बैठी हुई, ब्रह्मा-विष्णु-शङ्कर जैसे देवताओं से वन्दित देवी भगवती सरस्वती हैं, वे हमारी बुद्धि की जड़ता को नष्ट करें॥४॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणीसरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

तर्पणम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीमत्प्रत्यङ्गिदेवतां तर्पयामि।

मधु, कर्पूर, मिश्रित जल से द्वादशबार घण्टा बजाते हुए अष्टोत्तरशत तर्पण करे, उसके पश्चात् जप करे।

कर्पूरनीराजनम्—

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥१॥

चन्द्र सूर्य तथा भूमि स्थित विद्युत स्वरूपी अग्नि सभी आपकी ही ज्योति है उसे ही आपके आरती के रूप में समर्पित है॥१॥

कदली-गर्भ-सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्मः पश्य मे वरदो भव॥२॥

कदली (केला) के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर को प्रदीप्त करके नीराजन (आरती) समर्पित करता हूँ जिसे देख कर आप प्रसन्न होकर हमें वर प्रदान करे॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः—दोनों हाथों में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

विशाल-शैल-कन्दरान्तराल-वास-शालिनीं,
त्रिलोक-पालिनी-कपालिनी-मनोरमामिमाम्।
उमामुपासितां सुरैरुपास्महे महेश्वरीं,
परां गणेश्वर-प्रसूं नगेश्वरस्य नन्दिनीम्॥१॥

विशाल पर्वत की गुफा में निवास करने वाली, त्रिलोक का पालन करने वाली, कपालिनी (कपाल-शिरःभाग में निवास करने वाली), मन में रमण करने वाली, देवताओं के द्वारा उपासित महेश्वरी परादेवी गणेश की माता, पर्वतराज हिमालय की पुत्री महादेवी उमा की उपासना करता हूँ॥१॥

देवान् विहाय सकलानथ कर्म सर्वं,
लब्ध्वाजनुर्नकृतवांस्तव देवि! पूजाम्।

मातर्नमामि सततं मनसा च वाचा,
देहेन पादकमलं शरणागतोऽहम्॥२॥

सभी देवताओं और सकल कर्मों का परित्याग करके, यह जन्म पाकर भी हे देवि! आपकी पूजा नहीं किया, हे माता! आपको सतत मन तथा वाणी से नमन करता हूँ, तथा शरीर से नमन करता हूँ, हे माता! आपके चरणकमलों में नमन करता हूँ, हम आपकी शरण में आये हैं॥२॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भव:।
त्राहि मां सर्वदा मात:! सर्वपापहरा भव॥३॥

हम पाप रूप हैं, हम पाप कर्म करने वाले हैं, पाप कर्म करते करते पापात्मा हो गये हैं, हमसे ही पाप सम्भावित है, अत: हे माता! आप हमारी रक्षा कीजिए, आप हमारे समस्त पापों को हरण करने वाली होकर हमारी सदा सर्वत्र रक्षा करें॥३॥

प्रार्थना करके समन्त्रक पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥१॥

किसी भी प्रकार के जन्मजन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम देव प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्य: सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परित: करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अत: हमारे जन्मजन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नम: प्रदक्षिणां समर्पयामि।

जपविधि:

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य वामदेवऋषि: अनुष्टुपछन्द: श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवता ह्रीँ बीजं ह्रूँ शक्ति: क्लीँ कीलकं श्रीष्टदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे विनियोग:।**

ऋष्यादिन्यास:—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामदेवऋषये नमः शिरसि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ शक्तये नमः पादयोः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीष्टदेवताप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ हृदयाय नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूः भुवः स्वः। चुटकी बजाकर अपने चारो तरफ दिग्बन्धन करे।

प्राणायामः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

मूल मन्त्र एक बार मन में बोल कर पूरक, चार बार मन में बोल कर कुम्भक, दो बार मन में बोल कर रेचन करे।

ध्यानम्–

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्या मम भद्रकाली॥

खड्ग-कपाल-डमरु और त्रिशूल धारण की हुई, चन्द्रकलाओं को धारण की हुई, ऊपर उठे काले काले केशों वाली, बड़े बड़े दाँतों वाली, भद्रकाली हमारे लिए कल्याण करने वाली हों तथा हमारी रक्षा करें।

ध्यान मानसोपचार पूजनोपरान्त मूल मन्त्र से अष्टोत्तरशत पुष्पाञ्जलि प्रदान करके माला संस्कार करे।

मानसोपचारपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

ॐ एँ ह्रीँ श्रीँ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

पूजनप्रकरणं परिपूर्णम्

मालासंस्कारविधिः

एक समान सुन्दर रुद्राक्ष लाकर १०८ दाने को और एक दाना सुमेरु के लिए, समान सूत्र में माला को पिरो कर प्रत्येक मणि के बीच एक एक गाँठ देते हुए तैयार करके फिर उसमें सुमेरु गुम्फित माला को परिपूर्ण करके, माला को पीपल के नव पत्रों को अष्टपद्मवत रख कर उसपर माले को स्थापित कर, पञ्चगव्यादि से प्रक्षालित करके, पञ्चामृत से स्नान करा कर, शुद्धोदक से अच्छी तरह धोकर माला का संस्कार करे।

पञ्चगव्यनिर्माणम्—

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पुङ्क्त्यासह॥ वृहत्युष्णिहाकुकुप्सूचीभिः शम्म्यन्तु त्त्वा॥ पञ्चगव्य से प्रक्षालित करे।

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ दूध से प्रक्षालित करे।

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्राणऽ-आयूꣳषितारिषत्॥ दही से प्रक्षालित करे।

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥ घृत से प्रक्षालित करे।

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त

मुतोषसोमधुंमत्त्पार्त्थिवहुंरजं॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तुंसूर्व्व॥ माद्धवीर्ग्गावोंभवन्तुनः॥ मधु से प्रक्षालित करे।

ॐ अपाछंरसमुद्वयसहंसूर्य्येसन्तंछ समाहितम्॥ अपाछंरसस्यग्योरसस्तंवों गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्य्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टंतमम॥ शर्करा से प्रक्षालित करे।

ॐ पञ्चनद्युः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ पञ्चामृत से प्रक्षालित करे।

ॐ शुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्णायामाऽअविलिप्तारौद्रानभोरुपाःपार्ज्जन्न्याः॥ ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥महेरणायचक्षसे॥ शुद्ध जल से प्रक्षालित करे।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ जल से प्रक्षालित करे।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूत-दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ अष्टगन्ध का अनुलेपन करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः॥ धूपादि से धूपित करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ दीपक दिखा कर दीप्त करे।

ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽअस्तुसदाशिवोऽम्॥ ईशान मन्त्र का प्रत्येक मणियों में १०८ बार अभिमन्त्रित करके प्रत्येक मणियों में मातृकावर्णो विन्यास करे।

मालायामातृकाविन्यासः

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ आँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ इँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ईँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ उँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऊँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऋँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ॠँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लृँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लॄँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ एँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऐँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्षभक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ खँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ गँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ घँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ङँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं चँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं छँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं जँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं झँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ञँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ठँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ डँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ढँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ णँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ हँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ळँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ सँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आदाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ रँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ मँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ भँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ बँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ फँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ नँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ धँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ दँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ थँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं तँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं णँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ढँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं डँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्षभक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ठँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं टँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ञँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं झँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं जँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं छँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं चँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं ङँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं घँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं गँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं खँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीं कँ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ औँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ओँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऐँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ एँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि दिन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लॄँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्याङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ लृँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ॠँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऋँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ऊँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ उँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ ईँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ इँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ आँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ यँ रँ लँ वँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ शँ षँ सँ हँ ळँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

ॐ ह्रीँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि विन्यस्यामि।

जपमालिकायामिष्टदेवताप्रतिष्ठा

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्रृषयः, ऋग्यजुसामानि छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता जपमालिकायां इष्टदेवताया प्रतिष्ठापने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋग्यजुसामानि छन्देभ्यो नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्राणशक्त्यै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ प्राणशक्त्यै नमः सर्वाङ्गे।

कराक्षरन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयाद्याक्षरन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ खँ गँ घँ ङँ आकाशवाय्वाग्न्यपभूम्यात्मने हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ छँ जँ झँ ञँ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ठँ डँ ढँ णँ श्रोत्रत्वक्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ थँ दँ धँ नँ वाक्पाणिपायुलिङ्गोपस्थात्मने कवचाय हूम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ फँ बँ भँ मँ वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ बुद्धिमनोहङ्कारचित्तात्मने अस्त्राय फट्।

व्यापकाक्षरन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नाभ्यारभ्य पादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ हृदयारभ्य नाभ्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ मस्तकारभ्य हृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ त्वगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ असृगात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ मांसात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ मेदात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ मज्जात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ शुक्रात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ ओजात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ प्राणात्मने नमः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ जीवात्मने नमः न्यस्यामि।

लेलिहानमुद्रा से हृदय पर न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि। माला के मणियों में न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तं पीठ देवताभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयादिशक्तिभ्यो नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ पीठाय नमः।

ध्यानम्—

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त महासागर में अरुणकालिक सूर्य के वर्ण के समान अरुण वर्ण वाले कमल पर विराजमान हाथ में पाश-अंकुश-खड्ग-धनुष-बाण-शूल-कपाल धारण किये हुए तीन नेत्र वाली भगवती को प्रणाम करता हूँ॥१॥

पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलहस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देविध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥२॥

हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्तवर्ण वाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥२॥

शरण्ये वरण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येति पुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि॥३॥

शरणागत होने, वरण करने पर, सुकारुण्यपूर्ण, हिरण्यगर्भ से पूर्व, किसी भी उपाय से न पहचानी जानेवाली, पुण्य स्वरूपा, भवसागर के भय से भयभीत, हे कल्याणकर्त्रि! हमारी रक्षा करो, हे भवानि! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥३॥

ध्यान के बाद माला में देवता की प्रतिष्ठा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्य रुद्राक्षमालायां प्रत्यङ्गिरादेवताया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्य रुद्राक्षमालायां प्रत्यङ्गिरादेवताया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्यरुद्राक्षमालायां प्रत्यङ्गिरादेवताया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मालायां प्रत्यङ्गिरादेवताया गर्भानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरामालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

जपसंस्कारः

प्राणायामः—मूलमन्त्र से पूरक कुम्भक रेचन पूर्वक प्राणायाम करे।

मन्त्रकुल्लुका—ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतुः—ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतुः—क्रीँ । बीज का कण्ठस्थित विशुद्धचक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणः—ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्—क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ । दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोगः—ह्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ह्रीँ। श्वास प्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ। मन्त्र को ॐ से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मालाप्रार्थना—दोनों हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे—

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ के मध्यमा अङ्गुलि के मध्य पर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में लगा करके, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृदपद्म में प्रत्यङ्गिरा देवता का तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत् भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृत पान करते हुए न्यूनतम एक सहस्र अथवा विहित (निर्दिष्ट) संख्या जप करे।

मूलमन्त्रः—ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

सिर से माला को हाथ में लेकर।

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचनपूर्वक प्राणायामादि तथा उत्तरन्यास करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी के सहस्रनामों से रक्त पुष्पों से अर्चन करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रजपविधिः परिपूर्णः

●

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतासहस्रनामार्चनम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक-विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे−−नामसंवत्सरे −−अयने−−ऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे−−मासे−−पक्षे −−तिथौ−−वासरे−−नक्षत्रे−−योगे−−करणे−−राशिस्थिते श्रीचन्द्रे−−राशिस्थिते श्रीसूर्ये−−राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ−−गोत्रः−− प्रवरः−− शर्मा नामाऽहं श्रीइष्टदेवताप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थं दिव्यसहस्रनामावलिभिः पुष्पादिसमर्पणं करिष्ये।**

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्त्रनामस्तोत्रस्य भैरवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, श्रीँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीतये पुरश्चरण सिद्धये च सहस्रार्चने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीष्टदेवताप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्तीं जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

क्षकारवर्ण में समाहित, क्षकारवर्णात्मिका, सुषुम्ना के कोटर में अक्ष रूप से विद्यमान श्यामल वर्ण वाली, मुक्तकेश वाली, अट्टहास करने वाली, अतृप्त, एक ग्रास में ही सम्पूर्ण जगत् को खा जाऊगीं इस प्रकार से उद्घोष करती हुई, हाथों में जलती हुई अग्निशिखा तथा पाशधारण की हुई, जम्बूफल के समान चमकते हुए दाँतों वाली भद्रकाली हमारे दु:ख रूपी भय का सदैव नाश करें।

१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवि प्रत्यङ्गिरायै नमः।

२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शशिशेखरायै नमः।

३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सममासायै नमः।

४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धर्मिण्यै नमः।

५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समस्तसुरशीमुख्यै नमः।
६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुमुख्यै नमः।
७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वसम्पत्तिजनन्यै नमः।
८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समधायै नमः।
९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्धुसेविन्यै नमः।
१०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शम्भुसीमन्तिन्यै नमः।
११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सोमाराध्यायै नमः।
१२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वसुधारसायै नमः।
१३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रसायै नमः।
१४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रसवत्यै नमः।
१५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेलायै नमः।
१६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्यायै नमः।
१७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनमालिन्यै नमः।
१८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनजाक्ष्यै नमः।
१९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनचर्यै नमः।
२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्यै नमः।
२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनविनोदिन्यै नमः।
२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेगिन्यै नमः।
२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेगदायै नमः।
२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेगबलस्थानायै नमः।
२५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलाधिकायै नमः।
२६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कलायै नमः।
२७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कलाप्रियायै नमः।
२८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कौलिकोमलायै नमः।
२९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालकामिन्यै नमः।
३०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कमलायै नमः।
३१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कमलावत्यै नमः।
३२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कमलस्थायै नमः।
३३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलीनायै नमः।
३४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुटिलायै नमः।

३५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कान्तायै नमः।
३६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कोकिलायै नमः।
३७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलभाषिण्यै नमः।
३८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कीरकेलिकलायै नमः।
३९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काल्यै नमः।
४०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपालिन्यै नमः।
४१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालिकायै नमः।
४२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ केशिन्यै नमः।
४३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुशावर्त्तायै नमः।
४४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कौशाम्ब्यै नमः।
४५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ केशवप्रियायै नमः।
४६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काश्यै नमः।
४७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काशापहायै नमः।
४८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काशीशयायै नमः।
४९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काशायै नमः।
५०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ केशदायिन्यै नमः।
५१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुण्डल्यै नमः।
५२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुण्डलीस्थायै नमः।
५३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुण्डलाङ्गायै नमः।
५४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुण्डलाङ्गदमण्डितायै नमः।
५५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुशापाश्यै नमः।
५६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमुदिन्यै नमः।
५७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमुदप्रीतिवर्द्धिन्यै नमः।
५८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दप्रियायै नमः।
५९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दरुच्यै नमः।
६०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरङ्गायै नमः।
६१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरङ्गमदमर्दिन्यै नमः।
६२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरङ्गनयनायै नमः।
६३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुन्दायै नमः।
६४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरुवृन्दाभिनन्दिन्यै नमः।

६५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुशुम्भायै नमः।
६६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुसुमायै नमः।
६७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ किञ्चित्क्वणक्त्यै नमः।
६८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ किणिकायै नमः।
६९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कद्र्वै नमः।
७०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कङ्केरायै नमः।
७१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ करणायै नमः।
७२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कण्ठायै नमः।
७३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कौमुद्यै नमः।
७४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कम्बुकण्ठिन्यै नमः।
७५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपर्दिन्यै नमः।
७६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कपटिन्यै नमः।
७७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कङ्किन्यै नमः।
७८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालकण्ठिकायै नमः।
७९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ किंबृहस्तायै नमः।
८०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुमार्यै नमः।
८१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुरुन्दायै नमः।
८२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुसुमप्रियायै नमः।
८३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुञ्जरस्थायै नमः।
८४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुञ्जरतायै नमः।
८५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुम्भिकुम्भस्तनद्वयायै नमः।
८६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुम्भिगायै नमः।
८७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ करभोरव्यै नमः।
८८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कदलीदलायै नमः।
८९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कदलीदलशालिन्यै नमः।
९०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुपितायै नमः।
९१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कङ्कोरस्थायै नमः।
९२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कङ्काल्यै नमः।
९३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कन्दशेखरायै नमः।
९४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एकान्तवासिन्यै नमः।

९५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ किञ्चित्कम्पमानशिरोरुहायै नमः।
९६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कादम्बर्यै नमः।
९७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कदम्बस्थायै नमः।
९८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुङ्कुम्यै नमः।
९९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेमधारिण्यै नमः।
१००. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुटुम्बिन्यै नमः।
१०१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियायुक्तायै नमः।
१०२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रतवे नमः।
१०३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रतुकर्यै नमः।
१०४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्रियायै नमः।
१०५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कात्यायन्यै नमः।
१०६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कृत्तिकायै नमः।
१०७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कार्तिकेयप्रवर्तिन्यै नमः।
१०८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामपत्न्यै नमः।
१०९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामधात्र्यै नमः।
११०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामेश्यै नमः।
१११. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामवन्दितायै नमः।
११२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामरूपायै नमः।
११३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामगत्यै नमः।
११४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामाक्ष्यै नमः।
११५. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काममोहितायै नमः।
११६. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खड्गिन्यै नमः।
११७. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खेचर्यै नमः।
११८. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खञ्जायै नमः।
११९. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खञ्जरीटेक्षणायै नमः।
१२०. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खलायै नमः।
१२१. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खरगायै नमः।
१२२. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खरनासायै नमः।
१२३. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खरास्यायै नमः।
१२४. ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खेलनप्रियायै नमः।

१२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खड्गिन्यै नमः।
१२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खेचर्यै नमः।
१२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खट्वायै नमः।
१२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खरखट्वाङ्गधारिण्यै नमः।
१२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खलखण्डिन्यै नमः।
१३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विख्यातायै नमः।
१३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खण्डितायै नमः।
१३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खाण्डव्यै नमः।
१३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थिरायै नमः।
१३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खण्डप्रियायै नमः।
१३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खण्डखाद्यायै नमः।
१३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सेन्दुखण्डायै नमः।
१३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ खञ्जन्यै नमः।
१३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गङ्गायै नमः।
१३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोदावर्यै नमः।
१४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गौर्यै नमः।
१४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोमत्यै नमः।
१४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गौतम्यै नमः।
१४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गयायै नमः।
१४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गौगज्यै नमः।
१४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गगनायै नमः।
१४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गारुण्यै नमः।
१४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गरुणध्वजायै नमः।
१४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गीतायै नमः।
१४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गीतप्रियायै नमः।
१५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोत्रायै नमः।
१५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोत्रक्षयकर्यै नमः।
१५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गदायै नमः।
१५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गिरिभूपालदुहितायै नमः।
१५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोगायै नमः।

१५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ गोकुलवर्द्धिन्यै नमः।
१५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनस्तन्यै नमः।
१५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनरुच्यै नमः।
१५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनोर्व्यै नमः।
१५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घननिःस्वलायै नमः।
१६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घूत्कारिण्यै नमः।
१६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घूतकर्यै नमः।
१६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घुघूकपरिवारितायै नमः।
१६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घण्टानादप्रियायै नमः।
१६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घण्टायै नमः।
१६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनाघोटप्रवाहिन्यै नमः।
१६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोररूपायै नमः।
१६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घोरायै नमः।
१६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घूनिप्रीत्यै नमः।
१६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनाञ्जन्यै नमः।
१७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घृताच्यै नमः।
१७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घनमुष्टायै नमः।
१७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घटायै नमः।
१७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घण्टायै नमः।
१७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घटामृतायै नमः।
१७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घटास्यायै नमः।
१७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घटनाद्यायै नमः।
१७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ घातपातनिवारिण्यै नमः।
१७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चञ्चरीकायै नमः।
१७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चकोर्यै नमः।
१८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चामुण्डायै नमः।
१८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चीरधारिण्यै नमः।
१८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चातुर्यै नमः।
१८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चपलायै नमः।
१८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चारुश्चलायै नमः।

१८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चेलायै नमः।
१८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चलाचलायै नमः।
१८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चतुश्चिरन्तनायै नमः।
१८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चाकाचियायै नमः।
१८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चामीकरच्छव्यै नमः।
१९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चापिन्यै नमः।
१९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चपलायै नमः।
१९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चम्प्वै नमः।
१९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिततायै नमः।
१९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिन्तामण्यै नमः।
१९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चितायै नमः।
१९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चातुर्वर्णमय्यै नमः।
१९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चञ्चचौरायै नमः।
१९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चापायै नमः।
१९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चमत्कृत्यै नमः।
२००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्रवर्त्यै नमः।
२०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वधूचक्रायै नमः।
२०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्राङ्गयै नमः।
२०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चक्रमोदिन्यै नमः।
२०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चेतश्चर्यै नमः।
२०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्तवृत्तिरचेतायै नमः।
२०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चेतनप्रदायै नमः।
२०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चपिर्यायै नमः।
२०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चम्पकप्रीत्यै नमः।
२०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्ड्यै नमः।
२१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चण्डालवासिन्यै नमः।
२११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिरञ्जिवित्वदायै नमः।
२१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चित्तायै नमः।
२१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तरुमूलनिवासिन्यै नमः।
२१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छुरिकायै नमः।

२१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छत्रमध्यस्थायै नमः।
२१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छिद्रायै नमः।
२१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छेदनकर्य्यै नमः।
२१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छिदायै नमः।
२१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छुन्छुन्दर्यै नमः।
२२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पलप्राप्त्यै नमः।
२२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छुदर्य्यै नमः।
२२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छुदरीभनिभस्वनायै नमः।
२२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छालिन्यै नमः।
२२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छलवच्छिन्नायै नमः।
२२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छिटिकायै नमः।
२२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छेककृत्यै नमः।
२२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छद्मिन्यै नमः।
२२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छान्दस्यै नमः।
२२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छायायै नमः।
२३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छायाकृत्यै नमः।
२३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ छाद्यै नमः।
२३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयायै नमः।
२३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयदायै नमः।
२३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जात्यै नमः।
२३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जम्भिण्यै नमः।
२३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जामलायुतायै नमः।
२३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जवापुष्पप्रियायै नमः।
२३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जायायै नमः।
२३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जाप्यायै नमः।
२४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अजाप्यायै नमः।
२४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जगज्जनन्यै नमः।
२४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जम्बूप्रियायै नमः।
२४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयस्थायै नमः।
२४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जङ्गमायै नमः।

२४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जङ्गमप्रियायै नमः।
२४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जन्त्व्यै नमः।
२४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जन्तुप्रधानायै नमः।
२४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जरत्कर्णायै नमः।
२४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जरद्गवायै नमः।
२५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जातप्रियायै नमः।
२५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जीवनस्थायै नमः।
२५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जीमूतसदृशच्छव्यै नमः।
२५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जन्यायै नमः।
२५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जनहितायै नमः।
२५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जायायै नमः
२५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जम्भ्यै नमः।
२५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जम्भिलशालिन्यै नमः।
२५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयदायै नमः।
२५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ जयवद्वाहायै नमः।
२६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वालिन्यै नमः।
२६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वरहायै नमः।
२६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्वर्यै नमः।
२६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झञ्झनीलमय्यै नमः।
२६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झञ्झायै नमः।
२६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झणत्कारायै नमः।
२६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अचलायै नमः।
२६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झिण्टीशायै नमः।
२६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झस्यकृत्यै नमः।
२६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ झम्पायै नमः।
२७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यमत्त्रासनिवारिण्यै नमः।
२७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ टङ्ककारायै नमः।
२७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ टङ्कधरायै नमः।
२७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ टङ्काराकारणाटव्यै नमः।
२७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ड्डकुरायै नमः।

२७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ङ्कीत्कृत्यै नमः।
२७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ङ्गिण्ङ्गीरयै नम।
२७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अवसनावृत्तायै नमः।
२७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ङ्कण्ङ्गायै नमः।
२७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीलमय्यै नमः।
२८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ङ्कण्ङ्गाङ्गणत्कारकराङ्गसायै नमः।
२८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डाकिन्यै नमः।
२८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डामरायै नमः।
२८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डिण्डिमध्वन्यै नमः।
२८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डिण्डिमध्वनिनादिन्यै नमः।
२८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ढक्कायै नमः।
२८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ढक्काप्रियस्वनायै नमः।
२८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ढक्कारायै नमः।
२८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपिन्यै नमः।
२८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तापिन्यै नमः।
२९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तरुण्यै नमः।
२९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुन्दिलायै नमः।
२९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुन्दायै नमः।
२९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तामस्यै नमः।
२९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपःप्रियायै नमः।
२९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ताम्रायै नमः।
२९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ताम्राम्बरायै नमः।
२९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ताल्यै नमः।
२९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तालीदलविभूषिण्यै नमः।
२९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुरङ्गायै नमः।
३००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्वरितायै नमः।
३०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तोतायै नमः।
३०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तोतलादिन्यै नमः।
३०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तादिन्यै नमः।
३०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तुलायै नमः।

३०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तापत्रयहरायै नमः।
३०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारायै नमः।
३०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तालकेश्यै नमः।
३०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तमालिन्यै नमः।
३०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तमालदलायै नमः।
३१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तमालदलवच्छायायै नमः।
३११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तालस्वनवत्यै नमः।
३१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तम्यै नमः।
३१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तामस्यै नमः।
३१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तमिस्रायै नमः।
३१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तीव्रायै नमः।
३१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तीव्रपराक्रमायै नमः।
३१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तटस्यागायै नमः।
३१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लतैलाक्तायै नमः।
३१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारिण्यै नमः।
३२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तपनद्युत्यै नमः।
३२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तिलोत्तमायै नमः।
३२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तिलककृत्तायै नमः।
३२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारकायै नमः।
३२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारकादेशशेखरायै नमः।
३२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तिलपुष्पायै नमः।
३२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तिलपुष्पप्रियायै नमः।
३२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारायै नम।
३२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तारकेशकुटुम्बिन्यै नमः।
३२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थाणुपत्न्यै नमः।
३३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थितिकर्यै नमः।
३३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थलस्थायै नमः।
३३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थलवर्द्धिन्यै नमः।
३३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थित्यै नमः।
३३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थैर्यायै नमः।

३३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वविष्ठायै नमः।
३३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थावत्यै नमः।
३३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्थूलविग्रहायै नमः।
३३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दन्तिन्यै नमः।
३३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दण्डिन्यै नमः।
३४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दीनायै नमः।
३४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दरिद्रायै नमः।
३४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दीनवत्सलायै नमः।
३४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देव्यै नमः।
३४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दैत्यदामिन्यै नमः।
३४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दन्तभूषणायै नमः।
३४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दयावत्यै नमः।
३४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दमवत्यै नमः।
३४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दमदायै नमः।
३४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दाडिमस्तन्यै नमः।
३५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दन्दशूकनिभायै नमः।
३५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दैत्यदारिण्यै नमः।
३५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवताननायै नमः।
३५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दोलाक्रीडायै नमः।
३५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दोलाक्रीडादलायै नमः।
३५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दम्पत्यै नमः।
३५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ देवतामय्यै नमः।
३५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दशादीपस्थितायै नमः।
३५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दोषायै नमः।
३५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दोषहायै नमः।
३६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दोषकारिण्यै नमः।
३६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गायै नमः।
३६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गतिशमन्यै नमः।
३६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गमायै नमः।
३६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गवासिन्यै नमः।

३६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्गन्धनाशिन्यै नमः।
३६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुःस्थायै नमः।
३६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुःस्वप्नशमनकारिण्यै नमः।
३६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुर्वारायै नमः।
३६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुन्दुभिध्वनायै नमः।
३७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दूरगायै नमः।
३७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दूरवासिन्यै नमः।
३७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दरदायै नमः।
३७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दरहायै नमः।
३७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दात्र्यै नमः।
३७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दयादायै नमः।
३७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दुहितायै नमः।
३७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दशायै नमः।
३७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धुरन्धरायै नमः।
३७९.ॐऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धुरीणायै नमः।
३८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धौरेय्यै नमः।
३८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धनदायिन्यै नमः।
३८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धीरायै नमः।
३८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अधीरायै नमः।
३८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धरित्र्यै नमः।
३८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धर्मदायै नमः।
३८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धीरमानसायै नमः।
३८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धनुर्धरायै नमः।
३८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धमन्यै नमः।
३८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूर्त्तायै नमः।
३९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूर्त्तपरिग्रहायै नमः।
३९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूमवर्णायै नमः।
३९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूमपानायै नमः।
३९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूमलायै नमः।
३९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ धूममोदिन्यै नमः।

३९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नलीन्यै नमः।

३९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कन्दान्यै नमः।

३९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीरन्दायै नमः।

३९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नन्दिन्यै नमः।

३९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नन्दबालिकायै नमः।

४००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नवीनायै नमः।

४०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नर्मदायै नमः।

४०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नर्मयै नमः।

४०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नेम्यै नमः।

४०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नियमायै नमः।

४०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निश्चयायै नमः।

४०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्मलायै नमः।

४०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निगमाचारायै नमः।

४०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निम्नगायै नमः।

४०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नग्निकायै नमः।

४१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निम्यै नमः।

४११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नालायै नमः।

४१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निरन्तरायै नमः।

४१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निघ्न्यै नमः।

४१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्लोपायै नमः।

४१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्गुणायै नम।

४१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नत्यै नमः।

४१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीलग्रीवायै नमः।

४१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीरीहायै नमः।

४१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निरञ्जनजन्यै नमः।

४२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नव्यै नमः।

४२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नवनीतप्रियायै नमः।

४२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नार्यै नमः।

४२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नरकार्णवतारिण्यै नमः।

४२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नारायण्यै नमः।

४२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निराकारायै नमः।
४२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निपुणायै नमः।
४२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निपुणप्रियायै नमः।
४२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निशायै नमः।
४२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निद्रायै नमः।
४३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नरेन्द्रस्थायै नमः।
४३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अनमितायै नमः।
४३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नमितापिच्वे नमः।
४३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्गुण्डिकायै नमः।
४३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्गुण्डायै नमः।
४३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निर्मांसायै नमः।
४३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नासिकाभिधायै नमः।
४३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पताकिन्यै नमः।
४३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पताकायै नमः।
४३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पलप्रीत्यै नमः।
४४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशश्विन्यै नमः।
४४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीनायै नमः।
४४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीनस्तनायै नमः।
४४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ (रुद्र)पत्न्यै नमः।
४४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पवनाशनशायिन्यै नमः।
४४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परायै नमः।
४४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पराकलायै नमः।
४४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाकायै नमः।
४४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाककृत्यायै नमः।
४४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रतिप्रियायै नमः।
४५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पवनस्थायै नमः।
४५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुपवनायै नमः।
४५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ तापस्यै नमः।
४५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रीतिवर्द्धिन्यै नमः।
४५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पशुवृद्धिकर्यै नमः।

४५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुष्ट्यै नमः।
४५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पोषण्यै नमः।
४५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुष्पवर्द्धिन्यै नमः।
४५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुष्पिण्यै नमः।
४५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुस्तककरायै नमः।
४६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुन्नागतलवासिन्यै नमः।
४६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरन्दरप्रियायै नमः।
४६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रीत्यै नमः।
४६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरमार्गनिवासिन्यै नमः।
४६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पेशायै नमः।
४६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाशकरायै नमः।
४६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाशबन्धहायै नमः।
४६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पांशुलायै नमः।
४६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पश्व्यै नमः।
४६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पटपटाशायै नमः।
४७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ परशुधारिण्यै नमः।
४७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ काशिन्यै नमः।
४७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पापघ्न्यै नमः।
४७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पति (शिव) पत्न्यै नमः।
४७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पतितायै नमः।
४७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अपतितायै नमः।
४७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिशाच्यै नमः।
४७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिशाचघ्न्यै नमः।
४७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिशितासनायै नमः।
४७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिशिताशनतोषितायै नमः।
४८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पानदायै नमः।
४८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पानपात्रायै नमः।
४८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पानदानकरोद्यतायै नमः।
४८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूषायै नमः।
४८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रसिद्ध्यै नमः।

४८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीयूषायै नमः।
४८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूर्णायै नमः।
४८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पूर्णमनोरथायै नमः।
४८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पतद्गर्भायै नमः।
४८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पतद्गात्रायै नमः।
४९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पौनायै नमः।
४९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुन्यायै नमः।
४९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिवापुरायै नमः।
४९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पङ्क्लिायै नमः।
४९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पङ्कमग्नायै नमः।
४९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पादीपायै नमः।
४९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्जरस्थितायै नमः।
४९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चमायै नमः।
४९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चयामायै नमः।
४९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चतायै नमः।
५००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मञ्चमप्रियायै नमः।
५०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पञ्चमुद्रायै नमः।
५०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुण्डरीकायै नमः।
५०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिङ्गलायै नमः।
५०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिङ्गललोचनायै नमः।
५०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियङ्गवै नमः।
५०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मञ्जर्यै नमः।
५०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पिण्ड्यै नमः।
५०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पण्डितायै नमः।
५०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाण्डुरप्रभायै नमः।
५१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रेतासनायै नमः।
५११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ प्रियालुस्थायै नमः।
५१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पाण्डुघ्न्यै नमः।
५१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीत्तसापहायै नमः।
५१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फलिन्यै नमः।

५१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फलदात्र्यै नमः।
५१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फलश्रीयै नमः।
५१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फणिभूषणायै नमः।
५१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फूत्कारकारिण्यै नमः।
५१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फारायै नमः।
५२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फुल्लायै नमः।
५२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फुल्लम्बुजासनायै नमः।
५२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ फिरङ्गहस्तायै नमः।
५२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फितमत्यै नमः।
५२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फित्यै नमः।
५२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फितिकरस्थायै नमः।
५२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बनमालायै नमः।
५२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलारात्यै नमः।
५२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलिन्यै नमः।
५२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बलवर्द्धिन्यै नमः।
५३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेणुवाद्यायै नमः।
५३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनचर्यै नमः।
५३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीरायै नमः।
५३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीजनय्यै नमः।
५३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विद्यायै नमः।
५३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विद्याप्रदायै नमः।
५३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विद्याबोधिन्यै नमः।
५३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेददायिन्यै नमः।
५३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बुधमात्रे नमः।
५३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बुद्धायै नमः।
५४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वनमालावत्यै नमः।
५४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरायै नमः।
५४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरदायै नमः।
५४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वारुण्यै नमः।
५४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीणायै नमः।

५४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीणावादनतत्परायै नमः।
५४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विनोदिन्यै नमः।
५४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विनोदस्थायै नमः।
५४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वैष्णव्यै नमः।
५४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विष्णुवल्लभायै नमः।
५५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विद्यायै नमः।
५५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वैद्यायै नमः।
५५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चिकीत्सायै नमः।
५५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विवशायै नमः।
५५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विश्वविश्रुतायै नमः।
५५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वितन्द्रायै नमः।
५५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विह्वलायै नमः।
५५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेलायै नमः।
५५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विरावायै नमः।
५५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विरतिज्वरायै नमः।
५६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विविधार्ककरायै नमः।
५६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीरायै नमः।
५६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बिम्बोष्ठ्यै नमः।
५६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बिम्बवत्सलायै नमः।
५६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विन्ध्यस्थायै नमः।
५६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वारवन्द्यायै नमः।
५६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वरीयानपरायै नमः।
५६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वित्त्यै नमः।
५६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेदान्तवेद्यायै नमः।
५६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बोधायै नमः।
५७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेदायै नमः।
५७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विजयप्रदायै नमः।
५७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विरोधवर्धिन्यै नमः।
५७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्द्यायै नमः।
५७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्ध्याबन्धिनिवारिण्यै नमः।

५७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भयन्यै नमः।
५७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगमालायै नमः।
५७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भवान्यै नमः।
५७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भयभाविन्यै नमः।
५७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमायै नमः।
५८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमाननायै नमः।
५८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भौम्यै नमः।
५८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भङ्गुरायै नमः।
५८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीमदर्शनायै नमः।
५८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भिल्लीकायै नमः।
५८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भल्लधरायै नमः।
५८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीरवे नमः।
५८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भेरुण्डायै नमः।
५८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भयापहायै नमः।
५८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगसर्पिण्यै नमः।
५९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगायै नमः।
५९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगरूपायै नमः।
५९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगालयायै नमः।
५९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगासनायै नमः।
५९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगामोदायै नमः।
५९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भेर्यै नमः।
५९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ डङ्काररञ्जिन्यै नमः।
५९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीषणायै नमः।
५९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भीषणारावायै नमः।
५९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भगवत्यै नमः।
६००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूषणायै नमः।
६०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भारद्वाजायै नमः।
६०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भोगदात्र्यै नमः।
६०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भवघ्न्यै नमः।
६०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूत्यै नमः।

६०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूतिभूषणायै नमः।
६०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूतिदायै नमः।
६०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूमिदात्र्यै नमः।
६०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूपतित्वप्रदायिन्यै नमः।
६०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रमर्यै नमः।
६१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भ्रामर्यै नमः।
६११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नीलायै नमः।
६१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूपालमुकुटस्थितायै नमः।
६१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भूपालस्थितायै नमः।
६१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मतायै नमः।
६१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मनोहरमनायै नमः।
६१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मानिन्यै नमः।
६१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मोहिन्यै नमः।
६१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मह्यै नमः।
६१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महालक्ष्म्यै नमः।
६२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदक्षीबायै नमः।
६२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदीयायै नमः।
६२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदीरालयायै नमः।
६२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदोद्धतायै नमः।
६२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मन्दगस्थायै नमः।
६२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ माधव्यै नमः।
६२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुमन्दिन्यै नमः।
६२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेधायै नमः।
६२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेधकर्यै नमः।
६२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेध्यायै नमः।
६३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मध्यायै नमः।
६३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मध्यवयस्थितायै नमः।
६३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मद्यपायै नमः।
६३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मांसलायै नमः।
६३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मत्स्यप्रोदिन्यै नमः।

६३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मैथुनोद्धतायै नमः।
६३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुद्रायै नमः।
६३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुद्रावत्यै नमः।
६३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मातृकायै नमः।
६३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मायायै नमः।
६४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महिमायै नमः।
६४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मायामहिममन्दिरायै नमः।
६४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामायायै नमः।
६४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाविद्यायै नमः।
६४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामार्यै नमः।
६४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महेश्वर्यै नमः।
६४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महादेववध्वै नमः!
६४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मान्यायै नमः।
६४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुरायै नमः।
६४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वीरमण्डलायै नमः।
६५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मेदस्विन्यै नमः।
६५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एकश्रियै नमः।
६५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महिषासुरमर्दिन्यै नमः।
६५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मण्डपस्थायै नमः।
६५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मङ्गस्थायै नमः।
६५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मदिरागमगर्वितायै नमः।
६५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मोक्षदायै नमः।
६५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मुण्डमालायै नमः।
६५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मालायै नमः।
६५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मालाविलासिन्यै नमः।
६६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मातङ्गिन्यै नमः।
६६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मतङ्गयै नमः।
६६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मतङ्गतनयायै नमः।
६६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुस्त्रावायै नमः।
६६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुरसायै नमः।

६६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधूककुसुमप्रियायै नमः।
६६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यामिन्यै नमः।
६६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यामिनीनाथायै नमः।
६६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यामिनीनाथभूषायै नमः।
६६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यावकरञ्जितायै नमः।
६७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यवाङ्कुरायै नमः।
६७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यावाङ्कुरप्रियायै नमः।
६७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मायायावन्यै नमः।
६७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यौवनाधिपायै नमः।
६७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यमघ्न्यै नमः।
६७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यमकन्यायै नमः।
६७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यजमानस्वरूपिण्यै नमः।
६७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्ञायै नमः।
६७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्वायै नमः।
६७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यजुर्यज्वायै नमः।
६८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशोपिकरायै नमः।
६८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशोपिकरकारिण्यै नमः।
६८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्ञसूत्रप्रदायै नमः।
६८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ज्येष्ठायै नमः।
६८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यज्ञकर्मकर्यै नमः।
६८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यशस्विन्यै नमः।
६८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यकारस्थायै नमः।
६८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ यूपस्तम्भनिवासिन्यै नमः।
६८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रञ्जितायै नमः।
६८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राजपत्न्यै नमः।
६९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रमायै नमः।
६९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रवेरण्यै नमः।
६९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रजोवत्यै नमः।
६९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रजश्चित्रायै नमः।
६९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रजन्यै नमः।

६९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रजनीपत्यै नमः।
६९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रागिन्यै नमः।
६९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राज्यनीराज्यायै नमः।
६९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राज्यायै नमः।
६९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राज्यदायै नमः।
७००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राज्यवर्धिन्यै नमः।
७०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राजन्वत्यै नमः।
७०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राजनीत्यै नमः।
७०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रजतवासिन्यै नमः।
७०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रमण्यै नमः।
७०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रमणीयायै नमः।
७०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रामायै नमः।
७०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रामावत्यै नमः।
७०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रत्यै नमः।
७०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रेतोवत्यै नमः।
७१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रतोत्साहायै नमः।
७११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोगहृद्यै नमः।
७१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निरोगकारिण्यै नमः।
७१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रङ्गायै नमः।
७१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रङ्गवत्यै नमः।
७१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रागायै नमः।
७१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रागज्ञायै नमः।
७१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रागकृद्यै नमः।
७१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रणायै नमः।
७१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रञ्जिकायै नमः।
७२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अरञ्जिकायै नमः।
७२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रञ्जायै नमः।
७२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रञ्जिन्यै नमः।
७२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तलोचनायै नमः।
७२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तचर्मधरारञ्जायै नमः।

७२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तस्थायै नमः।
७२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रक्तवादिन्यै नमः।
७२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रम्भायै नमः।
७२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रम्भफलप्रीत्यै नमः।
७२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रम्भोरवे नमः।
७३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ राघवप्रियायै नमः।
७३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रङ्गवृन्दगणायै नमः।
७३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मधुररोदस्यै नमः।
७३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोदसीग्रहायै नमः।
७३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोधकृत्यै नमः।
७३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोधहन्त्र्यै नमः।
७३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोगभृद्यै नमः।
७३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ रोगशमिन्यै नमः।
७३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्दीस्तुतायै नमः।
७३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बन्धबन्धूककुसुमायै नमः।
७४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्दितायै नमः।
७४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वन्दितमात्रे नमः।
७४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ बिन्दुरायै नमः।
७४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वैन्दवीविद्यायै नमः।
७४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विङ्क्यै नमः।
७४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विङ्ककपालायै नमः।
७४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विङ्कायै नमः।
७४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विङ्कस्थायै नमः।
७४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विङ्कवत्सलायै नमः।
७४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वदर्यै नमः।
७५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विलग्नायै नमः।
७५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विप्रायै नमः।
७५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विध्यै नमः।
७५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विधिकर्यै नमः।
७५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ विधायै नमः।

७५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खिन्यै नमः।
७५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खवलयायै नमः।
७५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खमालायै नमः।
७५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शम्यै नमः।
७५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खपात्राऽशन्यै नमः।
७६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शृङ्गायै नमः।
७६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खग्रीवायै नमः।
७६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्खप्रभायै नमः।
७६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शम्भ्व्यै नमः।
७६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शरावत्यै नमः।
७६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्यामायै नमः।
७६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्यामाङ्गायै नमः।
७६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्यामलोचनायै नमः।
७६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानस्थायै नमः।
७६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानायै नमः।
७७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानस्थलायै नमः।
७७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ श्मशानस्थलभूषणायै नमः।
७७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शमदायै नमः।
७७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शमहन्त्र्यै नमः।
७७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाकिन्यै नमः।
७७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कुशेखरायै नमः।
७७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शान्त्यै नमः।
७७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शान्तिप्रदायै नमः।
७७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शेषायै नमः।
७७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शेषस्थायै नमः।
७८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शेषदायिन्यै नमः।
७८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शेषमुख्यै नमः।
७८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शोषिण्यै नमः।
७८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शीर्यै नमः।
७८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शौर्यै नमः।

७८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शौर्यायै नमः।
७८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शरायै नमः।
७८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिर्यै नमः।
७८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शापहनीशायै नमः।
७८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शापहान्यै नमः।
७९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शशम्पायै नमः।
७९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शपथदायिन्यै नमः।
७९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शृगिण्यै नमः।
७९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शृङ्गपलभुक्त्यै नमः।
७९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कर्यै नमः।
७९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्करचिकायै नमः।
७९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कायै नमः।
७९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कापहायै नमः।
७९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कापहासंस्थायै नमः।
७९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाश्वत्यै नमः।
८००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शीतलायै नमः।
८०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवायै नमः।
८०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवस्थायै नमः।
८०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवभुक्तायै नमः।
८०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवासनायै नमः।
८०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शाववर्णायै नमः।
८०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवोदर्यै नमः।
८०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शायिन्यै नमः।
८०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शावशयनायै नमः।
८०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिशपायै नमः।
८१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिशुपालिन्यै नमः।
८११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवकुण्डलिन्यै नमः।
८१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शैवायै नमः।
८१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्करायै नमः।
८१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिशिरायै नमः।

८१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिशिराशिरायै नमः।
८१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवकाञ्च्यै नमः।
८१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवश्रीकायायै नमः।
८१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवमालायै नमः।
८१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शवाकृत्यै नमः।
८२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शयन्त्यै नमः।
८२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शङ्कुत्यै नमः।
८२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुवाशक्त्यै नमः।
८२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शन्तनवे नमः।
८२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शीलदायिन्यै नमः।
८२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्धुवासिन्यै नमः।
८२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्धुगायै नमः।
८२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरस्वत्यै नमः।
८२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिन्ध्व्यै नमः।
८२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुन्दर्यै नमः।
८३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुन्दराननायै नमः।
८३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुदर्शनायै नमः।
८३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साध्व्यै नमः।
८३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्ध्यै नमः।
८३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धिदात्र्यै नमः।
८३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धायै नमः।
८३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिद्धसरस्वत्यै नमः।
८३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सन्तत्यै नमः।
८३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्पत्यै नमः।
८३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्पदायै नमः।
८४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ संविद्रूपायै नमः।
८४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरतिदयिन्यै नमः।
८४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सपत्न्यै नमः।
८४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरसायै नमः।
८४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सारायै नमः।

८४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरस्वतिकर्यै नमः।
८४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्वधायै नमः।
८४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरःसमायै नमः।
८४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समनायै नमः।
८४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समाराध्यायै नमः।
८५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समस्तदायै नमः।
८५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समिद्धायै नमः।
८५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समदायै नमः।
८५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समायै नमः।
८५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्मोहायै नमः।
८५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समदर्शनायै नमः।
८५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समित्यै नमः।
८५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समिधायै नमः।
८५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सीमायै नमः।
८५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सावित्र्यै नमः।
८६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सविधायै नमः।
८६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सत्यै नमः।
८६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सवतायै नमः।
८६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आसवनादायै नमः।
८६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ आसवनायै नमः।
८६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ समरायै नमः।
८६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्यै नमः।
८६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सिमिरायै नमः।
८६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सततायै नमः।
८६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ साध्व्यै नमः।
८७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुध्यै नमः।
८७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुधीचिन्त्यै नमः।
८७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सहायिन्यै नमः।
८७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंस्यै नमः।
८७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंसगत्यै नमः।

८७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंसायै नमः।
८७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंसोज्वलायै नमः।
८७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ निचोलुयुक्यै नमः।
८७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हलिन्यै नमः।
८७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हलदायै नमः।
८८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हालायै नमः।
८८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरश्रीयै नमः।
८८२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरवल्लभायै नमः।
८८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हेलायै नमः।
८८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हेलावत्यै नमः।
८८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हेषायै नमः।
८८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ह्लेषस्थायै नमः।
८८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ह्लेषवर्धिन्यै नमः।
८८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हन्तायै नमः।
८८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हन्त्यै नमः।
८९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हतायै नमः।
८९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हत्याहायै नमः।
८९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हन्ततापहारिण्यै नमः।
८९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हङ्कार्यै नमः।
८९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हन्तकृद्यै नमः।
८९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हन्तकृद्धङ्काहायै नमः।
८९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हीयै नमः।
८९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होतायै नमः।
८९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हाहालयै नमः।
८९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हताहतायै नमः।
९००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हेमप्रदायै नमः।
९०१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हंसवत्यै नमः।
९०२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हार्यै नमः।
९०३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हातर्यै नमः।
९०४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सम्मतायै नमः।

९०५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होर्यै नमः।
९०६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होत्र्यै नमः।
९०७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होलिकायै नमः।
९०८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होमायै नमः।
९०९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ होमहविर्यै नमः।
९१०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हारिण्यै नमः।
९११.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरिण्यै नमः।
९१२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हरिणीनेत्रायै नमः।
९१३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हिमाचलनिवासिन्यै नमः।
९१४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बोदर्यै नमः।
९१५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बकर्णायै नमः।
९१६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बिकायै नमः।
९१७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बविग्रहायै नमः।
९१८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लीलायै नमः।
९१९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोलावत्यै नमः।
९२०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोलायै नमः।
९२१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ललन्यै नमः।
९२२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ललितायै नमः।
९२३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लतायै नमः।
९२४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ललमायै नमः।
९२५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोचनायै नमः।
९२६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोच्यायै नमः।
९२७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोलाक्ष्यै नमः।
९२८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्षणायै नमः।
९२९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ललायै नमः।
९३०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्पत्यै नमः।
९३१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लुम्पत्यै नमः।
९३२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्पायै नमः।
९३३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोपामुद्रायै नमः।
९३४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघुमानायै नमः।

१३५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघुमध्यगायै नमः।
१३६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ललन्तिकायै नमः।
१३७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बिकायै नमः।
१३८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लम्बायै नमः।
१३९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघिमायै नमः।
१४०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघुमध्यमायै नमः।
१४१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघीयस्यै नमः।
१४२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लघुदर्यै नमः।
१४३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लूतायै नमः।
१४४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लूतनिवारिण्यै नमः।
१४५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोमभृदायै नमः।
१४६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लोमलोप्तायै नमः।
१४७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लुलुत्यै नमः।
१४८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लुलुसंयत्यै नमः।
१४९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लुलायस्था नमः।
१५०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चलहार्यै नमः।
१५१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लङ्कपुर्यै नमः।
१५२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरन्दर्यै नमः।
१५३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्ष्म्यै नमः।
१५४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्ष्मीप्रदायै नमः।
१५५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्ष्म्यायै नमः।
१५६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ लक्षबलप्रदायै नमः।
१५७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मतिप्रदायै नमः।
१५८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुणायै नमः।
१५९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुपायै नमः।
१६०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षणायै नमः।
१६१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षीणायै नमः।
१६२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षमायै नमः।
१६३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षान्त्यै नमः।
१६४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षणावत्यै नमः।

९६५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षामायै नमः।
९६६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षामोदर्यै नमः।
९६७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षीमायै नमः।
९६८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षौमभृत्यै नमः।
९६९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षत्रियाङ्गनायै नमः।
९७०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षयायै नमः।
९७१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षमाकर्यै नमः।
९७२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षीरायै नमः।
९७३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षीरदायै नमः।
९७४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षीरसागरायै नमः।
९७५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षेमङ्कर्यै नमः।
९७६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षयङ्कर्यै नमः।
९७७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षयतत्क्षणदायै नमः।
९७८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षत्यै नमः।
९७९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुरन्त्यै नमः।
९८०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुद्रिकायै नमः।
९८१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुद्रायै नमः।
९८२.ॐऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षुत्क्षामायै नमः।
९८३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अक्षरायै नमः।
९८४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अक्षरपातकायै नमः।
९८५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अङ्गस्थायै नमः।
९८६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अङ्गनिवासिन्यै नमः।
९८७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अङ्गधारिण्यै नमः।
९८८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरनिवासिन्यै नमः।
९८९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पुरान्तकायै नमः।
९९०.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ दारिद्र्यहरणायै नमः।
९९१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शत्रुनिशूदिन्यै नमः।
९९२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शत्रुमर्दिन्यै नमः।
९९३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शत्रुमदविनासिन्यै नमः।
९९४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शत्रुशोककर्यै नमः।

९९५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महामाहेश्वर्यै नमः।

९९६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकालप्रियायै नमः।

९९७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकालनिरतायै नमः।

९९८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकालमनोहरायै नमः।

९९९.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महाकालाह्लादकर्यै नमः।

१०००.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवशक्त्यै नमः।

१००१.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवप्रियायै नमः।

१००२.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ शिवप्राणवल्लभायै नमः।

१००३.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महेश्वराह्लादकर्यै नमः।

१००४.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सर्वशोकहरायै नमः।

१००५.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भक्ताशोककर्यै नमः।

१००६.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेणुनादकर्यै नमः।

१००७.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेणुनादलहर्यै नमः।

१००८.ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ वेणुनादप्रवाहिन्यै नमः।

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रति चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशासित-भीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्या मम भद्रकाली॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अनेन सहस्रार्चनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्रार्चनं परिपूर्णम्

●

सहस्राक्षरमालामन्त्रजपम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरमन्त्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुपछन्दः श्रीमद्-प्रत्यङ्गिरादेवता ह्रीँ बीजं ह्रूँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीष्टदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीष्टदेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मां रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं शिखायै वषट्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मां रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं संविभ्रति चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशासित-भीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्या मम भद्रकाली॥

देवता की उत्तरपूजा कर, सद्यःसिद्धि के लिए मूलमन्त्र से १०८ बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करके विशेषार्घ्य प्रदान कर, हाथ में जल लेकर जप समर्पित करके स्तोत्रादि पाठ करे।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी॥

गुह्य से भी अतिगुह्य गोप्य से भी गोप्य, हे देवि! हमारे जप को ग्रहण कर हमें हमारे कार्यसिद्धिरूपी कृपाप्रसाद प्रदान करें।

स्तोत्रात्मक-मालामन्त्रः

ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरूहूताय महामायाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत् साक्षिणे संतापभूतव्यापिने महाघोराऽतिघोराय ॐ ॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ गिलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल

धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रँ रँ रँ रँ रँ रक्ष रक्ष त्वं मां रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ऐँ ह्रूँ ह्रूँ रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघ सर्वतोऽग्नि विद्युदर्क संवर्त कपर्दिनी दिव्यकणिकाम्भोरुह विकटपद्ममालाधारिणि सितिकण्ठाभ खट्वां कपालधृक् व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वर प्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवतापितृपिशाचोरगनागाऽसुरगरुणगन्धर्वकिन्नरविद्याधरयक्ष राक्षसान् ग्रहाञ्च स्तम्भय स्तम्भय सपरिवारस्य मम शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये सर्वे ममोपरि अविद्यां कर्म कुर्वन्तिकारयन्ति तेषां बुद्धिर्घातयघातय तेषां रोमं कीलय कीलय सर्वान् शत्रून् स्वाहा॥

ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ सर्वसिद्धि महाभागे ममात्मनः सपरिवारस्य शान्ति कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ॐ ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यँ यँ यँ यँ यँ रँ रँ रँ रँ रँ लँ लँ लँ लँ लँ वँ वँ वँ वँ वँ शँ शँ शँ शँ शँ षँ षँ षँ षँ षँ सँ सँ सँ सँ सँ हँ हँ हँ हँ हँ ळँ ळँ ळँ ळँ ळँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ जूं सः फट् स्वाहा॥ ॐ नमो प्रत्याङ्गिरे ममात्मनः सपरिवारस्य शान्तिं रक्षां कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवती दुष्टचाण्डालिनि त्रिशूलवज्राङ्कुशशक्तिधारिणी रुधिरमांसवसाभक्षिणी कपालखट्वाङ्गधारिणी मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वान्दुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दंष्ट्राकरालिनी मम शत्रूणां कृतमन्त्रतन्त्रयन्त्रप्रयोग विषचूर्णशस्त्राद्यविचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति कारयिष्यन्ति तान् सर्वान् हन हन प्रत्यङ्गिरे! ममात्मनः सपरिवारस्य रक्ष रक्ष ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ ब्राह्मी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ वैष्णवी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ माहेश्वरी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ कौमारी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ अपराजिता मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ वाराही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ नारसिंही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ चामुण्डा मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं सर्वतो सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ भ्रामिणी मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ रौद्री मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय हुँ फट् स्वाहा॥

फलश्रुतिः

य इमां धारयेद्विद्यां त्रिसन्ध्यं वाऽपि यः पठेत्।
सोऽपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून्न संशयः॥१॥

इस विद्या को धारण करके, प्रातः, मध्याह्न, सायं तीनों कालों में जो पाठ करता है, वह अपने अतिदुष्ट शत्रुओं को भी समाप्त कर देता है, इसमें कोई संशय नही है॥१॥

सर्वं हि रक्षयेत् विद्यां महाभय-विपत्तिषु।
महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित्॥२॥

महाभय उपस्थित होने पर, महाविपत्ति काल में, घोरतम भय होने पर इस विद्या से रक्षा करनी चाहिये, त्रिकाल पाठ करने वाले साधक को कोई भय नही होता है॥२॥

सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवि न संशयः।
अष्टोत्तरशतं जपेत्साक्षाद् सिद्धीश्वरो भवेत्॥३॥

इस मर्त्यलोक में समस्त कामनाओं की पूर्ति कर लेता है, इस विद्या का अष्टोत्तरशत जप करने से सिद्धि होती है, वह साधक सिद्धीश्वर हो जाता है॥३॥

भुक्तौ मुक्तौ शान्तौ च श्वेत-पुष्पंविनिर्दिशेत्।
आकृष्टो च वशीकारे रक्तपुष्पं समर्पयेत्॥४॥

पुष्पार्चन में भुक्ति, मुक्ति और शान्ति की कामना के लिए श्वेत पुष्प से अर्चन करना चाहिए, आकर्षण, वशीकरण में रक्त पुष्प से समर्चन करना चाहिए॥४॥

स्तम्भने मोहने चैव पीतं पुष्पं विनिर्दिशेत्।
उच्चाटने मारणे च कृष्णपुष्पं च आनयेत्॥५॥

स्तम्भन और मोहन कार्य में पीले पुष्प से अर्चन करना चाहिए, उच्चाटन और मारण कार्य के लिए काले पुष्प से अर्चन करना चाहिए॥५॥

अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्पवर्णकम्।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि॥६॥

इसी प्रकार से कामनाओं के अनुसार विभिन्न वर्णों के पुष्पों का चयन तथा ध्यान करना चाहिए, इस पुष्पार्चन की विधि जप के पूर्व करना चाहिए॥६॥

हाथ में जल लेकर भगवती के बायें हाथ में पाठ समर्पण करके अष्टोत्तरशत पुष्पाञ्जलि प्रदान करे, समस्त कामना के लिए इक्कीस दिन वृद्धि क्रम से पाठ करे और पाठ के पहले और बाद मे १०८ पुष्पाञ्जलि समर्पित करे, अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग-अलग पुष्पों का चयन करना चाहिए।

श्रीप्रत्यङ्गिरामालामहामन्त्रः परिपूर्णः

●

प्रत्यङ्गिराकवचम्

देव्युवाच

भगवन् • सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थपारग!।
देव्याः प्रत्यङ्गिरायाश्च कवचं यत् प्रकाशितम्॥१॥

देवि ने कहा—हे भगवान्! हे सर्वधर्मज्ञ! हे सम्पूर्ण शास्त्रों के पारगामी भैरव प्रभो! सर्वार्थसाधन नामक प्रत्यङ्गिरा देवी का जो कवच आपने प्रकाशित किया है॥१॥

सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व मयि प्रभो।

हे प्रभो! वह सर्वार्थसाधन नामक कवच आप मुझसे कहिये।

भैरव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम्॥२॥

श्रीभैरव बाले—हे देवि! अत्यन्त अद्भुत सर्वार्थसाधन नामक उस कवच को मैं तुमसे कहता हूँ, सावधान होकर सुनों।

सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चाऽतिदुर्लभम्।
सर्वसिद्धिमयं देवि! सर्वैश्वर्यप्रदायकम्॥३॥

सर्वार्थसाधन नामक कवच तीनों लोकों में परम दुर्लभ है, यह सभी ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला तथा सर्वसिद्धिमय है॥३॥

पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग् भवेत्।
सर्वासाधकस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः॥४॥

इस कवच का पाठ करने तथा सुनने से इस मर्त्यलोक में मनुष्य त्रिलोकी के ऐश्वर्य का स्वामी हो जाता है। इस सर्वार्थसाधक नामक कवच के शिव ऋषि हैं॥४॥

छन्दो विराट् पराशक्तिर्जगद्धात्री च देवता।
धर्माऽर्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः॥५॥

इस कवच का विराट् छन्द हैं, पराशक्ति हैं, जगद्धत्री देवता हैं, धर्माऽर्थकाममोक्ष के लिए इसका विनियोग किया जाता है॥५॥

विनियोगः—**ॐ श्रीसर्वार्थसाधककवचस्य शिवऋषिः, विराट्छन्दः, श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, श्रीँ कीलकं श्रीसदाशिवदेवताप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ॐ प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवश्च ललाटकम्।
ह्रीँ पातु दक्षनेत्रं मे लक्ष्मीर्वाम सुरेश्वरी॥१॥

ॐकार प्रणव हमारे शिर की रक्षा करें, वाग्भव बीज ललाट की रक्षा करें, ह्रीँ बीज दक्ष नेत्र की रक्षा करें, लक्ष्मी बीज वामनेत्र की रक्षा करें॥१॥

प्रत्यङ्गिरा दक्षकर्णं वामे कामेश्वरी तथा।
लक्ष्मीः प्राणं सदा पातु वदनं पातु केशवः॥२॥

प्रत्यङ्गिरा देवी दाहिने कान की रक्षा करें, वामकर्ण की कामेश्वरी रक्षा करें, लक्ष्मी हमारे प्राणों की रक्षा करें, शरीर की केशव रक्षा करें॥२॥

गौरी तु रसनां पातु कण्ठं पातु महेश्वरः।
स्कन्धदेशं रतिः पातु भुजौ तु मकरध्वजः॥३॥

गौरी हमारे रसना की रक्षा करें, हमारे कण्ठ की महेश्वर रक्षा करें, हमारे कन्धों की रति रक्षा करें, हमारे भुजाओं की मकरध्वज रक्षा करें॥३॥

शङ्खनिधिः करौ पातु वक्षे पद्मनिधिस्तथा।
ब्राह्मी मध्यं सदा पातु नाभीं पातु महेश्वरी॥४॥

शङ्खनिधि हमारे हाथों की रक्षा करें, हमारे वक्षस्थल की पद्मनिधि रक्षा करें, ब्राह्मी हमारे मध्य भाग की रक्षा करें, हमारे नाभि की महेश्वरी रक्षा करें॥४॥

कौमारी पृष्ठदेशं तु गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।
वाराहीं च कटिंपातु चैन्द्री पातु पदद्वयम्॥५॥

कौमारी हमारे पीठ की रक्षा करें, हमारे गुह्य देश की वैष्णवी रक्षा करें, वाराही हमारे कमर क्षेत्र की रक्षा करें, ऐन्द्री हमारे दोनों पैरों की रक्षा करें॥५॥

भार्यां रक्षतु चामुण्डा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्।
इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेयां अग्निदेवता॥६॥

चामुण्डा हमारी भार्या की रक्षा करे, लक्ष्मी हमारे पुत्रों की रक्षा करें, इन्द्र हमे पूर्वदिशा में रक्षा करें, अग्निकोण में अग्नि रक्षा करें॥६॥

याम्ये यमः सदापातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा।
पश्चिमे वरुणःपातु वायव्यां वायुदेवता॥७॥

दक्षिणदिशा में यम हमारी रक्षा करें, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति रक्षा करे, पश्चिमदिशा में वरुण हमारी रक्षा करें, वायव्यकोण में वायु देवता हमारी रक्षा करें॥७॥

सौम्यां सोमः सदा पातु चैशान्यामीश्वरो विभुः।
ऊर्ध्वं प्रजापतिः पातु ह्यधश्चाऽनन्तदेवता॥८॥

उत्तरदिशा में सोम सदा ही रक्षा करें, ईशानकोण में विभु ईश्वर रक्षा करें, ऊर्ध्वदिशा से प्रजापति रक्षा करें, अधोदिशा से अनन्त देवता रक्षा करें॥८॥

राजद्वारे श्मशाने तु अरण्ये प्रान्तरे तथा।
जले स्थले चाऽन्तरिक्षे शत्रूणां निग्रहे तथा॥९॥

राजद्वार, श्मशान, अरण्य, नगर, जल, स्थल, अन्तरिक्ष में शत्रुओं के निग्रह के लिए॥९॥

एताभिः सहिता देवी चतुर्बीजा महेश्वरी।
प्रत्यङ्गिरामहाशक्तिः सर्वत्र मां सदाऽवतु॥१०॥

इन सभी वर्णों के सहित चार बीजाक्षरों वाली महामाहेश्वरी प्रत्यङ्गिरा महाशक्ति सर्वत्र हमारी सदैव रक्षा करें॥१०॥

फलश्रुतिः

इति ते कथितं देवि! सारात्सारं परात्परम्।
सर्वार्थ-साधनं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥१॥

यह जो सर्वार्थ साधन नामक कवच को हमने कहा है, वह सर्वार्थसाधन नामक कवच परम अद्भुत तथा परात्पर सारों में सार है॥१॥

अस्याऽपि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः।
इन्द्राद्याः सकला देवाः धारणात्पठनाद्यतः॥२॥

इसके पाठ करने से सद्यः साधक कुबेर के समान धनवान् हो जाता है। इन्द्रादि समस्त देवताओं ने इसे ही धारण तथा पाठ करके समस्त सिद्धियों को प्राप्त किया था॥२॥

सर्वसिद्धीश्वरो सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।
प्रीतिमन्येऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे॥३॥

समस्त देवता सभी ऐश्वर्यों को तथा समस्त सिद्धियों को इसी से प्राप्त किये तथा इस कवच को प्रीतिपूर्वक धारण करने वाले को धन तथा घर में स्थिर सम्पत्ति होती है॥३॥

वार्णी च निवसेत् वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।
यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम्॥४॥

जो पुण्यात्मा इस सर्वार्थ साधन नामक विद्या को धारण करता है तथा पाठ करता है, उसके मुख में सरस्वती का निवास होता है, इसमें कोई भी संशय नही है॥४॥

कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥५॥

यह कवच परम पुण्यकारक है तथा इसे धारण करने वाला पुण्यों का वरण करता है और सभी ऐश्वर्य से युक्त होकर त्रैलोक्य में विजय प्राप्त करता है॥५॥

पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वाम भुजे तथा।
बहुपुत्रवती भूयाद् बन्ध्याऽपि लभ्यते सुतम्॥६॥

इस कवच विद्या का पुरुष दक्षिण बाहु तथा नारि वाम बाहु में धारण करने से बहुत पुत्रवान् तथा बन्ध्या भी पुत्र का लाभ् प्राप्त करती है॥६॥

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तत्तनुम्।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीम्॥७॥

इस कवच के धारण करने वाले साधक का ब्रह्मास्त्रादि शस्त्र भी कुछ नहीं कर सकते, इस कवच को बिना जाने जो प्रत्यङ्गिरा महामन्त्र का जप करते हैं॥७॥

दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।

वह परम दारिद्र्य को प्राप्त करता है, जीवन में तरह तरह के कष्टों को भोगता है तथा वह त्वरित ही मृत्यु प्राप्त करता है॥

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे पञ्चाङ्गखण्डे प्रत्यङ्गिरायाः सर्वार्थसाधनं नामकं कवचं परिपूर्णम्

प्रत्यङ्गिरापटलः

मेरुपृष्ठे सुखासीनं भैरवं परमेश्वरम्।
प्रसन्न वदनं देवं नाग-यज्ञोपवीतिनम्॥१॥

मेरुपृष्ठ पर सुखासन से प्रसन्न मुख बैठे हुए, नागसंज्ञक (पवित्र) यज्ञोपवीत धारण किये हुए॥१॥

गजचर्मपराधीनं भूतिभूषणविग्रहम्।
कपालमालाभरणं गङ्गावीचिरिवाकुलम्॥२॥

गजचर्म विभूषित, विभूति (भस्म) का अङ्गों में अनुलेपन किये हुए, कपाल माला का आभूषण पहने हुए, गङ्गा के तरङ्गों की कलकल ध्वनि से शब्दायमान॥२॥

चन्द्रर्द्धार्चित-मूर्द्धानं सर्पकङ्कण-नूपूरम्।
खट्वाङ्ग-शूलपाशाऽसि-विभूषित-कराम्बुजम् ॥३॥

चन्द्रमा को अपने मस्तक पर धारण किये हुए, सर्प रूपी कङ्कण तथा नूपुर पहने हुए, अपने हाथों में खट्वाङ्ग, शूल, पाश, एवं खड्ग लिए हुए॥३॥

वामाङ्क-स्थितगौरीशं देव-गन्धर्व-सेवितम्।
यक्षेन्द्र-किन्नरनुतं ब्रह्माऽच्युत-नमस्कृतम्॥४॥

वाम अङ्ग में गौरी को विराजमान किये हुए, देवताओं और गन्धर्वों से सेवित, कुबेरादि यक्षों तथा किन्नरादि गणों द्वारा स्तुत, ब्रह्मा विष्णु से बारम्बार प्रणाम किये जाते हुए॥४॥

देव्युवाच

प्रहसन्तं जयन्तं च ध्यायन्तं च मुहुर्मुहुः।
स्मितपूर्वं प्रणम्यादौ बद्धाञ्जलिपुटं ततः॥५॥

जय विजय गणों के द्वारा बार-बार ध्यान किये जाते हुए, सदाशिव को मन्द हास पूर्वक प्रणाम एवं स्तुति करके खड़ी होकर पार्वती ने पूछा॥५॥

उत्थाय पार्वती देवि भगवन्तमभाषत।
भगवंस्त्वं परो देवस्त्रैलोक्यप्रभुरीश्वरः॥६॥

खड़ी होकर पार्वती देवी ने भैरव से कहा—हे भगवान्! आप परदेव हैं और त्रैलोक्य के प्रभु एवं सर्वसमर्थ हैं॥६॥

त्रिगुणात्मा गुणातीतश्चित्स्वरूपो निरञ्जनः।
सकलो निष्कलो देवः सत्तारूपो महेश्वरः॥७॥

त्रिगुणात्मा होते हुए भी गुणातीत हैं, चित्स्वरूप एवं निरञ्जन हैं, आप साकार तथा निराकार भी हैं, सत्ता रूप से सर्वत्र व्याप्त होकर भी महेश्वर हैं॥७॥

त्वं किं जपसि देवेश ममाद्य विदितं तु यत्।
तत्समाचक्ष्व सकलं यद्यहं तव वल्लभा॥८॥

हे देवेश! आप क्या जपते हैं? किसका जप करते हैं? उसका ज्ञान हमें आज तक नहीं हुआ। यदि मैं आपकी प्रिय वल्लभा हूँ तथा प्रसन्न हों, तो कृपया इस विषय को विस्तारपूर्वक बताइये॥८॥

भैरव उवाच

एतद् गुह्यतमं लोके न कस्य कथितं मया।
तथाऽपि तव देवेशि! भक्त्या गुह्यं वदाम्यहम्॥९॥

भैरव बोले—हे देवि! इस संसार में यह बहुत गुप्त है, जिसे आज तक हमने किसी से नही बताया, तथापि हे देवेशि! गुप्त होने पर भी तुम्हारी भक्ति के वश में हो कर मैं उसे तुमसे कह रहा हूँ॥९॥

या देवि! लोकमातेति महामाहेश्वरी शिवा।
प्रत्यङ्गिरेति विख्याता षड्विंशति सुवर्णिका॥१०॥

देवी लोकमाता, महामाहेश्वरी, शिवा एवं प्रत्यङ्गिरा के नाम से ख्यातिलब्ध हैं, जो छब्बीस वर्णाक्षरों से युक्त विद्या (मन्त्र) हैं॥१०॥

सृजते सकलं विश्वं बिभर्ति परमाम्बिकाम्।
अन्ते संहार-कर्त्री च संहरिष्यति तामसी॥११॥

जो परमा अम्बिका रजोगुण का आश्रय लेकर सारे विश्व का सृजन करती हैं, सतोगुण का आश्रय लेकर पालन करती हैं तथा अन्त में तमोगुण का आश्रय लेकर सम्पूर्ण संसार का संहार करती हैं॥११॥

गुणत्रयमयी विद्या महादारिद्र्यवारिणी।
तस्याः पञ्चाङ्गमीशानि पठाम्यहमहर्निशम्॥१२॥

जो त्रिगुणात्मिका महाविद्या हैं, महादारिद्र्य को वारण करने वाली हैं, हे ईशानि! दिन-रात मैं उन्हीं का पञ्चाङ्ग सेवन करता रहता हूँ॥१२॥

जपेद् विद्यां सर्वमेतां वर्मनामसहस्रकम्।
स्तवं मन्त्रमयं देवि! पठामि परमेश्वरीम्॥१३॥

मैं उस महाविद्या का सेवन करता रहता हूँ, उसी महाविद्या के ध्यान, मनन, निधिध्यासन में निमग्न रहता हूँ, उसी का कवच, सहस्रनाम तथा मन्त्रात्मक स्तोत्र का पाठ दिनरात करता रहता हूँ॥१३॥

तत्प्रसादादहं देवि! त्रैलोक्य-प्रभुरीश्वरः।
भैरवो भैरवादेशः सृष्टिस्थितिलयात्मकः॥१४॥

हे देवि! मैं उन्हीं के प्रसाद से त्रैलोक्य का प्रभु ईश्वर तथा भैरव हूँ, इन्हीं की कृपा से मेरी आज्ञा सभी पालन करते हैं तथा मैं ही इस जगत् का सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय करता हूँ॥१४॥

देव्युवाच

भगवन् देव देवेश! निःशेष-करुणाकरः।
देव्या प्रत्यङ्गिरायाश्च पञ्चाङ्गं वक्तुमर्हसि॥१५॥

देवि ने पूछा—हे भगवान्! हे देवदेवेश! हे अशेष करुणाकर! प्रत्यङ्गिरा देवी का पञ्चाङ्ग मुझे बताने की कृपा करें?॥१५॥

भैरव उवाच

पटलं पद्धतिं चैव वर्मनामसहस्रकम्।
स्त्रोत्रमन्त्रमयं देवि! वक्ष्ये लोक-हितेच्छया॥१६॥

भैरव ने कहा—पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम और मन्त्रात्मकमालामहामन्त्रस्तोत्र ये प्रत्यङ्गिरा के पञ्चाङ्ग कहे जाते हैं॥१६॥

आदौ पटलं दिव्यं मूलमन्त्रमयं परम्।
स यन्त्रमन्त्रतन्त्रश्च प्रयोगसहितं शृणु॥१७॥

हे देवि! सर्वप्रथम मन्त्रयन्त्रतन्त्रसहित, दिव्यपटल को प्रयोग के साथ सुनो॥१७॥

प्रणवं वाग्भवं माया लक्ष्मीः प्रत्यङ्गिरेति च।
मम रक्षद्वयं देवि! मम शत्रून् पदं मयि॥१८॥

सर्वप्रथम **मन्त्रोद्धार** कहते है—प्रणव (ॐ), वाग्भव (ऐं), माया (ह्रीं), लक्ष्मी (श्रीं) फिर **प्रत्यङ्गिरे** के बाद पुनः **मम रक्ष रक्ष** फिर **मम शत्रून्** के बाद॥१८॥

भक्षद्वयं प्रणवञ्च स्वाहान्तो मन्त्रोत्तमः।
एष विद्या मया ख्याता परमानन्ददायिनी॥१९॥

फिर दो बार भक्ष भक्ष फिर पुन प्रणव (ॐ) तथा स्वाहा पद जोड़ने से **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा ॐ** यह प्रत्यङ्गिरा का परम

उत्तम महामन्त्र है, इस परमानन्ददायिनी महाविद्या को हमने तुमसे कहा॥१९॥

भोगदा सुखदा देवी! राज्यदा धनदा तथा।
सिद्धिमोक्षप्रदाविद्या परासायुज्यदायिनी॥२०॥

हे देवि! यह महाविद्या भोग, सुख, राज्य, धन, सिद्धि तथा मोक्ष प्रदान करने वाली तथा परमसायुज्य प्रदान करने वाली है॥२०।

महागुरुप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते।
विना गुरूपदेशेन नान्यत् सिद्ध्यति भारती॥२१॥

यदि महागुरुकृपा से यह श्रीमहाविद्या प्राप्त हो जाये तभी सिद्धि प्रदान करती है, विना गुरु के उपदेश के यह सिद्ध नहीं होती है, गुरुकृपा ही इस विद्या का एक मात्र प्राप्त करने का साधन है॥२१॥

नैवान्तरायो न क्लेशो न शौचनियमोऽपि वा।
साक्षात्सिद्धिप्रदो देवि! मन्त्रोऽयं भोगमोक्षदः॥२२॥

हे देवि! इस महाविद्या के सिद्धि के लिए किसी प्रकार के विघ्न और क्लेश की सम्भावना नही होती है, शौचादि कोई नियम भी नहीं है, यह महाविद्या सिद्धि तो प्रदान करती ही है तथा भोग और मोक्ष भी प्रदान करती है॥२२॥

वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्द्धं वा महेश्वरी।
एकलक्षवधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन॥२३॥

हे देवि! इस महाविद्या का पुरश्चरण वर्णलक्ष (मन्त्र में जितनी संख्या है उतने लाख की संख्या में जप करना अर्थात् २६ लाख जप का पुरश्चरण) संख्या है, यदि पूरा २६ लाख की संख्या में पुरश्चरण न कर सकें तो उसका आधा १३ लाख ही जप करे, यदि किसी कारण से उतना भी नहीं कर सकता है, तो उसका आधा ६ लाख पचास हजार ही जप करे, यदि किसी कारण वश उतना भी जप नहीं कर सकता है, तो कम से कम एक लाख जप का पुरश्चरण तो अवश्य ही करे, एक लाख से न्यून कभी न करे॥२३॥

जपाद् तद्दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम्।
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम्॥२४॥

पुरश्चरण में जितना भी जप करे उसका दशांश हवन करे, हवन संख्या का दशांश तर्पण करे, तर्पण का दशांश मार्जन करे, तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराये। (इसमें उन ब्राह्मणों को भोजन कराना ही श्रेयस्कर होता है, जो इस महाविद्या का पुरश्चरण पूर्व-काल में कर लिए हों)॥२४॥

वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे।
अर्धरात्रौ च मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत्॥२५॥

वट वृक्ष के नीचे, एकान्त जङ्गल में, श्मशान स्थान में, शून्य गृह में चतुष्पथ पर,

अर्धरात्रि के समय, मध्याह्न में प्रातःकाल में तथा सायं काल में विधिपूर्वक पुरश्चरण अवश्य करना चाहिए॥२५॥

जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनो यो न मन्त्रफलदायकः॥२६॥

जिस प्रकार जीवहीन देह किसी काम के योग्य नहीं होता है, उसी प्रकार पुरश्चरण के बिना मन्त्र भी कभी भी फलदायक नहीं होता है (महादेव का यह कथन सभी प्रकार के मन्त्रों पर सामान्य रूप से लागू होता है, अर्थात् बिना पुरश्चरण के कोई भी मन्त्र फलप्रदान नहीं कर सकता है, पुरश्चरण से मन्त्रों में चैतन्यता आती है, अतः किसी भी मन्त्र का प्रयोग करने के पहले या गुरु से प्राप्त करते ही पुरश्चरण करके चैतन्य तुरन्त ही कर लेना चाहिये अन्यथा एक वर्ष बाद दीक्षा में प्राप्त किये गये मन्त्र निष्क्रिय हो जाते हैं और यदि तीन वर्ष तक पुरश्चरण नहीं किया जाता है, तो श्राप देकर मन्त्रदाता के पास चले जाते हैं, यह स्वयं महागुरु महादेव सदाशिव का वचन है)॥२६॥

मन्त्रमुत्कीलयेदादौ मन्त्रं सञ्जीवयेत्ततः।
निष्कौटिल्यञ्चत्पश्चात्ततः शापहरी जपेत्॥२७॥

सर्वप्रथम मन्त्र का उत्कीलन करना चाहिये, फिर प्राणप्रतिष्ठा करके उसे संजीवित करना चाहिए, तदनन्तर समस्त संस्कार करके उसके समस्त दोषों को समाप्त करना चाहिए, फिर शाप रहित करना चाहिए॥२७॥

सिद्धमन्त्रं जपेच्छुद्धं ततस्सम्पुटितं चरेत्।
क्रमेणानेन देवेशि! श्रीविद्यां यो जपेत्सुधी॥२८॥

इस प्रकार से समस्त संस्कारादि करके मन्त्र परमशुद्ध हो जाते हैं फिर पुरश्चरण करने से सिद्ध हो जाते हैं तथा सद्यः सिद्धि प्रदान करते हैं। हे देवि! जो बुद्धिमान् साधक इस क्रम से इस श्रीविद्या का जप करता है॥२८॥

स साधको भवेल्लोके भोगी सायुज्यमाप्नुयात्।
मन्त्रस्यास्य मुनिश्चैव महाभैरव एव च॥२९॥

वह साधक इस अति उत्तम महाविद्या को सिद्ध करके जबतक संसार में रहता है तबतक समस्त भोगों को प्राप्त करता है, अन्त में देवी का सायुज्य प्राप्त करता है। इस महाविद्या के महाभैरव ऋषि हैं॥२९॥

अनुष्टुप्छन्ददूत्युक्तः श्रीमत्प्रत्यङ्गिरेति च।
देवतास्या पराबीजं शक्तिः स्वाहा च कीलकम्॥३०॥

इसका अनुष्टुप्छन्द, श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवता तथा पराबीजशक्ति तथा स्वाहा कीलक है॥३०॥

भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः इति स्मृतः।
ध्यानमस्या प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम्॥३१॥

भोगापवर्ग (भोग तथा मोक्ष) की सिद्धि के लिए इसका विनियोग कहा गया है। सभी तन्त्रों में सर्वथा गुप्त श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा का ध्यान कहता हूँ॥३१॥

विनियोगविधि:—**ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य महाभैरवऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता, ऐंबीजं, ह्रींशक्ति:, श्रींकीलकं भोगापवर्गसिद्ध्यर्थे प्रत्यङ्गिरामन्त्र-जपे विनियोग:।**

ध्यानम्

आशाम्बरा मुक्तकुचा घनच्छवि:, ध्येया स चर्मासिकराहिभूषणा।
दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिता हितत्वया, प्रत्यङ्गिरा शङ्कर तेजसेरिता॥३२॥

दिगम्बर वेश धारण किये हुए, बिखरे हुए बालोंवाली, बादल के समान कान्तिवाली, हाथों में तलवार और ढाल लिये हुए, सर्पों का आभूषण धारण किये हुए, महाभयानक दाँतों से युक्त मुखवाली, श्रीशङ्कर से प्रेरणा प्राप्त कर समस्त शत्रुओं को मुख में चबाती हुई प्रत्यङ्गिरा देवी का ध्यान करना चाहिए॥३२॥

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रवर्तकम्।
सर्व-सम्मोहनं चक्रं सर्वाशा-परिपूरकम्॥३३॥

सम्पूर्ण सिद्धियों को प्रदान करनेवाला, प्रत्यङ्गिरा यन्त्र का उद्धार कहता हूँ, जो मनुष्यों के सम्पूर्ण मनोरथों को परिपूर्ण करनेवाला है, इस यन्त्र को सर्व सम्मोहन नाम से सम्बोधित करते हैं॥३३॥

यन्त्रोद्धार:

विन्दुत्रिकोणं वसुकोणयुक्तं, पत्राष्टयन्त्रञ्च त्रिवृत्तयुक्तम्।
भूगेह-लक्ष्मी-खचितं च सिद्धिदं, प्रत्यङ्गिरा चक्रमेतन्मयोक्तम्॥३४॥

सर्व प्रथम विन्दु लिखे फिर अष्टकोण, फिर वृत्त लिखे, फिर पुन: अष्टदल कमल का निर्माण करे, पुन: तीन वृत्त का निर्माण करे तदनन्तर सर्वथा चौकोर तीन भूपुर का निर्माण करे, जो लक्ष्मी (**श्रीं**) से युक्त हो। इस प्रकार समस्त प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाला प्रत्यङ्गिरा का सर्वसम्मोहन नामक यन्त्र बनेगा॥३४॥

लयागमस्य वक्ष्यामि यन्त्रराजस्य पार्वति।
येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्॥३५॥

हे पार्वति! लयागम में इस यन्त्रराज को हमने कहा है, अब इस यन्त्र पूजन विधि कहता हूँ, जिसके सुनने मात्र से करोड़ों गुना पूजा का फल प्राप्त होता है॥३५॥

इन्द्राद्यालोकपालाश्च ब्रह्माऽनन्ताङ्किता: प्रिये!।
वज्रादिहेतिसंयुक्ता: पूज्या भूगेहमण्डले॥३६॥

हे प्रिये पार्वति! ब्रह्मा अनन्त से युक्त इन्द्रादि दशदिग्पाल (इन्द्र, अग्नि, यम,

निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त उसी क्रम से दशदिग्पालों के आयुधों वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अंकुश, गदा, त्रिशूल, पद्म तथा चक्र) के साथ भूपुर में पूजन करना चाहिए।।३६।।

वायव्येशानपर्यन्तं दिव्यसिद्धौघमाप्नुयात्।
गरुश्च पुजयेद् देवि! पङ्क्तित्रितयमध्यगान्।।३७।।

वायव्य से ईशान पर्यन्त दिव्य, सिद्ध, मानवादि समूहों वाले गुरुओं का तीन पंक्तियों में पूजन करना चाहिए, तीन प्रकार के गुरु दिव्यौघ, सिद्धौघ तथा मानवौघ हैं।।३७।।

ब्रह्माद्या मातरः पूज्या भैरवाष्टकसंयुताः।
वामावर्त क्रमेणैव रक्तपुष्पैः विशेषतः।।३८।।

अष्टपद्मों में अष्टभैरवों से युक्त ब्राह्मी इत्यादि अष्टमातृशक्तियों का वामवृत्त के क्रम से विशेष करके रक्तपुष्पों से पूजन करना चाहिए।।३८।।

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।
जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च।।३९।।

स्तम्भिनी, मोहिनी, क्षोभिणी, द्राविणी, जृम्भिणी, भ्रामिणी, रौद्री तथा संहारिणी महाशक्तियों का।।३९।।

वसुकोणे परा पूज्या महाचीन-क्रमेच्छुभिः।
वामावर्तेन देवेशि! परमार्थप्रदा सदा।।४०।।

इन आठ महाशक्तियों की महाचीन (अतिप्राचीन) पद्धति से पूजा करनेवाले साधकों को वामावर्त्त से अष्टकोणों में पूजा करनी चाहिए।।४०।।

काली च भद्रकाली च नित्या काली त्रिकोणगाः।
एताः सम्पूजनीयास्तु शिवाग्निः वामभागतः।।४१।।

जो सदैव मोक्ष तथा परमार्थ प्रदान करने वाली शक्तियाँ हैं, उनका त्रिकोण में शिव और अग्नि के वामभाग में काली, भद्रकाली तथा नित्यकाली का पूजन करना चाहिए।।४१।।

देवि! रत्नमयी पात्रे सौवर्णे पूजयेत् सुधीः।
लयाङ्गमेतदाख्यातं सर्वसिद्धिप्रदं शिवे।।४२।।

बुद्धिमान् साधक सुवर्णनिर्मित पात्र में देवी की रत्नमयी प्रतिमा की पूजा करे, हे शिवे! लयागम में ऐसा कहा गया है।।४२।।

प्रयोगा नष्टवक्ष्येऽहं शृणुष्वाहिता प्रिये!।
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः।।४३।।

हे प्रिये पार्वती! अब स्तम्भन-मोहन-मारण-शान्ति-वशीकरण तथा आकर्षणादि कर्मों के लिए तथा।।४३।।

वशीकरोच्चाटनाख्ये शान्तिकं पौष्टिकं ततः।
एतेषां साधनं वक्ष्ये मन्त्रसिद्धिप्रवर्तकम्।।४४।।

वशीकरण, उच्चाटन, शान्तिकर्म तथा पुष्टिकर्म इस आठों के साधन भूत आठ प्रयोगों को कहता हूँ, जो त्वरित मन्त्र सिद्धि प्रदान करते हैं।।४४।।

येन श्रवणमात्रेण मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत्।
रवौ स्नात्वा जपेन्मूलं वटमूलं महेश्वरि!।।४५।।

इन मन्त्र को सुनने मात्र से मन्त्र कल्पद्रुम के समान समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है। हे महेश्वरि! साधक सपरिवार रविवार को स्नानकर वटवृक्ष के नीचे बैठकर।।४५।।

अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सितां शटिम्।
गोधूमं मधुनाऽऽलोड्यं स्तम्भयेद्वादिनां रसनान्।४६।।

इस मन्त्र का दशहजार जप कर फिर उसका दशांश हवन शर्करा, सफेद शाटी, गोधूम और मधु को मिलाकर अग्नि में होम करे, तो वादियों (विवाद करने वाले शत्रुओं) के जिह्वा का स्तम्भन हो जाता है।।४६।।

जलसूर्येन्दुवातानां गतिरेषा च कामिनाम्।
अश्वत्थस्य तले जप्त्वा मूलविद्यां यथाविधिः।।४७।।

पीपल वृक्ष की नीचे मूल विद्या का बताये गये इस विधि से जप करने पर जल, सूर्य, चन्द्रमा और वायु की भी गति स्तम्भित हो जाती है।।४७।।

अयुतं तद्दशांशेन जुहुयात् सर्पिरेणजम्।
मासंकणाशाटिमिश्रं मोहनं जगतां भवेत्।।४८।।

इस महाविद्या का दशहजार जप करके उसका दशांश का घी, हरिण का मांस, और कणाशाटी मिला करके हवन करे तो सारा संसार मोहित हो जाता है।।४८।।

कुजे वा शनिवारे वा पित्र्यर्क्षे विष्टिसङ्गमे।
गत्वा श्मशानं देवेशि नत्वा दिग्भूत-भैरवान्।।४९।।

मङ्गलवार या शनिवार के दिन जब मघानक्षत्र और भद्राकाल हो, तो उस समय श्मशान में जाकर दिशाओं में रहने वाले भूतों और भैरवों को नमस्कार करके।।४९।।

चितां सम्पूज्य वीरेशे जपेदयुत-सङ्ख्यया।
चिताग्नौ जुहुयादाज्यं गुरुपुष्ये शतावरीम्।।५०।।

गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, तो श्मशान में जाकर चितास्थान में वीरेश (भैरव) की पूजाकर इस मन्त्र का दशहजार जप करे, फिर चिताग्नि में घी के साथ शतावरी मिलाकर हवन करे।।५०।।

चण्डाल-केश-नखदन्त-मिश्रां च साधकः।
तर्पयेत्तद्दशांशेन भोजयेत् पात्र पूर्वकम्।।५१।।

चाण्डाल का केश, नख और दाँत से मिश्रित करके हवन करके, तद्दशांश तर्पणादि करके सत्पात्र को भोजन कराये, तो यमराज के समान भी शत्रु मर जाता है॥५१॥

शत्रुर्मृत्युसमानोऽपि मृत्युमायाति नाऽन्यथा।
करेऽरिमूले गिरिजे! जपेन्मूलं शिवेयुतम्॥५२॥

हे गिरिजे! हे शिवे! करीर के मूल में बैठ कर शिवा से युत होकर इस मन्त्र का दशहजार जप करने से किसी भी प्रकार का शत्रु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥५२॥

हुनेदाज्यं वचां शुण्ठी वानर्यातिवलासम्।
मेनका पीनवक्षोजा स्वस्थाभ्याकर्षिता भवेत्॥५३॥

फिर बचा, मर्कटि, और अतिबाला को समान भाग मिलाकर होम करे, तो मोटे-मोटे स्तनों वाली पुष्ट गात्र वाली मेनका भी आकर्षित होकर चली आती है, सामान्य की तो कहना ही क्या॥५३॥

वानीर-मूले देवेशि! जपेदयुतसङ्ख्यया।
हुनेदाज्यं ह्यरघूतं नागवल्ली दलाकिङ्कतम्॥५४॥

हे देवेशि! वानीर (वेतवृक्ष) के नीचे बैठ कर इस मन्त्र का दश हजार जप करे, तथा घी, ह्यरघूत, नागवल्ली (पान का पत्ता)को॥५४॥

भूबिम्बं तर्पयेद्देविं दशांशेनैव साधकः।
शक्रोऽपि दासतां याति किं पुनः क्षुद्रमानुषः॥५५॥

भूबिम्ब मिलाकर दशांश हवन करे, उसका दशांश देवि का तर्पण करे, तो इन्द्र भी दास हो जाता है, क्षुद्र मनुष्यों का तो कहना ही क्या, वे तो वश में हो ही जाते है॥५५॥

क्रूरर्क्षे क्रूरवेलायां जपेत्प्रेतालये मनुम्।
अयुतं तु चितावह्नौ हुनेत्सर्पिः कणौषधान्॥५६॥

क्रूर नक्षत्रों (भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा आदि नक्षत्रों में), क्रूर वेला में, श्मशान पर जाकर मन्त्र का दशहजार जप करे, फिर श्मशान की अग्नि में घी, कर्णी, ईष्णी को॥५६॥

जातीफलं पलं मैषं खररोमाणि पार्वती।
रिपूणां सहसा देवि! भवेदुच्चाटनं परम्॥५७॥

जातीफल, बकरे का मांस, गदहे के बाल के साथ मिलाकर होम करने से हे देवि! साधक के समस्त शत्रुओं का अत्यधिक उच्चाटन हो जाता है॥५७॥

नदीकूले जपेन्मन्त्रमयुतं साधकोत्तमः।
तद्दशांशं हुनेद्दाज्यं समृद्धिकं स पायसम्॥५८॥

उत्तम साधक किसी नदी के किनारे इस मन्त्र का दश हजार जप करके जप का दशांश हवन घी के साथ पायस का हवन करने से सभी प्रकार की समृद्धि प्राप्त होती है॥५८॥

कनकं तगरं रात्रौ तर्पयेत्तद्दशांशतः।
अतिवृष्टेरनावृष्टे मारीभीते महेश्वरी!॥५९॥

हे महेश्वरि! द्राक्षा, खीर, तगर, कनक (मदार) को मिलाकर रात्रि में हवन करके तद्दशांश तर्पण करने से अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मारी, महामारी का महाभय शान्त हो जाता है॥५९॥

राजभीते महाव्याघ्रात् सद्यः शान्तिः प्रजायते।
महापर्वदिने देवि! यत्र तत्र जपेन्मनुम्॥६०॥

राजा का भय, महाव्याघ्रादि का भय सद्यः शान्त हो जाता है। महापर्व के दिन हे देवि! महामन्त्र का जैसे तैसे दशहजार जप करे॥६०॥

अयुतं तद्दशांशेन जुहुयादाज्यपायसम्।
शैलं सिन्दूर-मिश्रं च सपलं सलवङ्गम्॥६१॥

दशहजार जप करने के बाद उसका दशांश एक हजार घी तथा पायस (खीर अथवा खोवा) के साथ हवन करे, घृत पायस के साथ शैल (शिलाजीत) सिन्दूर के साथ लवङ्ग मिलाकर साथ हवन करे॥६१॥

ऐणं मांसं शरं मीनं सालं च सकुलत्थकम्।
मासवंशुकसद्धीत रजोवत्यम्बरान्वितम्॥६२॥

हरिण मांस, शर, मीन (मछली) साल (मैनसिल), कुलत्थ, आसव, जीव के शुक्र युक्त वस्त्र, रजस्वला के वस्त्र को एक में मिला करके हवन करके उसका दशांश तर्पण करे॥६२॥

हुत्वा च तर्पयित्वा च भोजयित्वा च साधकान्।
पितृणां देवतानां च ऋषीणां कुलिनां प्रिये॥६३॥

हवन तर्पण करके प्रत्यङ्गिरा के साधकों को भोजन कराये, तो हे प्रिये! साधक अपने पितरों, देवताओं, ऋषियों, अपने सपिण्ड, सगोत्र समस्त कुलों का देवताओं के दश हजार वर्ष कल्प तक महापुष्टि होती है, साधक के ऊपर पितर, ऋषि, देवता, सभी प्रसन्न रहते हैं तथा साधक का पोषण करते हैं॥६३॥

दिव्यकल्पायुतं देवि! महापुष्टिः प्रजायते।
सर्वथा सर्वदा नित्यं महाविद्यां जपेत्सुधीः॥६४॥

बुद्धिमान् साधक को चाहिए की सदा सर्वदा इस महाविद्या का नित्य प्रयत्नपूर्वक अवश्य जप करना चाहिए॥६४॥

दशांशं होमयेत्तत्र तर्पयेत्ततद्दशांशतः।
भोजयेत्तद्दशांशेन मन्त्री किं किं न साधयेत्॥६५॥

जप का दशांश होम करना चहिये तथा उसका दशांश तर्पण करना चाहिए फिर

तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिए, मार्जन का दशांश प्रत्यङ्गिरा के साधकों को भोजन करा कर साधक को अपने समस्त अभीष्ट कार्यों को साधना चाहिए॥६५॥

मूर्खो वागीशतां याति निर्धनो धनवान्भवेत्।
महादारिद्र्ययुक्तोऽपि भवेद् वैश्रवणोपमः॥६६॥

इस विधि से उपासना करने से मूर्ख व्यक्ति भी व्याख्यान देने वाला हो जाता है, महादरिद्र (निर्धन) भी धनवान हो जाता है और वह वैष्णवों में उत्तम हो जाता है॥६६॥

इह लोके भवेद् भोगी परत्र त्रिदिवं भजेद्।
इतीदं मन्त्र सर्वस्वं प्रत्यङ्गिरारहस्यकम्॥६७॥

जब तक इस संसार में जीवित रहता है तब तक उसे समस्त भोग की वस्तुएँ प्राप्त होती है, अन्त में वह उत्तम लोक को प्राप्त होता है, हे देवि! इस प्रकार समस्त मन्त्रों में गोपनीय सर्वस्व प्रत्यङ्गिरा रहस्य युक्त पटल हमने तुमसे कहा॥६७॥

पटलं गुह्यमीशानि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥६८॥

हे ईशानि! इसे अपनी योनि के समान अत्यन्त गुप्त रखना चाहिए। साधक भी ऐसे तैसे को इस विद्या को कभी न बताये अन्यथा उस साधक का पतन हो जाता है॥६८॥

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे पञ्चाङ्गखण्डे दशमहाविद्यारहस्ये प्रत्यङ्गिरापटलं परिपूर्णम्

श्रीप्रत्यङ्गिरापद्धतिः

मन्दरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम्।
समुपागम्य चरणैः पार्वती परिपृच्छति॥१॥

मन्दराचल पर्वत पर सुखपूर्वक बैठे हुए भगवान् महामाहेश्वर के सन्निकट भगवती पार्वती ने पैदल जाकर उनसे पूछा?॥१॥

देव्युवाच

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा-शुभोदया।
नरनारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥२॥

देवी ने कहा—हे महेश्वर! समस्त स्त्री-पुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की रक्षा के लिए शुभ फल देने वाली महाविद्या प्रत्यङ्गिरा ही सबको धारण करना चाहिए॥२॥

राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां च महेश्वर!।
विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणाऽर्थसाधिनी॥३॥

हे महेश्वर! यह प्रत्यङ्गिरा महाविद्या माण्डलिक (सम्राट्), राजाओं, दीनजनों तथा विद्वानों का एवं द्विज जातिमात्र का विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करती है॥३॥

महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च।
व्याघ्र-दंष्ट्रा-कराघाते नदी-नद-समुद्रगे॥४॥

भयङ्कर से भयङ्कर महाभय उपस्थित होने पर बिजली एवं अग्नि के द्वारा भय उपस्थित होने पर, व्याघ्र के द्वारा घिर जाने पर, नदी, नद, समुद्र का भय उपस्थित होने पर इस महाविद्या से भयों का निराकरण करके कामनाओं की पूर्ति करना चाहिए॥४॥

श्मशानेदुर्गमेघोरे संग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अभिचारेषु सर्वेषु रणेराजकुलेषु च॥५॥

श्मशान में, दुर्गम स्थान में, शत्रु के द्वारा घोर संग्राम में घिर जाने पर, मारणादि घोर अभिचार में राजकुलों के कोप से ग्रस्त हो जाने पर इस महाविद्या को धारण तथा पाठ करना चाहिए॥५॥

धारिता पाठिता देवि! समीहित-फलप्रदा।
पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान्॥६॥

समस्त आपत्ति विपत्ति उपस्थित होने पर इस महाविद्या को धारण करना तथा पाठ करना अथवा ब्राह्मणों के द्वारा पाठ करवाना चाहिए तथा अपने समस्त मनोरथों को पूरा करना चाहिए॥६॥

सौभाग्य जननीं नित्यं नृणां वश्यकरीं तथा।
तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ! कथयस्व मयि प्रभो!॥७॥

हे प्रभो! हे महेश्वर! मनुष्यों को समस्त प्रकार का सौभाग्य प्रदान करनेवाली, सबको वश में करने वाली, सुन्दर महाविद्या को हमसे कहें॥७॥

भैरव उवाच

साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणी!।
त्वद्वाक्येन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः॥८॥

भैरव बोले—हे समस्त जगत् का हित करने वाली, हे माहाभागे पार्वति! तुम्हें शतश: साधुवाद है, जो इस प्रकार का प्रश्न किया, हे दैत्यनिषूदिनि! तुम्हारे पूछने पर मैं उस महाविद्या प्रत्यङ्गिरा को तुमसे कहता हूँ॥८॥

देवि! प्रत्यङ्गिराविद्या सर्वग्रहनिवारिणी।
मर्दिनीसर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी॥९॥

हे देवि! यह प्रत्यङ्गिरा महाविद्या सभी ग्रह बाधाओं को दूर करने वाली है, समस्त दुष्टों का मर्दन करने वाली तथा सारे पापों को विनष्ट करने वाली है॥९॥

सौभाग्यजननी देवि! बलपुष्टिकरी तथा।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च॥१०॥

यह महाविद्या मनुष्यों को समस्त प्रकार का सौभाग्य प्रदान करती है तथा पुष्टि प्रदान करती है। चतुष्पथ में, घोर अरण्य में, महाभयानक तूफान में इस महाविद्या का स्वयं पाठ करना चाहिए या पाठ करवाना चाहिए।।१०।।

राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता।।११।।

राजद्वार में, दुर्भिक्ष आदि पड़ने पर, इस महाविद्या का पाठ करना या पाठ कराना चाहिए तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति करना चाहिए।।११।।

लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन।।१२।।

इस महाविद्या के मन्त्र एवं यन्त्र को लिख कर बाहु, हाथ, कण्ठ, तथा शिर पर धारण करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है तथा पाठ करने वाले की अकालमृत्यु कभी नही होती है।।१२।।

धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम्।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिराशुभोदिता।।१३।।

योग से युक्त होकर जो साधक इस महाविद्या को धारण करता है, उसकी रक्षा इस विद्या के द्वारा निश्चित ही होती है। जो भक्त प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को धारण करता है या अर्चन करता है, उसका सभी प्रकार से निश्चय ही शुभ होता है।।१३।।

गृहे चैवाऽष्टसिद्धिश्च देव-राक्षस-पन्नगाः।
न तस्य पीडां कुर्वन्ति यं चाऽन्ये पीडकग्रहा।।१४।।

जो साधक प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को धारण करता है अथवा अर्चन करता है, उसे अष्टसिद्धियाँ अवश्य प्राप्त हो जाती हैं उसे देव, दानव, यक्ष, गन्धर्व, पन्नगादि तथा पीड़ा प्रदान करने वाले ग्रह उसे कभी पीड़ा नहीं देते हैं।।१४।।

विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वाऽर्चिता सदा।
यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता।।१५।।

यह प्रत्यङ्गिरा महाविद्या सभी महाविद्याओं में उत्तम महाविद्या है, इन्हें प्रत्यङ्गिरा इस लिए कहते हैं कि पाठ करने तथा अर्चन करने से यह साधक के प्रत्येक अङ्ग में स्थित हो जाती हैं।।१५।।

सिद्धा सुसिद्धिदा नित्या विद्येयं परमा स्मृता।
श्रीमता घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी।।१६।।

यह महाविद्या स्वयं सिद्ध है तथा अपने साधक को भी सिद्धि प्रदान करती है। यह विद्या नित्य तथा सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है। यह परम ध्यान करने योग्य महाविद्या है। इस घोररूपिणी श्रीविद्या को हमने ही घोररूप धारण करके व्याख्यान किया था।।१६।।

प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता रिपून् हन्यान्न संशयः।
हरिच्चन्दनमिश्रेण गोरोचन-कुंकुमेन च॥१७॥

इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को हमने ही कहा था, यह शत्रुओं का निश्चय ही नाश करती हैं, इसमें कोई संशय नही है, हरिचन्दन का गोरोचन तथा कुंकुम से मिश्रण बना करके॥१७॥

लिखित्वा भूर्जपत्रेषु धारणीया सदा नृभिः।
पुष्पधूपैर्विचित्रैश्च बल्युपहारपूजनैः॥१८॥

मिश्रण से भोजपत्र के ऊपर इस प्रत्यङ्गिरा विद्या का लेखन करके पुष्प, धूपदीप तथा बलि इत्यादि उपचारों से पूजन करके मनुष्यों को सदैव धारण करना चाहिए॥१८॥

पूजयित्वा यथान्यायं शान्तकुम्भेन वेष्टयेत्।
धारयेद्य इमां विद्यां निश्चितां रिपुनाशिनीम्॥१९॥

इस महाविद्या का लेखन कर विधिपूर्वक पूजन करके शान्ति कलश के समान अवेष्ठित करके जो मनुष्य धारण करता है, तो यह महाविद्या धारण करने वाले भक्तों के समस्त शत्रुओं को निश्चय ही नाश कर देता है॥१९॥

विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिराविधानतः।
यद्यत् स्पृशति हस्तेन यद्यत् खादति जिह्वया॥२०॥

साधक विधानपूर्वक प्रत्यङ्गिरा का अर्चन करके शत्रुओं को नष्ट कर देता है, प्रत्यङ्गिरा का अनुष्ठान करने वाला साधक जो-जो स्पर्श करता है, जो-जो अपने मुख से खाता है वह सभी॥२०॥

अमृतं तद्भवेत् सर्वं मृत्युर्नास्ति कदाचन।
कर्मणा यो जपेद्यस्तु कृत्रिमं दारुणं सदा॥२१॥

अमृत हो जाता है, कर्म योग से जो इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या का सदा जप करता है उसका कृत्रिम तथा दारुण अकालमृत्यु कभी नहीं होता है॥२१॥

भक्षितं तृप्तिमत्याशु नरस्य तस्य सुव्रते!।
तथाऽस्यां पठ्यमानायां जीर्यते नात्र संशयः॥२२॥

हे सुव्रते! प्रत्यङ्गिरा मन्त्र का पाठ करने वाले साधक के द्वारा खाये हुए समस्त पदार्थ शीघ्र ही पच कर उर्जा देते हैं, इस स्तोत्र के पाठक द्वारा खाये हुए भोजन स्वयं जीर्ण हो जाते हैं॥२२॥

नृणां रक्षाकरी देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता।
सर्वमन्त्रविनाशी च गोलकस्थान्तरः परा॥२३॥

सभी कार्यों को सिद्ध करने वाली, मनुष्यों की रक्षा करने वाली, अन्तःगोलक में रहने वाली, सभी यन्त्रतन्त्रमन्त्र के अभिचारिक प्रयोगों को समाप्त करने वाली माहेश्वरी

का साधक के द्वारा इस परामहाविद्या का ध्यान करने से समस्त कार्यों को सिद्ध कर लेता है॥२३॥

सर्वव्याधिहरी विद्या सिद्धिात्री महेश्वरी।
प्राप्नोति वसुधां सर्वां रिपुहस्तगतां श्रियम्॥२४॥

सभी व्याधियों का हरण करने वाली, सिद्धिदात्री महेश्वरी का विधिपूर्वक अर्चन करने से साधक शत्रुओं के हाथ में चली गयी अपनी भूमि तथा श्रेय को प्राप्त करता है॥२४॥

वशास्तस्यैव तिष्ठन्ति शत्रवः प्राणहारकाः।
अभ्यस्यतां याति विद्यां सिद्धिविद्याप्रसादतः॥२५॥

प्राणापहारक शत्रु भी इस महाविद्या के प्रभाव से साधक के वशीभूत हो जाते हैं। इस महाविद्या प्रत्यङ्गिरा के द्वारा जपानुष्ठान करके उसके फलस्वरूप महाविद्या के प्रभाव से समस्तविद्या (ज्ञान) प्राप्त कर लेता है॥२६॥

अवला च वशात्तस्य सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः।
चराऽचरमिदं सर्वं सशैलवनकाननम्॥२६॥

हे सुव्रते! इस महाविद्या के प्रभाव से अनेक सुन्दर से सुन्दर स्त्रियाँ उस साधक के वश में हो जाती हैं, यह पर्वत, जङ्गल सहित समस्त चराचर जगत् जो नर नारियों से व्याप्त हैं, सभी इस महाविद्या के जपानुष्ठान से प्राप्त हो जाते हैं॥२६॥

नरनारीसमाकीर्णं साधकस्य च सुव्रते!।
सर्वत्र वशतां यान्ति यजमानस्य नित्यशः॥२७॥

हे सुव्रते! इस महाविद्या का अनुष्ठान करने वाला साधक समस्त नर-नारियों को आकर्षित कर लेता है, इस महाविद्या के नित्यनियमित अर्चन करने वाले साधक के वश में सभी हो जाते हैं॥२७॥

गोलकस्य प्रभावेण प्रत्यङ्गिराप्रभावतः।
त्रिपुरश्च मया दग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता॥२८॥

इस अन्तः प्रत्यङ्गिरा महाविद्या के गोलक के प्रभाव से हमने पूर्वकाल में त्रिपुर को जला दिया था॥२८॥

निर्जितास्त्राऽसुराः सर्वे देवैर्विद्वगभिमानिभिः।
गोलकं च प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ते च सुव्रते!॥२९॥

इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या का अनुष्ठान करके देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त किया था। हे सुव्रते! अब मैं उस औषधि के समान गोलक का निरूपण तुमसे करता हूँ॥२९॥

पञ्चवर्णैः पञ्चदलैः द्वारर्धे द्वारशोभितम्।
द्वात्रिंशत्पत्रमध्ये तु लिखेन्मन्त्रस्य दैवतम्॥३०॥

द्वार के अर्धभाग (मध्य) में पाँच वर्णों वाले पाँच पत्तों से सुशोभित करके, उनके बीच बत्तीस पत्रों पर मन्त्र के देवताओं को लिखे॥३०॥

कूटस्थं कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण च संयुक्तं रक्षेच्च साधकोत्तमः॥३१॥

चारो दिशाओं में मन्त्र के कूटाक्षर को लिखे, फिर चारों कोनों में बीज पञ्चक लिखे, इस प्रकार से लिखने के बाद **हुँ फट्** लिख करके यन्त्र बनाकर धारण करके साधक अपनी तथा अपनों की रक्षा करे॥३१॥

विष्णुक्रान्ता मदनकं कुङ्कुमं रोचनं तथा।
आरुष्करं विपारिष्टं सिद्धार्थं मालतीं तथा॥३२॥

विष्णुकान्ता, दमनक, कुंकुम, गोरोचन, अरुष, विषारिष्ट (विषहरी), सिद्धार्थ तथा मालती के पुष्पों तथा पदार्थों को मिलाकर गोलक के मध्य में स्थापित करे॥३२॥

एतद् द्रव्यगणं भद्रे! गोलमध्ये निधापयेत्।
सम्भृतं धारयन्मन्त्री साधको मन्त्रवित् सदा॥३३॥

हे भद्रे! पूर्वकथित पदार्थों को ग्रहण करके गोलक के मध्य स्थापित करके मन्त्रवित् साधक को सदा धारण करना चाहिए॥३३॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि प्रत्यङ्गिरां सुभाषिताम्।
दिव्यमन्त्रपदैश्चित्तैः सुखोपायैः सुखप्रदैः॥३४॥

अब मैं समस्त सुख का उपाय, समस्त सुख को प्रदान करने वाला, प्रत्यङ्गिरा महामन्त्र को कहता हूँ, जिसे दत्तचित्त होकर सुनो॥३४॥

पठेद्रक्षाभिधानेन मन्त्रराजः प्रकीर्तितः।
अथाऽतो मन्त्रपदानि भवन्ति तानि मन्त्राणाम्॥३५॥

इसे मन्त्रराज कहते हैं, यह शत्रु विनाशक तथा रक्षक है, इसका अपनी रक्षा करने के लिए प्रयोग करना चाहिये। अब मैं महामन्त्र के पदों को उच्चारित करता हूँ, स्वस्थ चित्त से इसे सुनना चाहिए॥३५॥

मन्त्राण्युच्यन्ते—

ॐ नमः शिवाय सहस्त्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरूहूताय महामायाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत् साक्षिणे सन्तापभूतव्यापिने महाघोराऽति-घोराय ॐ ॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ गिलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रँ रँ रँ रँ रँ रक्ष रक्ष त्वं मां रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐं ऐं ह्रूं ह्रूं रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघ सर्वतोऽग्नि विद्युदर्क संवर्तकपर्दिनी दिव्यकणिकाम्भोरुह विकटपद्ममालाधारिणि सितिकण्ठाभ खट्वां कपालधृक् व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वर प्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवतापितृपिशाचोरगनागाऽसुरगरुणगन्धर्वकिन्नरविद्याधरयक्ष राक्षसान् ग्रहाञ्च स्तम्भय स्तम्भय सपरिवारस्य मम शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये सर्वे ममोपरि अविद्यां कर्म कुर्वन्ति कारयन्ति तेषां बुद्धिर्घातय घातय तेषां रोमं कीलय कीलय सर्वान् शत्रून् स्वाहा॥

ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ सर्वसिद्धि महाभागे ममात्मनः सपरिवारस्य शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ॐ ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यँ यँ यँ यँ यँ रँ रँ रँ रँ रँ लँ लँ लँ लँ लँ वँ वँ वँ वँ वँ शँ शँ शँ शँ शँ षँ षँ षँ षँ षँ सँ सँ सँ सँ सँ हँ हँ हँ हँ हँ ळँ ळँ ळँ ळँ ळँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूं हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ जूँ सः फट् स्वाहा॥ ॐ नमो प्रत्याङ्गिरे ममात्मानः सपरिवारस्य शान्तिं रक्षां कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवती दुष्टचाण्डालिनि त्रिशूलवज्राङ्कुशशक्तिधारिणी रुधिरमांसवसाभक्षिणी कपालखट्वाङ्गधारिणी मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वान्दुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दंष्ट्राकरालिनी मम शत्रूणां कृतमन्त्रतन्त्रयन्त्रप्रयोग-विषचूर्णशस्त्राद्यविचारसर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति कारयिष्यन्ति तान् सर्वान् हन हन प्रत्यङ्गिरे! त्वं ममात्मनः सपरिवारस्य रक्ष रक्ष ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ ब्राह्मी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ वैष्णवी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ माहेश्वरी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ कौमारी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ अपराजिता मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ वाराही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ नारसिंही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ चामुण्डा मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं सर्वतो सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥

कूटस्था कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण समोपेतं रक्ष त्वं साधकोत्तमम्॥१॥

चारों दिशाओं में कूट वर्णों को तथा चारों कोनों पर बीजपञ्चक लिखना चाहिए। फिर **रक्ष त्वं साधकोत्तमं** लिखना चाहिए।।१।।

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।
जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च॥२॥

स्तम्भिनी, मोहिनी, क्षोभिणी, द्राविणी, जृम्भिणी, भ्रामणी, रौद्री, संहारिणी तथा शोषिणी ये सभी प्रत्यङ्गिरा की शक्तियाँ है।।२।।

शक्तयः शोषिणी चैव शत्रुपक्षनियोजितः।
साधिताः साधकेन्द्रेण सर्वशत्रुविनासिनी॥३॥

इन शक्तियों का शत्रुनाश के लिए नियोजित किया जाता है, साधक इस शक्तियों के सहित प्रत्यङ्गिरा को सिद्ध कर लेता है, तो वह साधक के शत्रुओं का विनाश कर देती है।।३।।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट्

स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ भ्रामिणी मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ रौद्री भम शत्रून् रौद्रय रौद्रय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ ह्रूँ ह्रूँ संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय हुँ फट् स्वाहा॥

फलश्रुतिः

य इमां धारयेद्विद्यां त्रिसन्ध्यं वाऽपि यः पठेत्।
सोऽपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून्न संशयः॥४॥

इस विद्या को धारण करके प्रातः, मध्याह्न, सायं तीनों कालों में जो पाठ करता है, वह अपने अतिदुष्ट शत्रुओं को भी समाप्त कर देता है, इसमें कोई संशय नहीं है॥४॥

सर्वं हि रक्षयेद् विद्यां महाभयविपत्तिषु।
महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित्॥५॥

महाभय उपस्थित होने पर, महाविपत्ति काल में, घोरतम भय होने पर इस विद्या से रक्षा करनी चाहिये, त्रिकाल पाठ करने वाले साधक को कोई भय नहीं होता है॥५॥

सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवी न संशयः।
अष्टोत्तरशतं जपेत्साक्षाद् सिद्धीश्वरो भवेत्॥६॥

भक्त इस मर्त्यलोक में समस्त कामनाओं की पूर्ति कर लेता है, इस विद्या का अष्टोत्तरशत जप करने से सिद्धि होती है, वह साधक सिद्धिश्वर हो जाता है॥६॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं स्फ्रैं हुं प्रत्यङ्गिरे! विकटदंष्ट्रे! ह्रीँ ह्रीँ कालिकालि! स्फ्रैं स्फ्रैं कारिणि मम शत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि श्रीँ ह्रीँ ऐँ हुं हुं फट् स्वाहा॥

ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुपप्रकीर्तितम्।
देवता कौशिकी प्रोक्ता नाम प्रत्यङ्गिरैव सा॥७॥

इस माला मन्त्र के भैरव ऋषि है, अनुष्टुप् छन्द है, इसके देवता कौशिकी (दुर्गा) हैं, इसे ही प्रत्यङ्गिरा भी कहते हैं॥७॥

कूर्चबीजं षडङ्गानि कल्पयेत् साधकोत्तमः।
सर्वाकृष्टोपचारैस्तु ध्यायेत् प्रत्यङ्गिरां शुभाम्॥८॥

इस मन्त्र का उत्तम साधक कूर्चबीज तथा षडङ्ग न्यास को स्वयं बना ले। प्रत्यङ्गिरा

भगवती को आकृष्ट करने वाले अनेक उत्तमोत्तम उपचारों से पूजन कर उसका ध्यान इस प्रकार करना चाहिए।।८।।

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसम्।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।९।

खड्ग, कपाल, डमरु तथा त्रिशूल को अपने हाथों में तथा मस्तक पर आभूषण रूप में चन्दमा को धारण किये हुए, जिनके पीले पीले केश ऊपर की तरफ विखरे हुए फैले हैं तथा दाँत काले और महाभयानक हैं वे भगवती भद्रकाली हमें विभूति प्रदान करे।।९।।

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमेकविंशतिवासरान्।
शत्रून् सन्नाशयेत्तं च प्रकारोऽयं सुनिश्चितम्।।१०।।

इस प्रकार से ध्यानोपचारादि पूजन करके इक्कीस दिन तक नियमित निशा काल में पाठ करने से शत्रुओं का निश्चय ही नाश हो जाता है, यह निश्चित है।।१०।।

अथाऽष्टम्यामर्धरात्रौ शरत्काले महानिशि।
आराधिता च सा काली तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत्।।११।।

शरद् काल के नवरात्र में, जब अर्धरात्री में अष्टमी की महानिशा हो, उस समय आराधना करने से यह प्रत्यङ्गिरा भगवती अवश्य ही सिद्धि प्रदान करती है।।११।।

सर्वोपचार-सम्पन्नो रक्तवस्त्रफलादिभिः।
पुष्पैश्च रक्तवर्णैश्च साधयेत् कालिकां पराम्।।१२।।

पूजा की सम्पूर्ण सामग्री एकत्रित कर साधक लाल वस्त्र, लाल फल, तथा लाल रंग के पुष्पों से पराभगवती महाकाली का पूजन करे।।१२।।

वर्षादूर्ध्वमजं मेषं मृगं वा विविधं बलिम्।
दद्याद् पूर्वं महेशानि! ततस्तु जपमाचरेत्।।१३।।

हे महेशानि! सर्वप्रथम वर्षान्त जप करे, फिर जपोपरान्त बकरा अथवा भेंड़ा अथवा मृग तथा अन्याय विविध बलि देनी चाहिए तथा एक वर्ष तक जप करना चाहिए।।१३।।

एकहायनतः काली सत्यं सत्यं सुसिद्धिदा।
मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्याद् विचक्षणः।।१४।।

मूलमन्त्र से रात्रीकाल में हवन करना चाहिए ऐसा करने से काली एक वर्ष में सुसिद्ध हो जाती है, यह सत्य है और परमसत्य है।।१४।।

मरीच-लाजा-लवणैः सर्षपैर्मारणं भवेत्।
महासङ्कटरोगे च न भयं जायते क्वचित्।।१५।।

कालीमरीच, धान का लावा, नमक तथा सरसों मिलाकर होम करने से मारण प्रयोग किया जाता है, उक्त विधि से हवन करने से महासङ्कट तथा रोग का कभी भय नहीं होता है, साधक निर्भय हो जाता है।।१५।।

प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः।
साध्यनामाङ्कितं कृत्वा शत्रुमय्यां च पुत्तलीम्॥१५॥

श्मशान से प्रेत का शरीरांश (राखादि) ले करके गोलक बनाकर (यन्त्र का निर्माण करके) उसमें शत्रु की पुत्तली बना कर॥१५॥

जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ प्रक्षिपेत् ततः।
एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रान्मरणं रिपोः॥१६॥

उस पुत्तली में जीव की प्रतिष्ठा करके उसका हनन करके चिता की अग्नि में फेक कर जला करके दशहजार मन्त्र का जप करे, तो शत्रु तीन दिन में ही मर जाता है॥१६॥

महाज्वरो भवेत्तस्य तप्तताम्रशलाकया।
गुदाद्वारे प्रविन्यस्य सप्ताहान्मरणं रिपोः॥१७॥

जलती हुई ताँबे की सलाई उपर्युक्त विधि से निर्मित शत्रु की पुत्तली के गुदाद्वार में घुसेड़ देने से शत्रु को महाज्वर हो जाता है, वह सात रात्रि के भीतर ही मर जाता है॥१७॥

पुष्पसमर्पणविधिः

भुक्तौ मुक्तौ शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशेत्।
आकृष्टो च वशीकारे रक्त पुष्पं च समर्पयेत्॥१८॥

पुष्पार्चन में भुक्ति, मुक्ति और शान्ति की कामना के लिए श्वेत पुष्प से करना चाहिए, आकर्षण, वशीकरण में रक्त पुष्प से समर्चन करना चाहिए॥१८॥

स्तम्भने मोहने चैव पीतं पुष्पं विनिर्दिशेत्।
उच्चाटने मारणे च कृष्णपुष्पं च आनयेत्॥१९॥

स्तम्भन और मोहन कार्य में पीले पुष्प से अर्चन करना चाहिए, उच्चाटन और मारण कार्य के लिए काले पुष्प से अर्चन करना चाहिए॥१९॥

अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्पंवर्णकम्।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि॥२०॥

इसी प्रकार से कामनाओं के अनुसार विभिन्न वर्णों के पुष्पों का चयन तथा ध्यान करना चाहिए, इस पुष्पार्चन की विधि जप के पूर्व करना चाहिए॥२०॥

भगवती के बायें हाथ में पाठ समर्पण कर अष्टोत्तरशत पुष्पाञ्जली प्रदान करे, समस्त कामना के लिए इक्कीस दिन वृद्धि क्रम से पाठ करे और पाठ के पहले और बाद मे १०८ पुष्पाञ्जली समर्पित करे, अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग-अलग पुष्पों का चयन करना चाहिए, पद्धतिपाठ के बाद श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्रनाम पाठ करे।

श्रीकुञ्जिकातन्त्रे प्रत्यङ्गिरापद्धतिः परिपूर्णम्

●

श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं त्वत्पुरःसरम्।
सहस्रनामपरमं प्रत्यङ्गिरायाः सिद्धये॥१॥

हे देवि! तुम्हारे सामने सर्वसिद्धि प्रदाता प्रत्यङ्गिरा का परमगुह्य सहस्रनाम कहते हैं॥१॥

सहस्रनामपाठेन सर्वत्र विजयी भवेत्।
पराभवो न चास्यास्ति सभायां व्यसने रणे॥२॥

जो इस सहस्रनाममहास्तोत्र का पाठ करता है, वह सर्वत्र विजयी होता है। उसका सभा में पराभव कभी नहीं होता है॥२॥

तथा तुष्टा भवेद्देवि! प्रत्यङ्गिरायाः पाठतः।
यथा भवति देवेशि साधकः शिव एव हि॥३॥

प्रत्यङ्गिरा सहस्रनाम के पाठ से श्रीप्रत्यङ्गिरा देवी सदा ही तुष्ट रहती हैं, साधक पर देवेशि के प्रसन्न होने से शिव भी सदैव प्रसन्न रहते हैं॥३॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः।
सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्ना यत्परा भवेत्॥४॥

सहस्रों अश्वमेधयज्ञ, करोड़ों वाजपेय यज्ञ का फल इस देवि प्रत्यङ्गिरा के सहस्रनाम का पाठ करने वाले को प्राप्त हो जाता है॥४॥

भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप्देवी समीरिता।
प्रत्यङ्गिराविनियोगः स्यात्सर्वसम्पत्तिहेतवे॥५॥

इस सहस्रनाम के भैरव ऋषि हैं, अनुष्टुप्छन्द है, प्रत्यङ्गिरा देवता हैं, सभी सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए विनियोग करना चाहिए॥५॥

सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसम्पत्तिदा भवेत्।
एवं ध्यात्वा पठेद्देवीं यदीच्छेदात्मनो हितम्॥६॥

सभी कार्यों की सिद्धि के लिए, सभी प्रकार की सम्पत्ति के लिए प्रत्यङ्गिरा देवि का ध्यानार्चन करने के बाद सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए॥६॥

अथ ध्यानम्

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशा-सित-भीम-दंष्ट्रा भूयाद् विभूत्या मम भद्रकाली॥७॥

खड्गकपालडमरु और त्रिशूल धारण की हुई, चन्द्रकलाओं को धारण की हुई, ऊपर उठे हुए काले काले केशोंवाली, बड़े बड़े दाँतोंवाली, भद्रकाली कल्याण करें॥७॥

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्त्रनामस्तोत्रस्य भैरवऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता, ऐँ बीजं, ह्रीँ शक्ति:, श्रीँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीतये पुरश्चरण सिद्धये च पाठे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामदेवऋषये नम: शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनुष्टुप्छन्दसे नम: मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नम: हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ बीजाय नम: गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शक्तये नम: पादयो:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ कीलकाय नम: नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीष्टदेवताप्रत्यङ्गिरायै नम: सर्वाङ्गे।

करन्यास:—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यां नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ मध्यमाभ्यां नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरं अनामिकाभ्यां नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादिन्यास:—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ हृदयाय नम:।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम रक्ष रक्ष नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

ॐ क्षुत्क्षामां कोटराक्षीमसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती,
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं ज्वलदलनशिखासन्निभं पाशयुग्मं,
दन्तैर्जम्बूफलाभ: परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥

क्षकारवर्ण में समाहित, क्षकारवर्णात्मिका, सुषुम्ना के कोटर में अक्षरूप से विद्यमान, श्यामल वर्णवाली, मुक्तकेश वाली, अट्टहास करनेवाली, अतृप्त, एक ग्रास में ही सम्पूर्ण जगत् को खाँ जाऊगीं इस प्रकार से उद्घोष करती हुई, हाथों में जलती हुई अग्निशिखा तथा पाश धारण की हुई, जम्बूफल के समान चमकते हुए दाँतोंवाली भद्रकाली हमारे दुःख रूपी भय का सदैव नाश करें।

ॐ देविप्रत्यङ्गिरा सेव्या शिरसा शशिशेखरा।
सममासा धर्मिणी च समस्तसुरशीमुखी॥८॥
सर्वसम्पत्तिजननी समधासिन्धुसेविनी।
शम्भुसीमन्तिनी सोमाराध्या च वसुधारसा॥९॥
रसा रसवतीं वेला वन्या च वनमालिनी।
वनजाक्षी वनचरी वनीवनविनोदिनी॥१०॥
वेगिनी वेगदावेगबलस्थानबलाधिका।
कलाकलाप्रिया कौलिकोमला कालकामिनी॥११॥
कमला कमलास्या च कमलस्था कमलावती।
कुलीना कुटिलाकान्ता कोकिलाकुलभाषिणी॥१२॥
कीरकेलिः कलाकाली कपालिन्यपिकालिका।
केशिनी च कुशावर्त्ता कौशाम्बी केशवप्रिया॥१३॥
काशीकाशापहाकाशीशं काशाकेशदायिनी।
कुण्डलीकुण्डलीस्था च कुण्डलाङ्गदमण्डिता॥१४॥
कुशापाशीकुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी।
कुन्दप्रियाकुन्दरुचिः कुरङ्गमदमादिनी॥१५॥
कुरङ्गनयनाकुन्दा कुरुवृन्दाभिनन्दिनी।
कुसुम्भकुसुमा किञ्चित्क्वणत्किं किणिकाकटुः॥१६॥
कठोराकरणाकण्ठा कौमुदीकम्बुकण्ठिनी।
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कालकण्ठिका॥१७॥
किंबृहस्ताकुमारी च कुरुन्दाकुसुमप्रिया।
कुञ्जरस्थाकुञ्जरता कुम्भिकुम्भस्तनद्वया॥१८॥
कुम्भिगा करभोरुश्च कदलीदलशालिनी।
कुपिता कोठरस्था च कङ्कालीकन्दशेखरा॥१९॥
एकान्तवासिनी किंचित् कम्पमानशिरोरुहा।
कादम्बरीकदम्बस्था कुङ्कुमीप्रेमधारिणी॥२०॥
कुटुम्बिनीप्रियायुक्ता क्रतुःक्रतुकरीक्रिया।
कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकेयप्रवर्तिनी॥२१॥

कामपत्नीकामधात्री कामेशी कामवन्दिता।
कामरूपा कामगतिः कामाक्षी काममोहिता॥२२॥
खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खला।
खरगाखरनासा च खरास्याखेलनप्रिया॥२३॥
खड्गिनी खेचरीखट्वा खरखट्वाङ्गधारिणी।
खलखण्डिनीति विख्याता खण्डिताखण्डवीस्थिरा॥२४॥
खण्डप्रियाखण्डखाद्या सेन्दुखण्डा च खञ्जनी।
गंगागोदावरीगौरी गोमत्यादि च गौतमी॥२५॥
गयागौगजीगगना गारुडीगरुडध्वजा।
गीतागीतप्रियागोत्रा गोत्रक्षयकरी गदा॥२६॥
गिरिभूपालदुहिता गोगागोकुलवर्धिनी।
घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिःस्वना॥२७॥
घूत्कारिणी घूतकरी घुघूकपरिवारिता।
घण्टानादप्रियाघण्टा घनाघोटप्रवाहिनी॥२८॥
घोररूपा च घोरा च घूनीप्रीतिर्घनाञ्जनी।
घृताची घनमुष्टिश्च घटाघण्टाघटामृता॥२९॥
घटास्या घटनाद्यैश्च घातपातनिवारिणी।
चञ्चरीका चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी॥३०॥
चातुरी चपला चारुश्चला चेलाचलाचला।
चतुश्चिरन्तना चाकचिक्या चामीकरच्छविः चापिनी॥३१॥
चपलाचम्पूश्चितिताः चिन्तामणिश्चिता।
चातुर्वर्ण्यमयी चञ्चच्चौरा चापा चमत्कृतिः॥३२॥
चक्रवर्तिवधूश्चक्रा चक्राङ्गा चक्रमोदनी।
चेतश्चरी चित्तवृत्तिरचेता चेतनप्रदा॥३३॥
चपिर्या चम्पकप्रीतिश्चण्डी चण्डालवासिनी।
चिरञ्जिवीत्वदाचित्ता तरुमूलनिवासिनी॥३४॥
छुरिकाछत्रमध्यस्था छिद्राछेदकरी छिदा।
छुच्छुन्दरीपलप्रातिं छुदरीभनिभस्वना॥३५॥
छालिनी छलवच्छिन्ना छिटिकाछेककृत्तथा।
छद्मिनीछान्दसी छायाछायाकृच्छ्रादिरित्यपि॥३६॥
जया च जयदा जातिजृम्भिनीजामलायुता।
जवापुष्पप्रियाजाया जाप्याजाप्यजगज्जनिः॥३७॥

जम्बूप्रियाजयस्था च जङ्गमाजङ्गमप्रिया।
जन्तुजन्तुप्रधाना च जरत्कर्णाजरद्गवा॥३८॥
जातप्रियाजीवनस्था जीमूतसदृशच्छविः।
जन्याजनहिताजाया जम्भजम्भीलशालिनी॥३९॥
जयदाजयवद्वाहा ज्वालिनीज्वरहाज्वरी।
झञ्झनीलमयी झंझा झणत्कारकराचला॥४०॥
झिण्टीशाझस्यकृत्झम्पा यमत्रासनिवारिणी।
टङ्कारस्थाटङ्कधरा टङ्काराकारणाटवी॥४१॥
ठकुराठीत्कृतिश्चैव ठिण्ठीरवसनावृता।
ठण्ठानीलमयी ठण्ठाठणत्कारकराठसा॥४२॥
डाकिनीडामरा चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी।
ढक्काप्रियस्वना ढक्का तपिनीतापिनी तथा॥४३॥
तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तपःप्रिया।
ताम्राताम्राम्बरातालो तालीदलविभूषिणी॥४४॥
तुरङ्गा त्वरिता तोता तोतलानादिनीतुला।
तापत्रयहरा तारा तालकेशी तमालिनी॥४५॥
तमालदलवच्छाया तालस्वनवती तमी।
तामसी च तमिस्रा च तीव्रातीव्रपराक्रमा॥४६॥
तटस्याग्रलतैलाक्ता तारिणी तपनद्युतिः।
तिलोत्तमा तिलककृत्तारकादेशशेखरा॥४७॥
तिलपुष्पप्रियातारा तारकेशकुटुम्बिनी।
स्थाणुपत्नीस्थितिकरी स्थलस्थास्थलवर्द्धिनी॥४८॥
स्थितिस्थैर्यास्थविष्ठा च स्थावतिः स्थूलविग्रहा।
दन्तिनी दण्डिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला॥४९॥
देवि देववधूर्दैत्यदमिनी दन्तभूषणा।
दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी॥५०॥
दन्दशूकनिभा दैत्यदारिणी देवतानना।
दोलाक्रीडादलायुश्च दम्पती देवतामयी॥५१॥
दशदीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी।
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गमा दुर्गवासिनी॥५२॥
दुर्गन्धनाशिनीदुःस्था दुःस्वप्नशमकारिणी।
दुर्वारादुन्दुभिध्वाना दूरगा दूरवासिनी॥५३॥

दरदादरहादात्री दयादादुहितादशा।
धुरन्धराधुरीणा च धौरेयीधनदायिनी॥५४॥
धीराऽधीराधरित्री च धर्मदा धीरमानसा।
धनुर्धरा च धमनी धूर्त्ताधूर्त्तपरिग्रहा॥५५॥
धूमवर्णाधूमपाना धूमलाधूममोदिनी।
नलिनीकन्दनीरन्दा नन्दिनीनन्दबालिका॥५६॥
नवीनानर्मदानर्मी नेमिर्नियमनिश्चया।
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नग्निका निमिः॥५७॥
नाल निरन्तरा निघ्नी निर्लोपा निर्गुणा नतिः।
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनी नवी॥५८॥
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी।
नारायणी निराकारा निपुणा निपुणप्रिया॥५९॥
निशा निद्रा नरेन्द्रस्था नमितानमितापि च।
निर्गुण्डीका च निर्गुण्डा निर्मांसा नासिकाभिधा॥६०॥
पताकिनी पताका च पलप्रीतिः यशश्विनी।
पीना पीनस्तना पत्नी पवनाशनशयिनी॥६१॥
परा पराकलापाका पाककृत्यरतिप्रिया।
पवनस्था सुपवना तापसी प्रीतिवर्द्धिनी॥६२॥
पशुवृद्धिकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्द्धिनी।
पुष्पिणी पुस्तककरा पुन्नागतलवासिनी॥६३॥
पुरन्दरप्रिया प्रीतिः पुरमार्गनिवासिनी।
पेशा पाशकरा पाशबन्धहा पांशुला पशुः॥६४॥
पटपटाशा परशुधारिणी काशिनी तथा।
पापघ्नी पतिपत्नी च पतिताऽपतिताऽपि च॥६५॥
पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिता।
पानदा पानपात्रा च पानदानकरोद्यता॥६६॥
पूषा प्रसिद्धिः पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा।
पतद्गर्भा पतद्गात्रा पौनःपुन्यपि वा पुरा॥६७॥
पङ्किला पङ्कमग्ना च पादीपापञ्जरस्थिता।
पञ्चमा पञ्चयामा च पञ्चतापञ्चमप्रिया॥६८॥
पञ्चमुद्रा पुण्डरीका पिङ्गला पिङ्गललोचना।
प्रियङ्गुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा॥६९॥

प्रेतासना प्रियालुस्था पाण्डुघ्नी पित्तसापहा।
फलिनी फलदात्री च फलश्री फणिभूषणा॥७०॥
फूत्कारिणीस्फारा फुल्लफुल्लाम्बुजासना।
फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फितिः स्फितिकरस्तथा॥७१॥
वनमालया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी।
वेणुवाद्यावनचरी वीराबीजनयी अपि॥७२॥
विद्या विद्याप्रदाऽविद्या बोधिनी वददायिनी।
बुधमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा॥७३॥
वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा।
विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा॥७४॥
विद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता।
वितन्द्रा विह्वला वेला विरावा विरतिज्वरा॥७५॥
विविधार्कक्करा वीरा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला।
विन्ध्यस्था वारवन्द्या च वरीयानपरा च वित्॥७६॥
वेदान्तवेद्या बोधा च वेदस्य विजयप्रदा।
विरोधवर्धिनी वन्द्या वन्ध्याबन्धिनिवारिणी॥७७॥
भयिनी भगमाला च भवानी भयभाविनी।
भीमा भीमानना भैमी भङ्गुरा भीमदर्शना॥७८॥
भिल्ली भल्लधरा भीरु भेरुण्डिभ्यः भयापहा।
भगासर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया॥७९॥
भगासना भगामोदा भेरोडङ्कारस्झिनी।
भीषणा भांषणारावा भगवत्यपि भूषणा॥८०॥
भारद्वाजी भोगदात्री भवघ्नीभूतिभूषणा।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी॥८१॥
भ्रमरी भ्रामरी नीला भूपालमुकुटस्थिता।
मतामनोहरमना मानिनी मोहिनीमही॥८२॥
महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदीयामदिरालया।
मदोद्धता मन्दगस्था माधवी मधुमन्दिनी॥८३॥
मेधा मेधकरी मेध्या मध्या मध्यवयस्थिता।
मद्यपा मांसला मत्स्यमोदिनी मैथुनोद्धता॥८४॥
मुद्रा मुद्रावती माता मायामहिममन्दिरा।
महामाया महाविद्या महामारी महेश्वरी॥८५॥

महादेववधूर्मान्या मधुरा वीरमण्डला।
मेदस्विनीमेकश्रीः महिषासुरमर्दिनी॥८६॥
मण्डपस्था मठस्था च मदिरागमगर्विता।
मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी॥८७॥
मातङ्गिनी च मतङ्गी मतङ्गतनयाऽपि च।
मधुस्त्राव मधुरसा मधूककुसुमप्रिया॥८८॥
यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता।
यवाङ्कुरप्रिया मायायावनी यौवनाधिपा॥८९॥
यमघ्नी यमकन्या च यजमानस्वरूपिणी।
यज्ञा यज्वा यजुर्यज्वा यशोपिकरकारिणी॥९०॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मकरी तथा।
यशस्विनी यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी॥९१॥
रञ्जिता राजपत्नी च रमा रेखा रवेरणी।
रजोवती रजश्चित्रा रजनीरजनीपतिः॥९२॥
रागिनी राज्यनीराज्या राज्यदा राज्यवर्धिनी।
राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी॥९३॥
रमणीरमणीया च रामारामावतीरती।
रेतोवती रतोत्साहा रोगहृद्रोगकारिणी॥९४॥
रङ्गारङ्गवती रागा रागज्ञारागकृद्रणा।
रञ्जिकाऽरञ्जिकारञ्जा रञ्जिनी रक्तलोचना॥९५॥
रक्तचर्मधरा रञ्जा रक्तस्था रक्तवादिनी।
रम्भा रम्भफलप्रीती रम्भोरू राघवप्रिया॥९६॥
रङ्गवृन्द्रगणमधुर रोदसी रोदसीग्रहा।
रोधकृद्रोधहन्त्री च रोगभृद्रोगशयिनी॥९७॥
बन्दीबन्दीस्तुता बन्धबन्धूककुसुमाधरा।
वन्दितावन्दितामाता विन्दुरा वैन्दवीविधा॥९८॥
विङ्की विङ्ककपलाविङ्का विङ्कस्थाविङ्कवत्सला।
वदिर्विलग्नाविप्रा च विधिर्विधिकरीविधा॥९९॥
शङ्खिनीशङ्खवलया शङ्खमालावतीशमी।
शङ्खपात्राऽशनीशङ्खा शङ्खग्रीवाशशिप्रभा॥१००॥
शंभ्वी शरावती श्यामा श्यामाङ्गी श्यामलोचना।
श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा॥१०१॥

शमदा शमहन्त्री च शाकिनी शङ्कुशेखरा।
शान्ति शान्तिप्रदा शेषा शेषस्था शेषदायिनी॥१०२॥
शेमुषी शोषिणी शीरी शौरिः शौर्याशिरा शिरिः।
शापहा शापहानीश शम्पाशपथदायिनी॥१०३॥
शृङ्गिणी शृङ्गपलभुक्शङ्करी शङ्करी च या।
शङ्काशङ्कापहासंस्था शाश्वती शीतला शिवा॥१०४॥
शिवस्था शवभुक्ता वा शाववर्णा शिवोदरी।
शायिनी शावशयना शिंशपा शिशुपालिनी॥१०५॥
शवकुण्डलिनी शैवा शङ्करा शिशिराशिरा।
शवकाञ्चि शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः॥१०६॥
शयनी शङ्कुवाशक्तिः शन्तनुःशीलदायिनी।
सिन्धुःसरस्वतीसिन्धुः सुन्दरी सुन्दरानना॥१०७॥
साधुःसिद्धिः सिद्धिदात्री सिद्धा सिद्धसरस्वती।
सन्ततिःसम्पदा सम्पत्संवित्सरतिदायिनी॥१०८॥
सपत्नीसरसासारा सरस्वतिकरी स्वधा।
सरःसमासमाना च समाराध्यासमस्तदा॥१०९॥
समिद्धासमदासमा सम्मोहा समदर्शना।
समितिःसमिधासीमा सावित्रीसविधासती॥११०॥
सवताऽसवनादाः आसवनासमरासमी।
सिमिरासततासाध्वी सुधीचिन्त्यसहायिनी॥१११॥
हंसी हंसगतिर्हंसा हंसोज्ज्वलनिचोलुयुक्।
हलिनी हलदा हाला हरश्री हरवल्लभा॥११२॥
हेलाहेलावती ह्येषा ह्रेषस्था ह्रेषवर्द्धिनी।
हन्ताहन्तिः हताहत्याहा हन्ततापहारिणी॥११३॥
हङ्कारी हन्तकृद्धङ्काहीहा होता हताहता।
हेमप्रदा हंसवती हारी हातरिसम्मता॥११४॥
होरी होत्री होलिका च होमा होमोहविर्हरिः।
हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी॥११५॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा।
लीलालोलावतीलोला ललनी लालितालता॥११६॥
ललामलोचनालोच्य लोलाक्षीलक्षणाललना।
लम्पतीलुम्पतीलम्पा लोपामुद्राललन्तिनी॥११७॥

लन्तिकालम्बिकालम्बा लघिमालघुमध्यमा।
लघीयसी लघुदयी लूतालूतनिवारिणी॥११८॥
लोमभृल्लोमलोप्ता च लुलुतीलुलुसंयती।
लुलायस्था चलहारी लङ्कापुरपुरन्दरी॥११९॥
लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लक्ष्म्या लक्षबलमतिप्रदा।
क्षुण्णाक्षुपाक्षणाक्षीणा क्षमाक्षान्तिः क्षणावतीः॥१२०॥
क्षामा क्षामोदरी क्षीमा क्षौमभृत्क्षत्रियाङ्गना।
क्षयाक्षमाकरीक्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा॥१२१॥
क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयतत्क्षणदाक्षतिः।
क्षुरन्ती क्षुद्रिकाक्षुद्रा क्षुत्क्षामाक्षरपातका॥१२२॥

फलश्रुतिः

मातुः सहस्रनामेदं सर्वकामप्रदायकम्।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः॥१२३॥

प्रत्यङ्गिरा माता का यह सहस्रनाम भक्तों के समस्त कामनाओं को प्रदान करनेवाला है, जो भक्तजन प्रयत्नपूर्वक इस सहस्रनाम का नित्य पाठ करता है वह महेश्वर के समान हो जाता है॥१२३॥

अनाचान्तः पठेन्नित्यं दरिद्रो धनदो भवेत्।
मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत्॥१२४॥

अनवरत नियमित पाठ करने वाला दरिद्र भी धनवान् हो जाता है। मूक व्यक्ति भी वाणीवान् हो जाता है। मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान् तथा तर्कवान् हो जाता है। यदि रोगी व्यक्ति इस सहस्रनाम का पाठ करता है, तो वह निरोगी हो जाता है॥१२४॥

अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
वन्ध्यापि सूते तनयान् गावश्च बहुदुग्धदाः॥१२५॥

पुत्रहीन व्यक्ति इस सहस्रनाम का पाठ करता है, तो पुत्रवान् हो जाता है और तीनों लोकों की ख्याति पाता है। यदि वन्ध्या स्त्री पाठ करती है, तो वह भी पुत्र प्राप्त करती है और बहुत दूध देने वाली गायें प्राप्त करती है, राजा भी उसके दास के समान वश में हो जाते हैं॥१२५॥

राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य दासा इव स्फुटाः।
अरयः संक्षयं यान्ति मनसा संस्मृता अपि॥१२६॥

इस सहस्र नाम का पाठ करने वाले साधक के सामने समस्त राजकर्मी दास के समान उससे व्यवहार करने लग जाते हैं, यदि कोई मन से भी सहस्रनाम पाठ करने वाले प्रत्यङ्गिरा भक्त से शत्रुता सोचते हैं, तो वह तुरन्त ही नष्ट हो जाते हैं॥१२६॥

दर्शनाद् देवता यं ते नरा नार्योऽपि तद्वशाः।
कर्त्ता हन्ता त्वयं वीरो जायते नात्र संशयः॥१२७॥

सहस्रनाम पाठ करने वाले प्रत्यङ्गिरा भक्त के वश में देवतादि और समस्त नारियाँ हो जाती हैं, वह वीर पुरुष हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है॥१२७॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
दुरितं न च तस्यास्ते नास्ति शोकः कदाचन॥१२८॥

सहस्रनाम पाठ करने वाला साधक जो जो कामना करता है, उसे उसे तुरन्त निश्चय ही प्राप्त कर लेता है, उसके साथ कभी भी दुरित नहीं होता तथा उसे शोक कभी नहीं प्राप्त होता है॥१२८॥

चतुष्पथेऽर्द्धरात्रौ च यः पठेत्साधकोत्तमः।
एकाकी निर्भयो धीरो दशावर्तं स्तवोत्तमम्॥१२९॥

चौराहे के चतुष्पथ पर अर्द्धरात्री में जो साधकोत्तम एकान्त में निर्भय होकर गम्भीरतापूर्वक इस सहस्रनाम का दशावृत्ति पाठ करता है, वह साधक श्रीप्रत्यङ्गिरा भगवती की कृपा से समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है॥१२९॥

मनसा चिन्तितं कार्य तस्य सिद्धिर्न संशयः।
विना सहस्रनाम्ना यो जपेन्मन्त्रं कदाचन॥१३०॥

सहस्रनाम का पाठ करने वाला साधक मन से जो भी चिन्तन करता है। वह कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है। विना सहस्रनाम पाठ के कदाचिद् यदि कोई प्रमादवश जप करता है॥१३०॥

न सिद्धो जायते तस्य मन्त्रः कल्पशतैरपि।
कुजवारे श्मशाने च मध्याह्ने यो जपेदथ॥१३१॥

वह कभी सिद्धि नहीं प्राप्त कर पाता है, चाहे वह सैकड़ों कल्प तक जप करता रहे। अतः अपना हित चाहने वाले साधक को सहस्रनाम का अवश्य पाठ करना चाहिये। मङ्गल वार को श्मशान में मध्याह्न में जाकर जो सौ बार जप करता है॥१३१॥

शतावर्त्या सजपेत् कर्त्ता हर्त्ता नृणामिह।
रोगान्तं घोरनिशायान्ते पठितामसि संस्थितः॥१३२॥

मङ्गलवार को श्मशान में मध्याह्न में जाकर जो सौ बार जप(पाठ) करता है, वह मनुष्य अपने शत्रुओं को निश्चय ही नष्ट कर देता है और मध्यरात्रि में पाठ करने से रोग को नष्ट कर देता है॥१३२॥

सद्यः नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा।
अर्द्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम्॥१३३॥

शनिवार के दिन अर्द्धरात्रि में सहस्रनाम पाठकर्त्ता निश्चय ही नीरोग तथा निर्भय हो जाता है॥१३३॥

अष्टोत्तरसहस्त्रं तद्दशवारं जपेत्ततः।
सहस्त्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा॥१३४॥

जो भक्त विधिपूर्वक प्रत्यङ्गिरा देवी पूजन करके इस अष्टोत्तरसहस्त्रनाम का दश बार पाठ करता है, उसकी महादेवी शिवा स्वयं रक्षा करती है॥१३४॥

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी।
तदा यदि न भीतिः स्यात्ततो द्रोहीति वा भवेत्॥१३५॥

इस सहस्त्रनाम का पाठ करने वाले के लिए सभी यदि द्रोही हो जायें और घोर भयंकर तूफान, भयंकर ध्वनि होने पर भी भय नहीं होता है॥१३५॥

तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चण्डिका।
यथेष्टं च वरं दत्त्वा याति प्रत्यङ्गिरा शिवा॥१३६॥

विधिवत् पूजन करके सहस्त्रनाम का पाठ करके बलि प्रदान करने पर चण्डिका स्वयं बलि ग्रहण करती है और भगवती प्रत्यङ्गिरा शिवा उस साधक को उसका अभीष्ट वर प्रदान करके कृतार्थ करती है॥१३६॥

रोचनागुरु-कस्तुरी-कर्पूरमदचन्दनः ।
कुङ्कुमप्रथमाभ्यां तु लिखितं भूर्जपत्रके॥१३७॥

गोरोचन, अगुरु, कस्तुरी, कर्पूर, मद, चन्दन, कुंकुम सभी को समान भाग में मिला करके भोजपत्र पर देवी का यन्त्र लिख करके॥१३७॥

शुभनक्षत्रयोगे तु कृत्रिमाकृतसक्रियः।
कृतसम्पातना सिद्धिर्धारयेद्दक्षिणे करे॥१३८॥

शुभ नक्षत्र, शुभ योग में सिद्ध करके दाहिने हाथ में धारण करता है, तो प्रहास में कृत्रिम कार्य भी करने पर सत्य हो जाता है॥१३८॥

सहस्त्रनाम स्वर्णस्थं कण्ठे वापि जितेन्द्रियः।
तदा यन्त्रे नमेन्मन्त्री क्रुद्धा संम्रियते नरः॥१३९॥

सहस्त्रनाम को शुभनक्षत्रयोग में लिख करके सुवर्ण में भर करके कण्ठ में धारण करे तथा जितेन्द्रिय रहने से क्रोध करने मात्र से ही शत्रु मर जाता है॥१३९॥

यस्मै ददाति यः स्वस्ति स भवद्धनदो यमः।
दुष्टश्चापदजन्तूनां न भीः कुत्रापि जायते॥१४०॥

सहस्त्रनाम को धारण करनेवाले साधक का कुबेर यमादि सभी देवता भला ही करतें है, तो दुष्टादि जन्तुओं की क्या बात, साधक को कभी भी भय नहीं होता है॥१४०॥

बालकानामिमां रक्षां गर्भिणीनामपि ध्रुवम्।
मोहनं स्तम्भनाकर्षमारणोच्चाटनानि च॥१४१॥

यह विद्या बालकों की रक्षा करती है, गर्भिणियों की तो निश्चय ही रक्षा करती है, मोहन, स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन इत्यादि परकृत्य॥१४१॥

यन्त्रधारणतो नूनं जायन्ते साधकस्य तु।
नीलवस्त्रे विलिखितं ध्वजायां यदि तिष्ठति॥१४२॥

प्रत्यङ्गिरायन्त्र को धारण करने वाले साधक का कभी हानि नहीं करते हैं। नीले वस्त्र में धारण यन्त्र को लिख करके यदि ध्वजा पर लगाया जाता है॥१४२॥

तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डा परिवाहिनी।
एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत्॥१४३॥

तो संग्राम में प्रचण्ड शत्रुओं का समुदाय होने पर भी साधक उनको नष्ट कर देता है। यदि इसका जप करके अभिमन्त्रित भस्मादि का यदि तिलक धारण करता है, तो॥१४३॥

तद्दर्शनत एव स्युः प्राणिनस्तस्य किङ्कराः।
राजपत्न्योऽपि वशगाः किमन्याः परयोषितः॥१४४॥

तिलक करने वाले साधक को देख करके राजपत्नी भी वश में हो जाती है, अन्य स्त्रियों की तो बात ही क्या, वे तो तुरन्त ही वश में हो जाती हैं॥१४४॥

एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासैकेन महाकविः।
पण्डितश्च महादीक्षो जायते नात्र संशयः॥१४५॥

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को एक मास तक पीता है, तो वह महाकवि और महापण्डित तथा महादीक्षित हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं हैं॥१४५॥

शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रं वरं शुभम्।
इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत्॥१४६॥

प्रत्यङ्गिरा शक्ति का विधिवत् पूजन करके इस सहस्रनामस्तोत्र का पाठ जो साधक करता है, वह शुभ वर प्राप्त करता है इस लोक में जबतक रहता है, तबतक समस्त भोगों को भोगता है और पर लोक में भी समस्त सुख पाता है॥१४६॥

इदं नामसहस्रं तु प्रत्यङ्गिरामनोहराम्।
गोप्यं गुप्ततमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१४७॥

यह प्रत्यङ्गिरा का मनोहर सहस्रनाम गोपनीयों में भी परमगोपनीय है, इसको अपने योनि के समान गुप्त रखना चहिये॥१४७॥

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे दशविद्यारहस्ये प्रत्यङ्गिरासहस्रनामस्तोत्रं परिपूर्णम्

●

होमार्थतान्त्रिकाग्निस्थापनम्

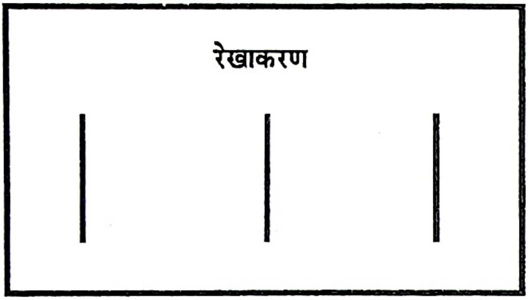

सर्वप्रथम मूलमन्त्र से आचमन करके, कराङ्गन्यास के पश्चात् स्थण्डिल अथवा कुण्ड में अग्निस्थापनादि कृत्य करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। निरीक्षण करे।

ॐ अस्त्राय फट्। सम्प्रोक्षण करे।

ॐ हूँ। तीन कुशाओं से सन्ताडित करे।

ॐ ह्रीँ। स्रुवमूल अथवा कुशमूल से प्रागग्रोत्तरोत्तर क्रम से स्थण्डिल पर प्रादेश मात्र की तीन रेखायें खीचे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ। प्रोक्षण करने के पश्चात् प्रत्येक रेखा पर गन्धाक्षतपुष्प चढ़ाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मुकुन्दाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणिसमर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पुरन्धराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणिसमर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैवश्वताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इद्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

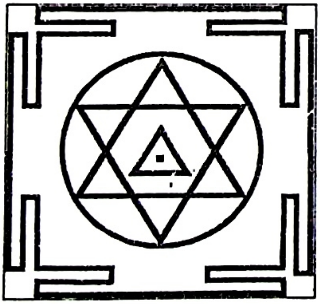

मध्य में त्रिकोण-षड्कोण-वृत्त-चतुद्वारात्मक भूपुर का निर्माण करे, कुशा बिछा कर तीन बार व्याहृतित्रय (**ॐ भूर्भुवः स्वः**) का उच्चारण कर अग्नि स्थापित करने के बाद विधिपूर्वक संस्कार करे।

ॐ ह्रीं ॐ। मन्त्र से त्रिकोण मध्य में लिखे।

ॐ मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ जयादिपीठशक्तिभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ वागीश्वरीवागीश्वरयोगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ अग्नये योगपीठात्मने नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वागीश्वरेण ऋतुस्नातां समस्ताभरणान्विताम्।
वागीश्वरेण संयुक्तां नमाम्यखिलसिद्धये॥

वागीश्वरी ऋतुकाल के बाद स्नान करके समस्त अलङ्कारों से अलंकृत हो करके वागीश्वर के साथ संयुक्त होकर बैठी हुई देवी का समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए ध्यान करता हूँ!

कामोन्मत्त शिव तथा ऋतुमती देवी का ध्यान कर पूजन करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिराशक्त्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं महाकालाय ह्रौं महादेवाय शिवाय नमः। शिवशक्तिपूजन के बाद दोनों के संयोग से गर्भस्थ वह्नि की भावना कर पूजन करे।

ॐ फट्। अग्नि को लाकर कुण्ड के बाहर रखे।

ॐ हूँ। ज्वलित अग्नि से किञ्चित् क्रव्यादंश नैर्ऋत्य कोण में निकाल दे, शेष अग्नि में देवांश की परिकल्पना करे।

ॐ फट्। सम्प्रोक्षण करे।

ॐ यँ। द्वादश बार जप कर संशोषण करे।

ॐ वँ। मत्स्यमुद्रा से अमृत निवेशन करे।

ॐ रँ। षोडश बार जप कर सन्दहन करे।

ॐ फट्। पुनः प्रोक्षण करे।

ॐ नमः। अभ्यर्चन करे।

ॐ ह्रूं । संसिञ्चन करके भ्रूमध्य बिन्दुस्थ ज्योति से अग्नि का ऐक्य भावना करे।

ॐ रँ वह्निचैतन्यं परिकल्पयामि। वह्निचैतन्य का भावन करे।

ॐ ह्रूँ वह्निचैतन्यं ते नमः। चैतन्यता संयोजित कर मूलमन्त्र से दशबार अभिमन्त्रित करे।

ॐ वँ। षोडश बार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ हुँ। अवगुण्ठन कर योनि एवं धेनुमुद्रा का प्रदर्शन कर, अग्नि ग्रहण कर, कुण्ड की तीन परिक्रमा करके ध्यान करते हुए कुण्ड में अग्नि स्थापित करे।

ध्यानम्

शय्यागतां ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम्।
देवेन भज्यमानां तां संस्मरेद्योनिमण्डले॥

नील इन्दीवर को धारण की हुई ऋतुकाल के बाद स्नान करके शय्या पर आरुढ़ होकर शिव की कामना से भजन करती हुई भगवती का योनि मण्डल पर ध्यान करता हूँ।

ध्यान करके जानु से धराजल पर स्पर्श कर मूल मन्त्रोच्चारपूर्वक आत्मा में शिवबीज **हौँ** का ध्यानपूर्वक देवी की योनि में छोड़े।

ॐ वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः। आज्याचमनीय प्रदान कर वह्निरूपी देवता का गर्भ ध्यान कर गर्भ रक्षार्थ दर्भकाष्ठ छोड़े।

ॐ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वाज्ञा आज्ञापय स्वाहा।

ॐ ह्रीँ ह्रीँ ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुँ फट् स्वाहा।

ज्वालिनीमुद्रा से वह्नि प्रज्वलित करके अग्नि की प्रार्थना करे।

अग्निप्रार्थना

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥

निर्मल सुवर्ण के समान प्रज्वलित जातवेद हुताशन विश्वमुख (विश्व में मुख्य) अग्नि की वन्दना करता हूँ।

ॐ अग्नये तव (देवता का नाम उच्चारण) **प्रत्यङ्गिरा नामासि।**

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। अग्नि का नामकरण करे।

अग्नि का पूजन करके प्रादेश मात्र समिधा का अग्नि में तूष्णी(मौन) हवन करे पश्चात् तान्त्रिक विधि से गणेशादि वन्दन, दिग्बन्धन, भूतशुद्धि, प्राणायाम, मातृकान्यास, मूलन्यास करके स्वदेह में वह्नि जिह्वा न्यास गणेशादि वन्दन, दिग्बन्ध, गणेशमातृकान्यासादि करके फिर आगे हवनादि का कार्य करे।

गणेशप्रार्थना

योऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥१॥

जो अनन्तशक्तिवान् होकर भी जीव रूप हैं, अप्रमेय निर्गुण होकर भी गुणवान् हैं, जो सर्वत्र व्याप्त होकर भी तीन भेद से भिन्न हैं, उस गणेश को सदैव नमस्कार है, उनका सतत भजन करता हूँ॥१॥

यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत् तथाऽब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः सदा ते गणेशं नमामो भजामः॥२॥

जो सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त होकर जगद्रूप है, तथाऽपि अब्जासनस्थ विश्व का ज्ञाता तथा विश्व का गोप्ता है। जिसका इन्द्रादि देवताओं का समूह तथा मनुष्य स्तुति करते है, उस गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ॥२॥

यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योमवायुः।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥३॥

जो गणेश अग्नि, सूर्य, भूमि, जल, सागर, चन्द्रमा, आकाश, वायु, स्थावर, जङ्गम, तथा सम्पूर्ण वृक्षसमुदाय में व्याप्त है, उन गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ॥३॥

यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घा यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च।
यतः पक्षी कीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥४॥

जो दानव, किन्नर, यक्षसमुदाय, चारण, वारण, श्वपदादि, पक्षी, कीट, पतङ्गादि वीरों में व्याप्त है, उन गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ॥४॥

यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तिसन्तोषिकाः स्युः।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥५॥

जो गणेश बुद्धि के अज्ञान का नाश करते हैं, मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रदान करते हैं, भक्ति करने पर सम्पदा प्रदान करते हैं, विघ्नों का नाश करके कार्य को पूर्ण करते हैं उन गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ॥५॥

यतः पुत्रसम्पद्यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽनेकरूपाः।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥६॥

जो गणेश पुत्र, सम्पत्ति तथा इच्छित कामनाओं को पूर्ग करते हैं, भक्तों का विघ्न नाश करते हैं, जिनके अनेक रूप हैं, शोकमोहकामादि दोषों को समाप्त करते हैं, उन गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ॥६॥

यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥७॥

जो गणेश अनन्त शक्ति सम्पन्न हैं, शेष हैं, विभु हैं, अनेक रूपों में पृथ्वि को धारण करते हैं, अनेक प्रकार से स्वर्गलोक में व्याप्त हैं, उन गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ।।७।।

यतो वेदवाचोऽतिकुण्ठमनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥८॥

जिनकी कृपा से अतिकुण्ठा से ग्रस्त भी वेद का वाचन करता है, श्रुतियाँ जिनका नेति नेति कह कर प्रतिपादन करती हैं, उन चिदानन्दभूत परब्रह्मस्वरूप गणेश को सतत नमस्कार तथा उनका भजन करता हूँ।।८।।

अनेन स्तुतिपाठेन श्रीगणेशः प्रीयतां न मम। गणेशस्तुति के बाद दिग्रक्षण करे।

दिग्रक्षणम्

प्रणायामाचमन करके सङ्कल्पपूर्वक दिग्रक्षण करे।

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मानामाऽहं अस्मिन् श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे रक्षोघ्नकर्म करिष्ये।** पीले सरसों से रक्षोघ्न करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षोहणंवलगहनंवैष्णवीमिदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेनिष्ट्योयम मात्योनिचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेंसमानोयमसमानोनिचखानेदमहंतंवलग मुत्किरामियंमेसबन्धुर्य्यमसबन्धुर्निचखाने महंतंवलगमुत्किरामियम्मेंसजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ पूर्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षोहणोंवोवलगहनःप्रोक्षामिवैष्णवान्रक्षोहणोंवोवलगहनोऽवन-यामिवैष्णवान्रक्षोहणोंवोवलगहनोऽवस्तृणामिवैष्णवान्रक्षोहणौवांवलगहनाऽउप-दधामिवैष्णवीरक्षोहणौ वां वलगहनौपर्य्यूहामिवैष्णवीवैष्णवमसिवैष्णवास्थ॥२॥ दक्षिणदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रक्षसांभागोऽसिनिरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳरक्षोऽव बाधऽइदमुꣳरक्षोऽधमन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्प्रोर्णुवाथांवायोवेस्तोकानान्गिग्र

राज्ज्यस्यवेतुस्वाहास्वाहाकृतेऽऊर्ध्वंनभसम्मारुतङ्गच्छतम्॥३॥ पश्चिमदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुक्षोहाविश्वश्चर्षणिरभियोनिमयोंहते॥ द्रोणेंसधस्थमासंदत्॥४॥ उत्तरदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। जो भूत प्रेतादि विघ्न करने वाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से अन्यत्र चले जायें, अन्यथा नष्ट हो जायें। नैर्ऋत्यकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान के सभी दिशाओं में जो भूत प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी बिना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजा कर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूत गण, राक्षस गण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान को छोडकर अन्यत्र कहीं चले जायें, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण कर सकें। ईशानकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ फट्। ऊपर पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ फट्। भूमि पर नीचे पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

चारो तरफ क्रोधमयी दृष्टि डाल कर चारो तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे तथा भूमि पर तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

चारो तरफ पीला सरसों छिड़कें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे पूर्वे रक्षतु। पूर्वदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ प्रत्यङ्गिरे आग्नेयां रक्षतु। अग्निकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे दक्षिणे रक्षतु। दक्षिणदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे नैर्ऋत्ये रक्षतु। नैर्ऋत्यकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे पश्चिमे रक्षतु। पश्चिमदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे वायव्ये रक्षतु। वायव्यकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे उत्तरे रक्षतु। उत्तरदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे ऐशान्यां रक्षतु। ईशानकोण में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे ऊर्ध्वे रक्षतु। ऊर्ध्वदिशा में प्रच्छेप करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूं प्रत्यङ्गिरे अधः रक्षतु। अधोदिशा में प्रच्छेप करे।

विघ्नों के निस्सानण के बाद मातृकान्यास करे।

अग्निमातृकान्यासः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः क्षंकीलकं अखिलाप्तये श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवताप्रीतये विनियोगः।**

प्राणायामः—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करे—

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अग्नये नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ अग्नये नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ अग्नदे नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ अग्नये नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ अग्नये नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ अग्नये नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ अग्नये नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ अग्नये नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ अग्नये नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ अग्नये नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ अग्नये नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ अग्नये नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ अग्नये नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ अग्नये नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अग्नये नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः अग्नये नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ अग्नये नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ अग्नये नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ अग्नये नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ अग्नये नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ अग्नये नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ अग्नये नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ अग्नये नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ अग्नये नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ अग्नये नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ अग्नये नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ अग्नये नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ अग्नये नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ अग्नये नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ अग्नये नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ अग्नये नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ अग्नये नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ अग्नये नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ अग्नये नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ अग्नये नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ अग्नये नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ अग्नये नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ अग्नये नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ अग्नये नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ अग्नये नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ अग्नये नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ अग्नये त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ अग्नये असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ अग्नये मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ अग्नये मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ अग्नये अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ अग्नये मज्जात्मने नमः हृदयादि वामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ अग्नये शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ अग्नये आत्मने नमः हृदयादि वामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ अग्नये परमात्मने नमः हृदयादि कट्यान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ अग्नये प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादि मूर्धान्तं न्यस्यामि।

मातृका न्यास के बाद अग्नि जिह्वाओं का न्यास करे।

अग्निजिह्वान्यासः

सात्त्विकन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पूँ हिरण्यायै नमः लिङ्गे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्पूँ गगनायै नमः पायौ।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ रक्तायै नमः मूर्ध्निः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्पूँ कृष्णायै नमः वक्त्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्पूँ सुप्रभायै नमः घ्राणे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ र्पूँ बहुरूपायै नमः नेत्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्पूँ अतिरिक्तायै नमः सर्वाङ्गे।

राजसन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पूँ पद्मरागायै नमः लिङ्गे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्पूँ सुवर्णायै नमः पायौ।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ भद्रलोहितायै नमः मूर्ध्निः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्पूँ लोहितायै नमः वक्त्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्पूँ श्वेतायै नमः घ्राणे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ र्पूँ धूमिन्यै नमः नेत्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्पूँ करालिकायै नमः सर्वाङ्गे।

तामसन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पूँ विश्वमूर्त्यै नमः लिङ्गे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्पूँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः पायौ।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ धूम्रवर्णायै नमः मूर्ध्निः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्पूँ मनोजवायै नमः वक्त्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्पूँ लोहितायै नमः घ्राणे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ र्पूँ करालायै नमः नेत्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्पूँ कालिकायै नमः सर्वाङ्गे।

अग्न्याधिष्ठातान्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पूँ अमर्त्याय नमः लिङ्गे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्पूँ पित्रे नमः पायौ।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ गन्धर्वाय नमः मूर्ध्निः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्पूँ यक्षाय नमः वक्त्रे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्पूँ नागाय नमः घ्राणे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ र्पूँ पिशाचाय नमः नेत्रे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्नूँ राक्षसाय नमः सर्वाङ्गे।

अग्नि जिह्वाओं के न्यास के बाद अग्नि का न्यास करे।

विनियोगः—**ॐ अग्निमन्त्रस्य भृगु ऋषिः गायत्री छन्दः अग्निर्देवता रँ बीजं स्वाहा शक्तिः अग्निस्वरूपिणी श्रीप्रत्यङ्गिरायै यजने विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भृगुऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गायत्री छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्निर्देवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रव्यापिने कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यासः—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहस्रर्चिषे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वस्तिपूर्णाय तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उत्तिष्ठपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रव्यापिने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सप्तजिह्वाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धनुर्धराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

मूर्तिन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षांसे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षपार्श्वे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये अश्वोदरजाय नमः दक्षकट्याम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये वैश्वानराय नमः लिङ्गे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये कौमारतेजसे नमः वामकट्याम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये विश्वमुखाय नमः वामपार्श्वे।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये देवमुखाय नमः वामांशे।

पीठन्यासः—लेलिहानमुद्रा से न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये पीतायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये श्वेतायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये अरुणायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये कृष्णायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये धूम्रायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये तीव्रायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये स्फुलिङ्गिन्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये रुचिरायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये ज्वालिन्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये रँ वह्नेयोगपीठात्मने नमः।

अग्नि में इष्ट का ध्यान करे।

इष्टशक्तिध्यानम्

इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः, दोर्भैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं, ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥

देवता को स्वात्मस्वरुप मानकर मानसोपचार पूजन करे।

ॐ रँ आत्ममूर्तये वह्नये नमः।

गन्धादि से पूजन करके सामान्यार्घ्य जल से मेखला परिसिंचन करके परिस्तरण करे, एक मेखला वाले कुण्ड में मेखला के नीचे, दो तथा तीन मेखला वाले कुण्ड में द्वितीय मेखला पर परिस्तरण करे, परिस्तरण मे कुशाओं को कुण्ड के दक्षिण और उत्तर में पूर्वाग्र तथा पूर्व तथा पश्चिम मे उत्तराग्र रखे, पश्चात् पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर में एक हाथ का पलाशखण्ड रक्तवस्त्र वेष्टित करके रख कर दक्षिण में ब्रह्मा, पश्चिम में विष्णु, उत्तर में रुद्र तथा पूर्व में इन्द्र की स्थापना करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इन्द्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पुनः द्वितीय क्रम में पूर्ववत् वामा-ज्येष्ठा-रौद्री तथा अम्बिका की स्थापना करके मध्य योनि में प्रत्यङ्गिरादेवता की स्थापना करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वामायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्येष्ठायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रौद्र्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अम्बिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ वह्नये नमः परिकल्पितासनं समर्पयामि।

अग्नि को कुण्ड के मध्य में आसन प्रदान करके चतुर्द्वारात्मक, त्रयावृत्त, अष्टदल, त्रिकोण, षड्कोणत्मक भावना कर आधारशक्त्यादिवह्नि मण्डलान्त पीठ पूजा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पीतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्वेतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अरुणायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कृष्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तीव्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुचिरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

मध्य में—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ वह्नेयोगपीठात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पीठदेवतापूजनम्—अग्निमण्डल पर पीठों का आवाहन पूजन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ मण्डूकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कालाग्निरुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कच्छपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आधारशक्तये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ प्रकृतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कूर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षीरसमुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रत्नद्वीपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कल्पवृक्षाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मणिमण्डपाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अधर्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अज्ञानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अवैराग्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनैश्वर्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आनन्दकन्दाय नमः आवाहयागि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ संविन्नालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पूजन करके दशकलाओं के सहित वह्न्यर्कसोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वह्निमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्निमण्डलाय दशकलात्माने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रार्चिषे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊष्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वलिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुश्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वरूपायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कपिलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कव्यवाहनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सूर्यमण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ भँ तपिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ बँ तापिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ फँ धूम्रायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ पँ मरीच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ धँ रुच्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ दँ सुषुम्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ दँ सुषुम्नायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ थँ भोगदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ तँ विश्वायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ णँ बोधिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ ढँ धारिण्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ डँ क्षमायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोममण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अमृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ मानदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ पूषायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ तुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ पुष्ट्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ रत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ शशिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ धृत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ चन्द्रिकायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लॄँ कान्त्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ ज्यौत्स्नायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ श्रियै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ प्रीत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ अङ्गदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ पूर्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः पूर्णामृतायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ सत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ रजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ तमसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ आत्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ अन्तरात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ परमात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ माँ मायातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कलातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विँ विद्यातत्त्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ परतत्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पीठशक्तिपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विजयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नित्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विलासिन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दोग्ध्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अघोरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मङ्गलायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयादिशक्तिभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥१॥

रक्त के समुद्र में पोत के सदृश अरुण वर्ण के पद्म पर आसीन हाथ में पाश-अंकुश-धनुष-खड्ग-बाण-शूल-कपाल से शोभायमान, रक्त वर्ण तीन नेत्र वाली देवी को प्रणाम॥१॥

पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तादिवत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥२॥

रक्त के समुद्र में पोत पर उल्लसित अरुण वर्ण के कमल पर अधिरुढ हाथों में धनुष-दण्ड-इक्षुद्भव-बाण-अंकुश तथा पञ्चबाण धारण की हुई, रक्त बहते हुए कपालों की माला धारण की हुई, उदय कालिक सूर्य के समान वर्ण वाली त्रिनेत्र वाली परादेवी प्राणशक्ति हमारे लिये सुखकारी हों तथा सदा सर्वत्र हमारे हृदय में वास करें एवं सतत शत्रुओं और कालुष्य से हमारी रक्षा करें॥२॥

ध्यान करने के बाद पूर्वनिर्दिष्ट विधि से मानसोपचार पूजन करे।

ॐ रँ वह्नियोगपीठाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा प्रत्यङ्गिराशक्त्यै नमः वह्नेर्मूर्तिं परिकल्पयामि।

अग्निमूर्ति कल्पित कर अधोलिखित मन्त्र से आवाहन करे।

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा भगवान अग्नि इहागच्छ इहागच्छ।

ॐ रँ अग्नि आवाहिता भव, संस्थापिता भव सन्निहिता भव।

आवाहनी तथा संस्थापनीमुद्रा का प्रदर्शन करे।

अग्निप्राणप्रतिष्ठा

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंराः रँ वह्नेः जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः रँ वह्नेः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ रँ वह्नेः गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्निश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

पूजन के बाद तीनबार पुष्पाञ्जलि अग्नि को प्रदान करे।

अग्न्यावरणार्चनम्

अग्नि का समस्त संस्कार करके वेदी के मध्य में बिन्दू, त्रिकोण, षड्कोण, अष्टदल, वृत्त तथा एक भूपुर का यन्त्र बना कर उसमें अग्नि के आवरण देवताओं का पूजन करे।

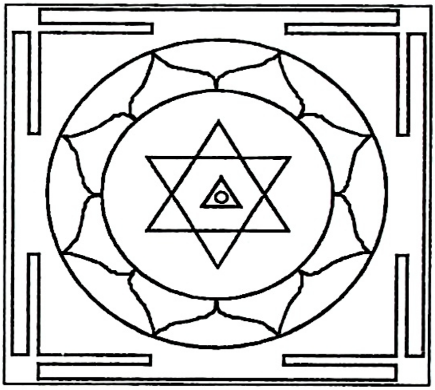

प्रथमावरणपूजनम्—यन्त्र के मध्य त्रिकोण के भीतर पूजन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्पूँ हिरण्यायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्पूँ गगनायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ रक्तायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्पूँ कृष्णायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्पूँ सुप्रभायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ र्पूँ बहुरूपायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्पूँ अतिरिक्तायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

द्वितीयावरणपूजनम्—षड्कोणों में पूजन करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहस्रार्चिषे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वस्तिपूर्णाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उत्तिष्ठपुरुषाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रव्यापिने नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सप्तजिह्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धनुर्धराय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

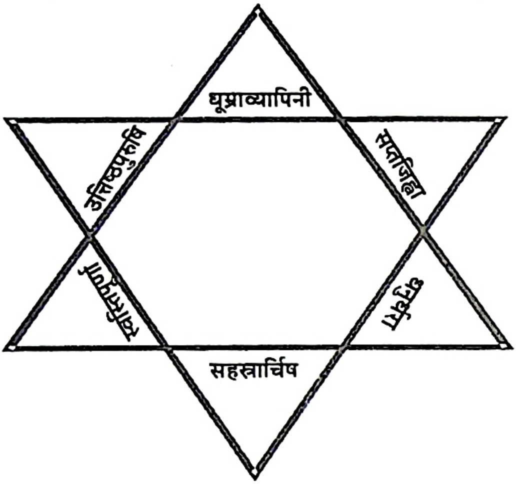

तृतीयावरणपूजनम्—अष्टपत्रों में पूजन करे—

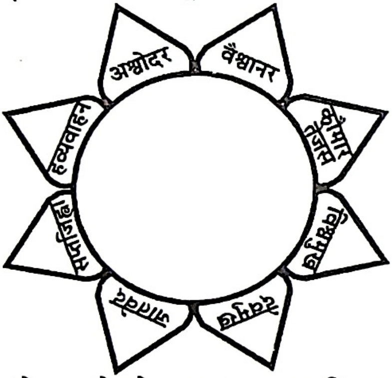

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये जातवेदसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये हव्यवाहनाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये अश्वोदरजाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये वैश्वानराय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये कौमारतेजसे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये विश्वमुखाय नमः आवहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये देवमुखाय नमः वामांशे आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

चतुर्थावरणपूजनम्—भूपुर के चारो ओर तत्तद् स्थानों पूर्व में इन्द्र, दक्षिण में यम,

नैर्ऋत्य में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायव्य कोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशान में ईश्वर, ईशान इन्द्र के मध्य ब्रह्मा तथा निर्ऋति वरुण के मध्य अनन्त का पूजन करे—

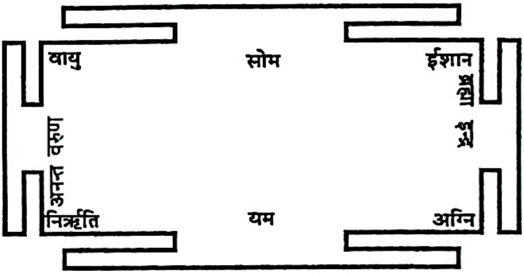

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इन्द्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यमाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ निर्ऋतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोमाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईशानाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पञ्चमावरणपूजनम्—दिग्पालों के साथ उन्हीं स्थानों पर ही सभी दिग्पालों के अस्त्रों का पूजन करे—

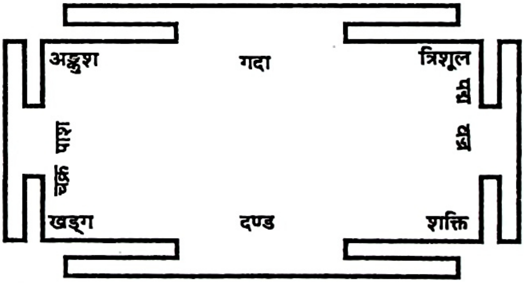

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वज्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शक्तये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दण्डाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खड्गाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पाशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अंकुशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गदायै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिशूलाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पद्माय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐ वैश्वानरजातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नयेश्रीपादुकां पूजयामि।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

•

कुशकण्डिकापात्रासादनञ्च

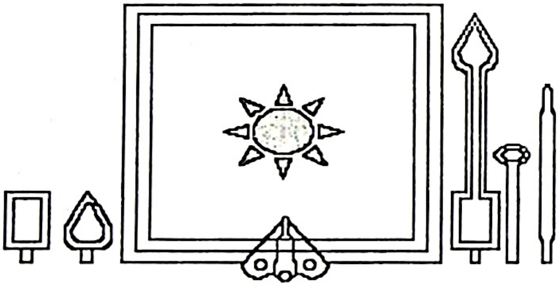

अपने वायें भाग में पूर्व की तरफ मुख करके कुशाओं को बीछा कर उसके ऊपर अस्त्र मन्त्र से प्रच्छालित स्रुक, स्रुवा, प्रणीता, प्रोक्षणी, स्फ्रे, आज्यपात्र, चरुपात्रादि को अधोमुख करके रखे, सभी पात्रों को पवित्र करके पुनः प्रक्षालन करके नमः मन्त्र से सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ फट्। सभी पात्रों को प्रक्षालित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। सामान्यार्घ्य जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ। शुद्ध जल प्रोक्षणी पात्र में रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ। प्रोक्षणी पात्र के जल में क्रम से बिम्बत्रय का अभ्यर्चन करे।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे-सिन्धु-कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

शङ्ख मुद्रा द्वारा अन्तरिक्ष में सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ फट्। अङ्कुशमुद्रा से संरक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ फट्। कवचमुद्रा से अवगुण्ठन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ। गन्ध-पुष्पाक्षत-पवित्रादि छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ। हाथ से ढक कर अभिमन्त्रित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। प्रणिता पात्र को सामान्यार्घ्योदक से परिपूर्ण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। प्रणिता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र का सिंचन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। प्रणिता पात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र को परिपूर्ण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। प्रोक्षणी पात्र के जल से याग द्रव्यों का प्रोक्षण करे।

ब्रह्मावरणम्—अपने दक्षिण भाग में कुशासन पर ब्रह्मा को आसन दे कर स्थापित करे—

ॐ अद्य––गोत्रः––प्रवरः––शर्माऽहं श्रीमद्प्रत्यङ्गिरा देवता यज्ञकर्माङ्ग-भूतेऽस्मिन् होमकर्मणि––गोत्रः––प्रवरः––शर्माणं भवन्तं ब्रह्मापदे अहं वृणे।

वृतोऽस्मि। ब्रह्मा पद पर नियुक्त ब्राह्मण प्रतिवचन कहे।

वासोलङ्कारादि से ब्रह्मा का पूजन करके स्रुक् स्रुव का संस्कार करे, ऊर्ध्व मुख स्रुक् स्रुव को ग्रहण करके अधोमुख कर अग्नि में प्रतपन कर वायें हाथ में दोनों को धारण कर दाहिने हाथ से कुश लेकर उस कुश के अग्र भाग से स्रुक् स्रुव के अग्र भाग का मध्य से मध्य का तथा मूल से मूल भाग का शोधन करके प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण कर वह्नि में प्रतपन करके कुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप कर स्वदक्षिण भाग में कुशाओं के ऊपर स्रुक् स्रुव को रखकर आज्य संस्कार करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ फट्। आज्य पात्र से दोषों का निसेचन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ। प्रोक्षणी के जल से सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ। संताडन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ। अभ्युक्षण करके संस्कारचतुष्टय करने के बाद कुण्ड से अग्न्याङ्गार लेकर वायुकोण में स्थापित कर अग्नि के ऊपर आज्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। आज्य को तपाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ। घृताक्त कुशत्रय लेकर अग्नि में छोड़कर अभिद्योतन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ अस्त्राय फट्। मुष्ठि मात्र प्रज्वलित कुशओं को लेकर अग्नि की प्रदक्षिणा करके प्रदर्शित कर अग्नि में छोड़कर उद्योतन करे।

पुनः अङ्गार के ऊपर रखे आज्यपात्र को अपने सामने रखे, उस अङ्गार को अग्नि में प्रक्षेपित कर मार्जन करके जल से हाथ धोकर प्रादेश मात्र की पवित्री लेकर पृथक्-

पृथक् दोनों हाथ में लेकर **अस्त्राय फट्** मन्त्र से वह्नि के सम्मुख लाकर उत्प्लावन कर पवित्री को स्थानान्तर में रखे, पुनः उसी प्रकार से कुशद्वय लेकर **नमः** मन्त्र के द्वारा अपने सम्मुख घृत का सम्प्लावन करके कुशद्वय तथा पूर्वस्थापित पवित्रद्वय को अग्नि में छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हूँ अस्त्राय फट्। वह्नि के सम्मुख लाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। अपने सम्मुख घृत का सम्प्लावन करे, पश्चात् प्रादेश मात्र सद्‌ग्रन्थि कुशत्रय अथवा तीन समीधा लेकर आज्यपात्र में छोड़कर आज्य के दक्षिणभाग में शुक्लपक्ष वामभाग में कृष्णपक्ष का चिन्तन कर, वाम में इड़ानाड़ी तथा दक्षिण में पिङ्गलानाड़ी की भावना कर दोनों के मध्य में सुषुम्ना का चिन्तन करते हुए श्रीइष्टदेवता का ध्यान करते हुए हवन करे।

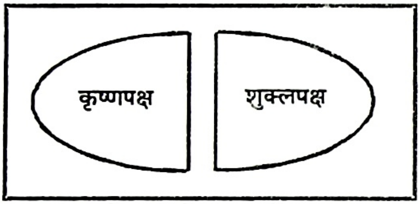

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। मन्त्र से दाहिने भाग से आज्य ग्रहण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम। अग्नि के दक्षिण लोचन में हवन कर सम्पात भाग दक्षिण में छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। अग्नि के वाम लोचन में हवन कर सम्पात भाग वाम में छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। मध्य भाग से आज्य ग्रहण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्निषोमाभ्यां स्वाहा इदं अग्निषोमाभ्यां न मम। अग्नि में हवन कर सम्पातभाग वहीं पूर्ववत् मध्यभाग में छोड़कर पञ्चाहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूः स्वाहा।

ॐऐँ ह्रीँ श्रीँ भुवः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैश्वानरजातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। आहुतीत्रय प्रदान कर अग्नि का षोडशसंस्कार करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा। संस्कार में सर्वत्र आज्य से आहुती प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः सीमान्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्यसम्लुत पञ्चसमिधा का हवन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः सूतकं शोधयामि स्वाहा।

नामकरण में अपने इष्टदेवता के नाम से नामकरण करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्याङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा अग्ने त्वां प्रत्यङ्गिरा नामासि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

साकल्य की आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः उपनिषद् व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नेः विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

मूलाग्र युक्त घृतसम्प्लुतसमिधा लेकर वागीश्वरवागीश्वरी को तीन आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ वागीश्वरवागीश्वरीभ्यां स्वाहा।

सप्तजिहवादि आवरण देवताओं को आहुति प्रदान करे।

सप्तजिहवाहुतिः—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्रूँ हिरण्यायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ष्यूँ गगनायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्पूँ रक्तायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ व्यूँ कृष्णायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ल्यूँ सुप्रभायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रप्रूँ बहुरूपायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ य्नूँ अतिरिक्तायै स्वाहा।

षडङ्गाहुतिः—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सहस्रार्चिषे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वस्तिपूर्णाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उत्तिष्ठपुरुषाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धूम्रव्यापिने स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सप्तजिह्वाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धनुर्धराय स्वाहा।

अग्निमूर्त्याहुतिः—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये जातवेदसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये सप्तजिह्वाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये हव्यवाहनाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये अश्वोदरजाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये वैश्वानराय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये कौमारतेजसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये विश्वमुखाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये देवमुखाय स्वाहा।

दिग्पालाहुतिः—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इन्द्राय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यमाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ निर्ऋतये स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोमाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईशानाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मणे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्ताय स्वाहा।

दिग्पालास्त्राहुतिः—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वज्राय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शक्त्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दण्ड्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खड्ग्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पाशाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अंकुशाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गदायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिशूलाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पद्माय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चक्राय स्वाहा।

स्रुचि में चार स्रुवा आज्य लेकर स्रुचि के ऊपर स्रुवा रख शृङ्गाग्र पर पुष्प रख कर खड़े होकर वौषडन्त अग्नि मन्त्र से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैश्वानरजातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

गणपति मन्त्र का दश विभाग करके क्रमशः आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँ गँ गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

अन्त में सम्पूर्ण मन्त्र से चार आहुति प्रदान करके अग्नि में देवी के पीठ देवताओं का गन्धाद्यर्चन करके आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मण्डूकादिसर्वमङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पूजन करने के बाद प्रत्यङ्गिरादेवी का ध्यान करे।

इष्टदेवीध्यान-प्रधानहवनञ्च

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशाऽसित-भीम-दंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

खड्ग-कपाल-डमरु और त्रिशूल धारण की हुई, चन्द्रकलाओं को धारण की हुई, ऊपर उठे काले काले केशों वाली, बड़े बड़े दांतों वाली, भद्रकाली हमारे लिए कल्याण करने वाली हो।

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता का ध्यान कर अग्नि में इष्टदेवता की भावना कर आवाहन करके आवाहनादि दशमुद्राओं को प्रदर्शित कर मूल मन्त्र से यथा विहित संख्या में आहुति प्रदान करके आवरण देवताओं के लिए आहुति प्रदान करे।

दिव्यौघगुरुहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादेव्यम्बाशक्त्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिपुरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भैरवानन्दनाथाय स्वाहा।

सिद्धौघगुरुहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूर्णदेवानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चलचित्तानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चलचलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुमारानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरदानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्मरदीपानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मायाम्बायै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मायावत्याम्बायै स्वाहा।

मानवौघगुरुहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विमलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुशलानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मत्सेनानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुधाकरानन्दनाथाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रह्लादानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सनकानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वसिष्ठानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बोधानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मीनानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गोरक्षनाथानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भोजदेवानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रजापत्यानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मूलदेवानन्दनाथाय नमः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रन्तिदेवानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विघ्नेश्वरानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हुताशनानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ समयानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सन्तोषानन्दनाथाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वगुरवानन्दनाथाय स्वाहा। अपने गुरु का नामोच्चारपूर्वक आहुति प्रदान करे।

रश्मिदेवताहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीनित्यकाल्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीकाल्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीभद्रकाल्यम्बादेव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शिवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये नमः स्वाहा।

ब्राह्म्याद्यष्टशक्त्याहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्राह्म्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वैष्णव्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ माहेश्वर्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कौमार्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐन्द्र्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वाराह्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारसिंह्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चामुण्डाऽम्बायै स्वाहा।

स्तम्भिन्याद्यष्टशक्त्याहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्तम्भिन्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मोहिन्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षोभिण्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ द्राविण्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जृम्भिण्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भ्रामिण्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रौद्र्यम्बायै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ संहारिण्यम्बायै स्वाहा।

अष्टभैरवाहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुरुभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चण्डभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रोधभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कपालिभैरवाय नमः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भीषणभैरवाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ संहारभैरवाय स्वाहा।

अष्टभैरव्याहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सिंहभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धुम्रभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भीमभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उन्मत्तभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वशीकरणभैरव्यै स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मोहनभैरव्यै स्वाहा।

दशदिग्पालाहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इन्द्राय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्नये स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यमाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ निर्ऋतये स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायवे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोमाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईशानाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्ताय स्वाहा।

दशदिग्पालपत्न्याहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इन्द्रपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्निपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यमपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ निर्ऋतिपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वरुणपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वायुपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सोमपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईशानपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ब्रह्मपत्न्यै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्तपत्न्यै स्वाहा।

दशदिग्पालायुधाहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वज्राय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शक्तये स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दण्डाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खड्गाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पाशाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अङ्कुशाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गदायै स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिशूलाय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पद्माय स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चक्राय स्वाहा।

वटुकाद्याहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीभ्यो स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणपतये स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालाय स्वाहा।

खड्गाद्यास्त्रहवनम्—साकल्य से आहुति प्रदान करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ खड्गाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ कपालाय स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ डमर्वे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिँ त्रिशूलाय स्वहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यन्त्रस्थसमस्तदेवताभ्यः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रूँ क्ष्रौँ याँ राँ लाँ वाँ आँ क्रौँ महाकालभैरव सर्वविघ्नान्नाशय नाशय ह्रीँ श्रीँ फट् स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा। जप के संख्या का दशांश हवन करे।

मूल मन्त्र से नवाहुति प्रदान कर आज्य त्याग करके किसी पात्र में दुध तथा जल मिला कर तर्पण कर आत्मा में इष्ट बुद्धि से मार्जन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतां तर्पयामि। अष्टोत्तरशत तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवतां अभिषिञ्चामि। मार्जन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भुवः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वः स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

व्याहृति से आहुति प्रदान कर मूर्ति में देवि को नियोजन करके संहारमुद्रा से अग्नि को विसर्जित कर प्रत्यङ्गिरादेवी को आचमनादि से पूजन कर चामरादि डुला कर स्तुति पाठ तथा प्रदक्षिणा करके दण्डवत् प्रणम करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे पदे॥

कर्मसमर्पणम्—कर्म को मूलमन्त्र से आत्मसमर्पण करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इतः पूर्वं पापबुद्धिं देवधर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु

मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मां मदीयं च सकलं देव्यै ते समर्पये ॐ तत्सत्।

कर्म को ब्रह्म समर्पण करके प्राणायामादि करके पुष्पाक्षतादि से उत्तर पूजन क्षमापन करे।

क्षमापनप्रार्थना—

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि॥१॥

अज्ञान वश यदि हमने पुरश्चरण में विहित कर्म को कम या अधिक किया हो, तो उस सभी अपराध को हे देवि! हमें क्षमा कर दो और प्रसन्न हो जाओ॥१॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि।
सम्पूजिता मया देवि! तस्मात् त्वं वरदा भव॥२॥

मन्त्र से हीन, विधि से हीन, क्रिया से हीन यदि कोई पूजन या कार्य हमसे हो गया हो, तो उसको हे परमेश्वरि! हमें क्षमा कर दो और वर प्रदान करने वाली हो जाओ॥२॥

आवाहनं च पूजां च त्वन्माहात्म्यं जपं तथा।
विसर्जनं न जानामि प्रत्यङ्गिरे क्षमस्व मे॥३॥

हे महादेवि! हम तुम्हारा आवाहन, पूजन, माहात्म्य जप, विसर्जन नहीं जानता हूँ, हे प्रत्यङ्गिरादेवि! हमें क्षमा कर दीजिये॥३॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं स्वरव्यञ्जनवर्जितम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी॥४॥

आपके उपासना तथा पाठादि में यदि कोई अक्षर, पद या स्वरव्यञ्जन के उच्चारण में दोष हो गया हो तो हमें क्षमा करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाओ॥४॥

यस्याः स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति प्रसीद परमेश्वरी॥५॥

हमारे द्वारा किये गये तुम्हारा ध्यान, नामादि जप, तपयज्ञादि क्रियाओं में जो कोई कमी रह गयी हो, तो हे देवि! तुम्हारे कृपा से सब पूर्ण हो जाये और हमारे ऊपर तुम प्रसन्न हो जाओ॥५॥

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां सर्वां प्रसीद परमेश्वरी॥६॥

हे सच्चिदानन्द स्वरूपिणी जगत् माता कामेश्वरि! हमारे द्वारा किये गये अर्चा को ग्रहण करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाओ॥६॥

योनिमुद्रा से प्रणाम करके प्रत्यङ्गिरा देवी को अग्नि में से अपने धाम(अन्तः करण में) पधारने हेतु प्रार्थना करे।

ॐ गच्छ गच्छ परमं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरी।
पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय हि॥७॥

हे परमेश्वरि! अपने परम धाम को पधारे, हमारे पूजा आराधना के समय हमारे लिए पुनः उपस्थित हो जायें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उच्छिष्टचाण्डालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि उच्छिष्टभागं निवेदयामि।

मूलमन्त्र से आधान कर संहारमुद्रा से देवी को अग्नि में से अपने हृदय में ज्योतिस्वरूप स्थापित कर ईशानकोण में चण्डेश्वरी का पूजन कर उच्छिष्टनैवेद्यादि उच्छिष्टचाण्डालिनी को प्रदान कर कुमारियों तथा सुवासिनियों (सौभाग्यवतीस्त्रियों) का पूजन तथा भोजन कराने के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर सपरिवार स्वयं भोजन करे।

हवनप्रकरणं परिपूर्णम्

कुमारीसुवासिनीपूजनम्

पूजा गृह में कुमारी-सुवासिनियों को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपने षडङ्गादि न्यास कर पूजनीया कुमारी-सुवासिनियों का न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लाँ कुलकुमारिके हृदयाय नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्ग न्यास के बाद कुमारी के तत्तद् अङ्गों पर मातृका न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणवाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चँ नमः कुलकुमारिके वामवाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरूं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रेन्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तँ नमः कुलकुमारिके वामोरूं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ नमः कुलकुमारिके वामांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ळँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्–

शङ्खेन्दु-धवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावहावविराजिताम् ॥

शङ्ख तथा चन्द्रमा के समान दिव्य धवल स्वरूपिणी अपने दोनों भुजाओं में वर तथा अभयमुद्रा धारण की हुई, चन्द्रमण्डल में महाओजस्वी रूप से आकर विराजमान हो जायें।

ध्यान करके पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदमर्घ्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ऐते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एष दीपः कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

पूजन के वाद कुमारी-सुवासिनी की प्रार्थना करे।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तुते॥१॥

जगत् पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारि! हमारे द्वारा किये गये पूजन को ग्रहण करें, आपको नमस्कार है॥१॥

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्गस्वरूपवाली, तीनों लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी का पूजन करता हूँ॥२॥

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥

षोडशकलाओं वाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान (नित्य उपस्थित) रहनेवाली कल्याणी देवी की पूजा करता हूँ॥३॥

अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की पूजा करता हूँ॥४॥

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥

षोडश कलाओंवाली, कलारूपिणी, कालचक्रस्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की पूजा करता हूँ॥५॥

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥

चण्डधारा, चण्डमाया रूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करने वाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥६॥

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं प्रणमाम्यहम्॥७॥

सुख और आनन्द को देने वाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहने वाली शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ॥७॥

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥

दुर्गम, दुस्तर, दुःखत्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करने वाली, दुर्गादेवी की भक्तिपूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है॥८॥

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देने वाली, सुभद्र की जननी सुभद्रादेवी को प्रणाम तथा पूजा करता हूँ॥९॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिका श्रीपादुकां पूजयामि।

प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रत्यङ्गिरा का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सन्ध्यायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सरस्वत्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ त्रिमूर्त्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ सुभगायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ उमायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कुब्जिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कालसङ्कर्षिण्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ अपराजितायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ भैरव्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ पीठनायिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्षेत्रज्ञायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चर्चिकायै नमः।

कुमारीपूजनं परिपूर्णम्

●

छागादिबलिदानम्

छागादि (कूष्माण्ड) बलिदानम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालिके काली रक्षिणी स्वाहा। युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलंकृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान करावे।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धुभैरवसागरः॥१॥
पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हुँकार मूर्तये॥२॥

वाराही, यमुना, गङ्गा, सरस्वती, कावेरी, चन्द्रभागा, सिन्धु सागर तथा भैरव, हेमकूट स्थित क्रोधमूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश विनाश के लिए नमस्कार करता हूँ।

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्र पाठ कर समर्पित करे।

ॐ कूष्माण्डत्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिताः।
प्रणमामि सदाभक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

बलिरूप से कुष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कुष्माण्ड रूपी बलि का सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।।१।।

चण्डिकाप्रीतिकामाय दातुरापद्-विनाशिने।
चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥

समस्त आपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि को नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं को निर्मित किया है, अतः यज्ञ में बध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयन्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मङ्गलायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं काल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भद्रकाल्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मानस्तोकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विजयायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनन्तायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रुधिरवदनायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चण्डिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रार्काभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं बृहस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उग्रदन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादन्तिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पृथिव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ह्रीँ श्रीँ वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपायै चण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा। प्रोक्षण करे।

सङ्कल्पः—ॐ अद्यामुकमास्यामुकपक्षेऽमुकतिथिवारनक्षत्रे अमुकगोत्रः प्रवरः अमुकशर्मा छागसमसंख्यकदशवर्षावच्छिन्नश्रीप्रत्यङ्गिराप्रीतिकामोऽहमेतान् वह्नि-दैवतान् भगवत्यै प्रत्यङ्गिरायै तुभ्यं घातयिष्ये।

लौहखड्गपूजनम्—

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥१॥
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥२॥

अतिशय उग्र तथा उग्र नयन, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्ण वाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए, रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पान पात्र धारण किये हुए, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है।

ॐ कालिका कालि वज्रेश्वेरी लौहदण्डाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। तीन बार खड्ग का संप्रोक्षण करके पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के ऊपर लिखने के बाद बलिकर्ण में बलिगायत्री सुनाये।

बलिगायत्री—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ बलिरूपाय विद्महे देवप्रियाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात्॥

खड्गप्रार्थना—

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ, तथा विजय नामधारी खड्ग को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने इस आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा कृत्तिका नक्षत्र तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पितापितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता पिता एवं आप सदा हमारी रक्षा एवं पालन करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भाव शुद्धोऽमर्शणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नील जीमूत के समान, काले दाँतों वाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्शण के लिए, तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धार वाले हे खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

चण्डिका के जिहवा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवि के आगे बराबर करके दीपक जलाये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्रौँ क्रौँ नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीपप्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेयाम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकां तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अद्य दशवर्षावच्छिन्नश्रीमहाविद्याकालिकाप्रीतिकामिमं छाग-रुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै महाविद्यायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

नीराजनविधिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ। द्वादशबार जप कर संशोषण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ। षोडशबार जप कर संदहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ। वामहस्त तल को दक्षहस्त पृष्ठ पर रख कर निवेशन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ। षोडशबार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते॥

हे भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होने वाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करने वाला तुम्हारा त्रिशूल समस्त भयों से हमारी रक्षा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै ज्वालामालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वालादेवि नमोऽस्तु ते॥

जलस्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनों लोकों में व्याप्त ज्वाला स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ज्वालास्वरूपिणी प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुख मण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक कुल चौदह बार आरती घुमाये।

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥

कपूर तथा बत्तियों से युक्त अग्नि से योजित करके दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वरि! इस दिव्य आरती को ग्रहण करें तथा प्रसन्न हों॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिविधिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनिमुद्रा प्रदर्शित करके छत्र-चामर डुला कर स्तुति पाठादि करके पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

स्तुतिपाठसमर्पणम्—हाथ में फूल लेकर स्तुति पाठ करके देवी को समर्पित करे—

भवानीस्तुतिः

मुक्तकण्ठ से तन्मय होकर देवि का ध्यान करते हुए स्तोत्र पाठ करे।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

हे भवानि! हमारा न कोई पिता है, न कोई माता है, न कोई बन्धु है, न कोई दाता है, न कोई पुत्र है, न कोई पुत्री है, न कोई भृत्य है, न कोई भर्ता है, न कोई जाया है, न कोई विद्या है, न कोई वृत्ति ही है, केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में है, हमारी रक्षा करो॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशः प्रबद्धः सदाऽहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

इस महाभय देने वाले अपार संसारसागर के प्रपात में फँसा हूँ, मैं कामी, क्रोधी, लोभी तथा प्रमत्त हो गया हूँ, इस कुसंसार रूपी पाश से सदा बँधा हुआ हूँ, हे भवानि! केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तन्त्रं न च स्त्रोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥

मै दान, ध्यान, योग, तन्त्र, स्तोत्र, पूजा तथा न्यासादि भी नहीं जानता, केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातर्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥

मैं पुण्य, तीर्थ, मुक्ति का मार्ग नहीं जानता, भक्ति व्रतोपवास कुछ भी नहीं जानता, हे माता! केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाऽहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥

हे माता! मैं कुकर्मी, कुसङ्गी, कुबुद्धि, कुदास, कुलाचारहीन, अव्यवहित कार्य करने में लीन, कुदृष्टि वाला, सदा ही कुवाक्य बोलने वाला हो गया हमारे लिए केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

हे माता! मैं प्रजेश, रमेश, महेश, सुरेश, दिनेश, निशीश आदि को नहीं जानता, यह भी नहीं जानता कि किसके शरण में जायें, अत: हे माता! हमारे लिए केवल तुम्हीं हमारे लिए एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

हे माता! विवाद में, विषाद में, प्रमाद में, प्रवास काल में, जल में अग्नि से घिर जाने पर, पर्वत पर, शत्रुओं के बीच में घिर जाने पर, जङ्गल में विपत्तियों से घिर जाने पर सदा ही हमारी रक्षा करो, हमारे लिए केवल तुम्हीं एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं हमारी रक्षा करो॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

हे माता! मै अनाथ, दरिद्र, जरादिरोग से युक्त, महाक्षीण, दीनहीन, सदा जड़बुद्धि, विपत्तियों से घिरा हुआ हूँ, अत: हमारे लिए केवल तुम्हीं एकमात्र गति हो, हम तुम्हारी शरण में हैं, हमारी रक्षा करो॥८॥

अनेन स्तुतिपाठाख्येन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

श्रीभवानीस्तुतिः परिपूर्णम्

●

काल्याष्टकम्

गलद् रक्तमुण्डावली कण्ठमाला, महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी, महाकालकामाकुला कालिकेयम्॥१॥

गले में रक्त प्रवाहित होते हुए मुण्डावली की कण्ठमाला धारण किये हुए, महाघोरराव (घोष) करने वाली, बड़े बड़े सुन्दर दाँतों वाली, बिना वस्त्र धारण किये हुए दिगम्बरी, श्मशान में रहने वाली, खुले हुए केशों वाली, महाकाल के साथ कामासक्त कामकला में निपुण, कालिका को नमस्कार है॥१॥

भुजे वामयुग्मे शिरोऽसी दधाना, वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनभारनम्रा, लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या॥२॥

दोनों वायें भुजा में शिर तथा खड्ग धारण किये हुए तथा दाहिने दोनों भुजाओं में वर तथा अभयमुद्रा धारण किये हुए, मध्य में भी सुन्दर स्तन उठे भार से झुके हुए, मुख से बहते हुए रक्त की धारा से शोभायमान कालिका नमस्कार है॥२॥

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी, लसत्प्रेतपाणिप्रयुक्तैककाञ्ची।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभिश्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे॥३॥

सुन्दर केशों वाली, कर्ण में दो शवों को धारण किये हुए, प्रेत के हाथों से निर्मित कमर में करधनी धारण किये हुए, शवाकार मञ्च पर आरूढ, चारों दिशाओं में शिवाओं के शब्दों से गुञ्जायमान कालिका नमस्कार है॥३॥

विरञ्चाधिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीन्, समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥४॥

ब्रह्माविष्णुमहेश तीनों देवता जिसके तीन गुण स्वरूप हैं, तीनों देवता प्रधान रूप से काली की ही आराधना करते है, हे कालिके! तुम अनादि सुरादि मखादि भवादि हो, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥४॥

जगन्मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं, सुहृत्पोषिणीयं शत्रुसंहारणीयम्।
वचः स्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥५॥

हे कालिका! तुम जगत् का मोहन करने वाली हो, तुम ही वाणी रूप से वन्दनीय हो, तुम सुहृदय में रहने वाली हो, तुम ही शत्रुओं का संहार करती हो, तुम ही वाणी का स्तम्भन करती हो, तुम ही उच्चाटन करती हो, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥५॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली, मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात्।
कथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥६॥

तुम ही स्वर्ग प्रदान करने वाली हो, समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाली कल्पवल्ली हो, तुम ही कामनाओं से मन को विजय दिलाने वाली हो, तुम ही यथार्थ को प्रकट करने वाली हो, तुम्हारे कथाओं से सभी नित्य कृतार्थ होते हैं, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥६॥

सुरापानमत्ते! सुभक्तानुरक्ते! लसत्पूतचित्ते! सदाविर्भवस्ते।
जपध्यानपूजासुधाधौतपङ्कः, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥७॥

हे कालिका! तुम सुरापान में सदैव मत्त रहने वाली हो, सुन्दर भक्तों में अनुरक्त रहनेवाली हो, पवित्र चित्त में तुम्हारा सदा आविर्भाव होता है, जप, ध्यान, पूजा सभी अमृत सागर के कमल हैं, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते है॥७॥

चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं, शरच्चन्द्रकोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥८॥

हे कालिका! मन्दमन्दहास्य करती हुई चिदानन्दकन्द शरदकालचन्द्र के समान प्रभापुञ्ज वाली मुनियों कवियों के हृदय में द्योतमान हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥८॥

महामेघकाली सुरक्ताऽपि शुभ्रा, कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥९॥

महामेघ के समान काली सुरक्त-शुभ्र, कभी कभी विचित्र आकृतियों वाली योगमाया, न बाला, न वृद्धा, न कामातुरा ही हो, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥९॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं, मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥१०॥

इस लोक में मेरे हृदय में महागुप्त भाव को प्रकाशित करो, आप के ध्यान करने में चपलता युक्त भाव वाला हूँ, हे कालिके मेरे अपराधों को क्षमा करो, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥१०॥

यदि ध्यानयुक्तः पठेद्यो मनुष्यस्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः॥११॥

इस महास्तोत्र का यदि ध्यान युक्त होकर जो मनुष्य पाठ करता है, वह पूरे संसार में विशाल होकर रहता है, घर में अष्टसिद्धियों को प्राप्त करता है तथा मरने के बाद मुक्ति प्राप्त करता है, हे महादेवि! तुम्हारे स्वरूप को देवता भी नहीं जानते हैं॥११॥

अनेन स्तुतिपाठाख्येन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

काल्याष्टकं परिपूर्णम्

•

प्रार्थना

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥१॥
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥२॥
सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्यावाशरात्मना।
अहंकारोगजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना॥३॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥४॥

सर्वमन्यत् तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै प्रार्थनां समर्पयामि। श्लोकोच्चारणपूर्वक पुष्पाञ्जलि प्रदान करके कर्म का विसर्जन करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता की यह तान्त्रिक विधि केवल प्रत्यङ्गिरा के साधकों के लिए है। इसका अन्यों के लिए कभी प्रयोग नहीं करना चाहिये अन्यथा पुण्य की हानि हो जाती है। अतः सभी से निवेदन है कि इस विधि से यदि साधना करना हो, तो विधिपूर्वक दीक्षादि संस्कार से संस्कृत होकर और विधियों की क्रमिक क्रियाओं को पूर्णतः जान कर तथा पूर्ण रूप से अभ्यास करके ही साधना में प्रवृत्त हो।

ॐ शान्तिः।। ॐ शान्तिः।। ॐ शान्तिः।।

श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणं परिपूर्णम्

●

॥ श्रीः॥

श्रीप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या

वैदिकविधिः

सर्वप्रथम यजमान अपनी पत्नी के साथ शुभमुहूर्त में शुभासन पर बैठ करके तिलक करने के बाद शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे। तीन बार केशव, नारायण और माधव इन तीनों नामों से अलग-अलग आचमन करे। शरीरशुद्ध्यर्थ तथा कर्माधिकारप्राप्त्यर्थ पञ्चगव्य का प्राशन अधोलिखित मन्त्र द्वारा करे।

स्वस्तितिलकधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से तिलक धारण करे—

ॐ युञ्जन्तिंब्ब्रध्नमरुषञ्चरन्तम्परितस्थुषः॥ रोचन्तेरोचनादिवि॥ युञ्जन्त्यस्य काम्म्याहरीव्विपक्षसारथें॥ शोणाधृष्ण्णूनृवाहसा॥

तिलक करने के बाद पञ्चगव्यप्राशन करे—

पञ्चगव्यप्राशनम्—अधोलिखित मन्त्र पाठ करते हुए पञ्चगव्य का प्राशन करे—

ॐ यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामकीम्।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य पिबेत्यग्निरिवेन्धनम्॥

जो त्वचा और अस्थि में रहनेवाले पाप हमारे शरीर में स्थित हैं, वे समस्त पाप जैसे इन्धन को अग्नि भस्म कर देता है, उसी प्रकार इस पञ्चगव्य के पीने से भस्म हो जायँ।

प्रार्थनापूर्वक पञ्चगव्यप्राशन के पश्चात् तीन बार आचमन करे।

त्रिराचमनम्—ॐ केशवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥ ॐ हृषीकेशाय नमः॥ मन्त्र बोलकर हाथ धोये।

पवित्रिधारणम्—अधोलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ॐ पुवित्त्रेस्त्थोवैष्ण्णुव्व्यौसवितुर्व्वः प्प्रसुवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेणपवित्त्रेणसूर्य्यस्य रश्मिम्भिः॥ तस्यतेपवित्त्रपतेपवित्त्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥

पवित्रिकरणम्—पवित्री धारण के पश्चात् तीन बार पुनः आचमन करे। आचमन करने के पश्चात् प्राणायाम करे तथा अधोलिखित मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ॐ केशवः पुनातु॥ ॐ नारायणः पुनातु॥

यज्ञभूमिपूजनम्—हाथ में पुष्पाक्षत लेकर भूमि पूजन करे—

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ॐ यज्ञभूम्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शिखास्पर्शनम्—हाथ से शिखास्पर्श करे—

ऊर्ध्वकेशे विरुपाक्षि मांरा-शोणित-भोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

श्रीगुरुस्मरणम्—अपने श्रीगुरु का ध्यान करे—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ गुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमगुरुभ्यो नमः॥ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥ ॐ मानवौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ सिद्धौघगुरुभ्यो नमः॥ ॐ दिव्यौघगुरुभ्यो नमः॥ सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

हाथ मे अक्षतपुष्प लेकर भद्रसूक्तमन्त्रों का पाठ करे।

स्वस्तिवाचनम्

यजमान हाथ में पुष्प लेकर स्वस्तिमन्त्रों का पाठ करे अथवा ब्राह्मणों के द्वारा कृत स्वस्तिमन्त्रों के पाठ को ध्यानपूर्वक सुने।

ॐ आनोभद्राꣳक्रतवोयन्तुविश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानो यथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे॥१॥ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनोनिवर्तताम्॥ देवानाꣳसख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुꣳप्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्॥ अर्य्यमणंव्वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनꣳसुभगामयस्करत्॥३॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः॥ तद्ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्तदश्विनाशृणु तन्धिष्ण्ण्याय्युवम्॥४॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद् धेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाꣳ स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाꣳ॥ स्वस्तिनस्ताक्र्ष्योऽअरिष्टनेमिꣳस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वामरुतꣳपृश्निमातरꣳशुभंय्यावानोविदथेषुजग्मयꣳ॥ अग्निर्जिह्वा मनवꣳसूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिꣳशृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राꣳ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः ॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्॥ पुत्रासोयत्रपितरो

भर्वन्तुिमानोमुद्ध्यारीरिषुतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः॥ विश्श्वेदेवाऽअदितिःपञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥ यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ मातापितृभ्यां नमः॥ इष्टदेवताभ्यो नमः॥ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥ वास्तुदेवताभ्यो नमः॥ स्थानदेवताभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीङ्गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१॥

विश्वेश (काशी विश्वनाथ), माधव (विष्णु), ढुण्ढि (ढुण्ढिराज गणेश), दण्डपाणि (दण्ड को हाथ में धारण करनेवाले महाकालभैरव), काशी, गुहागंगा, भवानी एवं मर्णिकर्णिका देवी की सदैव वन्दना करता हूँ॥१॥

वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥२॥

सूर्य के स्तर के समान प्रभावाले महाकाय वक्रतुण्ड महागणेश देवता सर्वदा हमारे सभी कार्यों को निर्विघ्न करे॥२॥ (कोटिः=श्रेणिः, यहाँ कोटि का अर्थ श्रेणी या स्तर से है, न कि करोड़ों संख्या से है, कोटिः यहाँ उपमा है।)

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥३॥

सुन्दर मुखवाले, एक दाँतवाले, कपिल वर्णवाले, हाथी के कान के समान कानवाले, लम्बे पेटवाले, विकट शरीरवाले, सभी विघ्नों के नाशक, विनायक गणेश हमारे समस्त विघ्नों का विनाश करें॥३॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥४॥

धूम्रकेत्वादि गणों के अध्यक्ष, ललाट पर चन्द्रमा धारण करनेवाले, हाथी के शिरवाले, गणेशजी के इन बारह नामों का जो पाठ करता है, अथवा सुनता है, उसके समस्त विघ्नों का विनाश हो जाता है॥४॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥५॥

विद्याध्ययन के समय, विवाह-कार्य के समय, गृहप्रवेश के समय तथा यात्रा के प्रस्थान-काल में, संग्राम में, विकट संकट उपस्थित होने पर जो व्यक्ति गणेशजी के बारह नामों का पाठ करता है अथवा स्मरण करता है, उसके कार्य में विघ्न कभी नहीं होते हैं। उसका कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है।।५।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥६॥

सफेद वस्त्र धारण करनेवाले, चन्द्रमा के समान वर्णवाले, चार भुजाओंवाले, प्रसन्न मुखमुद्रावाले, महागणेश का सभी विघ्नों की उपशान्ति के लिए ध्यान करता हूँ।।६।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥७॥

अपने अभीष्ट कार्य की पूर्ति के लिए जिसको देवता तथा दानव दोनों पूजते हैं, उस महागणाधिपति का सभी विघ्नों के हरण के लिए नमस्कार है।।७।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥

सभी प्रकार के विवाहादि मङ्गल कार्यों में मङ्गल के लिए सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, शिव की पत्नी, शरण में आये हुए भक्तों की रक्षा करने वाली, तीन नेत्रोंवाली महागौरी नारायणी को स्तुतिपूर्वक नमस्कार है।।८।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥९॥

जिसके स्मरण करने से सर्वदा सभी कार्यों में किसी भी प्रकार का अमङ्गल नही होता, उन मङ्गलशरीरवाले मङ्गलमूर्ति भगवान् श्रीहरि का सर्वत्र मङ्गल के लिए हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ।।९।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥१०॥

जिनके स्मरण से कार्यारम्भ काल (लग्न) सुदिन (मनोनुकूल) हो जाता है, उसके समस्त नक्षत्रगण बलवान् हो जाते हैं तथा उसे चन्द्रबल प्राप्त हो जाता है, उसे विद्याबल तथा दैवबल प्राप्त हो जाता हैं, उन लक्ष्मीपति श्रीहरि का अपने समस्त शुभ के लिए अपने हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ।।१०।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥११॥

जिसके स्मरण से सदैव लाभ तथा जय होता है, स्मरण करनेवाले भक्त की कभी पराजय नही होती, उन इन्दीवरश्यामल जनार्दन का हृदय में सदैव ध्यान करता हूँ।।११।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१२॥

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हों तथा धनुर्धर पार्थ (अर्जुन) हों वहीं विजयश्री होती है—यह हमारी ध्रुवनीति और दृढ़ मति (निश्चय=दृढ़, मति=बुद्धि) है, अर्थात् निश्चय ही विजय होती है॥१२॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१३॥

जो भक्तजन अनन्य भाव से श्रीहरि को नित्य भजते हैं, उन भक्तों का योग-क्षेम का वहन श्रीहरि स्वयं करते हैं (ऐसा गीता में श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है)॥१३॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१४॥

समस्त प्रकार के कल्याण (हित) के लिए जिनका स्मरण किया जाता है, जिनके स्मरण करने से समस्त प्रकार का हित होता है, उन अजन्मापुरुष श्रीहरि का अपने हृदय में नित्य ध्यान करता हूँ॥१४॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१५॥

सभी कार्यों के आरम्भ काल में तीनों भुवन भूलोकभुवर्लोकस्वर्लोक के तीनों स्वामी ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर तथा दिशाओं के अधिपति के स्मरण करने से समस्त कार्यों की सदैव ही सद्यः सिद्धि होती है।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

प्रधानसङ्कल्पः

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया **प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां,**

भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल अशुभदृष्टिसमस्तदु:खञ्च निवृत्तिपूर्वकसकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दु:खानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानां कृत-यन्त्रमन्त्रतन्त्रदिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहे वास्त्वादिदोषानां उपशान्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरि-पूर्तिपूर्वकसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं वैदिकविधिना पुरश्चरणं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये।

पुन: हाथ में जल लेकर—**तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारा-पूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं आचार्यादिवरणानि च करिष्ये।**

पुन: हाथ में जल लेकर—**तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयो: पूजनं करिष्ये।**

सङ्कल्प करने के बाद गणेशाम्बिकापूजन करे, दो पात्रों में अक्षत भर कर अष्टदल कमल निर्मित करके उस पर गोमय मय लिङ्गरूप गौरी तथा फलमय लिङ्गरूप गणेश की स्थापना करके हाथ में पुष्प लेकर महागणपति का ध्यान करे।

गणेशाम्बिकापूजनम्

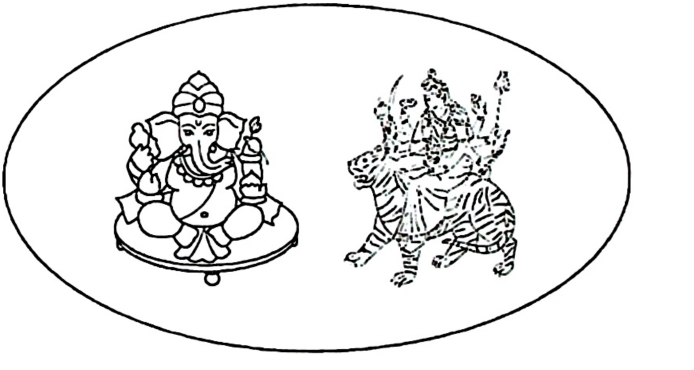

हाथ में अक्षत लेकर महागणपति का आवाहन करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नम: ऋद्धिसिद्धि-सहितायमहागणाधिपतिं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥१॥

एक दाँतवाले, शूप के आकार के कानवाले, हाथी के सिर के समान सिरवाले, चार भुजाओं को धारण करनेवाले, पाश-अंकुश धारण करनेवाले, समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाले सिद्धिविनायक श्रीगणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

ध्यायेत्गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥२॥

हाथी के मुख के समान मुख वाले, तपे हुए सोने के समान आभावाले, चार भुजाओं वाले, महान् शरीरवाले, सभी आभूषणों से सुशोभित गजानन देवता का ध्यान करता हूँ॥२॥

हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः॥३॥

हे हेरम्ब! अम्बिका और त्र्यम्बक के पुत्र सिद्धि तथा बुद्धि के पति, तीन नेत्रोंवाले, समस्त लक्ष तथा लाभ के स्वामी महागणेश का ध्यान करता हूँ॥३॥

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरस्वधैः॥४॥

नाग के समान मुखवाले, नाग (नागसंज्ञक पवित्रक=यज्ञोपवीत) धारण करनेवाले, गणों के मालिक, चार भुजाओंवाले, दिव्य आयुधों से विभूषित, पाश तथा अंकुश को धारण किये हुए महागणेश का ध्यान करता हूँ॥४॥

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे॥५॥

हे देव! अपने यज्ञ की रक्षा के लिए तथा पूजा करने के लिए आवाहन करता हूँ, यहाँ आकर पूजा ग्रहण करें तथा हमारे यज्ञ की रक्षा करें॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ऋद्धिसिद्धिसहितं महागणाधिपतिमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर महागौरी का ध्यान करे—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः महागौरीं ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में अक्षत लेकर महागौरी का आवाहन करे—

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमालय की पुत्री, वर प्रदान करनेवाली शङ्कर की प्रिया (अर्द्धाङ्गिनी) देवी, लम्बोदर गणेश की जननी, भगवती महागौरी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुव:स्व: महागौर्यै नम: महागौरीमावाहयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्॥

गणेशाम्बिका सुप्रतिष्ठित तथा वर प्रदान करनेवाले हों।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिता: सुप्रतिष्ठिता: सन्निहिता: वरदा: भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुष:सहस्राक्ष:सहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन देवताओं के द्वारा अग्रपूजित गणेश ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र ग्रहणकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुष:॥ पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

हे भक्तवत्सल विघ्नराज भगवान् गणेश! सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त पाद्य ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

हे करुणाकर गणाध्यक्ष! गन्ध-माला-अक्षत से युक्त फल के सहित अर्घ्य को ग्रहण करें, आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः॥

विनायकं नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

देवताओं से अभिवन्दित देवेश विनायक को नमस्कार है, हे प्रभु विनायक गणेश! आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्श्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्म्याश्श्चये॥

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करनेवाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाᳬंसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वमलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुन: आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पय: पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न, सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ का कारक, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्क्राब्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽ आयूᳬंषितारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीन्नःसन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्थिवᳬरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पति र्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्गावोभवन्तुनः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए अपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳪरसमुद्द्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम्॥ अपाᳪरसस्य्यो रसस्तंव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करनेवाला, शुभ और पुष्टि को प्रदान करनेवाला, दिव्यशर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

गङ्ग च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥

ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउत्श्रेयान्भवतिजायमानः।
तंधीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंयज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ग्रेविश्श्वरूपᳬंसंव्ययस्वविभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत पकड़कर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्यैतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्व्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादᳬंहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

पूर्वकाल में प्रजापति ब्रह्मा ने सहज ही परम पवित्र यज्ञोपवीत का निर्माण किया था, वह शुभ्र यज्ञोपवीत शरीर में बल, मन में तेज तथा ओज और सबसे पहले आयुष्य प्रदान करता है, वह यज्ञोपवीत हे देव! आपको प्रसन्नता के लिए समर्पित है।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण गणनायक॥

नवतन्तुओं से निर्मित, त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मैं आपको समर्पित करता हूँ, हे गणनायक! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मा॒ऽअरं॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑यु॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑थाच नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गं॑न्ध॒र्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पतिः॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॒विद्वान्य क्ष्मा॑दमुच्च्यत॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दन लेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपके प्रसन्नता के लिए आपको समर्पित है, हे देवश्रेष्ठ! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्प्रा॒नवि॑ष्ठ्ठयाम॒ती योजा॒न्विन्द्र॒तेह॒री॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर गणेश! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओष॑धीः॒प्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प्य॑वतीः॒प्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॒ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुधः॑- पारयि॒ष्ण्णवः॑॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के सुगन्धित पुष्पों के द्वारा निर्मित माला आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे देव! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒परु॑षः॒परुष॒ष्प्परि॑॥ एवानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नु॒सह॒स्रेण॑श॒तेन॑च॥

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान्मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

अमृतरूपी मङ्गल प्रदान करनेवाले सुन्दर हरे-हरे दूर्वा के अङ्कुर आपकी पूजा के लिए लाया हूँ, हे गणनायक देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः॥ हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारुप्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। धूपदीप जला करके नैवेद्य समर्पित करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः॥ देवानामसि वह्नितमᳬं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धो में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निःस्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःसूर्य्यःस्वाहा॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चःस्वाहा॥ ज्ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्ज्योतिःस्वाहा॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥१॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥२॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मदेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥१॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि-दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य-भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करें और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनातेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्च्युतः॥

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से सम्पृक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादि-नागवल्लिदलयुक्तताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्श्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳहसः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान् करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीं द्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से निकले हेमबीज के समान (सुवर्ण के सदृश) शोभायमान अनन्त पुण्य फल को प्रदान करनेवाला, शान्ति प्रदान करनेवाली, सुवर्णमयी दक्षिणा ग्रहणकर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवॅव्रजः पितुरप्रायिधामभिः॥ दिवःसदांसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्त्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदॅहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरॅसर्व्वगणंस्वस्तये॥ आत्मसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनिः॥ अग्निःप्प्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहणकर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधःकृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥१॥

जन्म-जन्मान्तर में किये हुए सभी प्रकार के पाप एक-एक कदम देव प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते है॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अतः अपने जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों में विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥१॥

हे गणों के अध्यक्ष! रक्षा करें-रक्षा करें, हे त्रिलोकी के रक्षक! हमारी रक्षा करें, भक्तों को अभय प्रदान करनेवाले हमारे लिए इस भवसागर से त्राता हो जायें॥१॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥२॥

हे कृपासिन्धु, दो माताओं से उत्पन्न, हे छ: माताओं वाले स्कन्द के अग्रज! वर प्रदान करने वाले वरदाता! हमारी वांछित कामनाओं के लिए वांछित वर प्रदान करें॥२॥

अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

इस प्रकार फल के सहित अर्घ्य ग्रहण करके कामनापूर्ति रूपी फलप्रदाता सदा हमारे लिए हो जायें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों सें पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥१॥

हे विघ्नों को नष्ट करनेवाले विघ्नेश्वर! वरप्रदान करनेवाले वरदाता, देवताओं के प्रिय, लम्वे पेटवाले लम्बोदर, समस्त जगत् का हित करनेवाले, हाथी के आनन (सिर) वाले, श्रुतियों में वर्णित यज्ञवाले श्रुतियज्ञ, विभिन्न शोभाओं से विभूषित, गौरी के पुत्र गणों के स्वामी आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है॥१॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥२॥

भक्तों के आर्त (दीनता) को नाश करने वाले, परब्रह्म गणेश्वर, सर्वेश्वर, समस्त शुभों के प्रदाता, देवताओं के ईश्वर, समस्त विद्याओं को धारण करने वाले विद्याधर, विकट वामस्वरूप, भक्तों पर प्रसन्न रहने वाले वर प्रदान करने वाले गणेश्वर आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है॥२॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नम:।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नम:॥३॥

हे गणेश्वर! आपको ब्रह्मरूप में नमस्कार है, विष्णुरूप में नमस्कार है, रुद्ररूप में नमस्कार है तथा हस्तिमुखरूप (हाथी के मुख के रूप) में नमस्कार है॥३॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥४॥

विश्वरूप के स्वरूपवाले गणेश आपको नमस्कार, ब्रह्मचारी रूपवाले गणेश आपको नमस्कार, भक्तों का प्रिय करनेवाले देव, विनायक गणेश आपको नमस्कार है॥४॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥५॥

सदैव मोदकप्रिय (खाने में लड्डू से प्रेम करनेवाले) लम्बोदर गणेश नमस्कार है, आप सदैव सभी कार्यों में सर्वदा हमें निर्विघ्न करें॥५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥६॥

हे गणेश! आप विघ्नों का विनाश करनेवाले हैं, शत्रुओं का दलन करनेवाले हैं, सुन्दरों में सुन्दर, भक्तों का प्रिय करनेवाले हैं, भक्तों को सदैव सुख प्रदान करनेवाले हैं, समस्त यज्ञफलों को प्रदान करनेवाले हैं, विद्या (ज्ञान) प्रदान करने वाले हैं, समस्त अघों का हरण करनेवाले हैं, आपका जो स्तवन करते हैं, उनको नित्य ही वर प्रदान करनेवाले होते हैं॥६॥

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥७॥

गणेश के पूजन में जो कर्म कम अथवा अधिक किया गया हो, उन सभी कर्मों से सर्वात्मा गणेश हमारे ऊपर सदैव प्रसन्न हों।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य॥१॥

शरण में आये हुए भक्तों के पीड़ा का निवारण करनेवाली देवी हमारे ऊपर प्रसन्न होइये, सम्पूर्ण जगत् की जननी हम पर प्रसन्न हो जाइये। हे विश्वेश्वरि! विश्व का त्राण करें। हे देवि! तुम्हीं चराचर विश्व की अधिष्ठात्री हो॥१॥

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा, यत्राऽरयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये, तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥२॥

हे देवी! जहाँ दैत्य, भयंकर विषधर सर्प, शत्रुओं, लुटेरों के समुदाय और दावाग्नि हो, वहाँ तथा समुद्र के बीच मे नित्य निरन्तर साथ रहकर निरन्तर कल्याण करती हो, वैसे ही हमारा कल्याण करो॥२॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।

स्फुरत्काञ्ची-शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्॥३॥

मुख में ताम्बूल, दोनों आँखों में काजल धारण की हुई, गले में मौक्तिक मणि की माला धारण की हुई, सुवर्ण के समान साड़ी धारण की हुई, कमर में करधनी शोभित करती हुई, पर्वत की पुत्री महागौरी को सतत (बिना विराम किये) भजता हूँ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकं स्तुतिपाठं समर्पयामि।

गणेशाथर्वशीर्षपाठः

ॐ लँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षदात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानम्। अव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयः। त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयः। त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा। त्वं विष्णुः। त्वं रुद्रः। त्वं इन्द्रः। त्वं अग्निः। त्वं वायुः। त्वं सूर्यः। त्वं चन्द्रमा। त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यं रूपम्। विन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिः देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनासिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

ॐ लँ (पृथ्वीतत्त्व) स्वरूपवाले गणपति के लिए नमस्कार है, तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्त्व स्वरूप हो, एक तुम्हीं संसार के कर्त्ता हो, एक तुम्हीं संसार के धर्ता हो, एक तुम्हीं

संसार का संहार करनेवाले हो, एक तुम्हीं सभी में ब्रह्मरूप हो, एक तुम्हीं साक्षात् आत्मस्वरूप हो। एक तुम्हीं नित्य हो, ऋत कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, तुम ही मुझमें हो, तुम ही वक्त्र में हो। तुम ही श्रोत्र में हो, तुम ही दाता हो, तुम ही धारण करते हो, तुम ही नीचें में हो, तुम ही शिष्य में हो, तुम ही बाद में हो, तुम ही चारों तरफ हो, तुम ही उत्तर दिशा में हो। तुम ही दक्षिण दिशा में हो, तुम ही ऊपर की तरफ हो, तुम ही आधार में हो, सर्वत्र सभी तरफ से हमारी रक्षा करो, पूर्णरूप से रक्षा करो, तुम ही वाणीरूप हो, तुम ही चिन्मयरूप हो, तुम ही आनन्दस्वरूप हो, तुम ही ब्रह्मस्वरूप हो, तुम ही अद्वितीय सच्चिदानन्द स्वरूप हो, तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्मा हो, तुम ही ज्ञानस्वरूप, विज्ञानस्वरूप हो, तुम से ही समस्त जगत् तत्त्वस्वरूप से उत्पन्न होता है, तुममें ही समस्त जगत् अवस्थित है, तुममें ही समस्त जगत् का लय होता है, समस्त जगत् तुममें ही प्रतीत होता है, तुम ही भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाशस्वरूप हो, तुम ही परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी चार वाणी स्वरूप हो, तुम ही सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों से अतीत (त्रिगुणों के पूर्व के) हो, तुम ही काल से भी (अतीत) पहले के हो, तुम ही तीनों शरीर (सूक्ष्म, कारण, स्थूल) से (अतीत) पहले के हो, तुम ही नित्य मूलाधार में स्थित हो, तुम ही तीन प्रकार की शक्तियाँ सत्त्व-रज-तमात्मक महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यात्मक तथा ओज, तेज, बलस्वरूप हो, तुम्हारा ही योगीजन नित्य ध्यान करते हैं, तुम ही ब्रह्मा हो, तुम ही विष्णु हो, तुम ही रुद्र हो, तुम ही इन्द्र हो, तुम ही अग्नि हो, तुम ही वायु हो, तुम ही सूर्य हो, तुम ही चन्द्रमा हो, तुम ही ब्रह्म भूर्भुवः स्वः हो, तुम ही गणों में पूर्व उच्चार्य हो (वर्णों में सर्वप्रथम उच्चारण होता है अर्थात् ॐकारस्वरूप), तुम ही अनुस्वार तथा अनुस्वार के बाद आने वाले विसर्ग स्वरूप हो, तुम ही अर्धेन्दु से लसित (अर्धचन्द्र स्वरूप से युक्त अर्द्धचन्द्र अर्थात् सानुनासिकानुस्वार) हो, तुम ही तार (प्रणव) से रुद्ध (युक्त) हो, इस प्रकार तुम ही मनुष्य स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही गकार वर्णरूपी पूर्व (आगे आनेवाले प्रथम वर्ण) स्वरूप हो, गं बीज में तुम ही अकारस्वरूप मध्यम वर्णरूप हो, गं बीज में अनुस्वार वर्णरूपी तुम ही अनुस्वारस्वरूप (अन्त्य में आनेवाला वर्ण) हो, तुम ही उत्तररूप बिन्दु स्वरूप हो, तुम ही नादस्वरूप सन्धानयोग्य हो, तुम ही संहिता में सन्धिस्वरूप हो, तुम ही वह इस प्रकार की गणेश विद्या हो, तुम ही गणकसंज्ञक ऋषि हो, तुम ही निचिद् गायत्री (गायत्री छन्द से पहले का छन्द) स्वरूप हो, तुम ही महागणपति देवता हो, तुम ही ॐ गं गणपतये मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् गायत्री मन्त्रस्वरूप हो, तुम ही एकदन्त (एक दाँत वाले), चतुर्हस्त (चार हाथों-वाले) हो, तुम ही चारों हाथों में पाश, अंकुश, अभय और वरद धारण करनेवाले हो, तुम ही मूषक ध्वजा से शोभायमान हो, तुम ही लाल, लम्बे उदरवाले, सूप जैसे कर्ण वाले और लाल वस्त्र धारण करने वाले हो, तुम ही अंगों में

रक्त गन्ध का अनुलेपन करने-वाले हो, तुम ही रक्त पुष्पों से सुपूजित हो, तुम ही भक्तों पर अनुकम्पा करनेवाले हो, तुम ही जगत्कारणस्वरूप अच्युत देव हो, तुम ही सर्वप्रथम सृष्टि के आदि में आविर्भूत होकर प्रकृति-पुरुष स्वरूप हो, इस प्रकार जो योगी नित्य ध्यान करता है, वह योगी योगियों में वरण योग्य होता है, व्रतों (तपस्या के नियमों) के पति तुम्हें नमस्कार है, गणों के स्वामी तुम्हें नमस्कार है, प्रमथादि गणों के मालिक तुम्हें नमस्कार है, लम्बोदर को नमस्कार है, एकदन्त को नमस्कार है, हे वि नों के विनाशक शिव के पुत्र श्रीवरदमूर्ति नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, वारम्बार नमस्कार है।

गणेशाथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्

एतदथर्वशिरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च विन्दति। इद अथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति। इत्यथर्वणमहावाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति! यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति स भेधावान्भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद॥

इस प्रकार अथर्वशीर्ष का जो पाठ करता है, वह ब्रह्मत्व की कल्पना करके ब्रह्मरूप हो जाता है, उसे कोई भी विघ्न बाधा नहीं पहुँचाते, वह सर्वत्र ही सुख पाता है, वह पाँच प्रकार के महापातक (महापाप), पातक (पाप), उपपातक (उपपाप) से छूट जाता है, सायंकाल पाठ करने से दिन भर का किया हुआ पाप नष्ट हो जाता है, प्रात:काल पाठ करने से रात्रिकाल में किये गये पाप नष्ट हो जाते हैं, इस अर्थर्वशीर्ष का सायंप्रात: पाठ करने से पाठकर्ता अपाप (निष्पाप) हो जाता है, सदा सर्वत्र पाठ करनेवाला सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है और उसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्राप्त होता है, इस अथर्वशीर्ष को अशिष्य को कभी नहीं देना चाहिए, यदि मोहवश कोई अशिष्य को देता है, तो वह पापी होता है, सहस्र आवृत्ति पाठ करने से जो-जो कामनाएँ होती हैं, उन-उन कामनाओं की पूर्ति होती है, इस प्रकार से जो महागणपति का अभिसिंचन करता है वह वाणी का पति हो जाता है, चतुर्थी तिथि को

सूर्योदय से सूर्योदयपर्यन्त अनवरत जपने से जप करने वाला विद्यावान् (ज्ञानवान्) हो जाता है, इस अथर्वशीर्ष का महावाक्य ब्रह्मविद्या (ब्रह्मत्व प्राप्ति) आचरण की विद्या है, इसमें भेद कभी नहीं मानना चाहिये, जो दुर्वाङ्कुरों से अर्चन करते हैं वे वैश्रवणोपम होते हैं, जो लाजा (लावा) से अर्चन करता है, वह यशोवान् होता है, वह मेधावान् होता है, जो सहस्र मोदक (लड्डूओं) से अर्चन करते हैं वे अपनी अभिलषित कामनाओं की पूर्ति करते हैं, जो घी के साथ समिधा से हवन करते हैं, वे सभी कुछ प्राप्त कर लेते हैं, आठ ब्राह्मणों को पूर्णरूपेण ग्रहण कराने से सूर्य के वर्चस्व वाला होता है, सूर्यग्रहण के समय में महानदी में (समुद्रगामिनी नदी में) प्रतिमा (मूर्ति) के सांनिध्य में जपने से मन्त्र सिद्ध होता है, वह महाविघ्नों से छूट जाता है, वह महापापों से भी छूट जाता है, वह महादोषों से छूट जाता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है, यही परम महाज्ञान है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

समर्पण के बाद देव्याथर्वशीर्ष का पाठ करे।

देव्याथर्वशीर्षपाठः

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥

सभी देवता देवी के समीप जाकर नम्रतापूर्वक पूछने लगे, हे महादेवि! तुम कौन हो?॥१॥

साब्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥

इस प्रश्न के उत्तर में महादेवी ने कहा—मैं ब्रह्मस्वरूपा हूँ, मुझसे प्रकृति-पुरुषरूप सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है॥२॥

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्मा ब्रह्मणीवेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥

मैं आनन्द और अनानन्दरूपा हूँ, मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ, अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म (ब्रह्म से भिन्न माया) भी मैं ही हूँ, मैं ही पञ्चमहाभूत तथा विश्व में व्याप्त पञ्चभूत हूँ, मैं ही सम्पूर्ण जगत् स्वरूप हूँ॥३॥

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक् चाहम्॥४॥

वेद (ज्ञान) और अवेद (अज्ञान) मैं ही हूँ, विद्या (ब्रह्मज्ञान) और अविद्यारूप (माया) भी मैं ही हूँ। मैं अजा (जन्म न लेनेवाली मूलप्रकृति) और अनजा (जन्म लेनेवाली माया) भी हूँ, नीचे ऊपर तथा अगल-बगल भी मैं ही हूँ॥४॥

अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥

मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में सञ्चार करती हूँ, मैं आदित्यों और विश्वेदेवों के रूपों में विचरण करती हूँ, मैं मित्र और वरुण दोनों देवताओं का भरण-पोषण करती हूँ, मैं ही इन्द्र, अग्नि तथा दोनों अश्विनीकुमारों का भी भरण-पोषण करती हूँ।।५।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।६।।

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग देवता को भी धारण करती हूँ। त्रैलोक्य को आक्रान्त करनेवाले विस्तीर्ण पादप्रच्छेप करनेवाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ।।६।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति।।७।।

मैं ही यजमान के द्वारा अग्नि में दिये गये विधिपूर्वक हवि को तथा सोमरस निकालने वाले यजमान के लिए धन को धारण करती हूँ, मैं ही सम्पूर्ण (राष्ट्र) जगत् स्वरूपा हूँ, वसुओं की कामनाओं से यजन करनेवालों को धन प्रदान करती हूँ, मैं ही ब्रह्मरूप और यज्ञार्हों में मुख्य रूपा हूँ, मैं ही आत्मस्वरूप पर आकाशादि निर्माण करती हूँ, मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करनेवाली बुद्धिवृत्तियों में है, ऐसा इस प्रकार से जो जानता है, वह दैवी सम्पत्ति (समस्त सिद्धियों समस्त निधियों) को प्राप्त करता है।।७।।

ते देवा अब्रुवन्—तब उन देवताओं ने कहा—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।८।।

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिव की पराशक्ति शिवा को नमस्कार है, मूलप्रकृति देवी को नमस्कार है, सबका कल्याण करने वाली भद्रा देवी को नमस्कार है, नियति देवी (जगत् को नियन्त्रित करनेवाली) को नमस्कार है, सभी रूपोंवाली देवी को बारबार प्रणाम है। गुणसाम्यावस्थारूपिणी मङ्गलमयी देवी को नमस्कार है, नियमयुक्त होकर प्रणाम करते हैं।।८।।

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।९।।

उस अग्निवर्ण वाली, तपस्या से उद्दीप्तमान दीप्तिमती कर्मफल की कामना से यजन की जानेवाली दुर्गा देवी की हम शरण में हैं, असुरों का नाश करनेवाली देवी को नमस्कार है।।९।।

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।१०।।

जिस विश्वरूपा देवी के कारण देवता लोग वाणीवान् होते हैं अर्थात् जिसे वैखरीरूप से बोलते हैं, वह कामधेनुसदृश आनन्ददायक और अन्न तथा बल देनेवाली वाग्रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से सन्तुष्ट होकर हमारे समीप आकर दर्शन दे॥१०॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥

काल का भी नाश करने वाली, वेदों द्वारा स्तुति की गयी विष्णुशक्ति, स्कन्दमाता (शिवशक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता (अदिति) और दक्षकन्या (सती), पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं॥११॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥

हम उस महालक्ष्मी को जानते है और उस सर्वशक्तिस्वरूपिणी का ही ध्यान करते हैं। वह ही देवी हमें उस विषय (ब्रह्मज्ञानादि ध्यान) में प्रवृत्त करे॥१२॥

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबान्धवः॥१३॥

हे दक्ष! आपकी जो कन्या अदिति हैं, वे प्रसूता हुई और उनसे मृत्युरहित कल्याणमय देव उत्पन्न हुए हैं॥१३॥

कामोयोनिः कमला वज्रपाणिः गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥१४॥

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि (ल), गुहा (ह्रीं) ह-स वर्ण, मातरिश्वा वायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं), स, क, ल, वर्ण और माया (ह्रीं) यह सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और वह ब्रह्मस्वरूपिणी है॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्वाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥१५॥

इस प्रकार की यही आत्मशक्ति है, ये ही विश्वमोहिनी महामाया है, ये पाश, अंकुश, धनुष और बाण धारण करनेवाली है, ये ही श्रीसंज्ञक महाविद्या है, जो ऐसा जानता है, वह शोकों को पार कर जाता है॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥

हे भगवति! तुम्हें नमस्कार है, हे मातः! हम सभी की सभी प्रकार से सर्वत्र रक्षा करें॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरारक्षांसि पिशाचाः यक्षाः सिद्धाः। सैषा

प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतीषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥१७॥

वे ही अष्टवसु हैं, वे ही एकादश रुद्र हैं, वे ही द्वादश आदित्य हैं, वे ही विश्वेदेव हैं, वे ही सोमरस पान करनेवाले देवता हैं, वे ही सोम रस का पान न करने वाले असुर हैं, वे ही यातुधानों, असुरों, पिशाचों, यक्षों और सिद्धों से रक्षा करती हैं, वे ही सत्त्व-रज-तम त्रिगुणरूप हैं, वे ही ब्रह्म-विष्णु-रुद्ररूप हैं, वे ही प्रजापति, इन्द्र तथा मनु हैं, वे ही ग्रहनक्षत्रज्योतिस्वरूप हैं, वे ही कलाकाष्ठादियों में कालरूप हैं, उन सार्वभौम सर्वव्याप्त देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१७॥

पापापहारिर्णीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१८॥

वे ही पाप से छुटकारा दिलानेवाली हैं, वे ही देवी भुक्ति और मुक्ति दोनों को प्रदान करती हैं, उन अन्तरहित, विजयाधिष्ठात्री, निर्दोष, शरण लेने योग्य, कल्याणदात्री और मङ्गलरूपिणी देवी को नित्य सदैव ही प्रणाम करता हूँ॥१८॥

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१९॥

वियत्-आकाश (ह) तथा (ई) कार से संयुक्त वीतिहोत्र-अग्नि (र) सहित, अर्धचन्द्र (ँ) से अलंकृत जो देवी का बीज है, वह सब कामनाओं तथा मनोरथों को पूर्ण करनेवाला है॥१९॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥२०॥

इस प्रकार इस एकाक्षर (ह्रीं) स्वरूप का यतिमुनि साधक जन ध्यान करते हैं, जिनका चित्त शुद्ध है, जो निरतिशयानन्दपूर्ण और ज्ञान के सागर हैं। (यह मन्त्र देवी का प्रणव कहा जाता है। ॐकार के समान ही यह भी व्यापक है। संक्षेप में इसका अर्थ इच्छा-ज्ञान-क्रिया के आधार अद्वैत, अखण्ड, सच्चिदानन्द, समरसीभूत, शिवशक्त्यात्मक है)॥२०॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टात्तृतीयकः ॥२१॥
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२२॥

वाणी (ऐं), माया (ह्रीं), ब्रह्मसू काम (क्लीं), इसके बाद छठवाँ व्यञ्जन अर्थात् (च) वर्ण, वही वक्त्र अर्थात् आकार से युक्त (चा), सूर्य (म), अवाम श्रोत्र अर्थात् दक्षिण कर्ण (उ), और बिन्दु अर्थात् (आ) से मिश्रित (डा), वायु (य) अधर अर्थात्

(ऐं) से युक्त (यै) और विच्चे यह नवार्ण मन्त्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मसायुज्य देनेवाला है। (इस मन्त्र का अर्थ यह है कि हम चित्स्वरूपिणी महासरस्वती-सद्रूपिणी महालक्ष्मी-आनन्दरूपिणी महाकाली, ब्रह्मविद्या पाने के लिए सदैव समय ध्यान करते हैं। हे महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी हे चण्डिका देवि! तुम्हें नमस्कार है। अविद्यारूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर मुझे मुक्त करो)॥२१-२२॥

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्॥२३॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।

हृत्कमल के मध्य में रहनेवाली, प्रातःकालीन सूर्य के समान प्रभाववाली, पाश और अङ्कुश धारण करनेवाली, मनोहर रूपोंवाली, वरद और अभयमुद्रा धारण किये हुए हाथोंवाली, तीन नेत्रों से युक्त, रक्त वस्त्र परिधान करनेवाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाली महादेवी को भजता हूँ॥२३॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्॥२४॥
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।

हे महादेवि! महाभय का नाश करनेवाली, महासङ्कट को शान्त करनेवाली और महान् करुणा की साक्षात् मूर्ति को नमस्कार करते हैं॥२४॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोप लभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥२५॥

जिसका स्वरूप ब्रह्मादि नहीं जानते, इसलिए अज्ञेया कहते हैं, जिसका अन्त कभी नहीं होता, इसलिए जिसे अनन्ता कहते हैं, जिसका लक्ष्य दीख नहीं पाता, इसलिए अलक्ष्या कहते हैं, जिसका जनन नहीं होता है, इसलिये अजा कहते हैं, एक ही सर्वत्र उपस्थित है (एक ही रूप में होने से), इसलिए एका कहते हैं, जो सर्वत्र अकेली ही विश्वरूप हैं, इसलिए नैका कहते हैं, वह इसीलिए अज्ञेया, अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका और नैका कहलाती है॥२५॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी॥२६॥

जो महादेवी सभी मन्त्रों में मातृका रूप (मूलाक्षर) है, शब्दों में ज्ञान (अर्थ) रूप से जो व्याप्त है, ज्ञानों में जो चिन्मयातीता है, शून्यों में शून्यसाक्षिणी हैं॥२६॥

यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्॥२७॥

नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।

जिनसे कुछ भी अन्य श्रेष्ठ नहीं है, वही दुर्गा नाम से प्रसिद्ध हैं, उस दुर्विज्ञेय (वहुत कठिनाई से जाना जाता है), दुराचारनाशक (अव्यवहारों को नष्ट करनेवाली), संसारसागर से तारनेवाली देवी को संसार से डरे हुए हम नमस्कार करते हैं।।२७।।

देव्याथर्वशीर्षपाठमाहात्म्यम्

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं-प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति, शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः॥२८॥

इस अथर्वशीर्ष का जो अध्ययन तथा पाठ करता है, वह पाँचों अथर्वशीर्ष के पाठ-जपादि का फल प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्ष को विना जाने जो अर्चनपूजनादि करता है, वह सैकड़ों-लाखों बार भी अर्चन-पूजन करता है, तो भी उसे सिद्धि नहीं मिलती है। एक सौ आठ बार पाठ करना ही इस अथर्वशीर्ष का पुरश्चरण कहा गया है।।२८।।

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापं प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥२९॥

इस अथर्वशीर्ष का दश बार पाठ जो करता है, वह पूर्ण रूप से पापों से मुक्त हो जाता है और महादेवी का कृपाप्रसाद प्राप्त करके महानतम दुर्गम कठिनाइयों को भी पार कर जाता है।।२९।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद॥२९॥

सायंकाल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है, वह दिन भर के किये गये पापों से छूट जाता है। प्रातःकाल जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता हैं वह रात्रिकालीन किये गये पापों से छूट जाता है। जो इस अथर्वशीर्ष का सायंकाल तथा प्रातःकाल पाठ करता है, वह पूर्णतः पापों से हीन हो कर पुण्यवान् हो जाता है। निशाकाल में तुरीय सन्ध्या के समय (अर्धरात्रि के समय) जो इस अथर्वशीर्ष का पाठ करता है, उसके वाणी की सिद्धि हो जाती है, नूतन प्रतिमा में जो इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करता है वह इष्ट देवता का सानिध्य प्राप्त करता है, प्राण-प्रतिष्ठा के समय इस अथर्वशीर्ष का पाठ करने से प्राणों की प्रतिष्ठा होकर चैतन्यता आती है। भौमवार को अश्विनी नक्षत्र पड़ने पर जो लोग इस अथर्वशीर्ष का अष्टोत्तरशत पाठ करते हैं, वे महामृत्यु को भी

पार कर जाते हैं, वह महामृत्यु को भी पार कर जाते हैं, यही वेद (शाश्वत ज्ञान) है, यही ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।।२९।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पराम्बिकायै नमः स्तुतिपाठं समर्पयामि।

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण गणेशाम्बिकापूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम॥

श्रीगणेशाम्बिकापूजनं परिपूर्णम्

स्वस्तिकलशस्थापनम्

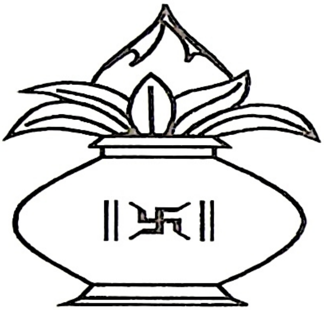

भूमिस्पर्श—**ॐ मुहीद्यौः पृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोभरीमभिः॥**

सप्तधान्य बिखेरना—**ॐ ओषधयुःसमवदन्तसोमेनसुहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजिंघ्रकुलशंमुह्यात्वाविशुन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसुहस्रंधुक्ष्वोरुधाराुपर्यस्वतीपुनुर्म्माविशताद्रयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भुसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतुसदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धुर्वाऽअखनुँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहुस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधि डाले—**ॐ याओषधीःपूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बभ्रुणामुहꣳशतंधामानि सुप्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषुष्परि॥ एवानो दूर्वेप्प्रतनुसुहस्रेण शुतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वुत्थेवोनिषदनंपुर्णेवोवसुतिष्कृता॥ गोभाजुऽइत्किलासथुयत्सुनवथुपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पुवित्रेस्त्थोवैष्ष्णुव्यौसवितुर्व्वःप्प्रसुवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पुवित्रेणसूर्य्यस्यरुश्श्मिभिः॥ तस्यतेपुवित्रपतेपुवित्रपूतस्युयत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षुरानिवेशनी॥ यच्छानुः शर्म्मसुप्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफुलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहुस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चुन्त्वःहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरुग्ग्निर्हुव्यान्यक्रमीत्॥ दधुद्द्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरुण्ण्यगुर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्म्मैदेवायहुविषाविधेम॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासुहशर्म्मवरूथमासदुत्त्स्वः॥ वासोअग्ग्ने विश्श्वरूपःसंव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनुरापत॥ वुस्नेवुविक्क्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जःशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफुलिनीर्य्याऽअफुलाऽअपुष्प्पायाश्श्चपुष्प्पिणीः॥ बृहुस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चुन्त्वःहसः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन, पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानुस्तदा-शास्तेयजमानोहुविर्भिः॥ अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशःसमानुऽआयुःप्प्रमोषीः॥**

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्युबृहुस्प्पतिर्य्युज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्युज्ञःसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइुहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।
इस जल में वरुण अपने आयुधशक्तिपरिवार सहित आकर स्थित हों।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित होता है, उसे कलश कहते हैं।।१।।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं।।२।।

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित है। अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं।।३।।

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं।।४।।

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ है, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वे सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों।।५।।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षयकारक हों तथा हमारे समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों।।६।।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें।।७।।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें, हमारे यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें।।८।।

स्वस्तिकलशपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर वरुणदि देवताओं का ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर, आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्श्चक्क्रेवायव्यानारण्याग्राम्म्याश्श्चये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथां से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचःसामानिजज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयः पात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दुधिक्क्राब्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनंः॥ सुरुभिनोमुखाकरुत्त्प्रणऽ आयूंषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्युधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहुव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायुतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीन्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्त्पार्थिवरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोव्वनुस्प्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तुसूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाᳬरसमुद्द्वयसᳬसूर्य्येसन्तᳬसमाहितम्॥ अपाᳬरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णा म्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनुद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्श्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽ अजावयः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्श्चये॥ ॐ सुजातोज्ज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्त्स्वः॥ वासोअग्ग्रेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिव मातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्तिकिम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥ ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोर्वाचीसुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येभ्यस्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपोजनयथा च नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीःप्प्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ण्णवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषुष्प्परि॥ एवानोदूर्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिंरिवभोगैः पर्ध्येतिबाहुंज्यायाहेतिंप्परिबाधमानः॥ हुस्तग्घ्नोव्विश्श्वावयुनानिव्विद्द्वान्पुमान्पुमांᳫंसंपरिपातुव्विश्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण के बाद नैवेद्य देवता के सामने रख करके धूपदीप प्रज्वलित करके धूप दिखाये।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पुद्भ्याᳫंशूद्रोऽअजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंध्धूर्व्वतंयोऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसिव्वह्नितमᳫंसस्नितमंपप्प्रितमंजुष्ट्टतमंदेवहूतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्प्राणश्श्चमुखादग्निरजायत॥ ॐ अग्ग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्ग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्ग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षᳫंशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पुद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ पप्प्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्प्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय

स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अꣳशुनांतेअꣳशुःपृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽअच्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मः-शरद्धविः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलपत्राणि पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिकञ्च समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजःपितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्यभयसनिः॥ अग्निःप्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानःस-चन्तयत्रपूर्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सुप्प्तास्यासन्न्परिधयुस्त्रिःसुप्प्तसुमिधःकृताः॥ देवायद्द्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्प्पुशुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष जलाध्यक्ष रक्ष जीवनदायक!।
रक्षार्थं पश्चिमाधीश! प्राणीनां जीवनं परम्॥१॥

हे जलाध्यक्ष! हमारी सभी प्रकार से रक्षा करें-रक्षा करें, हे जीवनदायक! हमारे जीवन की रक्षा करें। हे पश्चिम दिशा के स्वामी! प्राणियों को जीवन प्रदान करनेवाले! हमारी रक्षा करें॥१॥

विविधद्रव्यसंयुक्तं चन्दनं रजनीयुतम्।
विशेषार्घ्यं प्रदाष्यामि सर्वदा रक्षणं कुरु॥२॥

चन्दन, रजनी पुष्प तथा विविध द्रव्यों से संयुक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ, हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन हुआ तब तुम उत्पन्न हुए, तुम्हे स्वयं विष्णु ने धारण किया था॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, तुममें सभी देवताओं का वास है, तुमसे ही सभी प्राणी प्रतिष्ठित हैं, तुममें ही सभी के प्राण प्रतिष्ठित हैं॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी जीवों में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनायें फलवान् होती है, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारे कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करने वाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सांनिध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासनपर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ! आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती तब तक सांनिध्य प्रदान करें॥७॥

प्रार्थनासमर्पणम्—हाथ में जल लेकर प्रार्थना समर्पण करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथों सें जल लेकर पूजन समर्पित करे।

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

वरुण पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर पुण्याहवाचन करे।

कलशपूजनं परिपूर्णम्

●

पुण्याहवाचनम्

अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशं अञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्। जानुमण्डल को नीचे जमीन में लगाकर दक्षिण हाथ को कमल के समान अञ्जली बनाकर उसमें कलश लेकर शिर पर धारण करके आशीष-प्रार्थना करे।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु॥

अतिशय विस्तारित समुद्र तथा नद-नदियाँ-पर्वत तथा भगवान् विष्णु के आयु के प्रमाण का हो जाऊँ (चिरायु वाला हो जाऊँ) तथा शतवर्ष पर्यन्त तथा उनके आयु के प्रमाण से आयुवाला हो जाऊँ।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु दीर्घमायुः॥**

ॐ त्रीणिपदाविचक्क्रमेविष्णुर्ग्गोपाऽअदाभ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणिपदाविचक्क्रमेविष्णुर्ग्गोपाऽअदाभ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

यजमान बोले—**तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु पुण्यं पुण्याऽहं दीर्घमायुः।**

ॐ त्रीणिपदाविचक्क्रमेविष्णुर्ग्गोपाऽअदाभ्यः॥ अतोधर्म्माणिधारयन्॥

कलश को भूमि पर रख करके ब्राह्मणों का हस्त पूजन करे।

यजमान बोले—

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे॥

जल में समस्त देवताओं का वास है, सभी में जल ही प्रतिष्ठित है, ब्राह्मणों के हाथ में प्रदान करने पर यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

ॐ शिवा आपः सन्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल दे।

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।**

यजमान बोले—

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः॥

पुष्प (कमल) में लक्ष्मी का वास है, पुष्कर में भी लक्ष्मी वसती है, वे लक्ष्मी नित्य हमारे यहाँ वास करें और हमारे मन में वास करके सुन्दरता प्रदान करें।

ॐ सौमनस्यमस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्तु सौमनस्यम्।**

यजमान बोले—

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥

अक्षत हमारे लिए दीर्घायु-यश-बल तथा पुण्यकारी हो और हमारे लिए सदा लोक में श्रेयस्कर हो।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**

यजमान बोले—

चन्दने महदारोग्यं गन्धाः प्रीति ते यदा।
ब्राह्मणानां करे न्यस्तु माङ्गल्यं चास्तु मे सदा॥

चन्दन से आरोग्यवृद्धि होती है, गन्ध से सभी की प्रीति होती है, ब्राह्मणों क हाथ में प्रदान करने से सदा हमारे लिए मङ्गलकारी हो।

ॐ गन्धाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में चन्दन प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सुमङ्गल्यं चास्तु।**

यजमान बोले—

अक्षतं मे महत्पुण्यं अक्षयतृप्तिप्रदायकम्।
अक्षतं महदायुष्यं तस्मादायुष्य मे सदा॥

अक्षय तृप्ति प्रदान करनेवाला अक्षत हमारे लिए बहुत पुण्यवान् हो, अक्षत से बहुत आयु की वृद्धि होती है अतः हमे सदैव आयु प्रदान करे।

ॐ पुनरक्षताः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः अक्षत प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**आयुष्यमस्तु।**

यजमान बोले—

पुष्पे भवतु सौगन्धं पुष्पं पुष्टिप्रदायकम्।
पुष्पे वसतु श्रीवृत्तिः श्रीश्रियमस्तु मे सदा॥

पुष्पों में सुगन्धि होती है, पुष्प पुष्टि प्रदान करते हैं, पुष्प में श्रीवृत्ति का वास होता है अतः हमारे लिये सदा ही श्रीलक्ष्मी प्राप्त हो।

ॐ पुनः पुष्पाणि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः पुष्प प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**सौश्रियमस्तु।**

यजमान बोले—

ऐश्वर्यं सुफलं सन्तु देवाः प्रीति भवा यदा।
ब्राह्मणानां प्रसादश्च ऐश्वर्यं मे सदाकरा॥

देवताओं में प्रीति होती है, तो ऐश्वर्य सुफल होता है, ब्राह्मणों के कृपाप्रसाद से देवताओं के प्रति हमारी प्रीति तथा ऐश्वर्य प्राप्त हो।

ॐ सफलताम्बूलानि पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में सुपाड़ी सहित पान प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमान बोले—

यज्ञपुण्यस्य साफल्यं अनन्तफलदा भवा।
ब्राह्मणानां प्रसादेन दक्षिणा सफला सदा॥

ब्राह्मणों के कृपा प्रसाद से यज्ञ का पुण्य सफल होकर अनन्त फलवान् हो जाता है, वैसे ही हमारे द्वारा दी गयी दक्षिणा सदैव ही यज्ञफल को प्रदान करनेवाली हो।

ॐ दक्षिणाः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**बहुदेयं चाऽस्तु।**

यजमान बोले—

हरिः जले निवसन्ति जलं वरुणरूपिणम्।
वरुणाद्यर्चितो देवः(शिवः) तस्मात्स्वर्चित ते सदा॥

जल ही वरुणरूप है, जल में ही हरि का वास है, वरुणादि (जल) से शिव का अर्चन होता है, अतः ब्राह्मण भी सदा ही जल से अर्चित होकर प्रसन्न हों।

ॐ पुनरत्राऽपः पान्तु। यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुनः जल प्रदान करे।

ब्राह्मण बोले—**स्वर्चितमस्तु।**

यजमान बोले—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं पौत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।

ब्राह्मण बोले—तथास्तु।

यजमान बोले—यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तं अहं ओङ्कारं आदिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्यं पुण्याऽहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण बोले—**वाच्यन्ताम्।**

सभी ब्राह्मण मिलकर पुण्यकारक मन्त्रों का पाठ करे।

पुण्यकारकमन्त्राः

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा॥१॥

आपका ब्रह्मा कल्याण करें, द्विजजाति मात्र आपका कल्याण करें, सरीसृपों में जो सर्वश्रेष्ठ सरीसृप हैं वे सभी आपका सदा सर्वदा कल्याण करें॥१॥

ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥२॥

ययाति, नहुष, धुन्धुमार, भगीरथ इत्यादि राजर्षि भी आप पर कल्याण करनेवाले हों॥२॥

स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥३॥

आपका द्विपाद कल्याण करे, चतुष्पाद कल्याण करें, अन्यान्य भी पादवान नित्य सर्वदा कल्याणकारी हों॥३॥

स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥४॥

स्वाहा, स्वधा, शची भी आपका सदा कल्याण करें, वेदादि भी नित्य कल्याण करनेवाले हों॥४॥

लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः॥५॥

हे अनघ लक्ष्मी, अरुन्धती सदैव कल्याण करनेवाले हों, असित, देवल, विश्वामित्र तथा अङ्गिरादि महर्षि भी कल्याण करनेवाले हों॥५॥

वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥६॥

वसिष्ठ, कश्यपादि महर्षि सदैव कल्याण करनेवाले हों, धाता (विष्णु), विधाता (ब्रह्मा), लोकेश (ईश्वर), दिशाएँ सदैव ही कल्याणकारी हों॥६॥

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥७॥

षड्मुख कार्तिकेय सदैव ही कल्याणकारी हों, भगवान् विवस्वान् (सूर्य) सदैव ही कल्याणकारी हों॥७॥

दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥८॥

चारों दिशाएँ तथा आकाश में विचरण करनेवाले समस्त ग्रह, भूमि तथा भूमि के नीचे रहनेवाले नागादि जो पृथ्वी को धारण करते हैं, सदैव ही कल्याण करें॥८॥

शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिव्यैदेवदानवराक्षसाः॥९॥

शेषादि समस्त श्रेष्ठ सर्प आपका सदैव ही सपरिवार कल्याण करें, अपने अपने दिव्य आयुधों से सभी देवता, सभी दानव, सभी राक्षसगण सदा रक्षा करें॥९॥

ॐ द्रविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत॥ नेष्ट्राद्दतुभिरिष्ष्यत॥ सवितात्त्वा सवानाᳬंसुवतामग्ग्निर्गृहपतीनाᳬंसोमोव्वनस्पतिनाम्॥ बृहस्प्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रःपशुब्भ्योमित्रःसत्त्योव्वरुणोधर्म्मपतीनाम्॥ नतद्रक्षाᳬंसिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजःप्प्रथमजᳬंह्येतत्॥ योबिभर्त्तिदाक्षायणᳬंहिरण्ण्यᳬंसदेवेषुकृणुते

दीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्ग्घमायुः॥ उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्म्यादेदे॥ उग्रꣳशर्म्ममहिश्श्रवः॥ उपास्मैगायतानरꣳपवमानायेन्न्दवे॥ अभिदेवाँ२॥ऽ इयक्षते॥

यजमान बोले—**व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण बोले—**समाहितमनसः स्मः।**

यजमान बोले—**प्रसीदन्तु भवन्तः।**

ब्राह्मण बोले—**प्रसन्ना स्मः।**

यजमान अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए कलश के ऊपर अक्षत छोड़े तथा ब्राह्मण प्रत्युत्तर में अस्तु-आदि प्रतिवचन बोलें।

ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं-रोगं-अशुभं-अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तः–कलश के ऊपर—

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहमभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

बहिः—द्वितीय पात्र में—

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ

शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शम्यन्तूपद्रवाः।

अन्तः—कलश के ऊपर—

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा नद्यः सन्तु। ॐ शिवा गिरयः सन्तु। ॐ शिवा सागराः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतुफलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तांयोगक्षेमोनः कल्पताम्॥

ॐ शुक्राऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमसहित-आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

यजमान बोले—**एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यताम्।**

यजमान बोले—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

ब्राह्मकर्म (यज्ञ) बहुत पुण्यकारक होते हैं, जो सृष्टि की उत्पत्ति में कारक हैं, ब्राह्मकर्म से ही वेदवृक्षादि (वेद=ज्ञानरूपी वृक्ष) नित्य उत्पन्न होते हैं। उस पुण्यकारक वाक्य का हमारे लिए वाचन कीजिये।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ पुण्यम्।**

ॐ पुनन्तुमादेवजनाःपुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥

यजमान बोले—

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

ऋषियों, सिद्धों, गन्धर्वों के द्वारा पृथ्वी के उद्धार के लिए पूर्वकाल में जो कर्म वाचन किया गया था, वही कर्म हमारे कल्याण के लिए वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कल्याणम्।**

ॐ यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्यः॥ ब्रह्मराजन्याभ्याᳫंशूद्राय चार्य्यायचस्वायचारणायचप्प्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु॥

यजमान बोले—

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः॥

जिस कर्म प्रभाव से सागर में से ऋद्धिसिद्धियुक्त महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस सम्पूर्ण प्रभाववाले ऋद्धिप्रदाता वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।**

ॐ सत्रस्यऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम॥ दिवंपृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

यजमान बोले—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः॥

जिनसे दोषों का विनाश तथा नित्य भला होता है, उन पुण्य तथा कल्याण की वृद्धि करनेवाली, विनायक गणेश की नित्यप्रिया ऋद्धिसिद्धि को प्रदान करनेवाले स्वस्तिवाक्य का वाचन आप सभी विप्रवर्ग करे।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणो स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

यजमान बोले—**अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान बोले—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

समुद्रमन्थन से उत्पन्न, जगत् में आनन्द करनेवाली, हरि की प्रिया और मङ्गल करनेवाली, श्रीः(लक्ष्मी) वृद्धि हेतु, हमारे लिए लक्ष्मीवृद्धिकारक वाक्यों का वाचन करें।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणाख्यकर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

यजमान बोले—**अस्य कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुंमऽइषाणसर्वलोकंमऽइषाण॥

यजमान बोले—

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

मृकण्ड ऋषि के पुत्र तथा ध्रुवलोमशादि ऋषियों को जिससे दीर्घायुष्य हुआ, वैसे ही आयुष्य के लिए जिससे शतवर्षान्त जीवन हो, उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ शतमिन्नुशरदोअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसंतनूनाम्॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥

यजमान बोले—

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

जिन वाक्यों का वाचन शिव-गौरी के विवाहादि मङ्गलकृत्यों में, श्रीराम के राज्याभिषेक में तथा धनवानों के घर में होता है, उनका हमारे घर में श्रीवृद्धिहेतु वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ मन॑सुः॒ कामुमाकूंतिंवाचःसुत्यमंशीय॥ पशूनाᳪंरूपमन्न॑स्युरसोयशः॒ श्रीः श्रंयतांमयिुस्वाहा॑॥

यजमान बोले—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

प्रजापति, लोकपाल, धाता (विष्णु), ब्रह्मा, देवराज इन्द्र तथा शाश्वत भगवान् शिव जिनसे नित्य हमारी रक्षा करें उन वाक्यों को हमारे लिए वाचन करें।

ब्राह्मण बोले—**ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।**

ॐ प्रजा॑पतेुनत्वदेुतान्युन्योविश्श्वारूपाणिुपरिुताब॑भूव॥ यत्का॑मास्तेजुहुम स्तन्नोऽअस्तुवुयᳪस्या॑मुपत॑योरयिुणाम्॥

यजमान बोले—

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

जिन वाक्यों के वाचन से यजमान को आयुष्य और कल्याण होता है, वही वेदादि ज्ञान में पारङ्गत ऋत्विकादि ब्राह्मण हमारे लिए आशीर्वचन का वाचन करें, जिससे हमारें यहाँ सर्वविध कल्याण तथा आयुष्य की वृद्धि हो।

ब्राह्मण बोले—**ॐ आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्रतिुपन्था॑मपद्महिस्वस्तिुगाम॑नेुहस॑म्॥ येनुविश्श्वाः॒परिुद्विषो॑वृुणक्ति॑विुन्दतेुवसु॥

यजमान बोले—**ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्तु स्वस्तिवाचनसमृद्धिः।**

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं कृतस्यस्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्यदातुमहमुत्सृजे।**

पुण्याहवाचनं परिपूर्णम्

●

अभिषेकः

वरुणकलश का जल लेकर चार अविधुर ब्राह्मण दर्भदूर्वादि से अभिषेक करें, अभिषेक के समय यजमानपत्नी वामभाग में बैठे।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥

आपका ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादि समस्त देवता अभिषिञ्चन करें, वासुदेव, जगन्नाथ, सङ्कर्षण भगवान् विभु अभिषिञ्चन करे॥१॥

प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥

प्रद्युम्न, अनिरुद्ध हमारे विजय के लिए तथा अखण्ड, अग्नि, भगवान् विष्णु, यम और निर्ऋति सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्राह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥

वरुण, पवन, धनाध्यक्ष कुबेर तथा शिव समस्त ऋषियों के सहित दिग्पालादि सभी आपकी सदैव रक्षा तथा पालन करें॥३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥

कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, कान्ति, तुष्ट्यादि मातृकाएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥५॥

उपर्युक्त सभी देवतादि अपनी पत्नियों के सहित रक्षार्थ आपका अभिषिञ्चन करें, आदित्यचन्द्रमाभौमबुधगुरुशुक्र तथा शनि समस्त ग्रह सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥५॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥

सभी ग्रह तृप्त होकर राहु, केतु के सहित आपका अभिषिञ्चन करें, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा समस्त सर्प सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥६॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥

समस्त ऋषि. मुनि, गायें, समस्त देवमाताएँ, समस्त देवपत्नियाँ, वृक्ष, समस्त नाग, दैत्य, अप्सराएँ सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥७॥

अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥

समस्त अस्त्र, समस्त शस्त्र, समस्त राजा, समस्त वाहन, समस्त औषधियाँ, समस्त रत्न, समस्त काल के अवयवादि सभी आपकी सदैव रक्षा करें॥८॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

समस्त सरिताएँ, समस्त सागरादि, समस्त पर्वत, समस्त मेघादि, समस्त नद सभी धर्म कामना की सिद्धि के लिए आपका अभिषिञ्चन करें॥९॥

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासो देशेभवत्सरित्॥ ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्यऽऋत सदन्न्यसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुव्विश्वाभूतानिजातवेदःपुनीहिमा॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रियेदधामि बृहस्प्पतेष्ट्वासाम्म्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेश्विनो र्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रेणाग्नेःसाम्म्राज्येनाभिषि-ञ्चामि॥ ॐ देवस्यत्वासवितुःप्प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ अश्विनो भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यैभैषज्येनव्वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानिदेवसवि तर्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥ धामच्छदग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवोबृहस्प्पतिः॥ सचेतसोव्विश्वेदेवायज्ञंप्रावन्तुनःशुभे॥ त्वंय्यविष्ठदाशुषोनॄःपाहिश्रृणुधीगिरः॥ रक्षा तोकमुतत्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिष ऊर्जंनोधेहिद्विपदेचतुष्प्पदे॥ ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापꣳ शान्तिरोषधयꣳशान्तिः॥ व्वनस्प्पतयꣳशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिꣳसर्व्वꣳ शान्तिꣳशान्तिरेवशान्तिꣳसामाशान्तिरेधि॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाभ्योभयन्नꣳप्पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

अभिषेक कर्म करने के बाद यजमान संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

यजमान दक्षिणासंकल्प करे—**ॐ तत्सदद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य अभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थित मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

अभिषेककर्म परिपूर्णम्

●

षोडशमातृकापूजनम्

कुलदेवता	लोकमातृ	देवसेना	मेधा
तुष्टि	मातृ	जया	शची
पुष्टि	स्वाहा	विजया	पद्मा
धृति	स्वधा	सावित्री	गौरी / गणेश

किसी पाटे पर कपड़ा बिछाकर उस पर चित्रानुसार सोलह समान खानों को बना करके प्रथम खाने का दो भाग करके उसमें गेहूँ भर करके उस पर सुपाड़ी रख करके उस सुपाड़ी के ऊपर गौरी-गणेश के सहित मातृका देवियों का आवाहन पूजन करे।

गणेशावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

मातृवर्ग के समीप रहनेवाले सर्वदा सभी विघ्नों का हरण करनेवाले तीनों लोकों में जिसकी सदैव वन्दना होती है, ऐसे गणेशजी की स्थापना हम करते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

हिमाद्रि (हिमालय) की तनया (पुत्री), वर प्रदान करनेवाली, शङ्कर की प्रिया (शङ्कर की पत्नी), लम्बोदर गणेश की माता भगवती गौरी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

पद्मामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोविरोकऽउभाविन्द्राऽदिथः सूर्य्यश्च॥ आरोहतंवरुण मित्रगर्तंततश्चक्षाथामदितिंदितिंचमित्रोऽसिवरुणोऽसि॥

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

पद्म (कमल) की आभावाली, पद्मवदना (कमल के जैसे शरीरवाली), पद्म नाभि के ऊपर निवास करनेवाली, जगत् को प्रिय लगनेवाली, पद्म में वास करनेवाली पद्मादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

शचीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनांविश्वारूपाभिचष्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्य धर्म्मेन्द्रोनतस्थौसमरेपथीनाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

दिव्य रूपवाली, विशालाक्षी, पवित्र कुण्डल धारण करनेवाली, लालमुक्तामणि के अलङ्कारों से अलंकृत शचीदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधांधाता ददातुमेस्वाहा॥

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

इस विश्व में सर्वाधिक वरप्रदान करनेवाली, जरा और निर्जरा से सेवित, बुद्धि का विस्तार करनेवाली, सौम्य (सरल) मेधादेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

सावित्रीमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ सवितात्त्वासवानांळंसुवतामग्निर्गृहपतिनाळंसोमोवनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पति र्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुब्भ्योमित्रः सत्त्योवरुणोधर्मपतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

जगत् में सृष्टि करनेवाली धात्रीदेवी जो प्रणव में मातृकारूपिणी हैं, वेद के भीतर रहने वाली यज्ञमयी सावित्रीदेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

विजयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें—

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ ॥ उत। अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्॥

सभी अस्त्रों को धारण करनेवाली, सभी आभूषणों से सुसज्जित, सभी देवताओं से सदैव वन्दित, विजयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।

जयामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ वह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्॥

देवताओं के शत्रुओं का मन्थन करनेवाली, देवी जो देवताओं को अभय प्रदान करती हैं, जो तीनों लोकों में वन्दिता हैं, ऐसी शुभ्र जयादेवी की मैं स्थापना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।

देवसेनामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥

मयूर जिनका वाहन है, जो खड्ग-शक्ति तथा धनुष को धारण करती हैं, तारकासुर का मर्दन करनेवाली उन देवसेना देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो ऽमीमदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥

सभी देवताओं में सर्वप्रथम उत्पन्न होनेवाली, कव्य को धारण करनेवाली तथा पितरों को तृप्ति प्रदान करनेवाली, स्वधा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः॥ पृथिव्यैस्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षाय स्वाहाव्वायवेस्वाहा॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

हवि को ग्रहण करके देवताओं को प्रदान करनेवाली, दिव्यरूप धारण करनेवाली, वर प्रदान करनेवाली, स्वाहा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

मातृः-आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वः पुनन्तु॥ विश्श्वꣳहिरिप्प्रं प्प्रवहन्तिदेविरुदिदाब्भ्यः शुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳशग्ग्मां परिदधेभद्द्रंव्वर्णपुष्य्यन्॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः॥

सर्वकल्याणरूपी, दिव्यभूषणों से विभूषित, वर प्रदान करनेवाली, सम्पूर्ण लोक में पूजित माताओं (मातृशक्तियों) का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

लोकमातृः आवाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ रयिश्श्चमेरायश्श्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्श्चमेव्विभुचमेप्प्रभुचमेपूर्ण्णंचमेपूर्ण्णतरंच मेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तिप्रमुखाः शुभा।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

विभिन्न अभीष्ट प्रदान करनेवाली, लोक में सभी का हित करनेवाली, जयन्त्यादि प्रमुख शुभ माताओं का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥

सभी को हर्ष प्रदान करनेवाली देवी जो भक्तों को अभय प्रदान करनेवाली हैं, सदैव प्रसन्नता से प्रफुल्लित कमल पर निवास करनेवाली, धृतिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

पुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्न्भिषजातदश्विनात्मानमङ्गँसमधात्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳ शतमानमायुश्चचन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैर्रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

अपने शरीर से उत्पन्न शाक, फल, जल तथा रत्नादि से समस्त जगत् का पोषण करनेवाली पुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

तुष्टिमावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्श्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्ग्निः॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

देवताओं की आराधिता सदैव सन्तोष प्रदान करनेवाली, प्रसन्न मुखवाली तुष्टिदेवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

कुलदेवतामावाहनम्—हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्रायस्वाहाव्वाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

पत्तन, नगर, गाँव, पर्वत तथा घरमें नाना जाति, कुलों में व्याप्त दुर्गा देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ट्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राणप्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह(संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवताद्यावाहितमातृभ्यो नमः आवाहिता प्रतिष्ठिता वरदा भव।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्मय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी का मेरे लिए आवाहन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत् विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ, मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करने वाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं रो सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मि! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अत: मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पयःपात्र (दूध का बर्तन) लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित हैं, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देनेवाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र(शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मी! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मि! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, व्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ, सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणमातृक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करें (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं, जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह मे निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे। दीप देवता को समर्पित किया जाता है, न कि चारो ओर घुमाया जाता है।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देने वाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारों प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वा अर्थात् जिस

प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अत: प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेला-लवङ्गादिसहित ताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन), फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: कृताया: पूजाया: साद्-गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नम: कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगत्विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ, जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं

सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों से पुष्प संग्रहण कर प्रार्थना करे—

मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा,
दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥१॥

हे देवि! जिनसे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं, दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नौकारूपी दुर्गादेवी भी आप ही हैं, कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के हृदय की एकमात्र स्वामिनी लक्ष्मी और चन्द्रमा को सिर पर धारण करनेवाले भगवान् शङ्कर की प्रिया गौरी तुम्हीं हो॥१॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! आप हमपर प्रसन्न हों, परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल ही कितने कुलों का नाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभव में आयी है; क्योंकि महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है॥२॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः॥३॥

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातृकाएँ, लोकमातृकाएँ, धृति, पुष्टि, तुष्टि तथा अपने कुल के कुलदेवी गणेश के सहित पूजित होकर हमारे घर हमें आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य सभी हे मातायें! प्रदान करे तथा हमारे समस्त पूजन-अनुष्ठान को गणेश के सहित मातृकायें निर्विघ्न करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितषोडशमातृकाभ्यो नमः स्तुतिप्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन यथापूजनेन गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्तावहितषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।

षोडशमातृकापूजनं परिपूर्णम्

●

सप्तघृतमातृकापूजनम्

किसी पाटे पर कपड़ा बिछा करके उस पर अधोलिखित चक्र सिन्दूर से सप्तबिन्द्वात्मक (सबसे पहले नीचे सातबिन्दु बनाकर फिर उसके ऊपर छः बिन्दु फिर उसके ऊपर पाँच बिन्दु उसके उपर चार बिन्दु उसके उपर तीन बिन्दु उसके ऊपर दो बिन्दु फिर उसके ऊपर एक बिन्दु चक्र) बनायें। नीचे के सात बिन्दुओं पर घृत धारा करके गुड़ से एकीकरण करके उन पर आवाहन-स्थापन करके पूजन करे।

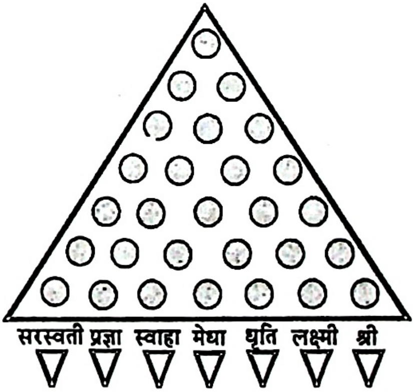

घृतधारा—घी से अधोलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सप्तमातृका बिन्दुओं पर घृत धारा दें पश्चात् गुड़ से एकीकरण करके प्रत्येक धाराओं पर तत्तद् देवताओं का आवाहन करे।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्॥ देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः॥

श्रियमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय॥ पशूनाᳬं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

लक्ष्मीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

धृतिमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

मेधामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।

स्वाहामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

प्रज्ञामावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

सरस्वतीमावाहनम्—अक्षत लेकर आवाहन करे—

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथों से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬं समिमन्दधातु॥ विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वर तत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से प्राणों का क्षरण होता है, इसी से अर्चना के लिए देवत्व होता है, मेरे लिए इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आवाहिताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ध्यानम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली, सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेत पुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथों से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथों से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्द हास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित है एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथों से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहनेवाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ। हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अतः मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्ण्यामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथों से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थों से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, यह जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को हे देवि! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथों से पय:पात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथों से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथों से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथों से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करनेवाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथों से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथों से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथों से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथों से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मी! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र(शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथों से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यासरूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मीजी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ, हे लक्ष्मि! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथों से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप में अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, व्रीहि इत्यादि अन्नों के रूप में अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई हैं। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करें। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथों से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करनेवाले हैं, आपके पूजा के लिए मैं लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथों सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह में निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथों से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथों से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथों से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा, रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचला कुरु॥

चारोप्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसों से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथों से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकाएँ प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मं आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तों पर सर्वदा दयार्द्रचित्त, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वाला अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन पोषण करती है, अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गनागबल्लिदलादिसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथों से फल लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन) आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथों से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

हे ईश्वरि! पूजा फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगद् विख्यात् लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ, जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथों से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वत्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलीं समर्पयामि।

प्रार्थनासमर्पणम्—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना समर्पण करे—

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

जो पुण्यात्माओं के घरों में लक्ष्मीरूप से, पापियों के घर में दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से, तथा कुलीन मनुष्यों में लज्जारूप से निवास करती हैं, वे श्रीस्वरूपिणी महादेवी हमारा पालन करें।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥

श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, स्वाहा, प्रज्ञा तथा सरस्वत्यादि समस्त सप्तघृत मातृकायें मङ्गल कार्यों में सदैव पूजित होती हैं॥१॥

यदङ्गत्वेन भो देव्या पूजितो विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥२॥

हे देवियों! अङ्ग के रूप में विधिपूर्वक पूजित होकर हमारे समस्त कार्यों को निर्विघ्न रूप से पूर्ण करानेवाली हो जाओ॥२॥

अनेन यथोपलब्धद्रव्येण यथाज्ञानेन पूजनेन श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातरः प्रीयन्तां न मम।

सप्त घृतमातृकाओं के पूजन के बाद सभी ब्राह्मण मिलकर आयुष्यमन्त्र का पाठ करें, यजमान ध्यानपूर्वक सपरिवार सुने।

सप्तघृतमातृकापूजनं परिपूर्णम्

●

आयुष्यमन्त्रपाठः

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्॥१॥

जिससे लम्बी आयु प्राप्त करके देवता सप्तकल्प तक जीवित रहते हैं, उस आयुष्य-कारक पुण्य को हमें प्रदान करें, जिससे हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें॥१॥

दीर्घा नागा नगानद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥२॥

दीर्घ आयुष्य वाले समुद्रादि-पर्वतादि दिशायें अनन्त आयु प्राप्त करके जीवित रहते हैं, उन आयुष्य को प्राप्त करके सौ वर्ष पर्यन्त जीवन प्राप्त करे ॥२॥

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
आविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥३॥

जिससे पञ्चभूत सत्य और विनाशरहित होते हैं, वैसे ही नष्ट न होनेवाली आयु प्राप्त करके हम सौ वर्ष तक जीवित रहें॥३॥

ॐ आयुष्ष्यंव्वर्च्चस्यꣳरायस्प्पोषमौद्भिदम्॥ इदꣳहिरण्ण्यंव्वर्च्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम्॥ ॐ नतद्रक्षाꣳसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमजꣳह्येतत्॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳहिरण्यꣳसदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुꣳसमनुष्ष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्ण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्ष्मान्जरदष्टिर्य्यथासम्॥

आयुष्यमन्त्र का पाठ करते हुए यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र के पाठ के बाद आचार्य यजमान को रक्षासूत्र बाँधे। आयुष्यमन्त्र का पाठ श्रवण करने के बाद यजमान दक्षिणा-संकल्प करके ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणासंकल्पः—**ॐ तत्सदद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आयुष्यमन्त्रपाठकर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां करोपस्थितदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

आयुष्यमन्त्र का पाठ करने के बाद किसी पत्तल या पाटे पर अधोलिखित आकृति के अनुसार रेखाओं को बनाकर उसपर कुश रखकर पूजन करे।

आयुष्यमन्त्रपाठः परिपूर्णम्

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धम्

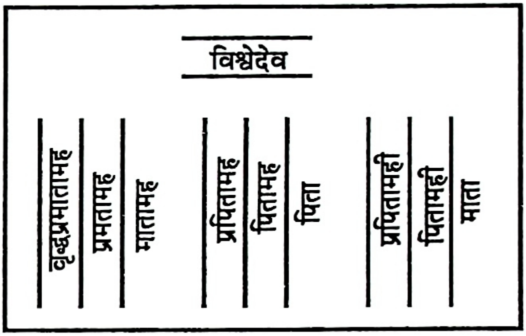

आयुष्यमन्त्र पाठ के बाद किसी पत्तल या पाटे पर आकृति के अनुसार रेखाओं को बना कर उस पर कुशनिर्मित मोटक रखकर पूजन करे, ऊर्ध्व की रेखाओं पर विश्वेदेव का तथा नीचे की दक्षिण की तीनो रेखाओं पर मातृ-पितामही-प्रपितामही का तथा मध्य तीनो रेखाओं पर पितृ-पितामह-प्रपितामह एवं वाम तीनों रेखाओं पर मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह का आवाहन पूजन करे, यह श्राद्ध सव्य हो कर ही किया जाता है, सर्वप्रथम विश्वेदेव के साथ पितरों का ध्यान करे, जिनके माता-पिता जीवित हों, वे माता पिता को छोड़कर ऊपर की पीढ़ी पितामहादि के लिए श्राद्ध करेंगे, विद्वान् कर्मकाण्डी तदनुसार ऊह करके श्राद्ध करायें।

विश्वेदेवावाहनम्—उपर के दोनों मोटकों पर आवाहन करे—

ॐ व्विश्श्वेदेवासुऽआगतश्शृणुतामऽइमꣳहवम्॥ एदम्बर्हिन्निषीदत॥ उपयाम गृहीतोसिव्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्श्वेब्भ्यस्त्वादेवेब्भ्यः॥ ॐ व्विश्श्वे देवाऽअꣳशुषुन्न्युप्तोव्विष्ण्णुराप्प्रीतुपाऽआप्प्याय्यमानोयमꣳसूयमानोव्विष्ण्णुः सम्भ्रियमाणोव्वायुꣳपूयमानꣳशुक्रꣳपूतꣳशुक्रꣳक्षीरश्श्रीर्म्मन्थीसक्तुश्श्रीर्व्विश्श्वेदेवाꣳ॥ ॐ व्विश्श्वे देवाश्श्चमसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतोरुद्द्रोहूयमानोव्वातोब्भ्यावृत्तोनृचक्षाꣳप्प्रतिक्ख्यातो भक्षोभक्ष्यमाणꣳपितरोनाराशꣳसाꣳसन्नꣳसिन्धुः॥ ॐ व्विश्श्वेदेवाꣳश्शृणुतेमꣳहवम्मेयेऽअन्तरिक्क्षेयऽउपद्यविष्ठ॥ येऽअग्ग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआसद्यास्म्मिन्न्बर्हिषिमादयध्ध्वम्॥

पितृणां ध्यानम्—पितरों का ध्यान करे—

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तꣳसमिधीमहि॥ उशन्नुशतऽआवहपितृन्हविषेऽअत्तवे॥ ॐ आयन्तुनꣳपितरꣳसोम्म्यासोऽग्निष्ष्वात्ताꣳपथिभिर्द्देवयानैꣳ॥ अस्म्मिन्न्यज्ञे स्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान्॥

मातृपितामहिप्रपितामह्यावाहनम्—माता, दादी और वृद्धदादी का ध्यान करे—

ॐ अत्रपितरोमादयध्वँथाभागमावृषायध्वम्।। अमीमदन्तपितरोंयथाभाग मावृषायिषत।। ॐ नमोवःपितरोरसायनमोवःपितरःशोषायनमोवःपितरोजीवाय नमोवःपितरःस्वधायैनमोवःपितरोघोरायनमोवःपितरोमन्यवेनमोवःपितरःपितरो नमोवोगृहान्नःपितरोदत्तसतोवःपितरोदेष्मैतद्वःपितरोवास।। आधत्तपितरोगर्भंकुमार म्पुष्करस्रजम्।। यथेहपुरुषोसत्।। ऊर्ज्जवहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्।। स्वधास्थतर्प्पयतमेपितृन्।।

पितृपितामहप्रपितमहानामावाहनम्—पिता, दादा और परदादा का ध्यान करे—

ॐ उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मद्ध्यमाःपितरःसोम्म्यासः।। असुँयऽईयुरवृकाऽ ऋतज्ञास्तेनोवन्तुपितरोहवेषु।। ॐ अङ्गिरसोनःपितरोनवग्ग्वाऽअथर्वाणोभृगवः सोम्म्यासः।। तेषांवयँसुमतौयज्ञियानामपिभद्रेसौमनसेस्याम।। ॐ आयन्तुनःपितरः सोम्म्याऽसोग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः।। अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्ब्रुवन्तुतेवन्त्व- स्मान्।। ॐ ऊर्ज्जवहन्तीरमृतंघृतम्पयःकीलालम्परिस्रुतम्।। स्वधास्थतर्प्पयतमेपितृन्।। ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः- प्रतितामहेभ्यः-स्वधायिभ्यःस्वधानमः।। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्त- पितरःपितरःशुन्धदध्वम्।। ॐ येचेहपितरोयेचनेहयाँश्चविद्मयाँ२।।ऽउचनप्रविद्म।। ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।। माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः।। ॐ मधुनक्तमुतोषसो- मधुमत्पार्थिवरजः।। मधुद्यौरस्तुनःपिता।। ॐ मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्य्यः।। माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः।।

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामावाहनम्—नाना, परनाना और वृद्धपरनाना का ध्यान करे—

ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रतितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः।। अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरःपितरःशुन्धदध्वम्।।

पाद्यसमर्पणम्—सभी के कुशाओं पर जल प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। (ऊपर के दोनों कुशाओं पर जल प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे दहिने तरफ के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे मध्य के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।** (नीचे बायें तरफ के तीनो कुशाओं पर आवाहन करे।)

आसनदानम्—कुश का बना मोटक रूप आसन प्रदान करे—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः। (ऊपर के दोनों कुशाओं पर मोटकरूपासन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (नीचे दाहिने तरफ के तीनो कुशाओं पर मोटकरूपासन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (मध्य के तीनो कुशाओं पर मोटकरूपासन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।** (बायें तीनो कुशाओं पर मोटकरूपासन प्रदान करे।)

षोडशोपचारपूजनम्—मौन होकर सामग्री चढ़ाकर गन्धादिदान का सङ्कल्प करे—

इदं स्नानीयं सुस्नानीयम्। स्नान के लिए जल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं वस्त्रं सुवस्त्रम्। वस्त्र प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इमे यज्ञोपवीते सुयज्ञोपवीते। यज्ञोपवीत प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। यज्ञोपवीताङ्गाचमनीय जल प्रदान करे।

एष गन्धः सुगन्धः। चन्दन प्रदान करे।

इमे तिलाक्षताः सुतिलाक्षताः। अक्षत प्रदान करे।

इदं माल्यं सुमाल्यम्। पुष्पमाला प्रदानकर नैवेद्य स्थापित करे।

एष धूपः सुधूपः। धूप आघ्रापितकर प्रदान करे।

एष दीपः सुदीपः। दीप दिखाकर प्रदान करे।

हस्तप्रक्षालनम्। दोनों हाथ प्रक्षालित करे।

इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। नैवेद्य प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ऋतुफलं सुफलम्। ऋतुफल प्रदान करे।

इदमाचमनीयं स्वाचमनीयम्। आचमनीय जल प्रदान करे।

इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा सुदक्षिणा। दक्षिणा प्रदान करे।

इदं पुष्पाञ्जलि सुपुष्पाञ्जलि। पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

गन्धाद्यार्चनदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:। (ऊपर के दोनों मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्य: नान्दीमुख्य: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यदक्षिणाद्यार्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।** (नीचे बायें के तीनो मोटकों पर गन्धाद्यार्चन प्रदान करे।)

भोजननिष्क्रयदानम्—

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:। (ऊपर के दोनों मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्य: नान्दीमुख्य: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि:।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहा:**

नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** (नीचे बाये के तीनो मोटकों पर भोजननिष्क्रय प्रदान करे।)

सक्षीरयवमुदकदानम्—अर्घ्यपात्र में दूध-जौ-जल मिश्रित करके प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।** (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रिण प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** (नीचे बायें के तीनो मोटकों पर दूधजौजल मिश्रिण प्रदान करे।)

उत्तरपूजनम्—चारो जगहों पर जल, पुष्प तथा अक्षत समर्पित करे—

शिवा आपः सन्तु। बोलकर जल प्रदान करे।

सौमनस्यमस्तु। बोलकर पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। बोलकर अक्षत प्रदान करे।

अघोरकरणम्—चारो जगहों पर पूर्वाग्र जलधारा प्रदान करे।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

दक्षिणादानम्—सभी के लिए आसनों पर दक्षिणा प्रदान करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-सिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (ऊपर के दोनों मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-**

निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (नीचे दाहिने के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपना गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे मध्य के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

ॐ अमुक (अपने नाना का गोत्र उच्चारित करे) **गोत्र अस्मन्मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** (नीचे बायें के तीनो मोटकों पर दक्षिणा प्रदान करे।)

यजमान प्रार्थना करे—यजमान अपने पितरों से हाथ जोड़ कर प्रर्थना करे—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु॥
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन॥

गोत्रन्नो वर्धतां (हमारा कुल बढ़े), **दातारो नोऽभिवर्धन्तां** (उस गोत्र में दाता और भी बढ़ें), **वेदाः सन्ततिरेव च** (हमारी सन्तति ज्ञानवान् हो), **श्रद्धा च नो मा व्यगमद्** (वे सभी श्रद्धावान् हों), **बहुदेयं च नोऽस्तु** (उनके पास दान देने के लिए बहुत धन-धान्यादि हो), **अन्नं च नो बहु भवेत्** (उनके पास अन्नादि बहुत हो), **अतिथींश्च लभेमहि** (उनके पास दान लेने के लिए बहुत अतिथि आयें), **याचितारश्च नः सन्तु** (दान लेने के लिए याचक भी आयें), **मा च याचिष्मकञ्चन** (हमारे कुल में कोई भी याचक न हो)। (हमारा कुल बढ़े, सभी दाता हों, वें अत्यधिक बढ़े, हमारे कुल की समस्त सन्तान ज्ञानवान् हों, सभी श्रद्धावान् तथा आदर करनेवाले हों, वे कभी किसी का निरादर न करें, उनके पास अतिथि तथा याचक आयें, जिन्हें दान देकर गौरव प्राप्त करें, हमारे कुल में कोई याचक न हो।)

यजमान ब्राह्मणों से कहे—**एताः सत्या आशिषः सन्तु॥**

ब्राह्मण बोलें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्दवे॥ अभिदेवाँ२॥इयक्षते॥ ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳसनिंगोःशश्वत्तमꣳहवमानायसाध॥ स्यान्नःसूनुस्तनयोविजावाग्नेसातै सुमतिर्भूत्वस्मे॥

यजमान बोले—**नान्दीश्राद्धं सुसम्पन्नम्।**

ब्राह्मण बोलें—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्—मातृ-पितामही-प्रपितामही, पिता-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह के सहित आसन के ऊपर यवाक्षत छिड़ककर विसर्जन करे—

ॐ व्वाजेवाजेऽवतव्वाजिनोनोधनेषुव्विप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः॥ अस्यमद्ध्वःपिवत मादयद्ध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः॥ ॐ आ मा व्वाजस्यप्प्रसवोजगम्म्यादेमेद्यावा पृथिवीव्विश्श्वरूपे॥ आ मां गन्तां पितरामातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्॥

विश्वेदेव का विसर्जजन करे—**ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।**

यजमान बोले—**मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मण बोलें—**अस्तु परिपूर्णः।**

समर्पणम्—अनेन साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दिश्राद्धकृतेन पितृस्वरूपीमहाविष्णुः प्रीयतां न मम।

साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं परिपूर्णम्

आचार्यादिवरणम्

वरण सामग्री के पूजन के साथ सर्वप्रथम आचार्य का पूजन करके वरण करे पश्चात् ब्रह्मादि का पूजन वरण करे।

ॐ वरणसामग्रीभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

एकतन्त्रेण आचार्यादिब्राह्मणानां वरणानि—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पुर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकामुकगोत्रोत्पन्नान् अमुकामुकप्रवरान्वितां शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनां अमुकामुकशर्मणां ब्राह्मणानां अस्मिन् प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन ब्रह्मत्वेन उपद्रष्टात्वेन गाणपत्यत्वेन सदस्यत्वेन ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे।**

आचार्यादि बोलें—**वृताः स्मः।**

शास्त्रानुसार अलग अलग ही करना चाहिए।

आचार्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

जिस तरह से स्वर्ग में इन्द्रादि देवताओं के आचार्य वृहस्पति हैं, उसी तरह से आप मेरे इस यज्ञ के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

आचार्य बोलें—**वृतोऽस्मि।**

ब्रह्मावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पुर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्मागं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखोब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम!॥

जैसे सभी लोक के पितामह चतुर्मुख ब्रह्मा है, उसी प्रकार मेरे इस यज्ञ के लिए हे द्विजोत्तम! आप ब्रह्मा पद प्रतिष्ठित हों।

ब्रह्मा बोलें—वृतोऽस्मि।

उपद्रष्टावरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः उपद्रष्टात्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वधर्म परायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज!॥

हे सभी धर्म को जानने वाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में उपद्रष्टा पद पर प्रतिष्ठित हों।

उपद्रष्टा बोलें—**वृतोऽस्मि।**

गाणपत्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत**

वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामऽहं गणपं वृणे॥

वाञ्छित कामना के निर्विघ्नतापूर्वक फल प्राप्ति के लिए देवता दानव सर्वप्रथम पूजा करते हैं, हे द्विजश्रेष्ठ! हम आपकी गणप पद पर वरण करते हैं।

गणप बोलें—**वृतोऽस्मि।**

सदस्यवरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत!॥

हे भगवन् सभी धर्म को जानने वाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में सदस्य पद पर प्रतिष्ठित हों।

सदस्य बोलें—**वृतोऽस्मि।** अधिक सदस्य हों, तो **वृतास्मः** बोले।

ऋत्विक्वरणम्—यजमान सङ्कल्प बोले—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यान्दिनीयशाखाध्यायिनममुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरा-पुरश्चरणकर्मणि एभिः करोपस्थितवरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।**

प्रार्थना—हाथ जोड़ करके यजमान प्रार्थना करे—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वं मे मखे भव॥

हे भगवन् सभी धर्म को जानने वाले द्विजोत्तम! सभी धर्म में परायण हमारे इस यज्ञ में ऋत्विक् पद पर प्रतिष्ठित हों।

ऋत्विक बोलें—**वृतोऽस्मि।**

नियमनिवेदनम्—यजमान हाथ जोड़ करके सभी ब्राह्मणों से निवेदन करे—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥१॥

क्रोध का परित्याग करके, नित्य शुद्धता का आचरण करते हुए, हमेशा ब्रह्मचारी रह कर, ग्रहादि के ध्यान में सदैव रत रहते हुए, सदैव ही प्रसन्न मन रहते हुए॥१॥

अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥२॥

सदैव अपशब्द का परित्याग करके, सुन्दर मधुर भाषण करते हुए, दूसरों की निन्दादि करने की आदत का परित्याग करके, कर्म में प्रवृत्त रहने के लिए जो हमारे लिए शास्त्रीय नियम हैं, वे सभी नियम आप सभी द्विजश्रेष्ठों के लिए भी हों॥२॥

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः॥३॥

पूर्व में इन्द्रादि देवताओं के यज्ञ में ऋत्विकादि थे, वैसे ही इस यज्ञ में भी आप सभी ऋत्विक् हो॥३॥

अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥४॥

इस कर्म में प्रवृत्त जो विप्रादि मेरे द्वारा नियुक्त हैं, वे जो कुछ अपने गुरुओं के मुख से सीखे जाने हैं, उसी के अनुसार अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त रह कर इस यज्ञ का सम्पादन करे॥४॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥५॥

इस यज्ञ कर्म के लिए हमने आपकी नियुक्ति जो की है। उसे सुप्रसन्न मन से इस यज्ञ के कर्म को विधिपूर्वक सम्पादित करें॥५॥

यजमान बोले—**यथा विहितं कुरुध्वम्।**

सभी विप्र बोलें—**यथा ज्ञानं करवामः।**

आचार्यादिवरणं परिपूर्णम्

•

रक्षोघ्नकर्मः

आचार्य आचमन-प्रणायाम करके सङ्कल्प पूर्वक दिग्रक्षण करे—

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे**

भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे अमुकगोत्र नामधेय यजमानेन वृतोऽहम् आचार्य कर्म करिष्ये। आचार्य पीले सरसों से रक्षोघ्न कर्म करे।

ॐ रक्षोहणंवलगहनंवैष्णवीमिदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेनिष्ट्योयममात्यो निचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामियंमेसमानोयमसमानोनिचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामि यंमेसबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहंतंवलगमुत्किरामियम्मेसजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्यांकिरामि॥१॥ आचार्य पूर्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षोहणोवोवलगहनःप्रोक्षामिवैष्णवान्रक्षोहणोवोवलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणोवोवलगहनोऽवस्तृणामिवैष्णवान्रक्षोहणौवांवलगहनाऽउपदधामि वैष्णवीरक्षोहणौ वां वलगहनौपर्यूहामिवैष्णवीवैष्णवमसिवैष्णवास्थ॥२॥ आचार्य दक्षिणदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षसांभागोऽसिनिरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳरक्षोऽवबाधऽइद मꣳरक्षोऽधमन्तमोनयामि॥ घृतेनद्यावापृथिवीप्रोर्णुवाथांवायोवेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतुस्वाहास्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छतम्॥३॥ आचार्य पश्चिमदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते॥ द्रोणेसधस्थमासदत्॥४॥ आचार्य उत्तरदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करे।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥

जो भूत-प्रेतादि इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान का परित्याग करके इधर-उधर कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें। अग्निकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

जो भूत-प्रेतादि इस भूमि में स्थित हैं, वो सभी इस स्थान से कहीं पर भी अन्यत्र चले जायें, जो भूत-प्रेतादि विघ्न करनेवाले हैं, वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से अन्यत्र चले जाये; अन्यथा नष्ट हो जायें, नैर्ऋत्यकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

इस स्थान के सभी दिशाओं में जो भूत-प्रेतादि पिशाचों का वास है, वे सभी विना विरोध के इस स्थान का परित्याग करके चले जायें, हम पूजाकर्म का प्रारम्भ कर रहे हैं। वायव्यकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पुरश्चरणं करोम्यहम्॥

जो कोई भूतगण, राक्षसगण इस स्थान का आश्रय लेकर निवास करते हैं, वे सभी इस स्थान को छोडकर अन्यत्र कहीं चले जायँ, जिससे हम निर्विघ्न पुरश्चरण करें। ईशानकोण में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। ऊपर ऊर्ध्वदिशा में पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

ॐ हुँ फट्। अधोदिशा भूमि पर नीचे पीले सरसों का प्रक्षेप करें।

चारों तरफ क्रोधमयी दृष्टि डालकर चारों तरफ के विघ्नों का निस्सारण करे, तथा तीन बार पैर की एड़ी से भूमि पर प्रहार करके भूमिस्थित विघ्नकर्ताओं से रक्षार्थ विघ्नों का निस्सारण करें।

रक्षोघ्नकर्म परिपूर्णम्

●

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह॥ ब्बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमूत्र स्थापित करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ आचार्य इस मन्त्र से गोमय मिश्रित करें।

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतःसोमव्वृष्ण्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ आचार्य इस मन्त्र से गोदुग्ध मिश्रित करें।

ॐ दधिक्क्राव्ण्णोऽअकारिषञ्जिष्ष्णोरश्श्वस्यव्वाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्त्प्रणऽ आयूँषितारिषत्॥ आचार्य इस मन्त्र से दही मिश्रित करें।

ॐ तेजोऽसिशुक्क्रमस्यमृतमसिधामनामाऽसिप्प्रियंदेवानामनाधृष्टन्देव यजनमसि॥ आचार्य इस मन्त्र से गोघृत मिश्रित करें।

ॐ देवस्यत्वासवितुःप्रसवेऽश्श्विनोर्ब्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ इस मन्त्र से कुशोदक मिश्रित करके यज्ञकाष्ठ से आलोडित करें।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ योवःशिव

तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥ तस्म्माऽअरंङ्गमामवोयस्यक्षयाय जिन्वथ॥ आपोजनयथाचनः॥

पञ्चगव्य निर्माण के बाद अपवित्रः पवित्रोवा० मन्त्र से तीन बार यज्ञभूमि तथा यज्ञ-सामग्री का मार्जन प्रोक्षण करें फिर अञ्जलि बनाकर स्वस्त्यवाचन दो बार करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्श्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु॥ इस मन्त्र का दो बार पाठ करें।

देवाः आयान्तु॥ यातुधानाः अपयान्तु॥ विष्णोर्देव भूम्यमिमं रक्षस्व॥

पञ्चगव्यकरणं परिपूर्णम्

●

सर्वतोभद्रचक्रम्

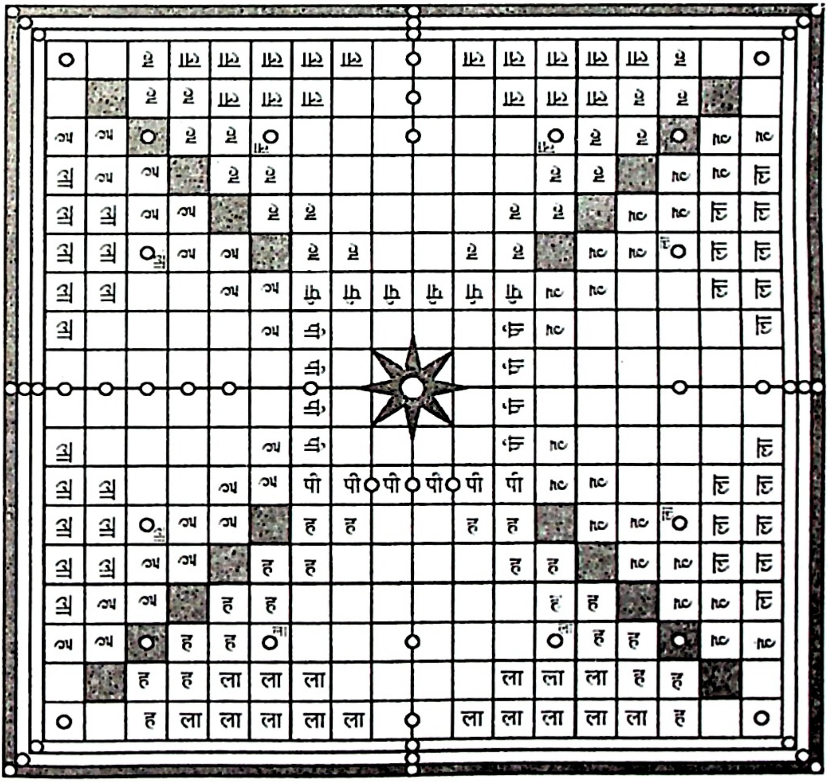

किसी चौकोर चौकी पर कपडा बिछाकर अष्टादश कोष्ठक बनाकर चित्रानुसार विभिन्न रंगों से रञ्जित चावलादि रखकर उस पर नियत स्थान पर सुपाड़ी रखकर सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का आवाहन-पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतानां स्थापनम्

ब्रह्मावाहनम्—ॐ ब्रह्मजज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

सोममावाहनम्—**ॐ वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानमावाहनम्—**ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धयें॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रमावाहनम्—**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यामावाहनम्—**ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—**ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहा घर्म्मःपित्रे।**

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋतिमावाहनम्—**ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणमावाहनम्—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायुमावाहनम्—**ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ वायोऽअस्मिनत्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

अष्टवसूनामावाहनम्—**ॐ वसुभ्यस्त्वारुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वासञ्जानाथां**

द्यावापृथिवीमित्रावरुणौत्वावृष्ट्यावताम्॥ व्यन्तुवयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वादिवंगच्छततोनोवृष्टिमावह॥ चक्षुष्पाऽअग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि।

एकादशरुद्रानामावाहनम्—ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुभ्यामुतते नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

द्वादशादित्यनामावाहनम्—ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्यैतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोऽर्वाचीसुमतिर्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमार-आवाहनम्—ॐ अश्विनातेजसाचक्षुःप्प्राणेनसरस्वतीवीर्य्यम्॥ वाचेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

सपैतृकविश्वान्देवानावाहनम्—ॐ विश्श्वेदेवासऽआगतश्रृणुतामऽइमꣳहवम्॥ एदं बर्हिर्न्निषीदत॥ उपयामगृहीतोऽसिव्विश्श्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यऽएषतेयोनिर्व्विश्श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।

सप्तयक्षानावाहनम्—ॐ अभित्यंदेवꣳसवितारमोण्योःकविक्क्रतुमर्च्चामिसत्त्य सवꣳरत्नधामभिप्रियंमतिंकविम्॥ ऊर्द्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य पाणिरमिमीतसुक्क्रतुःकृपास्वः॥ प्रजाभ्यस्त्वाप्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्रजास्त्वमनु प्प्राणिहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानावाहनम्—ॐ नमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवि तेभ्यःसर्प्पेभ्योनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

गन्धर्वाऽप्सरसः-आवाहनम्—ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसो मुदोनाम॥ सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहावाट्ताभ्यःꣳस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दमावाहनम्—ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्व्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

वृषभमावाहनम्—ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

शूलमावाहनम्—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः शूलमावाहयामि स्थापयामि।

महाकालमावाहनम्—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षादिसप्तगणानामावाहनम्—ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्माँश्च॥ शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यꣳहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणानामावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

विष्णुमावाहनम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

स्वधामावाहनम्—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

मृत्युरोगानावाहनम्—ॐ परं मृत्यो ऽअनुपरेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात्॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

गणपतिमावाहनम्—ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

अपामावाहनम्—ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनुरुध्यसे॥ गर्भे सञ्जायसे पुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि स्थापयामि।

मरुतावाहनम्—**ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेंपाथादिवोविंकहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतामावाहयामि स्थापयामि।

पृथ्वीमावाहनम्—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्म-सप्प्रथाः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

गङ्गादिनद्यावाहनम्—**ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्च्धासोदेशेभवत्सरित्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादीमावाहयामि स्थापयामि।

सप्तसागरानावाहनम्—**ॐ समुद्रोऽसिनभस्वार्द्रदानुः॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥ मारुतोऽसिमरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

मेरुमावाहनम्—**ॐ प्रपर्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिर्म्बुध्न्यमनुरीयमाणाः॥ विष्णोर्विक्क्रमणमसिविष्णोर्विक्क्रान्तमसिविष्णोःक्क्रान्तमसि॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

गदामावाहनम्—**ॐ गणानान्त्वागणपतिहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिहवामहेवसोममआहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदामावाहयामि स्थापयामि।

त्रिशूलमावाहनम्—**ॐ त्रिशद्धामविराजतिवाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

वज्रमावाहनम्—**ॐ महाँ२॥इन्द्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

शक्तिमावाहनम्—**ॐ वसुचमेवसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेऽर्थश्चमएमश्चमइत्याचमेगतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

दण्डमावाहनम्—**ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत॥ मयिवःकामधरणंभूयात्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

खड्गमावाहनम्—**ॐ खड्गोवैश्वदेवःश्वाकृष्णःकर्णोगर्दभस्तरक्षुस्तेरक्ष**

सामिन्द्रायसूकरश्सिंहोमारुतश्कृकलासश्पिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानां पृषतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

पाशमावाहनम्—ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमᳬश्रथायअथाव्वय मादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशमावाहयामि स्थापयामि।

अङ्कुशमावाहनम्—ॐ अᳬशुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽ उपाᳬशुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमेऽआश्विनश्चमेप्प्रति प्प्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

गौतमावाहनम्—ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतममावाहयामि स्थापयामि।

भरद्वाजावाहनम्—ॐ अयंदक्षिणाविश्वकर्म्मातस्यमनोवैश्वकर्म्मणंग्ग्रीष्मोमान सस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुभःस्वारᳬस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदश ब्बृहद्भरद्वाजऽऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

विश्वामित्रावाहनम्—ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रᳬसौवᳬशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शार द्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थीमन्थिनऽएकविᳬशऽएकविᳬशाद्वैराजंविश्वामित्रऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

कश्यपावाहनम्—ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो अस्तुत्र्यायुषम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

जमदग्न्यावाहनम्—ॐ अयंपश्चाद्विश्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्वव्यचसंवर्षाश्चा क्षुष्ष्योजगतीवार्षीजगत्त्याऽऋक्स्समृक्स्समाच्छुक्रःशुक्रात्सप्तदशःसप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

वसिष्ठावाहनम्—ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवनायनोवसन्तःप्प्राणयनो गायत्रीवासन्तीगायत्र्यैगायत्रंगायत्रादुपाᳬशुरुपाᳬशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंवसिष्ठऽ ऋषिःप्प्रजापतिगृहीतयात्वयाप्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

अत्र्यावाहनम्—ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंयथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्त पितरोयथाभागमावृषायिषत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

अरुन्धत्यावाहनम्—ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृभ्णानाःसुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

ऐन्द्र्यावाहनम्—ॐ अदित्यैरास्न्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

कौमार्यावाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्राह्म्यावाहनम्—ॐ इन्द्रायाहिधियेषितोविप्प्रजूतःसुतावतः॥ उपब्रह्माणि वाग्घतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

वाराह्यावाहनम्—ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यैपाजस्यंदिशांजत्रवोऽदित्यैभसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षंपुरीततानभऽउदर्य्येणचक्क्रवाकौमतस्नाब्भ्यांदिवंवृक्काब्भ्यांगिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्नावल्मीकान्क्लोमभिग्ग्लौभिर्गुल्म्मान्हिराभिःस्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिब्भ्याᳬंसमुद्रमुदरेणवैश्श्वानरंभस्म्मना॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

चामुण्डाऽवाहनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

वैष्णव्यावाहनम्—ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेविश्श्वतःसोमवृष्ण्ण्यम्॥ भवावाजस्य सङ्गथे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

माहेश्वर्यावाहनम्—ॐ यातेरुद्द्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

वैनायक्यावाहनम्—ॐ समक्ख्येदेव्व्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मोऽअहंतववीरंविंदेयतवदेविसन्दृशि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—सर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन करने के बाद प्रतिष्ठा करे।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥

सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनं परिपूर्णम्

●

सर्वतोभद्रदेवतानां पूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

भद्रं कल्याणकर्तृत्वं पारिषदं सर्वदेवाः।
मोदनार्थञ्च जीवानां मण्डलं परिकल्पितम्॥

सभी देवताओं के परिषद् स्वरूप, सभी का कल्याण करनेवाला, सभी जीवों को प्रसन्नता प्रदान करनेवाले भद्रसंज्ञकमण्डल की परिकल्पना करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन-ध्यान कर समर्पित करे—

विचित्र-रत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित!॥

हे! देवताओं द्वारा पूजित, विचित्र रत्नों से जटित तथा दिव्य कलाकृतियों से संयुक्त स्वर्णनिर्मित दिव्य रुचिकर सिंहासन देवताओं के द्वारा पूजित ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
त्रिगुणात्मगृहाणेदं भगवान् भक्तवत्सल!॥

सभी तीर्थों से लाये गये गन्धादि से युक्त इस पाद्य को भक्त वत्सल भगवान् त्रिगुणात्मा ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

त्रिगुणात्मन्नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यञ्च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्॥

गन्ध, पुष्प, अक्षत, फलादि से युक्त अर्घ्य हे त्रिगुणात्मा करुणाकर! ग्रहण करें आपको नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

त्रिदेवञ्च नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो॥

हे देवताओं से अभिवन्दित! त्रिदेव (ब्रह्मविष्णुमहेश) को नमस्कार है, हे प्रभु!आचमन करने के लिए गङ्गा का जल आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के पापों को हरनेवाला, सभी प्रकार का शुभ करने वाला, मन्दाकिनी का जल आपके सम्मुख कल्पित (समर्पित) है, हे देव! स्नान के लिए आप ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

गङ्गोदकस्य यद्वारि सर्वं मलहरं परम्।
तदिदं समर्पितं देव पुनराचमनं शुभम्॥

सभी प्रकार के मल को पूर्ण नष्ट करने में जो गङ्गाजल समर्थ है, वह जल यहाँ पुनः आचमन करने के लिए आपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गो से समुत्पन्न सभी को परम जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए उत्पन्न, परम पवित्र दूध हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से समुत्पन्न (निर्मित) मीठा-अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही मेरे द्वारा आपके स्नान के लिए लाया गया है, हे देव! आपको स्नान के लिए समर्पित है, ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नवनीत (मक्खन) से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी हे देव! आपको समर्पित करता हूँ, स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्पकणों से उत्पन्न, सुन्दर मधुर स्वादवाला, पुष्टि तथा दिव्य तेज प्रदान करनेवाला, शहद स्नान के लिए आपके सम्मुख समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ईख के रस से निर्मित, सभी प्रकार के मल को नष्ट करने वाली, शुभ और पुष्टि को प्रदान करने वाली, इच्छुरसनिर्मित दिव्य शर्करा आपके प्रति स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध-दही-घृत-मधु और शर्करा से निर्मित पञ्चामृत स्नान के लिए मैं लाया हूँ, हे देव! स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथों से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा-यमुना-गोदावरी-सरस्वती-नर्मदा-सिन्धु तथा कावेरी आदि दिव्य नदियों का दिव्य जल स्नान के लिए समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतल और उष्ण वायु के ताप और शैत्य से रक्षा के लिए तथा परमलज्जा के रक्षार्थ, शरीर को अलंकृत करने के लिए वस्त्र समर्पित है, हे देव! यह वस्त्र आपको प्रसन्न करे, आप हमें शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण सुरपूजित॥

नव तन्तुओ से निर्मित त्रिगुण (त्रिरावृत्तिवाला) देवतामय यज्ञ में पहने जानेवाला उपवीत मै आपको समर्पित करता हूँ, हे सुरपुजित! प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

दिव्य सुमनोहर सुगन्धित श्रीखण्ड से युक्त चन्दनलेप आपके विलेपन के लिए है, यह आपकी प्रसन्नता के लिए आपको समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

कुङ्कुम से सुशोभित अक्षत आपको निवेदित करता हूँ, हे सुरश्रेष्ठ परमेश्वर! प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मालती आदि के पुष्पों के द्वारा निर्मित, सुगन्धित पुष्पों की माला आपके लिए लाया हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण सुरनायक!॥

हे सुरश्रेष्ठ! मङ्गल प्रदान करनेवाले, अमृतमय, सुन्दर दूब के हरे-हरे अङ्कुरों को मैं आपकी पूजा के लिये लाया हूँ, इन्हें ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवामतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥१॥
नानापरिमलैर्द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥२॥

शान्ति प्रदान करनेवाला अबीर-गुलाल चन्दनादि से निर्मित विभिन्न सुगन्धित द्रव्य नाना प्रकार के दिव्य द्रव्यों से निर्मित उत्तम अबीर नाम का सुगन्धित सुरुचिकर चूर्ण समर्पित है, हे देव! ग्रहण करें और मुझे शान्ति प्रदान करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्व शोभायमान रक्तसिन्दूर, सभी सौभाग्य तथा सुख का वर्धन करनेवाला है, सभी प्रकार के शुभ की कामना के लिए सिन्दूर समर्पित करता हूँ, हे देव! ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न वनस्पतियों के रसों से निर्मित गन्धों में अत्युत्तम गन्धयुक्त धूप सभी देवताओं को सुगन्धि प्रदान के लिए है, हे देव! अपको समर्पित है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

तीनों लोकों के अन्धकार को दूर करनेवाला, घृतयुक्त बत्तियों को अग्नि से प्रज्वलित किया है, हे देवेश! प्रसन्नता के लिए ग्रहण करें, भक्तिपूर्वक परमात्मादेव आपको समर्पित है, इसे ग्रहण करके इस घोरतम अज्ञानान्धकार से हमारी रक्षा करें, दीपज्योति को नमस्कार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्कराखण्ड खाद्य दधि दूध एवं घृत से युक्त भक्ष्य भोज्य आहाररूपी नैवेद्य ग्रहण करके हमारी भक्ति को अचल करे, और हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करे तथा अन्त में परमगति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर!॥

मलयाचल में उत्पन्न श्वेत चन्दन कस्तूरी इत्यादि गन्धों से युक्त हाथों को शुद्ध करने के लिए उद्वर्तन के रूप में ग्रहण कर प्रसन्न हो।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

महादिव्य पूगीफल (सुपाड़ी) नागवल्लीदल (पान के पत्ते से) युक्त एलादिचूर्ण (इलाइची इत्यादि) से युक्त ताम्बूल ग्रहण करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पुंगीफल-एलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

हे देव! हमने यह फल आपके सम्मुख स्थापित किया है, जिसे ग्रहण करके जन्म-जन्मान्तरों तक हमारी समस्त कामनाओं की पूर्ति करें तथा हमें यज्ञफलवान् करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

हिरण्यगर्भ से उत्पन्न हेमबीज (सुवर्ण के सदृश) के समान शोभायमान अनन्तपुण्यफल को प्रदान करके शान्ति प्रदान करनेवाली सुवर्णमय दक्षिणा ग्रहण कर शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्-गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केला) के गर्भ से उत्पन्न (निर्मित) कर्पूर (जलता हुआ) से आरती करता हूँ, हमें कृपापूर्वक दृष्टि से देख करके वर प्रदानकर्ता बनें।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर!॥

अपने-अपने ऋतुओं में उत्पन्न नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्पों से युक्त पुष्पाञ्जलि प्रदान करता हूँ, हे परमेश्वर! ग्रहण कर प्रसन्न हों।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥१॥

किसी भी प्रकार के जन्मजन्मान्तर में किये हुए सभी पाप एक-एक कदम देव-प्रदक्षिणा करने से नष्ट हो जाते हैं॥१॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥२॥

पूजन करने के बाद एक-एक कदम जो यज्ञकर्ता देव की परिक्रमा करता है, वह निश्चय ही अश्वमेधादि यज्ञों का फल प्राप्त करता है, अतः जन्म-जन्मान्तरकृत समस्त पापों के क्षय के लिए आपकी परिक्रमा करता हूँ॥२॥

पूजनसमर्पणम्—दक्षिण हाथ में जल लेकर पूजनसमर्पण करे—

अनया पूजया सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

सर्वतोभद्रमण्डल के पूजन के बाद प्रधानदेवता का पूजन करे।

सर्वतोभद्रदेवतापूजनं परिपूर्णम्

●

अन्तःपूजनम्

अन्तःपूजन में आचमन करके प्राणायाम करे तथा मूलाधार की कर्णिका में दीप कलिकाकार स्वयम्भू लिङ्गरूपी जीव को साढ़े तीन बार लपेटी हुई कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे, क्रमशः सभी चक्रों में ले जाकर सहस्रार में महाकाल शिव के साथ स्थापन-पूजन कर, अक्षमाला से अष्टोत्तरशत जप कर समर्पित करे।

कुण्डलिनीध्यानम्

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीं,
प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटलसन्निभाम्।
तामिष्टदेवतां रूपां सार्द्धत्रिवलयान्वितां,
कोटिसौदामिनीभासां स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्॥

मूलाधार में निवास करने वाली सूक्ष्म, सर्प की आकृतिवाली, सोई हुई, विद्युत् के समान प्रभावाली, साढ़े तीन वलयवाली, सौदामिनी के समान भासमान, स्वयंभू लिङ्ग को वेष्टित की हुई, इष्टदेवतारूपिणी कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान करता हूँ।

पैर से जानुपर्यन्त चतुष्कोण सुवर्ण के समान देदीप्यमान '**ळँ**' बीजयुक्त पृथ्वीमण्डल का पादेन्द्रिय तथा गन्धसहित घ्राणेन्द्रिय की मोक्षकलायुक्त ब्रह्ममय तथा समानवायु का ध्यान करे। फिर जानु से नाभिपर्यन्त शरीर में अर्धचन्द्राकार श्वेतवर्ण वाले '**वँ**' बीजयुक्त जलमण्डल की कल्पना कर ग्रहणक्रियायुक्त पाणीन्द्रिय तथा रसयुक्त रसनेन्द्रिय की प्रतिष्ठाकलायुक्त अकलमहाविष्णु तथा उदानवायु का ध्यान करे, फिर नाभि से हृदयपर्यन्त त्रिकोणाकृति वाले रक्तवर्ण '**रँ**' बीजयुक्त स्वस्तिकाकार तेजोमण्डल पर विसर्गक्रियायुक्त रुद्रदेवता, उपस्थेन्द्रिय तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर हृदय से लेकर कण्ठपर्यन्त गोलाकार धूम्रवर्ण '**यँ**' बीजयुक्त वायुमण्डल पर आनन्दक्रियायुक्त ईशानदेवता तथा अपानवायु का ध्यान करे, फिर कण्ठ से लेकर भ्रूमध्यपर्यन्त शरीर में गोलाकार स्वच्छ वर्ण वाले '**हँ**' बीजयुक्त नभोमण्डल पर वचनक्रियासहित वागेन्द्रिय का तथा शब्दसहित सदाशिव एवं प्राणवायु का ध्यान करे, तदनन्तर भ्रूमध्य से ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त मनोबुद्धिमय चैतन्य शिवशक्तिमय ब्रह्म '**हँक्षँ**' बीज का ध्यानकर सहस्रारचक्र में शून्य सर्वचैतन्यमय परब्रह्म शिवरूप श्रीगुरु का ध्यान करने के बाद सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को जल में, जलमण्डल को अग्नि में, अग्निमण्डल को वायु में, वायुमण्डल को आकाश में तथा आकाशमण्डल को अहंकार में, अहंकारमण्डल को महत्तत्त्व में, महत्तत्त्व को प्रकृति में, प्रकृतितत्त्व को महाशिव में विलीन करे। '**सोऽहं हंसः**' मन्त्र से प्रसुप्त कुण्डलिनी को जगा करके मानसोपचार पूजन करके मूलाधार स्थित '**ळँ**' बीजयुक्त '**वँ शँ षँ सँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः स्वाधिष्ठान चक्र में ले जाकर स्थापित कर पूजन करके स्वाधिष्ठान स्थित '**वँ**' बीज के सहित '**बँ भँ मँ यँ रँ लँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः मणिपूर चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**रँ**' बीज के सहित '**डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व अनाहत चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर पूजन कर '**यँ**' बीज के सहित '**कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व विशुद्ध चक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापित कर पूजन करने के बाद '**हँ**' बीज के सहित '**अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ ऌँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः**' समस्त वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये। पुनः तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को ले जाकर स्थापितकर पूजन करके '**हँ क्षँ**' वर्णों को कुण्डलिनी शक्ति के मुख में धारण कराये, पुनः तदूर्ध्व आज्ञाचक्र में कुण्डलिनी शक्ति को स्थापितकर पूजनकर सहस्रार स्थित शिवरूप परब्रह्म में समस्त वर्णों के सहित जीव को '**हंसः सोऽहं**' के साथ विलीन करे तथा शिव-शिवा का मानस षोडशोपचार पूजन

करके, मूल मन्त्र का मातृका वर्णों के सहित एक सहस्र जप करके महाकाल शिव-शिवारूपी श्रीगुरु को समर्पित करे, पुन: मूलाधार में लाकर ध्यानकर मानसोपचार पूजन करे।

शिवशिवाध्यानम्—

मेघाङ्गीं विगताम्बरां शिवशिवारावां त्रिनेत्रां परां,
कर्णालम्बितवालयुग्मऽभयदां मुण्डस्रजामालिनीम्।
वामाधोर्ध्वकराम्बुजे नरशिर: खड्गञ्च सव्येतरे,
दानाभीतिविमुक्तकेशनिचयां वन्दे सदाकालिकाम्॥१॥

मेघ के समान आभावाली, निरावरण (सर्वत्र पूर्ण रूप से व्याप्त), त्रिनेत्र धारण करने वाली, शिवशिवा जो कानों में लटकते हुए एक जोड़ी बालों (वालशव) को धारण किये हुए अभय प्रदान करने वाली, मुण्ड की मालाओं को धारण करनेवाली, बायें तरफ के ऊपर के हाथ में खड्ग तथा नीचे के हाथ में नर का शिर शोभित है, दाहिने तरफ के ऊपर के हाथ से वर तथा नीचे के हाथ से अभय प्रदान करती हुई, खुली हुई केशराशिवाली, शिव के सहित कालिका देवी की मैं सदा वन्दना करता हूँ॥१॥

षडाधारपङ्केरुहान्तर्विराजत्सुषुम्नान्तरालेऽतितेजोल्लसन्तीम् ।
सुधामण्डलं द्रावयन्तीं पिबन्तीं सुधामूर्तिमीडेऽहमानन्दरूपाम्॥२॥

षट्चक्रों कमल को आधार बनाकर विराजमान सुषुम्ना के भीतर अतितेज से उल्लसित सुधामण्ड को द्रवीभूत करती हुई अमृत मूर्ति स्वरूप ईश्वरी और आनन्द रूप ईश्वर को नमन है॥२॥

ध्यान करके मानसोपचार पूजन करके अकार से हकार और हकार से अकार तक आरोहाऽवरोह क्रम से अक्षमाला से मूल मन्त्र जप कर देवता को समर्पित करने के बाद पीठस्थ देवताओं को आवाहन कर स्थापना करने के बाद पूजन करे।

पीठदेवतापूजनम्

ॐ भूर्भुव: स्व: मँ मण्डूकाय नम: मण्डूकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: कँ कालाग्निरुद्राय नम: कालाग्निरुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: कँ कच्छपाय नम: कच्छपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: आँ आधारशक्तये नम: आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: पँ प्रकृतये नम: प्रकृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: कँ कूर्माय नम: कूर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: अँ अनन्ताय नम: अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: पँ पृथिव्यै नम: पृथ्वीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।
ॐ भूर्भुव: स्व: क्षँ क्षीरसमुद्राय नम: क्षीरसमुद्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ रत्नद्वीपाय नमः रत्नद्वीपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कल्पवृक्षाय नमः कल्पवृक्षशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ मणिमण्डपाय नमः मणिमण्डपशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वँ स्वर्णसिंहासनाय नमः स्वर्णसिंहासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः धँ धर्माय नमः धर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्ञँ ज्ञानाय नमः ज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ वैराग्याय नमः वैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ ऐश्वर्याय नमः ऐश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अधर्माय नमः अधर्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अज्ञानाय नमः अज्ञानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अवैराग्याय नमः अवैराग्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अनैश्वर्याय नमः अनैश्वर्यशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कल्पान्तकारायानन्ताय नमः कल्पान्तकारायानन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ आनन्दकन्दाय नमः आनन्दकन्दशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ संविन्नालाय नमः संविन्नालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विँ विकारमयकेशरेभ्यो नमः विकारमयकेशरशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः प्रकृत्यात्मकपत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

पूजन करके दश कलाओं सहित वह्नि-अर्क-सोममण्डलों का पूजन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः अग्निमण्डलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः धूम्रार्च्चिषे नमः धूम्रार्च्चिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊष्मायै नमः ऊष्माशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्वलिन्यै नमः ज्वलिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विस्फुलिङ्गिन्यै नमः विस्फुलिङ्गिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सुश्रियै नमः सुश्रियाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वरूपायै नमः स्वरूपाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कपिलायै नमः कपिलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः हव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कव्यवाहनायै नमः हव्यवाहनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मँ द्वादशकलात्मनेसूर्यमण्डलाय नमः सूर्यमण्डलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ भँ तपिन्यै नमः तपिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः खँ बँ तापिन्यै नमः तापिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गँ फँ धूम्रायै नमः धूम्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः घँ पँ मरीच्यै नमः मरीचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ङँ नँ ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः चँ धँ रुच्यै नमः रुचिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः छँ दँ सुषुम्णायै नमः सुषुम्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः जँ थँ भोगदायै नमः भोगदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः झँ तँ विश्वायै नमः विश्वाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ञँ णँ बोधिन्यै नमः बोधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः टँ ढँ धारिण्यै नमः धारिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ठँ डँ क्षमायै नमः क्षमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः सोममण्डलशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अमृतायै नमः अमृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ मानदायै नमः मानदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इँ पूषायै नमः पूषाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईँ तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उँ पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऊँ रत्यै नमः रतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋँ शशिन्यै नमः शशिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॠँ धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लृँ चन्द्रिकायै नमः चन्द्रिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः लॄँ कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः एँ ज्योत्स्नायै नमः ज्योत्स्नाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐँ श्रियै नमः श्रीयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओँ प्रीत्यै नमः प्रीतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः औँ अङ्गदायै नमः अङ्गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ पूर्णायै नमः पूर्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अः पूर्णामृतायै नमः पूर्णामृताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ सत्त्वाय नमः सत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ रजसे नमः रजःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः तँ तमसे नमः तमःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ आत्मने नमः आत्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अँ अन्तरात्मने नमः अन्तरात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ परमात्मने नमः परमात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्ञाँ ज्ञानात्मने नमः ज्ञानात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः माँ मायातत्त्वाय नमः मायातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कँ कलातत्त्वाय नमः कलातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विँ विद्यातत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः पँ परतत्त्वाय नमः परतत्त्वशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठस्थ देवताओं आवाहनस्थापन के बाद पीठशक्तियों का आवाहनपूजन करे।

पीठशक्तिपूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ आधारशक्तिभ्यो नमः आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ जयाशक्तिभ्यो नमः जयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ विजयाशक्तिभ्यो नमः विजयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ अजिताशक्तिभ्यो नमः अजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ अपराजिताशक्तिभ्यो नमः अपराजिताशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ नित्याशक्तिभ्यो नमः नित्याशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ विलासिनीशक्तिभ्यो नमः विलासिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ दोग्ध्राशक्तिभ्यो नमः दोग्ध्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ अघोराशक्तिभ्यो नमः अघोराशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलाशक्तिभ्यो नमः मङ्गलाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आँ ह्रीँ क्रौँ सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः प्रेतासनाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि।

ध्यानम्—

ॐ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्,
शूलं कपालं दधतं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।
पाशाश्चापासृक्कपाले ऋणीषूच्छूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्,
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

रक्त महासागर में अरुणकालिक सूर्य के वर्ण के समान अरुण वर्णवाले कमल पर विराजमान हाथ में पाश-अंकुश-खड्ग-शर-बाण-शूल-कपाल धारण किये हुए तीन नेत्र वाली भगवती को प्रणाम करता हूँ। हाथों में पाशचापसृक्कपालशूल धारण किये हुए रक्तवर्ण वाली रक्तवर्ण के कमल के आसन पर बैठी हुई प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

शरण्ये वरण्ये सुकारुण्यपूर्णे हिरण्योदराद्यैरगम्येऽतिपुण्ये।
भवारण्यभीतं च मां पाहि भद्रे नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानि॥२॥

शरणागत होने, वरण करने पर सुकारुण्यपूर्ण, हिरण्यगर्भ से आदि, किसी भी उपाय से न जानी जाने वाली, पुण्यस्वरूपा, भवसागर के भय से भयभीत, हमारी कल्याणकर्ती रक्षा करो, हे भवानी! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है॥२॥

मानसोपचारपूजनम्—लेलिहान मुद्रा से हृदय प्रदेश का स्पर्श करते हुए तत्तद् भावनाओं का चिन्तन करते हुए मानस पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि कालिकायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायोगपीठात्मने नमः कालिकायोगशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

ॐ सर्वशक्तिकमलासनाय नमः कमलासनशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि।

पीठ शक्तियों का पूजन करने के बाद प्रधान कलश स्थापन करे।

पीठस्थापनं परिपूर्णम्

प्रधानकलशस्थापनम्

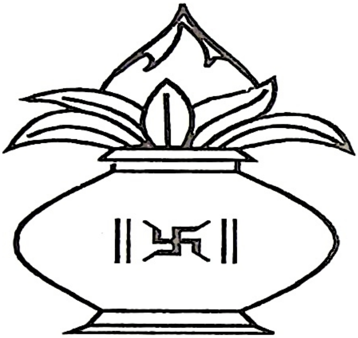

भूमिस्पर्श—ॐ मुहीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्युज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानोभरीमभिः॥

सप्तधान्य विखेरना—ॐ ओषधयुःसमवदन्तुसोमेनसुहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥

कलशस्थापन—ॐ आजिघ्रकुलशंमुह्यात्वाविशुन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसुहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः॥

कलश में जल भरना—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भुसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतुसदन्न्यसिवरुणस्यऽऋतुसदनमसिवरुणस्यऽऋतुसदनमासीद।

कलश में गन्ध डाले—ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥

कलश में सर्वौषधी डाले—ॐ याओषधीःपूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बभ्रुणामुहꣳशतंधामानि सुप्त च॥

कलश में दूर्वा डाले—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषुष्परि॥ एवानो दूर्वेप्प्रतनुसुहस्रेण शतेन च॥

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनंपर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्त्रेस्त्थोव्वैष्णव्यौसवितुर्व्वःप्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्त्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्त्रपतेपवित्त्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः॥**

कलश में पूंगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिः कविरग्ग्निर्हव्यान्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमां अस्मैदेवायहविषाविधेम॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्ण्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्क्रीणावहाऽ इषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुणध्यानावाहनपञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपते वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—दक्षिण हाथ के स्पर्श से आवाहन करे—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके जो निर्मित हुआ है, उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ होती हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनीगोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा सप्तद्वीप मेदिनी स्थित है, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापीगोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री, नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

इसी से विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षय-कारक हो समस्त पापों को नष्ट करनेवाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्ग रूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयन्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिभ्यः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें॥८॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

कलश-प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

हे कुम्भ! देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से तुम उत्पन्न हुए, तुम्हें स्वयं विष्णु ने धारण किया॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

जल से ही सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थों के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, जल ही सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स पैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव! कुम्भ तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायकम्।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करें॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दर श्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दर मङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

पाश को हाथ में धारण करनेवाले आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करनेवालों के नायक, जबतक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक सानिध्य प्रदान करो॥७॥

नमः आद्याय बीजाय ज्ञानविज्ञानमूर्तये।
प्राणेन्द्रियमनोबुद्धिर्विकारैर्व्यक्तिमीयुषे ॥८॥

आदिबीज ज्ञानविज्ञानमूर्ति प्राणइन्द्रियमनबुद्धि के विकारों को समाप्त करने के लिए आपको नमस्कार है॥८॥

कलश स्थापन के पश्चात् पीठदेवताओं का आवाहन स्थापन करे।

पीठस्थदेवतास्थापनम्

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं जयायै नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विजयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अजितायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपराजितायै नमः अपराजितामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विलासिन्यै नमः विलासिनीमावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दोग्ध्रायै नमः दोघ्रामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मध्य में—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नित्यायै नमः नित्यामावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पीठसहितप्रधानकलशस्थापनं परिपूर्णम्

●

प्रधानदेवताप्रतिष्ठा

अग्न्युत्तारणविधिः—श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता की सुवर्णमयी प्रतिमा बना करके उसे अग्नि में तपा कर घृत लेपन करके उसपर अधोलिखित मन्त्र पाठपूर्वक जलधारा गिराये।

ॐ समुद्रस्युत्त्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठ॰शिवोभव॥ ॐ हिमस्यत्वाजरायुणाग्नेपरिव्ययामसि॥ पावकोअस्मभ्यर्ठ॰शिवोभव॥ ॐ उपज्जमनुप

वेतुसेऽवतरनुदीष्ष्वा॥ अग्ग्नेपित्तमुपामसिमण्डूकिताभिरागहि सेमंनोयुज्ञंपावुकवर्ण्णं शिवंकृधि॥ ॐ अपामिदंन्ययनं समुद्रस्यनिवेशनम्॥ अुन्न्याँस्तेऽअुस्म्मत्तपन्तुहेतयं÷ पावुकोऽअस्म्मब्भ्यं शिवोभव॥ ॐ अग्ग्नेपावकरोचिषामुन्द्रयादेवजिह्व्वयां॥ आदेवा न्वक्षियक्षिंच॥ ॐ सनं÷पावकदीदिवोऽग्ग्नेदेवाँ२॥ऽइहावह॥ उपंयुज्ञं हविश्श्चनं॥ ॐ पावुकयायश्श्चितयंन्त्याकृपाक्षामंन्नुरुचऽउुषसौनभानुना। तूर्वन्नयामुन्नेतंशस्युनूरणुऽ आयोघणेनततृषाणोऽअजरं÷॥ ॐ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वुर्च्चिषे॥ अुन्न्याँस्तेऽ अुस्म्मत्तपन्तुहेतयं÷पावुकोऽअुस्म्मब्भ्यं शिवोभव॥ ॐ नृषदेवेडंप्सुषदेवेड्वर्हिषदे वेड्वनुसदेवेट्स्वर्व्विदेवेट्॥ ॐ येदेवादेवानांय्युज्ञियाय्युज्ञियानाᳬंसंवत्सुरीणमुपभाग मासते॥ अहुतादोहविषोयुज्ञेऽअुस्मिन्न्त्स्वयंपिबन्तुमधुनोघृतस्य॥ ॐ येदेवादेवेष्वधि देवत्वमायुन्न्येब्रह्मणं÷पुरऽएतारोऽअस्य॥ येब्भ्योनऋतेपवतेधामकिञ्चुननतेदिवोनऽ पृथिव्व्याऽअधिस्नुषु॥ ॐ प्राणदाऽअपानुदाव्यानुदावर्च्चोदावरिवोदा॥ अुन्न्याँस्तेऽ अस्म्मत्तपन्तुहेतयंपावुकोऽअुस्म्मब्भ्यं शिवोभव॥

अग्न्युत्तरण के पश्चात् बीज मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंस: अस्यां श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्या: सुवर्ण प्रतिमायां प्राणा: इह प्राणा:॥

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंस: अस्यां श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्या: सुवर्ण प्रतिमायां जीव इह स्थित:।

ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं सोऽहं हंस: अस्यां श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्या: सुवर्ण प्रतिमायां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु:श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्युबृहुस्प्पतिर्य्युज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्युज्ञᳬंसमिमन्दे धातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणा: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा: क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

इष्टपूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप सुवर्ण के समान पीतवर्णवाली, किञ्चित् हरितवर्णवाली, किञ्चित् हरिणी रूप धारण करनेवाली, सुवर्णमिश्रित रजत की माला धारण करनेवाली,

सुन्दर वर्णवाले चाँदी के समान श्वेतपुष्पों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करनेवाली, चञ्चलता हिरण्यमयी रूपवाली एवं हिरण्यमय ही जिसका शरीर है, ऐसी सुवर्णमयी लक्ष्मी को मेरे लिए आवाहन करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा ध्यायामि ध्यानोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान करके यन्त्र पर पुष्प चढ़ाये।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत्-विख्यात एवं अनपगामिनी अर्थात् मुझको छोड़कर अन्यत्र न जानेवाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ। मैं सुवर्ण, गौ, घोड़े और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करने के लिए उनका आवाहन करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा आसनं समर्पयामि, आसनार्थे पुष्पं निवेदयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

जिन देवी के आगे घोड़े और बीच में रथ हैं अथवा जिनके आगे घोड़े जुटे हुए हैं, ऐसे रथ में सवार, हाथियों के निनाद से जगत् को आनन्दित करनेवाली दीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देनेवाली लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ, दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी का अपने घर में सर्वदा निवास करने के लिए मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

गन्ध, उसीर, गोरोचन, श्यामक, विष्णुकान्ता, कमल एवं दुर्वा युक्त जल अनामिका अङ्गुष्ठ मिलाकर यन्त्र स्थित भगवती के युगल चरणों मे समर्पित करे।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

जिनका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्दहास्ययुक्ता हैं, जो चारों ओर सुवर्ण से वेष्टित हैं एवं दयार्द्र हृदयवाली या समुद्र से

उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीरवाली होती हुई भी दीप्यमान हैं, अर्थात् जो लक्ष्मीजी दया से आर्द्र होते हुए तेज से देदीप्यमान हैं, स्वयं पूर्णकाम होने के कारण भक्तों के नानाविध मनोरथों को पूर्ण करनेवाली, कमल के ऊपर विराजमान तथा कमल के सदृश गृह में निवास करनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने समीप बुलाता हूँ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा अर्घ्यं समर्पयामि। हाथ में अर्घ्य प्रदान करे।

आचमनम्—दोनो हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

चन्द्रमा के सदृश प्रकाशवाली, प्रकृष्ट कान्तिवाली, अपनी कीर्ति से देदीप्यमान, स्वर्गलोक में इन्द्रादि देवताओं से सेवित, अतिदानशीला, कमल के मध्य में रहने वाली, सबकी रक्षा करनेवाली, भक्तों को आश्रय देनेवाली, जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता रहूँ, हे लक्ष्मी! तुम्हारी कृपा से मेरी दरिद्रता नष्ट हो, अत: मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ अर्थात् तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे भम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा मुखे आचमनीयं समर्पयामि। हीनोन्नत समस्ताङ्गुलियों से आचमन मुद्रा के द्वारा चन्दन, पुष्प, जाती, कर्पूर, कंकोल, लवङ्ग चूर्ण जल में मिलाकर मुख में आचमन निवेदन करे।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गादि सभी तीर्थो से प्रार्थनापूर्वक मैं जल लाया हूँ, इस जल का स्पर्श सुख प्रदान करनेवाला है, इसे स्नान के लिए ग्रहण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूर के समान सुगन्धित, दूध के समान धवल, स्वाद में शीतल जल आचमन के लिए प्रस्तुत है, इस आचमनीय जल को देवि! ग्रहण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा स्नानाङ्गाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पय:पात्र लेकर समर्पित करे—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

कामधेनु गाय से उत्पन्न सभी को जीवन प्रदान करनेवाला, यज्ञ के लिए अति पवित्र दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध से उत्पन्न मधुर तथा अम्लयुक्त चन्द्रमा के समान धवल दही हे देव! हम आपके स्नान के लिए लाये हैं, इस दही को ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मक्खन से उत्पन्न सभी को सन्तोष प्रदान करनेवाला घी आपको स्नान के लिए प्रदान करता हूँ, इस घृत को स्नान हेतु ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुष्प कणों से उत्पन्न सुन्दर स्वादवाला मधुर शहद, तेज और पुष्टि को प्रदान करने वाला, दिव्य शहद स्नान के लिए आपको समर्पित है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

इक्षुरस से उत्पन्न शर्करा शुभ पुष्टि प्रदान करनेवाली, सभी प्रकार के मल का अपहरण करनेवाली है, दिव्य स्नान के लिए इस शर्करा को ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दूध, दही, घी, मधु और शर्करा से युक्त पञ्चामृत दिव्य स्नान के लिए आपको समर्पित है, इस पञ्चामृत को ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदासिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु तथा कावेरी दिव्य नदियों के दिव्य जल आपके स्नान के लिए समर्पित है, इस जल को ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

हे सूर्य के सदृश कान्तिवाली देवि! आपके तेज से वनस्पति विशेष बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष उत्पन्न हुआ (आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ) उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे भीतर-बाहर की दरिद्रता को दूर करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

हे लक्ष्मि! देवसखा अर्थात् श्रीमहादेव के सखा कुबेर या इन्द्रादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्नि की उपासना करूँ एवं मणि के साथ अर्थात्

चिन्तामणि के साथ, कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला के सदृश यश मुझे प्राप्त हो अर्थात् कुबेर का धन और यश दोनों ही मुझे मिले, मैं इस सुन्दर राष्ट्र (शरीर) में उत्पन्न हुआ हूँ, अत: हे कुबेरदेव! आप यश और ऐश्वर्य मुझे प्रदान करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमत: शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शीतवायु से रक्षा के लिए, लज्जा की सतत रक्षा के लिए, शरीर पर अलङ्करण के लिए, सदैव शान्ति प्रदान करने के लिए वस्त्र समर्पित करता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

भूख तथा प्यास रूपी मल को धारण करनेवाली एवं लक्ष्मी जी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ। हे लक्ष्मि! आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धनवृद्धि के सभी प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धि द्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

सुगन्धित पुष्प के अर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी दबाने योग्य नहीं, धन-धान्यादि से सदा परिपूर्ण, गौ-अश्वादि पशुओं की समृद्धि को देनेवाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा जगत्प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री: श्रयतां यश:॥

हे लक्ष्मि! तुम्हारे प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप अर्थात् दुग्ध-दध्यादि एवं यव, ब्रीहि इत्यादि अन्नो के रूप अर्थात् भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य, चतुर्विध भोज्यादि पदार्थों—इन समस्त पदार्थों को प्राप्त करूँ। सम्पत्ति-यश मुझमें आश्रय लेकर रहे अर्थात् मैं धनवान् कीर्तिमान् बनूँ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूं फट् स्वाहा अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

कर्दम नामक ऋषि-पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! आप मुझमें अच्छी तरह वास करे। इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत् की माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूं फट् स्वाहा पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मङ्गल प्रदान्।
आनीतां स्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥

हरे-हरे दूर्वाङ्कुर जो अमृतत्व तथा मङ्गल प्रदान करने वाले हैं, आपके पूजा के लिए लाया हूँ, आप प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूं फट् स्वाहा दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

जिस प्रकार कर्दम ऋषि की सन्तति (ख्याति) से लक्ष्मी का अवतार हुआ है, उसी प्रकार अन्य कल्प में भी समुद्र से चौदह रत्नों के बाद लक्ष्मी का आविर्भाव हुआ है। उसी प्रकार जल देवता स्निग्ध एवं मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे (पदार्थों की सुन्दरता लक्ष्मी ही है) लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रीत चार पुत्र हैं। जिसमें हे चिक्लीत! तुम मेरे गृह में निवास करो, केवल तुम ही नहीं, अपितु दिव्यगुणयुक्ता तथा सर्वाश्रयाभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रैं हूं प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूं फट् स्वाहा नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

अरुणकालिक प्रकाश के समान आभावाला सिन्दूर तथा जवाकुसुम के सदृश वर्ण (रंग) वाले सिन्दूर से हे देवि! मुझ पर प्रसन्न हो तथा पूजित हों।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रें हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य। सिन्दूरादि समर्पण करने के बाद देवता के सम्मुख नैवेद्य स्थापित करने के बाद धूप तथा घृतदीप प्रज्वलित करने के बाद सर्वप्रथम धूप निवेदन करने के बाद दीप निवेदन करे।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

दशाङ्ग, गुग्गुल, चन्दन तथा अगुरु जैसे गन्धों से युक्त धूप भक्तिपूर्वक हम समर्पित करते हैं, हे महादेवि! इस धूप को ग्रहण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रें हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेदा अग्ने! आप मेरे घर में पुष्करिणी अर्थात् हाथियों के झुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना, आर्द्रशरीरवाली, पुष्टि को देनेवाली, पुष्टिस्वरूपा रक्त और पीत वर्णवाली, कमल की माला धारणकर जगत् को प्रकाशित करनेवाली प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्फ्रें हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनो हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

चारो प्रकार का सुन्दर सुस्वादु षड्रसो से युक्त नैवेद्य हे देवि! भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, ग्रहण करके अपने में हमारी भक्ति को अचल करो।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

विभिन्न प्रकार के सुगन्धित द्रव्य चन्दन तथा रजनी पुष्प से युक्त करोद्वर्तन हम प्रदान करते हैं, गणेश सहित मातृकायें प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे घर में भक्तो पर सर्वदा दयार्द्रचित्त रहें, समस्त भुवन जिनकी याचना करते हैं, दुष्टों को दण्ड देनेवाली, यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्ण स्वरूपा एवं सुवर्ण की माला धारण करनेवाली सूर्यज्वाला अर्थात् जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत् का पालन-पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा जगत् का पालन-पोषण करती है, अत: प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को हमारे लिए प्रदान करो।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिनागवल्लिदलसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाऽऽम्रं कपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

हे देव! द्राक्षा (किसमिस), खर्जूर (खजूर), कदली (केला), पनस (कटहल), आम्र (आम), कपित्थ (कैथ), नारिकेल (नारियल), इक्षु (गन्ना), जम्बूफल (जामुन) आदि फलों को आपके प्रसन्नता के लिए लाया हूँ, प्रेमपूर्वक ग्रहण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्॥

पूजा के पूर्ण फल की समृद्धि के लिए स्वर्णमयी मुद्रा आपके सामने समर्पित भाव से स्थापित है, जिसे स्वीकार करके जिससे प्रसन्न मन होकर हमारे मनोरथ को पूर्ण करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथों से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कदली (केले के वृक्ष के) गर्भ से उत्पन्न कर्पूर प्रदीपित करके आपकी आरती हम करते हैं, जिसे देखकर आप प्रसन्न हों तथा हमारी समस्त कामनापूर्ति के लिए वर प्रदान करें।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा नीराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

हे जातवेद अग्ने! आप मेरे यहाँ उस जगद्विख्यात लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र कहीं न जानेवाली हों, उन लक्ष्मी को प्राप्त कराओ। जिन लक्ष्मी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े, और पुत्र-पौत्रादि को प्राप्त करूँ, अर्थात् अचला लक्ष्मी को प्राप्त करूँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदशर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

जो मनुष्य शुचिता को प्राप्तकर अर्थात् शुद्ध होकर लक्ष्मी की कामना से श्रद्धापूर्वक पवित्र मन और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ के घृत का होम करे और उसके साथ लक्ष्मीसूक्त तथा श्रीसूक्त के पूर्वोक्त पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन निरन्तर जप करता रहे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथ से पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पित करे—

उद्यच्छीतांशुरश्मिद्युतिचयसदृशी फुल्लपद्मोपविष्टां,
वीणानागेन्द्रशंखाऽऽयुधपरशुधरां दोर्भिरीड्यैश्चतुर्भिः।
मुक्ताहारांशुनानामणियुतहृदयां सिन्धुपात्रं वहन्तीं,
वन्देऽभीड्यां भवानीं प्रहसितवदनां साधकेष्टप्रदात्रीम्॥

उदयकालिक चन्द्रमा के प्रकाश के समान खिले हुए कमल पर बैठी हुई, चारों हाथों में क्रमश: वीणा, नाग, शङ्ख, आयुध, परशु धारण की हुई, हृदय पर मुक्तामणि जटित हार धारण की हुई, अमृतपात्र को हाथ में धारण की हुई, प्रसन्न मन से मधुर-मधुर हास्य करती हुई, साधकों के मनोकामनाओं की पूर्ति करनेवाली भवानी की मैं वन्दना करता हूँ।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बले सुविपुलं महिषासुरस्य॥२॥

हे देवि! हम पर प्रसन्न हों, परमात्मास्वरूपा आपके प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है और क्रोध में भर जाने पर आप तत्काल कितने कुलों को नाश कर डालती हैं, महिषासुर की यह विशाल सेना क्षणभर में आपके कोप से नष्ट हो गयी है॥१॥

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनेन पूजनेन प्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करे। पुष्पाञ्जलि प्रदान कर देवी के सहस्रनामों से पुष्पादिकों से अर्चन करे।

सहस्रार्चन करने के बाद देवी को नारिकेल बलिदान प्रदान करने के बाद बटुकादि को पायस बलिदान प्रदान करे।

दैनिकबलिदानम्

सङ्कल्पः—**ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे** (यदि वाराणसी में कर्म कर रहे है तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटक-विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे**) **विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे**

अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा-यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीइष्टदेवताप्रीतये प्रत्यङ्गिरापुरश्चरण-सिद्धये नारिकेलबलिदानं करिष्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः। नारिकेलबलिमण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलबलिमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेलबलिमण्डल पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलदेयबलये नमः। नारिकेलबलि को मण्डल पर स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नारिकेलदेयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। नारिकेलबलि पर गन्धाक्षतपुष्प छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा नारिकेलदेयबलिं तुभ्यं समर्पयामि। हाथ में जल लेकर नारिकेलबलि समर्पित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हुं फट्। नारिकेलबलि पूजन के बाद वीरासन मुद्रा से एक हाथ से एक ही बार में बलि का स्फोटन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा प्रत्यङ्गिरां तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ चरकीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ विदारीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ पूतनां तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ पापराक्षसीं तर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा स्फोटितनारिकेलदेयबलिं समर्पयामि।

बलिदानसमर्पणम्—दोनों हाथ से जल लेकर बलिदान समर्पित करे—

अनेन बलिदानेन प्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

समर्पण के बाद योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

वटुकादिबलिदानम्

वटुकादिबलिदानम्—बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, ईशान, वह्नि, निर्ऋति, वायव्य कोणात्मक चतुरस्र युक्त मण्डल बनाकर क्रम से ईशानकोण में बटुक, अग्निकोण में योगिनी, नैर्ऋत्यकोण में गणेश, वायव्य में क्षेत्रपाल तथा मध्य में राजराजेश्वर का पूजन कर

कर बलिदान प्रदान करके दिग्पाल बलिदान के बाद गृहमण्डल से बाहर भूतगणों को बलि प्रदान करे।

सङ्कल्प:—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कल्पोक्तफलावाप्तये श्रीप्रत्यङ्गिराप्रीतये सर्वार्थसिद्धये चतुर्दिक्षुवटुकादिदेवताभ्यो पायसान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये।**

वटुकबलिः—

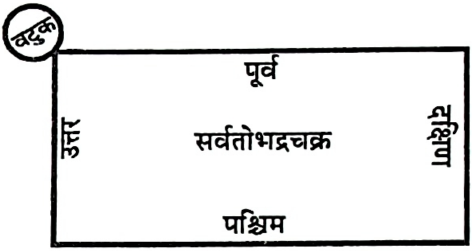

ईशानकोण में वटुक के लिए बलिप्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकवलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। ईशानकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ वटुकबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान्कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥१॥

हाथों में कपाल और दण्ड लिए हुए, कानों में कुण्डल धारण किये हुए, तरुण अवस्था वाले, घोर अन्धकार के समान नीले बालों वाले,यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, यज्ञ के समय पूजित, विघ्नों को नष्ट करने के लिए, साधकों को सिद्धि प्रदान करने वाले, वटुकभैरव का पूजन करता हूँ।।१।।

श्रीभैरवो रुद्रमहेश्वरो यो महामहाकाल अधीश्वरोऽथ।
यो जीवनाथोऽत्र विराजमानः श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥२॥

जो श्रीभरव, महेश्वररुद्र, महामहाकाल, अधीश्वर, जीवों के स्वामी विराजमान हैं अपनी रक्षा के लिए हम उन श्रीभैरव की शरण में है।।२।।

पुष्पाञ्जलिः

बलिदानेन सन्तुष्टो बटुकः सर्वसिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः॥

बलिदान से सभी सिद्धियों को देने वाले भूतवेतालों से सेवित बटुकभैरव प्रसन्न हो और सदैव शान्ति प्रदान करें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन बटुकः प्रीयतां न मम।**

वटुक को बलिप्रदान करने के बाद योगिनी को बलिप्रदान करे।

योगिनीबलिः

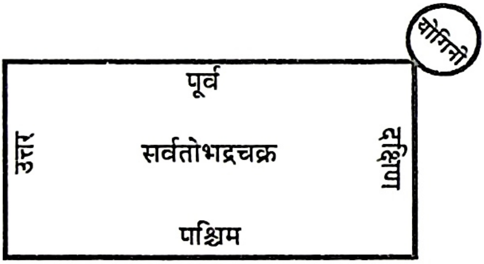

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-**पुष्पाणि समर्पयामि नमः।** अग्निकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र को अग्नि कोण में रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत**पुष्पाणि समर्पयामि नमः।** बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ योगिनीबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ याँ सर्वेभ्यो योगिनीभ्यो फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो नमः सर्वशक्तिभ्यः त्रिनेत्रसर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ऊर्ध्व ब्रह्माण्डतोया दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा,
पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोः यत्र कुत्र स्थितो वा।
क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः,
प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिभिः पातु वीरेन्द्रवन्द्या॥

ऊपर ब्रह्माण्ड में, द्युलोक में, आकाश में, भूतल पर, निष्कल अवस्था में, जल में, स्थल पर, पाताल में अनल में, सुन्दर शीतल पवन में जहाँ तहाँ रहने वाली योगिनी वर्ग, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, दिशाओं में रहने वाली, धूप-दीपादि के द्वारा पूजित होकर, प्रसन्न होकर, वीरों के द्वारा पूजित योगिनियाँ प्रसन्न हों और सभी प्रकार का शुभ प्रदान करें।

पुष्पाञ्जलिः

योगिनीयोगमाया च योगिनां सिद्धिदायिनी।
षड्चक्रभेदिनी देवि सर्वविघ्नविनाशिनी॥१॥

योगमायायोगिनी, योगियों को सभी प्रकार की सिद्धि प्रदान करने वाली, षड्चक्रों का भेदन करने वाली, सभी विघ्नों का विनाश करने वाली॥१॥

योगिनी योगमाया च सर्वभैरवमोहिनी।
सर्ववीर्यमहातेजाः सर्वत्र शुभदायिनी॥२॥

सभी भैरवों को मोहित करने वाली योगमाया योगिनी, सभी प्रकार की बलशालिनी महानतम तेज वाली, सभी हमें शुभ प्रदान करें॥२॥

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरा परात्पराः।
द्यु-व्योम-भूमिचारिण्यः सर्वाः प्रीतास्तु मे सदा॥३॥

जो कोई योगिनी रौद्र, सौम्या, घोर, परात्परा, द्युव्योमभूमिचारी समस्त योगिनीयाँ सभी प्रसन्न होकर हमें शुभता प्रदान करें॥३॥

बलिदान समर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वयोगिन्यः प्रीयतां न मम।**

योगिनियों को बलिप्रदान करने के बाद गणेश को बलिप्रदान करे।

गणेशबलिः

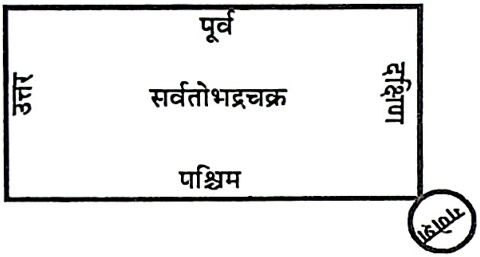

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैर्ऋत्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गणेशबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ गँ गाँ गीँ गूँ गैँ गौँ गः गणेशाय नमः भो गणेश! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्ययमिति च परं यत् स्वरूपं तुरीयं,
त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्।
योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं,
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति॥१॥

ओंकारत्रय रूप से परमतुरीय जो ब्रह्मरूप, सत्त्व-रज-तम तीनों गुणों से अतीत रूपों वाले, मन से भी तेज, सिन्दूर के रूप(वर्ण)वाले, जिसकी मूर्तिमान्, योगियों के द्वारा वन्द्य, सकल गुणों के खान, ब्रह्मरन्ध्र में रहनेवाले, श्रीहरि के साथ गं गं गं गं बीजरूपी गज मुखवाले व्यापक गणेश का ध्यान करता हूँ॥१॥

विदेहरूपं भवबन्धहारं सदा स्वनिष्ठं स्वसुखप्रदत्तम्।
अमेयसांख्येन च लक्ष्यमीशं गजाननं भक्तियुतं भजामः॥२॥

विदेहरूप वाले, भवसागर के बन्धन को समाप्त करनेवाले, सदा अपने (ब्रह्मभाव) में ही स्थित रहने वाले, आत्म सुख को प्रदान करनेवाले, मायाविहीन, सांख्य के द्वारा बोधगम्य, ईश्वर गजानन का भक्ति पूर्वक भजन करता हूँ।।२।।

कल्पद्रुमाधः स्थितं कामधेनुं चिन्तामणिं दक्षिणपाणिशुण्डम्।
विभ्राणमत्यद्भुतचित्तरूपं यः पूजयेत् तस्य समस्तसिद्धिः।।३।।

कल्पवृक्ष के समान, कामधेनु के सदृश, कामनाओं की पूर्ति करने में दक्ष, चित्त में अत्यद्भुत रूप से जो पूजन करता है, उसकी समस्त कामनायें सिद्धि होती हैं।।३।।

पुष्पाञ्जलिः

ॐ गजाननाय पूर्णाय सांख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः।।१।।

सांख्यरूपमय पूर्ण ब्रह्म गजानन बिना देह के निष्कल भाव से सर्वत्र संस्थित, हे गणेश! आपको नमस्कार है, पुनः नमस्कार है।।१।।

अमेयाय च हेरम्ब परशुधारकाय ते।
मूषकवाहनायैव विघ्नेशाय नमो नमः।।२।।

माया विहीन, परशु धारण करने वाले, हेरम्ब, मूषक जिसका वाहन है, सम्पूर्ण विश्व के मालिक आपको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है।।२।।

अनन्तविभवायैव परेशां पररूपिणे।
शिवपुत्राय देवाय गुहाग्रजाय ते नमः।।३।।

अनन्तविभवों से युक्त, परईश्वर, परस्वरूपवाले, शिव के पुत्र, गुहाग्रज देवता के लिए नमस्कार है।।३।।

पार्वतीनन्दनायैव देवानां पालकाय ते।
सर्वेषां पूज्यदेहाय गणेशाय नमो नमः।।४।।

पार्वतीनन्दन, देवताओं के पालक, सभी शरीरधारियों में परमपूज्य श्रीगणेश को नमस्कार है।।४।।

विघ्नेशवीर्याणि विचित्रकाणि बन्दीजनैर्मागधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं ब्राह्मैर्जगन्मङ्गलकं कुरुष्व।।५।।

हे विघ्नेश! आपके पराक्रम विचित्र है, बन्दीजन आपका अगाधरूप से स्मरण करते हैं, जिसे सुन कर आप उठें और हे गजानन ब्रह्म! जगत् का मङ्गल करें।।५।।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।**

गणेश को बलिप्रदान करने के बाद क्षेत्रपाल को बलिप्रदान करे।

क्षेत्रपालबलिः

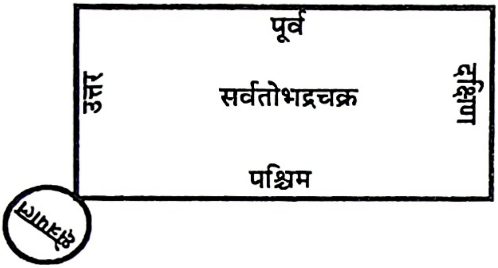

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमः। वायव्यकोण में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षँ क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करके समर्पित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः भो स्थानक्षेत्रपाल सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं,
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानाम्॥१॥

स्वच्छ स्फटिक के सदृश, कुण्डल से सुशोभित, दिव्यमणियों से बने हुए नूपुर और किंकिणी से सुशोभित, प्रसन्न, शिव की भाँति पुलकित मुखवाले, कमलवत् करों में सदा शूल और तलवार धारण करनेवाले, बालस्वरूप बटुक भैरवजी का ध्यान करता हूँ॥१॥

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं,
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।

नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डो ज्वलं,
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥२॥

उदयकालीन सूर्य के समान लाल कान्तिवाले, तीन नेत्रोंवाले, रक्त पुष्पमाला से युक्त, पुलकित मुखवाले, वरदाता, कपाली, निर्भय, हाथ में शूल धारण करनेवाले, नीलग्रीवा वाले, आभूषणों से युक्त, खण्ड चन्द्रमा के समान उज्ज्वल, मधूक पुष्प के समान लाल वस्त्र धारण किये हुए, भय को दूर भगानेवाले बटुक भैरव का ध्यान करता हूँ॥२॥

वन्दे नीलाद्रिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं,
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथसृणिं खड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं,
दिव्याकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्य॥३॥

त्रिलोक के स्वामी, द्वितीया के चन्द्रकला को धारण करनेवाले, मुण्डमाला पहने हुए, महेश्वर, दिगम्बर, पीत केशवाले, हाथ में डमरु, शूल, खड्ग, पाश और अभय धारण करनेवाले, तथा नाग, घण्टा, कपाल हाथ में सुशोभित, विशाल दाँतोंवाले, दिव्य आभूषणों से सुसज्जित, त्रिनेत्र तथा नाना मणियों से जटित किंकिणी और नूपुर धारण किये हुए बटुक भैरव का घ्यान करता हूँ॥३॥

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्तिं शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥४॥

यक्षरूप वदनवाले, दशों दिशाओं में भूमि को कम्पित करनेवाले, संहार के मूर्ति चन्द्रबिम्बवाले सुन्दर शुभ मुकुट को धारण करनेवाले, जटा जिसके सिर पर स्थित है, दीर्घशरीरवाले, विशाल नखमुखवाले, ऊपर की तरफ विकराल रोमोंवाले, समस्त पापों का स्मरण मात्र से नष्ट करनेवाले, क्षेत्रपाल भैरव को सतत प्रणाम करता हूँ॥४॥

पुष्पाञ्जलिः

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं, अनुज्ञां दातुमर्हसि॥१॥

तीक्ष्ण दातों वाले, महाकाय, कल्पान्त में सृष्टि का संहार करने वाले, भैरव को नमस्कार है, हे भैरव! हमें पूजन की अनुमति प्रदान करें तथा हमारी सर्वत्र सर्वदा रक्षा करें॥१॥

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥२॥

इस क्षेत्र के निवासी क्षेत्रपाल के सेवकगण हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलिदान से सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर हमारी सभी तरफ से रक्षा करें॥२॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वरबलिः

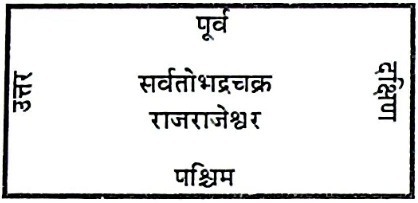

मध्य में राजराजेश्वर को बलि प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। मध्य में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र का पूजन करके वामाङ्गुष्ठानामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रौँ राजराजेश्वरबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्य का पूजन करके संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः ह्सौँ स्ह्रौँ राजराजेश्वर! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचार-सहित इमां पूजावलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे, स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥१॥

हे मस्तक की जटाओं में चन्द्रमा को धारण करने वाले! हे कामदेव का दहन करने वाले! त्रिशूल धारण करनेवाले! हे स्थाणु! हे पर्वतों के ईश्वर! हे गिरिजा के पति! हे महा ईश्वर! हे समस्त भूतों का कल्याण करनेवाले! भूतगणों के मालिक! समस्त भयों का नाश करनेवाले हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥१॥

हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले, भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाय।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥२॥

हे पार्वती के हृदय में निवास करने वाले! हे चन्द्रमौलि! भूतों के अधिपति! प्रमथादि

गणों के नाथ! हे गिरीश! हे वामदेव! हे भव! हे रुद्र! हे पिनाक धनुष को हाथ में धारण करनेवाले! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥२॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र, लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥३॥

हे नीलकण्ठ! हे वृषभध्वज! हे पञ्चवक्त्र! हे लोकों के स्वामी! हे प्रलय काल में भी शेष रहने वाले! हे प्रमथादि गणों के ईश्वर! हे शर्व! हे धूर्जटि! हे पशुपति! हे गिरिजा के पति! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥३॥

हे विश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव, गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
विश्वेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ, संसार-दुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष॥४॥

हे विश्वनाथ! हे शिवशङ्कर! हे देवदेव! हे गङ्गाधर! हे नन्दिकेश! हे विश्वेश्वर! हे अन्धक के रिपु, हे हर! हे लोक के नाथ! हे जगदीश! मुझ अनाथ की इस संसार के गहन दुःखों से रक्षा करें॥४॥

पुष्पाञ्जलिः

गौरीविलासभवनाय महेश्वराय, पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरी के साथ सम्पूर्ण भुवन में विलास करने वाले, महेश्वर, पाँच मुखों वाले, शरण में आने वाले भक्तों की रक्षा करने वाले, हे शर्व! समस्त जगत के अधिपति, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥१॥

भक्तिप्रियाय भय-रोग-भयापहाय, उग्राय दुर्गभव-सागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्ति से प्रसन्न होनेवाले, भय-रोगादि को हटानेवाले, उग्रस्वरूप दुर्गम भवसागर से तरने के लिए, गुणों के द्वारा प्रसिद्धि पानेवाले ज्योतिमय, मैं अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए, हे शिव! आपको नमस्कार है॥२॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय, दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

रघुकुलनाथ श्रीराम को परमप्रिय लगने वाले तथा वरप्रदान करने वाले, नाग से प्रेम करने वाले तथा नरक रूपी महासमुद्र से तारने वाले, देवताओं के द्वारा सदैव अर्चित, पुण्यों में परमपुण्य स्वरूप महेश्वर का अपने दुःखदारिद्र्य को नष्ट करने के लिए हे शिव! आपको नमस्कार है॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन श्रीराजराजेश्वरः प्रीयतां न मम।**

राजराजेश्वर को बलिदान प्रदान करने के बाद वेदी के उत्तर काल को बलिदान करे।

कालबलिदानम्

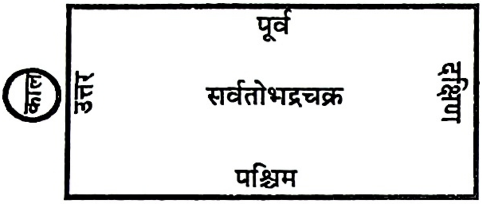

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ काल! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामांश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

एह्येहि दण्डायुधधर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र।
विशालवक्षःस्थलरुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

हे हाथों में दण्डरूपी आयुध धारण करनेवाले धर्मराज! काले-काले अञ्जन के समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल वक्षःस्थलवाले और भयंकर रूपवाले आपको नमस्कार है, हमारी पूजा को ग्रहण करे।

पुष्पाञ्जलिः

कालाय कालरूपाय कालाञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं कालदेव नमोऽस्तु ते॥१॥

काल, कालरूप, काले अञ्जन के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में वास करनेवाले, कालरूपी देव आपको नमस्कार है।

यमो निहन्तापितृधर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतान्त एतद्दशभिर्जपन्ति॥२॥

यम, निहन्ता, पितृ, धर्मराज, वैवस्वत, दण्डधारी, काल, प्रेताधिपति नामों को धारण करनेवाले हमारे ऊपर कृपावान् हो तथा हम इस दीनदशा में आपका यजन करते हैं आप हमारे ऊपर कृपा करें।

धर्मराज महाबाहो दक्षिणाधिपतये नमः।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय॥३॥

हे महाबाहु धर्मराज! दक्षिण दिशा के अधिपति आपको नमस्कार है, आप इसी क्षण हमारे पीड़ाओं से निवारण किजिए।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीकालः प्रीयतां न मम।

मृत्युबलिदानम्

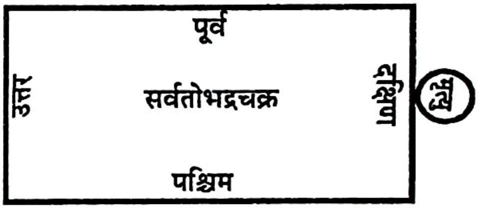

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः। कलश से उत्तरदिशा बलिपात्राधार मण्डल पर जल छोड़े।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। कलश से उत्तरदिशा में मण्डल का पूजन करके बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः। बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः। वाम अङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलि रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्योर्बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। द्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मृत्यु! सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय वरवरद सर्वजनं मे वशमानय वशमानय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हूँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समंविग्रह अन्तरूप।
अन्तविरूपे विनियोगकारी मृत्युस्वरूपाय नमो नमस्ते॥

हे अन्तरूप! इस अनन्त संसार रूपी महासमुद्र में फँसें हुए हमारी रक्षा कीजिए, हे अन्तरूप! हे विरूप! विनियोग करनेवाले, हे मृत्युस्वरूप! आपको नमस्कार है।

पुष्पाञ्जलिः

मृत्यवे मृत्युरूपाय अन्ताञ्जनसमप्रभो।
दक्षिणस्यां कृतावासं मृत्युदेव नमोऽस्तुते॥

हे मृत्यु! हे मृत्युरूप! जीवन का अन्त करनेवाले, घोर अन्धकार के समान, प्रभु, दक्षिण दिशा में रहनेवाले मृत्युदेव आपको नमस्कार है।

बलिदानसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन बलिदानेन श्रीमृत्युः प्रीयतां न मम।

पीठस्थदिग्पालादिबलिदानम्

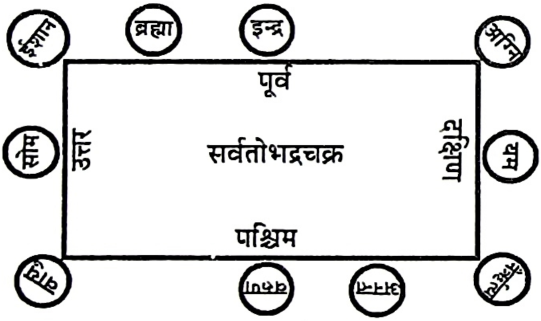

वटुकादि बलिदान के बाद पुरश्चरण गृह अथवा मण्डप के बाहर चारों तरफ दिग्पालों को बलिदान प्रदान करे, पूर्व में इन्द्र, अग्निकोण में अग्नि, दक्षिण में यम, नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋति, पश्चिम में वरुण, वायुकोण में वायु, उत्तर में सोम, ईशानकोण में ईशान तथा पूर्व और ईशानकोण के बीच में ब्रह्मा तथा अन्त में नैर्ऋत्यकोण तथा पश्चिम के बीच में अनन्त के लिए बलिदान समर्पित करे।

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः॥

ऐरावत हाथी पर समारूढ, वज्र हाथ में धारण किये हुए, महाबली, सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले देवराज इन्द्र! आपको नमस्कार है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्त्वं देवराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु वलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्त्वं तेजराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु वलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्त्वं प्रेतराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु वलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निर्ऋतिस्त्वं रक्षराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु वलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्त्वं जलराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्त्वं प्राणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्त्वं ताराराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्त्वं गणराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्त्वं प्रजाराजो भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्त्वं नागराजो

भञ्जयतु खञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

प्रार्थना

इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिः, वरुणवायुसोमेशाः।
ब्रह्मा-अनन्त-सहिताः, प्रसीदन्तु सदा मम॥१॥

इन्द्र-अग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायु-सोम-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त सदा हमारे ऊपर प्रसन्न रहें॥१॥

पायसो-बलिदानेन सन्तुष्टः सर्वदा भवेत्।
तेषां बलिं प्रयच्छामि, भवन्तु प्रीतिः सर्वदा॥२॥

पायस के बलिदान से प्रसन्न होने वाले, सर्वदा सन्तुष्टि और प्रसन्नता के लिए बलि समर्पित करता हूँ, इस बलिदान से सदैव प्रसन्न होकर हमारी रक्षा करे॥२॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुःशशीभूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥३॥

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन दशदिग्पालाः प्रियन्तां न मम।**

दशदिग्पालादि बलिदान के बाद घर के भवन के बाहर जाकर भूतादि बलिदान करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान कभी न करे, घर के भीतर भूतादि बलिदान करने से दोष होता है।

भूतादिबलिः

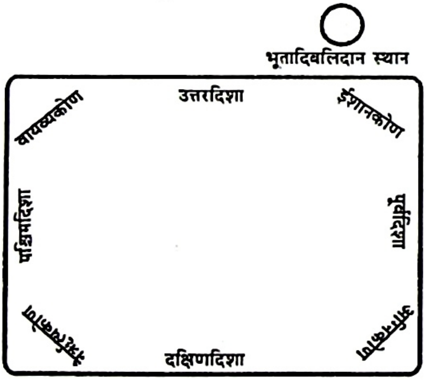

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः। मण्डल स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राधारमण्डलाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। पीठ के बाहर मण्डल का पूजनकर बलिपात्र रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः। बलिपात्र स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिपात्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिपात्र पूजन कर वामाङ्गुष्ठ तथा अनामिका अङ्गुलि से बलिपदार्थ रखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः। बलिद्रव्य स्थापित करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमः। बलिद्रव्यपूजन कर संकल्प करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वान् कामाश्च पूरय पूरय सर्वोपचारसहित इमां पूजाबलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।

प्रार्थना

भूता ये च विघ्नकर्तारः दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालस्थसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविता॥१॥

जो भूतपिशाचादि विघ्न करने वाले द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-भूलोक-पाताल में विचरण करने वाले, सभी शिवयोग से भावित होकर (कल्याण की भावनावाले होकर)॥१॥

क्रूराद्याः शतसंख्यकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सत्यसंख्यांश्च इन्द्राद्याव्यवस्थिताः॥२॥

सैकड़ों क्रूर प्रकृति वाले, पाखण्डादि में रत रहने वाले, ध्रुवादि सैकड़ों की संख्यावाले, इन्द्रादि रूप में व्यवस्थित रहने वाले॥२॥

तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम्।
नगरे वाऽथ संग्रामे अटव्यां वै सरित्तटे॥३॥

नगर या संग्राम-स्थल में पहाड़ों की ऊँचाइयों पर, नदियों के तट पर रहने वाले, हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥३॥

वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।
नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये॥४॥

वापी, कूप, तडाग, वृक्षादि, श्मशानादि, चौराहों पर रहने वाले, नानारूप को धरकर रहने वाले, बहुतरूपों वाले हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट हों॥४॥

यत्र तत्र विचरन्ति भूतप्रेतादि सर्वदा।
ते सर्वे चैव सन्तुष्टाः बलिं गृह्णन्तु मे सदा॥५॥

हमेशा इधर-उधर विचरनेवाले भूत-पिशाचादि सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥५॥

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः।
मातरोप्युग्रहरूपाश्च गणाधिपतयश्च ये॥६॥

जो रौद्र रूप धारण करके, रौद्र कर्म में लिप्त, रौद्र स्थान में निवास करने वाले, जो पिशाचिनी मातायें उग्ररूपों वाली, सेवकों के अधिपति, सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले हों॥६॥

भूचरा खेचराश्चैव तथा चैवान्त रक्षगा।
ते सर्वे प्रीतमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥७॥

भूमि पर विचरण करने वाले भूचर, आकाश में रहने वाले नभचर, सभी हमारी रक्षा करें, वे सभी हमारे द्वारा प्रदत्त इस बलि से सन्तुष्ट प्रसन्न मन वाले होकर हमारी रक्षा करें॥७॥

पुष्पाञ्जलिः—प्रार्थना करने के वाद हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले, बलिं गृहित्वा विधिवत् प्रयुक्तम्।
सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे, अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु॥

जो इस भूतल पर भूतपिशाचादि निवास करते हैं, वे विधिवत् प्रदान किये गये बलि को ग्रहण करके सन्तोष प्राप्त करके, अन्यत्र अपना वास बनायें अर्थात् हमारे पूजन स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान में अपना निवास बनायें।

बलिदानसमर्पणम्—**अनेन बलिदानेन सर्वभूतविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः प्रीयतां न मम।**

दैनिकबलिदानं परिपूर्णम्

•

अखण्डदीपपूजनम्

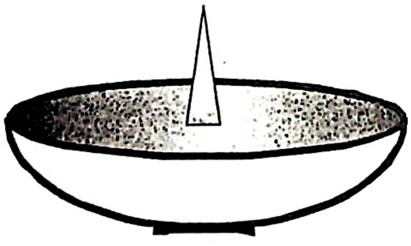

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सभी प्रकार के अन्धकार को समाप्त करनेवाले, महादीप्त बाहर-भीतर सुन्दर प्रकाश के लिए, यह प्रदीप जलाये हैं। यथाविधि पूजन-ग्रहण करके प्रसन्न होकर हमें प्रकाशित करें।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

हे देवरूप दीप! आप कर्म के साक्षी और विघ्नों का नाश करनेवाले, जब तक हमारे कर्म (यज्ञ) की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक आप विधिपूर्वक स्थिर रहे।।

अखण्डदीपपूजनं परिपूर्णम्

•

पुस्तकपूजनम्

पुस्तक में भगवती सरस्वती का ध्यान कर गन्धाक्षतपुष्प चढ़ायें।

ॐ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती॥ यज्ञंवष्टुधियावसुः॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥

देवी को नमस्कार है, महादेवी को नमस्कार है, शिवा को नमस्कार है, प्रकृति देवी को नमस्कार है, भद्रा तथा नियति देवी को सतत प्रणाम है।।१।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥२॥

सफेद वर्णवाली, परंब्रह्मचिन्तनरूपिणी, सर्वप्रथम रहनेवाली, जगत् में व्याप्त रहनेवाली, वीणा-पुस्तक धारण करनेवाली, अभय प्रदान करनेवाली, बुद्धि की जड़ता को हरनेवाली, हाथ में स्फटिक की माला लिए हुए, पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करनेवाली, परमेश्वरी भगवती शारदा की मैं वन्दना करता हूँ।।२।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥३॥

जो कुन्देन्दुसदृश, तुषार (ओस) के समान सफेद हार धारण की हुई, सफेद शुद्ध वस्त्र को धारण की हुई, हाथों में वीणा, वरमुद्रा और दण्ड धारण की हुई, सफेद कमल पर बैठी हुई, ब्रह्माविष्णुशङ्कर जैसे देवताओं से वन्दित देवी भगवती सरस्वती हैं, वे हमारी बुद्धि की जड़ता को नष्ट करें॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाङ्मयमूर्तिस्वरूपिणिसरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

पुस्तकपुजनं परिपूर्णम्

•

जपविधिः

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुपछन्दः श्रीमत् प्रत्यङ्गिरादेवता ह्रीँ बीजं ह्रूँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीष्टदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः—मन्त्र के ऋषियों का शरीर के तत्तद् स्थानों पर न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रूँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ श्रीष्टदेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा।

करन्यासः—हाथ के अङ्गुलियों पर न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ मम शत्रून् तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ स्फारय स्फारय मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ मारय मारय अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ हूँ फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—हृदयादि स्थानों पर न्यास करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ मम शत्रून् शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ स्फारय स्फारय शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ मारय मारय कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ हूँ फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ स्वाहा अस्त्राय फट्।

जपसंस्कारम्

मूलमन्त्रजपसंस्कारम्—जप के पूर्व मूलमन्त्र का संस्कार करे।

प्राणायाम:—मूलमन्त्र से पूरक कुम्भक रेचन पूर्वक प्राणायाम करे।

मन्त्रकुल्लुका—ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतु:—ॐ। ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतु:—क्रीँ। बीज का कण्ठस्थित विशुद्धचक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाण:—ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्—क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोग:—ह्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा। श्वास प्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्—ॐ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा। मन्त्र को **ॐ** से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मूलमन्त्रम्—**ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा।**

मालाप्रार्थना—दोनों हाथ में माला ग्रहण करके प्रार्थना करे।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥१॥
ॐ अविघ्नं कुरु मालेत्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥२॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ध्यानम्—हाथ में पुष्प लेकर इष्टदेवता का न्यास करे—

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रति चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशा-सित-भीम-दंष्ट्रा भूयाद्-विभूत्या मम भद्रकाली॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा। मूलमन्त्र का अयुत (दशहजार) बार पाठ करके विशेषार्घ्य प्रदान करे।

जप समपर्णम्—हाथ में जल लेकर इष्टदेवता को जप समर्पित करे—

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी॥

गुह्य से भी अतिगुह्यगोप्य हे महादेवी! हमारे जप को ग्रहण कर हमे हमारे कार्यसिद्धिरूपी कृपाप्रसाद प्रदान करे।

जप के पश्चात माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रः

ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरुहूताय महामायाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत् साक्षिणे संतापभूतव्यापिने महाघोराऽतिघोराय ॐ ॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ गिलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रँ रँ रँ रँ रँ रक्ष रक्ष त्वं मां रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ऐँ ह्रूँ ह्रूँ रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघ सर्वतोऽग्नि विद्युदर्क संवर्त कपर्दिनी दिव्यकणिकाम्भोरुह विकटपद्ममालाधारिणि सितिकण्ठाभ खट्वां कपालधृक् व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वर प्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवतापितृपिशाचोरगनागाऽसुरगरुणगन्धर्वकिन्नरविद्याधरयक्ष-राक्षसान् ग्रहाञ्च स्तम्भय स्तम्भय सपरिवारस्य मम शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये सर्वे ममोपरि अविद्यां कर्म कुर्वन्ति कारयन्ति तेषां बुद्धिर्घातयघातय तेषां रोमं कीलय कीलय सर्वान् शत्रून् स्वाहा॥

ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः

ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय किलय किलय ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ सर्वसिद्धि महाभागे ममात्मनः सपरिवारस्य शान्ति कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यँ यँ यँ यँ यँ रँ रँ रँ रँ रँ लँ लँ लँ लँ लँ वँ वँ वँ वँ वँ शँ शँ शँ शँ शँ षँ षँ षँ षँ षँ सँ सँ सँ सँ सँ हँ हँ हँ हँ हँ ळँ ळँ ळँ ळँ ळँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूँ हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ जूँ सः फट् स्वाहा॥ ॐ नमो प्रत्याङ्गिरे ममात्मानः सपरिवारस्य शान्तिं रक्षां कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवती दुष्टचाण्डालिनि त्रिशूलवज्राङ्कुशशक्तिधारिणी रुधिरमांसवसाभक्षिणी कपालखट्वाङ्गधारिणी मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दंष्ट्राकरालिनी मम शत्रूणां कृत मन्त्रतन्त्रयन्त्रप्रयोग विषचूर्ण शस्त्राद्यविचार सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति कारयिष्यन्ति तान् सर्वान् हन हन प्रत्यङ्गिरे! त्वं ममात्मनः सपरिवारस्य रक्ष रक्ष ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ फट् स्वाहा॥

श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ ब्रह्मी मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ वैष्णवी मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ माहेश्वरी मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ कौमारी मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ अपराजिता मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ वाराही मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ नारसिंही मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ चामुण्डा मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं सर्वतो सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ भ्रामिणी मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ रौद्री मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय हुँ फट् स्वाहा॥

पाठसमर्पणम्—हाथ में जल लेकर समर्पण करे—

अनेन पाठाख्येन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां नमम।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ हूँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ श्रीष्टदेवतायै नमः सर्वाङ्गे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा।

करन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ प्रत्यङ्गिरे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रेँ हूँ मम शत्रूणां तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ मम शत्रूणां तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ स्फारय स्फारय मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ मारय मारय अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ हूँ फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ प्रत्यङ्गिरे हृदयाय नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ मम शत्रूणां शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ स्फारय स्फारय शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ मारय मारय कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ हूँ फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्बिभ्रति चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्व-केशा-सित-भीम-दंष्ट्रा भूयाद्-विभूत्या मम भद्रकालीम्॥

प्रार्थना—दोनों हाथों को जोड़ कर प्रार्थना करे—

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरी॥१॥

हे परमेश्वरि! पाठ, जप तथा पूजन के उच्चारण में जो मात्रा, पदों इत्यादि का उच्चारण दोषपूर्ण हो गया हो या शुद्ध नहीं हुआ हो, उसको क्षमा करके प्रसन्न हो जाइये।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरि॥२॥

हे परमेश्वरि! आपके उपासना में जो कार्य बिना मन्त्र के, बिना विधि के हो गया हो या कोई कार्य छूट गया हो, तो उसको क्षमा करके प्रसन्न हो जाइये।

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसंभवः।
त्राहि मां प्रत्यङ्गिरादेवि! सर्वपापहरा भव॥

हे भगवती प्रत्यङ्गिरादेवि! हम पापकर्म करने वाले, पाप से युक्त आत्मावाले, पापकर्म में प्रवृत्त, पापस्वरूप हो गये हैं, आपके शरण में हैं, आप हमारे सभी पापों को हरण करने वाली होकर हमें पाप मुक्त करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरामहामन्त्रप्रयोगः परिपूर्णः

●

अग्निस्थापनम्

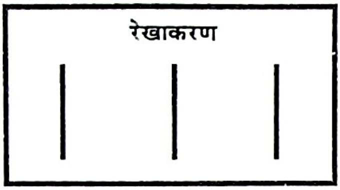

सङ्कल्पः—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि पञ्चभूः संस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं करिष्ये।

पञ्चभूः संस्कार—चतुरस्र वेदी का निर्माण करके पञ्चभूः संस्कार करे।

कुशैः परिसमुह्य। कुशाओं से भूमि को झाड़ दे।

तान् कुशान् ऐशान्यां परित्यज्य। उन कुशाओं को ईशान कोण में फेक दे।

गोमयोदकेनोपलिप्य। गाय के गोबर और जल से लेपन करे।

स्रुवमूलेन त्रिःउल्लिखय्। स्रुवा के मूल से तीन रेखा खीचे।

अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुधृत्य। अनामिका और अङ्गुष्ठ से रेखा के उपर की मिट्टी को हाथ में ग्रहण कर ईशानकोण में फेंक दे।

जलेनाऽभ्युक्ष्य। जल से सिंचन करे।

पञ्चभूःसंस्कार के बाद अग्निस्थापन कर अग्नि का संस्कार करे।

अग्निसंस्कारः

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरदानामाग्नये नमः स्थापयामि ।

अग्निस्थापन करने के बाद अग्नि का पञ्चदश संस्कार करने के पश्चात् ग्रहमण्डल का निर्माण करके ग्रहमण्डलस्थदेवताओं का स्थापन पूजन करे।

अग्निसंस्कार—अधोलिखित मन्त्र बोलते हुए अक्षत प्रक्षेपपूर्वक संस्कार करे। संस्कार मे सर्वत्र आज्य से आठ आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: गर्भाधानं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: पुंसवनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: सीमन्तोन्नयनं सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: जातकर्म सम्पादयामि स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: नालच्छेदनं सम्पादयामि स्वाहा।

मन्त्र से आज्यसम्लुत पञ्चसमिधा का हवन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: सूतकं शोधयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: त्वं वरदनामासि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: नामकरणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: निष्क्रमणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: अन्नप्राशनं सम्पादयामि स्वाहा।

साकल्य की आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: चूडाकरणं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: उपनयनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: महानाग्न्यव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: महाव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: उपनिषद्व्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: गोदानव्रतं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: समावर्तनं सम्पादयामि स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अग्ने: विवाहं सम्पादयामि स्वाहा।

प्रतिष्ठा—अग्नि में इष्ट देवता की प्रतिष्ठा करे—

ध्यानम्

ॐ पाशाश्चापासृक्कपालेक्षणीषूञ्छूलहस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥

हाथों में पाश-चाप-सृक्-कपाल-शूलादि धारण किये हुए, रक्त वर्ण वाली, रक्त समुद्र में रक्त पोत के समान कमल के ऊपर रक्त सिंहासन पर आसीन तीन नेत्रवाली प्राणशक्ति का ध्यान करता हूँ॥१॥

ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥

बाल सूर्य के समान, अरुण प्रकाश जैसे अङ्गों वाले, सुन्दर लावण्य शृङ्गार से शोभायमान, महापद्म सहस्रार के मध्य कर्णिका स्थित त्रिकोण में उल्लसित श्रीभवानी का ध्यान करता हूँ॥२॥

क्वणत्किङ्किणीनूपुरोद्भासिरत्नां, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैःसुरैःसेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥

रत्नजटित कङ्कण तथा नुपूर से शोभायमान, लाक्षा के समान प्रभावान् युगलचरण

कमल, ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशादि देवताओं से सेव्यमान, हमारे अघों का नाश करने वाली महादेवी का ध्यान करता हूँ॥३॥

सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेऽहम्॥४॥

सुन्दर सुवर्ण की करधनी कमर में धारण की हुई, महानतम रत्नों से युक्त काञ्ची नितम्ब पर शोभायमान, नाभि प्रदेश पर दक्षिणावर्त तीन बलयों से शोभायमान महादेवी का ध्यान करता हूँ॥४॥

ध्यान के बाद अग्नि में देवता की प्रतिष्ठा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमत्प्रत्यङ्गिराया प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमत्प्रत्यङ्गिराया जीव इह स्थितः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ आँ ह्रीँ क्रौँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ सोऽहं हंसः अस्मिन् अग्नौ श्रीमत्प्रत्यङ्गिराया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ अस्मिन् अग्नौ श्रीम्त्प्रत्यङ्गिरादेवताया गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान् सम्पादयामि।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ट्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा प्रतिष्ठापनार्थे अक्षतान्निवेदयामि आवाहिताः सुप्रतिष्ठिताः सन्निहिताः वरदाः भव।

अग्निस्थापनं परिपूर्णम्

●

ग्रहाणां पूजनम्

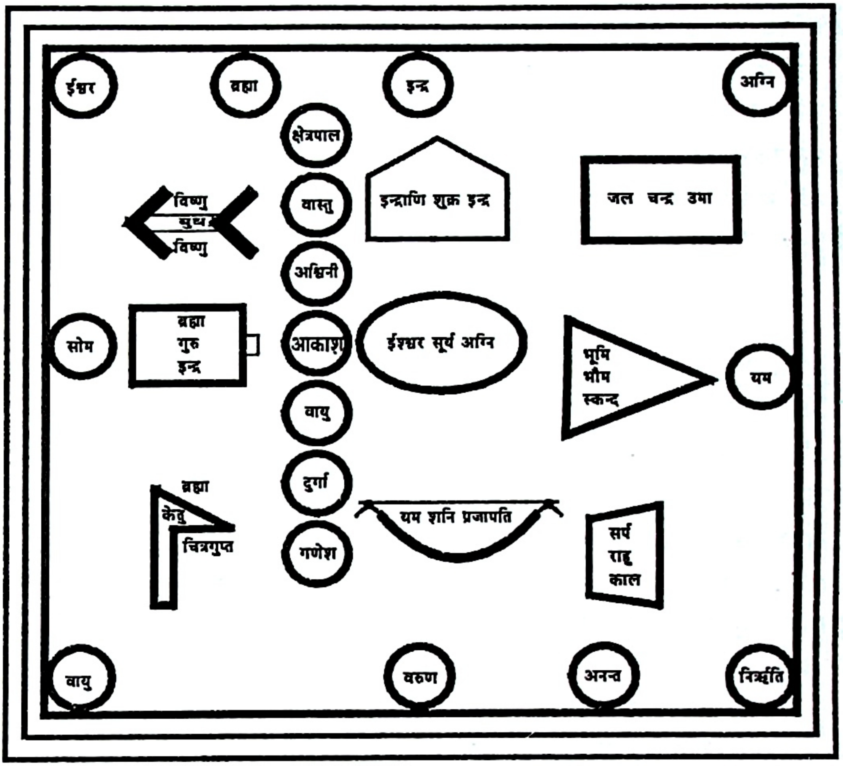

अग्नि-स्थापन करने के बाद एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर रोली से नौ खाना बनाकर चित्रानुसार नवों खानों के बीच के खाने में सूर्य के लिए लाल चावल से गोल आकृति, चन्द्र के लिए अग्नि कोण में सफेद चावल से चौकोर आकृति, भौम के लिए दक्षिण दिशा के खाने में लाल चावल से त्रिकोण आकृति, बुध के लिए ईशान कोण के खाने में हरे चावल से बाण के सदृश आकृति, गुरु के लिए उत्तर दिशा के खाने में पीले चावल से पट्टिशाकार आकृति, शुक्र के लिए पूर्व के खाने में पञ्चकोण की सफेद चावल से आकृति, शनि के लिए पश्चिम दिशा के खाने में काले रंग के चावल से धनुष के आकार की आकृति, राहु के लिए नैर्ऋत्य कोण के खाने में काले चावल सें सूर्पाकृति तथा केतु के लिए काले चावल से पताका की आकृति चित्रानुसार बनाकर उस पर तत्तत् स्थानों पर सुपाड़ी रखकर उस पर समस्त देवताओं का आवाहन करे।

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ------गोत्रः -----प्रवरः------नामाऽहं अस्मिन् प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि ग्रहाणां अधिदेवता-प्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालानाञ्च स्थापनपूजनञ्च करिष्ये।

सर्व प्रथम ग्रहमण्डल का निर्माण करके, उसपर सुपाड़ी रखकर उस पर ग्रहमण्डल के देवताओं की स्थापना कर पूजन करे।

सूर्यावाहनम्—सूर्यपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यंच॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन्॥

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

जवाकुसुम के समान लाल वर्णवाले, कश्यप गोत्र, महाप्रकाशमान, अन्धकार का नाश करनेवाले, सभी पापों का नाश करनेवाले सूर्य का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—चन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इमंदेवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यायेन्द्रियाय॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकंब्राह्मणानाꣳराजा॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

दही तथा शङ्ख के समान श्वेत वर्णवाले, क्षीर समुद्र से उत्पन्न, ज्योत्स्ना के पति, रात्रि के स्वामी, सोम (चन्द्र) का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

भौमावाहनम्—भौमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्॥ अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यम्॥

पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न, विद्युत् के समान तेजवाले, शक्ति हाथ में लिए हुए कुमार भौम का आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः भौममावाहयामि स्थापयामि।

बुधामावाहनम्—बुधपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्ट्टापूर्त्तेसꣳसृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्श्वेदेवायजमानश्चसीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

प्रियंगु की कलियों के समान आभावाले, अप्रतिम रूपवाले, सौम्य स्वभाव तथा सौम्य गुणोंवाले बुध का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः बुधमावाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पत्यावाहनम्—बृहस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ बृहस्पतेऽअतिदुर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजापततदस्म्मासुद्द्रविणंधेहिचित्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

सुवर्ण के वर्ण के समान पीले रंगवाले, देवताओं तथा मुनियों के गुरु, त्रिलोक में वन्दित गुरु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

शुक्रमावाहनम्—शुक्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयꣳसोमंप्प्रजापतिꣳ॥ ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियंविपानꣳशुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

हिमकुन्द मृणाल की आभावाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के प्रवक्ता, शुक्र का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

शन्यावाहनम्—शनिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ शंन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

नीलकमल के समान आभावाले, रवि के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता, छायामार्तण्ड सम्भूत शनि का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।

राह्वावाहनम्—राहुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

महापराक्रमी, आधे शरीरवाले, चन्द्र तथा सूर्य का विमर्दन करनेवाले, सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न राहु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोदेशोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहु! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः राहुमावाहयामि स्थापयामि।

केत्वावाहनम्—केतुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

पलाश के धूम के समान, तारका ग्रह के मस्तक, भयंकर आकृतिवाले केतु का मैं आवाहन करता हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां दक्षिणपार्श्वे अधिदेवतास्थापनम्

शङ्करावाहनम्—शङ्करपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईश्वर! इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

उमा-आवाहनम्—उमापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो उमे! इहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः उमामावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दावाहनम्—स्कन्दपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमीहजातंतेऽअर्व्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो स्कन्द! इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

विष्ण्वावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इदंविष्णुर्व्विचक्क्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳪसुरेस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्च्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यःᳫशूरऽइषव्व्योतिव्व्याधीमहारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुःसप्प्तिःᳫपुरन्धिर्य्योषाजिष्णूरथेष्ठाःसभेयोयुवास्ययजमानस्यावीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्न्योव्वर्षतुफलवत्त्योनओऽषधयःᳫपच्च्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्प्पताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मा! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमम्पिबव्वृत्रहाशूरव्विद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधोनुदस्वाथाभयंकृणुहिव्विश्श्वतोनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःᳫपित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

कालावाहनम्—कालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाऽक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्ग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो काल! इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः कालमावाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तावाहनम्—चित्रगुप्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ चित्रावसोस्वुस्तितेपारमशीय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो चित्रगुप्त! इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

अग्न्यावाहनम्—अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥आसादयादिह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

अपावाहनम्—अपपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! अप इहागच्छ इह तिष्ठ अद्भ्यो नमः अप-आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिव्यावाहनम्—पृथिवीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथ्वी! इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

विष्णवावाहनम्—विष्णुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णो! इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रावाहनम्—इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ इन्द्रऽआसांनेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राय! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राण्यावाहनम्—इन्द्राणीपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आदित्त्यैरास्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्राणि! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रजापत्यावाहनम्—प्रजापतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ प्रजापतेनत्वदेताान्यन्न्योविश्श्वारूपाणिपरितार्बभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयछंस्यामपतयोरयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो प्रजापते! इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

सर्पानामावाहनम्—सर्पपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्यो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सर्पान्! इहागच्छ इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मा-आवाहनम्—ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनआवः॥ सबुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालादिस्थापनम्

गणेशावाहनम्—गणेशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ गाणार्न्नन्त्वागाणपतिंहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिंहवामहेनिधीनान्त्वांनिधिपतिंहवामहेव्वसोमम।। आहमजानिगर्ब्भाधमात्त्वमजासिगर्ब्भाधम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो गणपतये! इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दुर्गा-आवाहनम्—दुर्गापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्द्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो दुर्गे! इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशावाहनम्—आकाशपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतवसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्ग्भ्यःस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो आकाश! इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

अश्विनीकुमारावाहनम्—अश्विनीकुमारपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ याव्वांकशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अश्विनौ! इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोस्पत्यावाहनम्—वास्तोस्पतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तोष्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्रपालावाहनम्—क्षेत्रपालपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ नुहिस्प्पशमविंदन्नन्न्यमुस्म्माद्वैश्श्वानुरात्पुरऽएतारमुग्ग्रेः॥ एमेंनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंव्वैश्श्वानुरंक्षैत्रंजित्त्यायदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो क्षेत्राधिपते! इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालानां स्थापनम्

इन्द्रावाहनम्—पूर्व में इन्द्रपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रःहवेहवेसुहवःशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्क्रंपुरुहूतमिन्द्रःस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र! इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्न्यावाहनम्—अग्निकोण में अग्निपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्रेतवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषःरक्षमाणस्तवव्व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अग्ने! इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

यममावाहनम्—दक्षिणदिशा में यमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमते स्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम! इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋत्यावाहनम्—नैर्ऋत्यकोण में निर्ऋतिपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ असुंन्वन्तमयंजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विंहितस्कंरस्य॥ अन्न्यमुस्म दिंच्छुसातंऽइत्त्या नमों देवि निर्ऋते तुब्भ्यंमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो निर्ऋति! इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

वरुणावाहनम्—पश्चिमदिशा में वरुणपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तत्त्वांयामिब्ब्रह्मंणाव्वन्दंमानुस्तदाशांस्तेय्यजंमानोहुविर्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुंशꣳसमानुऽआयुꣳप्प्रमोंषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वाय्वावाहनम्—वायुकोण में वायुपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ आनोंनियुद्भिंःशतिनींभिरध्वुरꣳसहुस्रिणींभिरुपंयाहियुज्ञम्॥ व्वायोंऽअस्म्मिन त्सवनेमादयस्वय्यूयंपांतस्वस्तिभिःसदानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वायो! इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोमावाहनम्—उत्तरदिशा में सोमपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ व्वयꣳसोंमव्व्रतेतवमनंस्तनूषुबिब्भ्रंतः॥ प्प्रजावन्तꣳसचेमहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

ईशानावाहनम्—ईशानकोण में ईशानपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ तमीशानंजगंतस्तुस्थुषुस्पतिंधियञ्जिन्न्वमवंसेहूमहेव्वयम्॥ पूषानोयथाव्वेदंसाम सद्वृधेरंक्षितापायुरदंब्धःस्वुस्तयें॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो! ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मावाहनम्—ईशानपूर्व के मध्य ब्रह्मापिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ अस्मेरुद्द्रामेहनापर्वंतासोव्वृत्रहत्येभरंहूतौसजोषाः॥ यःशꣳसंतेस्तुवतेधायि पुज्ज्रऽइन्द्रंज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तावाहनम्—नैर्ऋत्यपश्चिम के मध्य में अनन्तपिण्ड सुपाड़ी पर अक्षत छोड़े—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो अनन्त! इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्स्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्ट्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु॥ विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳम्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

सूर्याद्यनन्तादेवताः आवाहिताः सुप्रतिष्ठिता स्थापिताः वरदाः भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्प्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यानकर समर्पित करे—

ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंयच्चभाव्व्यम्॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्श्चपूरुषः॥ पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततोविष्ष्वङ्व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ततोविराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्या ग्राम्म्याश्च्ये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्त स्म्मादजायत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयःपृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्य्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता॥ मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतःश्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ तंयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषय श्श्चये॥ ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्नेविश्श्वरूपꣳसंव्ययस्वविभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्व्यकल्पयन्।। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽ उच्च्येते।। ॐ यज्ञोदेवानाम्प्रत्त्येतिसुम्म्नमादित्त्यासोभवतामृडयन्तः।। आवोर्व्वाचीं सुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासदादित्त्येब्भ्यस्त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ।। आपोजनयथा च नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।। त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वा न्न्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत।। अस्तोषतस्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठयामती योजान्विन्द्रतेहरी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीः प्प्रसूवरीः।। अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपार यिष्ष्णवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषप्परि।। एवानोदूर्व्वेप्प्रतनुसहस्स्रेणशतेनच।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ सें अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुंज्यायाहेतिम्परिबाधमानः।। हस्तग्घ्नोव्विश्वाव्वयुनानि व्विद्द्वान्पुमान्पुमाꣳसंपरिपातुव्विश्वतः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नानापरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्तियह्वाः ॥ घृतस्यधाराऽ अरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याᳪशूद्द्रोऽ अजायत॥ ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तन्धूर्व्वतंयोऽस्मान्धूर्व्वतितंधूर्व्वयंव्वयंधूर्व्वामः॥ देवानामसिव्वह्नितमᳪसस्नितमंपप्रितमंजुष्टतमंदेवहूतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखाद्गिरजायत॥ ॐ अग्निर्ज्ज्योतिज्र्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिज्र्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा॥ अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा॥ ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षᳪशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अᳪशुनातेअᳪशुः पृच्च्यतांपरुषापरुः॥ गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ-अच्च्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ यत्पुरुषेणहुविषादेवायुज्ञमतंतन्वत॥ वुसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंग्ग्रीष्मऽइध्मः शुरद्धविः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गीफलमेलालवङ्गादिसहितताम्बूलपत्राणि समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः फुलिनीर्य्याऽअफुलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहुस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चुन्त्वᳪहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भव-फलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हिरुण्यगुर्भःसमवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातःपतिरेकऽआसीत्। सदाधारपृथिवी द्यामुतेमांकस्मैदेवायहुविषाविधेम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवᳪरजः पितुरप्प्रायिधामभिः॥ दिवःसदाᳪसिबृहुतीवितिष्ठसुऽ आत्त्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदᳪहुविःप्रुजननंमेऽअस्तुदशवीरᳪसर्व्वगणᳪस्वुस्तये॥ आत्मुसनिप्प्रजासनिपशुसनिलोकुसन्न्यभयुसनि॥ अुग्ग्निःप्प्रुजांबहुलांमेकरोत्वन्नं पयोरेतोऽअुस्म्मासुधत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ युज्ञेनयुज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथुमान्न्यासन्॥ तेहुनाकम्महिमानः सचन्तुयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ सुप्प्तास्यासन्परिधयुस्त्रिःसुप्प्तसुमिधःकृताः॥ देवायद्युज्ञन्तन्वानाऽअबध्नुन्पुरुषम्पुशुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि सभी द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

रक्ष रक्ष ग्रहा सर्वे अधिप्रत्यधि देवता।
दिग्पालाश्च युता देवाः लोकपालास्तथैव च॥१॥

दिग्पाल, लोकपाल तथा अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता के साथ समस्त ग्रह रक्षा करें, हमारी सदैव रक्षा करें॥१॥

कुर्वन्तु सर्वकार्याणि मङ्गलानि पदे पदे।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं सर्वदा मया॥२॥

सभी कार्यो में पद पद पर हमारा मङ्गल करें, हमें सर्वदा आयु-आरोग्य तथा ऐश्वर्य प्रदान करें॥२॥

मोदनार्थाय दाष्यामि समर्थं सग्रहाधिपाः।
विविधद्रव्यसंयुतञ्च विशेषार्घ्यं समर्पितम्॥३॥

ग्रहों के प्रसन्नता के लिए विविध द्रव्यों से युक्त विशेषार्घ्य प्रदान करता हूँ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥१॥

ग्रहों में सर्वप्रथम रहनेवाले आदित्य, संसार की रक्षा के हेतु, हे सूर्य! विषमस्थान से होनेवाले हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥१॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे विधुः॥२॥

रोहिणी के पति, अमृतमूर्ति, अमृत शरीरवाले तथा निरन्तर अमृत का पान करनेवाले हे चन्द्र! जन्म के विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥२॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतोभयकृत्सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः॥३॥

भूमि के पुत्र महान् तेजस्वी, संसार को सदैव अभय प्रदान करनेवाले भद्र करनेवाले, भद्रा को नष्ट करनेवाले हे भौम! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥३॥

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥४॥

संसार में उत्पात रूपवाले, महान् प्रकाशवाले चन्द्र के पुत्र, सूर्य का प्रिय

करनेवाले हे बुध! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥४॥

देवमन्त्री विशालाक्षो सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः॥५॥

विशाल नेत्रों वाले देवताओं के मन्त्री, सदैव लोकहित में संलग्न, अनेकों शिष्यों से परिपूर्ण हे गुरु! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥५॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रणवश्च महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु मे भृगुः॥६॥

दैत्यदानवों के मन्त्री तथा गुरु, प्रणव के समान महाप्रकाशवान्, ताराओं के स्वामी, हे शुक्र! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥६॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥७॥

सूर्य के पुत्र, विशाल शरीर वाले, विशाल नेत्रों वाले, शिव के प्रिय, मन्द-मन्द गमन करनेवाले, हे शनि! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥७॥

महाशीर्षो महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु मे तमः॥८॥

महान् शिरवाले, महान् वक्त्रवाले, महान् दाँतोंवाले, महान् यशवाले, शरीरविहीन, ऊर्ध्वकेश हे राहु! विषमस्थान से होनेवाली हमारी पीड़ाओं को नष्ट करें॥८॥

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी॥९॥

सैकड़ों-हजारों अनेकानेक रूपों वाले धूमकेतु के समान भयंकर हे केतु! विषमस्थान से होनेवाले हमारे पीड़ाओं को नष्ट करें॥९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयोव्यन्तोविप्प्रायमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांवोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टतमम्॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-सूर्य-चन्द्र-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-राहु तथा केतु सभी ग्रह तथा देवता हमारे लिए शान्ति प्रदान करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याद्यनन्तान्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

अनया पूजया आदित्यादिग्रहमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम्॥

ग्रहमण्डलस्थदेवानां पूजनं परिपूर्णम्

असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्

असङ्ख्यातरुद्रकलशस्थापनम्—विधिपूर्वक कलश-स्थापन करे—

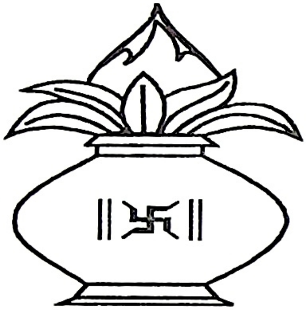

ग्रहमण्डलस्थ देवताओं के आवाहन-स्थापन-पूजन के पश्चात् सर्वप्रथम ग्रहवेदी के मध्य में अक्षत रखकर उस अक्षत के मध्य में रोली से अष्टदल निर्मित कर उसके उपर कलश स्थापित करके, असङ्ख्यातरुद्र के लिए नारियल स्थापित करे, कलशपूजन करने के बाद उस पर असंख्यातरुद्र के लिए प्रतिमा पर अग्न्युत्तारण विधि करके प्रतिष्ठाकर पूजन करे अथवा ईशान कोण की दिशा में भूमि पर अथवा अन्य वेदी पर असङ्ख्यातरुद्र के लिए कलश रखकर वरुणादि स्थापना के पश्चात् उसके ऊपर नारियल अथवा मूर्ति रखकर पूजन करे।

भूमिस्पर्श—**ॐ मुहीद्यौःपृथिवीचनऽइमंय्यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतान्नोभरीमभिः॥**

सप्तधान्यविखेरना—**ॐ ओषधयुःसमवदन्तुसोमेनसुहराज्ञा॥ यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि॥**

कलशस्थापन—**ॐ आजिग्घ्रकुलशंमुह्यात्वाविशुन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त स्वसानःसुहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनुर्म्माविशताद्दयिः॥**

कलश में जल भरना—**ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्यस्कम्भुसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतुसदन्यसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतुसदनमासीद।**

कलश में गन्ध डाले—**ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत॥**

कलश में सर्वौषधि डाले—**ॐ याओषधीःपूर्वीजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगंपुरा॥ मनैनु बब्भ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च॥**

कलश में दूर्वा डाले—**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानो दूर्वेप्प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥**

कलश में पञ्चपल्लव डाले—**ॐ अश्वत्थेवोनिषदनंपर्णेवोवसतिष्कृता॥ गोभाजइत्किलासथयत्सनवथपूरुषम्॥**

कलश में कुश डाले—**ॐ पवित्रेस्त्थोवैष्णव्यौसवितुर्वःप्प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्य्यस्यरश्मिभिः॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥**

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—**ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥**

कलश में पूगीफल डाले—**ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

कलश में पञ्चरत्न डाले—**ॐ परिवाजपतिःकविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि दाशुषे॥**

कलश में हिरण्य (सुवर्णखण्ड) डाले—**ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम्॥**

युग्मवस्त्राच्छादन—**ॐ सुजातोज्योतिषासहशर्म्मवरूथमासदत्स्वः॥ वासोअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्वविभावसो॥**

पूर्णपात्रस्थापन—**ॐ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतो॥**

नारिकेलफलस्थापन—**ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॥ बृहस्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः॥**

वरुण का ध्यान, आवाहन और पञ्चोपचारपूजन—**ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः॥**

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सवाहनं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। कलशे वरुणाद्यावाहितविष्णवादि देवताः प्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ॐ अपांपतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गङ्गाद्यावाहनम्—

कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन कथ्यते॥१॥

देवताओं तथा दानवों के प्रत्येक कलाओं का संग्रह करके यह निर्मित होता है, इसी लिए उसे कलश कहते हैं॥१॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥२॥

कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र तथा कुक्षि (पेट) में ब्रह्मा एवं मध्य में मातृकाएँ स्थित हैं॥२॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥३॥

पेट में सप्तसागर तथा मेदिनी में सप्तद्वीप स्थित हैं, अर्जुनी, गोमती, चन्द्रभागा, सरस्वत्यादि महानदियाँ स्थित हैं॥३॥

कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥४॥

कावेरी, कृष्णा, वेणा, गङ्गादि महानदियाँ स्थित हैं, तापी, गोदावरी, माहेन्द्री नर्मदादि नदियाँ स्थित हैं॥४॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥५॥

विभिन्न प्रकार के नद तथा समस्त नदियाँ हैं, पृथ्वी जिसमें समस्त तीर्थ स्थित हैं, वह सभी कलश में विधिपूर्वक अवस्थित हों॥५॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥६॥

सभी समुद्रों के सहित समस्त तीर्थ नद, नदियाँ इस कलश में हमारी शान्ति के लिए आकर अवस्थित होकर समस्त दुरित के क्षयकारक हों समस्त पापों को नष्ट करने वाले हों॥६॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुं समाश्रिताः॥७॥

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद अङ्गरूप से कलश के जल में समाश्रित होकर हमारा कल्याण करें॥७॥

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥८॥

यहाँ गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिकरी आकर हमारे सभी दुरित को समाप्त करके हमें शान्ति प्रदान करें, हमारे यज्ञ को पूर्णता प्रदान करें॥८॥

ॐ अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम॥

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्ब्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्द

धातु॥ विश्श्वेदेवास॑ऽइहमा॑दयन्तामो३म्प्रति॑ष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

इसी ईश्वरतत्त्व से प्राण प्रतिष्ठित होते हैं, इसी से शरीर में प्राणों का प्रवाह (संचरण) होता है, इसी से अर्चना के समय देवत्व आता है, इससे इतर कुछ नहीं है।

पञ्चोपचार पूजनकर प्रार्थना करे।

कलशप्रार्थना—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥

देवताओं और दानवों के बीच समुद्र-मन्थन से कुम्भ उत्पन्न हुआ, जिसे स्वयं विष्णु धारण किये थे॥१॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥

तुम्हारे जल में सभी तीर्थों की प्रतिष्ठा है, सभी तीर्थों के जल में देवताओं का वास है, जल ही सभी भूतों में प्रतिष्ठित है, सभी प्राणों में प्रतिष्ठित हो॥२॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥३॥

तुम स्वयं शिव हो, तुम ही विष्णु और प्रजापति हो, तुम ही आदित्य, रुद्र, वसु, विश्वेदेव तथा पितर हो॥३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!॥४॥

तुम ही सभी में प्रतिष्ठित हो, जिससे समस्त कामनाएँ फलवान् होती हैं, हे जलोद्भव कुम्भ! तुम्हारी कृपा से ही यह यज्ञ कर रहा हूँ॥४॥

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं अक्षयवरदायक।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

सर्व कामनाओं की समृद्धि के लिए तथा अक्षयवर प्रदान करनेवाले! आपका यज्ञ कर रहा हूँ, आप सदा सर्वदा प्रसन्न होकर हमें सान्निध्य प्रदान करे॥५॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥

स्फटिक के समान प्रभावाले, सुन्दरश्वेत हारों से सुशोभित, सुन्दरमङ्गल प्राप्ति के लिए, हाथ में सुन्दर पाश लिए हुए, झषासन पर आसीन रहनेवाले जलाधिनाथ आपको बार-बार नमस्कार है॥६॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात्तावत्त्वं सन्निधो भव॥७॥

हे पाश को हाथ में धारण करनेवाले! आपको नमस्कार है, कमलादि को जीवन प्रदान करने-वालों के नायक, जब तक यज्ञ कर्म की परिसमाप्ति नहीं हो जाती, तब तक सान्निध्य प्रदान करें॥७॥

कलश के ऊपर नारियल रखकर उस पर असंख्यातरुद्रों की प्रतिष्ठा करे।

असंङ्ख्यातरुद्रावाहनम्—ॐ असंङ्ख्यातासुहस्राणिुयेरुद्राऽअधिुभूम्म्याम्॥ तेषांसहस्र योजुनेऽवुधन्वांनितन्मसि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा—दोनों हाथ से स्पर्श करके प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्युबृहुस्प्पतिर्य्युज्ञमिुमन्तनोुत्त्वरिंष्टुंय्युज्ञꣳसमिुमन्दधातु॥ व्विश्श्वेदुवासऽइहमादयन्तामोꣽम्प्रतिष्ठ॥

अस्यैः प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यैः प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यैः देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ नमस्तेरुद्रमुन्न्यवऽउुतोतुऽअषवेनमः॥ बाुहुब्भ्यामुुततेुनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन का ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ यातेरुद्रद्रशिुवातनूरघोुरापापकाशिनी॥ तयानस्तुन्न्वाुशन्तमयाुगिरिंशन्ताुभिचाकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तुहस्तेबिुभर्ष्यस्तवे॥ शिुवाङ्गिरित्रुताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषुञ्जगत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शिवेनुवचसात्त्वाुगिरिुशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्व्वमिज्जगदयुक्ष्मꣳसुमनाुऽअसत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्क्ताप्रथमोदैव्योभिषक्॥ अहींश्च्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्न्योधराचीःपरासुव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर स्नानीय जल समर्पित करे—

ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्क्षु श्श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्ट्टोमृडयातिनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुनराचमनार्थे जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—दोनों हाथ से पयःपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयः पृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्क्षेपयोधाः॥ पयस्वतीःप्प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—दोनों हाथ से दधिपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषंजिष्ष्णोरश्श्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽ आयूꣳषितारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—दोनों हाथ से घृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—दोनों हाथ से मधुपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्त मुतोषसोमधुमत्पार्त्थिवꣳरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्प्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—दोनों हाथ से शर्करापात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्य्येसन्तꣳसमाहितम्॥ अपाꣳरसस्ययोरसस्तंवोगृह्णा म्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः॥ सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे॥ अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय लेकर समर्पित करे—

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन॥ महेरणाय चक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से उपवस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्॥ याश्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो वप॥ ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः॥ वासो ऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः॥ उशतीरिव मातरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ ऽउत॥ अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः॥ आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर आचमनीय जल समर्पित करे—

ॐ. तस्मा॒ऽअर॑ङ्गमामवो॒ यस्य॒क्षया॑यु॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑थाचनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ त्वाङ्गन्ध॒र्वाऽअ॑खन॒ँस्त्वामिन्द्र॒स्त्वाम्बृह॒स्पति॑ः॥ त्वामो॑षधे॒सोमो॒राजा॒वि॒द्वान्य क्ष्मा॑दमुच्च्यत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ह्यव॑प्प्रि॒याऽअ॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒स्वभा॑नवो॒विप्प्रा॒नवि॑ष्ठयाम॒ती योजा॒न्न्विन्द्र॒तेह॒री॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ ओष॑धी॒ःप्प्रति॑मोदद्ध्वं॒पुष्प्प॑वतीःप्प्र॒सूव॑रीः॥ अश्श्वा॑ऽइवस॒जित्त्व॑रीर्व्वी॒रुध॑ः पारयि॒ष्ण्णव॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—दोनों हाथ से दूर्वा लेकर समर्पित करे—

ॐ काण्डा॑त्काण्डात्प्प्ररोह॑न्ती॒परु॑षःपरुष॒ष्प्परि॑॥ ए॒वानो॑दूर्व्वे॒प्प्रत॑नु॒सह॒स्रे॑णश॒तेन॑च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ अहि॑रिवभो॒गैःप॑र्य्येति॑बा॒हुंज्याया॑हे॒तिंप्प॑रि॒बाध॑मानः॥ ह॒स्त॒घ्नोवि॒श्श्वा॑व॒युना॑नि वि॒द्द्वान्पुमा॒न्पुमा॑ᳬंसंपरि॑पातुवि॒श्श्वत॑ः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्धो॑रिवप्प्राद्ध्व॒नेशू॑घ॒नासो॒वात॑प्प्रमियःपतयन्तिय॒ह्वाः॥ घृ॒तस्य॒धारा॑ऽ अरु॒षोनवा॒जीकाष्ठा॑भि॒न्दन्नू॒र्म्मिभि॒ःपिन्व॑मानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याते॑हे॒तिर्म्मी॑ढुष्टमह॒स्ते॑बभू॒व॑तेधनु॑ः॥ तया॒स्म्मान्न्वि॒श्श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मया॒परि॑ भुज॥ ॐ धूर॑सि॒धूर्व॒धूर्व॑न्तं॒धूर्व॒तंयो॒ऽस्मान्धूर्व॑ति॒तंधू॑र्व्व॒यंव॒यंधूर्वा॑मः॥ दे॒वाना॑मसि॒वह्नि॑तम॒ᳬं सस्नि॑तमं॒पप्प्रि॑तमं॒जुष्ट॑तमंदे॒व॒हूत॑मम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ परिते॒धन्न्वनोहे॒तिरु॒स्म्मान्न्वृ॑मक्तु॒व्वि॒श्श्वतः॑॥ अथो॒यऽइषुधि॒स्त्तवा॒रेऽअ॒स्म्मन्नि॒धे॑हितम्॥ ॐ अ॒ग्ग्निर्ज्ज्योति॒र्ज्ज्योति॑र॒ग्ग्निः स्वाहा॒सूर्य्यो॒ज्ज्योति॒र्ज्ज्योतिः॒ सूर्य्यः॒स्वाहा॑॥ अ॒ग्ग्निर्व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॒सूर्य्यो॒व्वर्च्चो॒ज्ज्योति॒र्व्वर्च्चः॒स्वाहा॑॥ ज्ज्योति॒ः सूर्य्यः॒ सूर्य्यो॒ज्ज्योतिः॒स्वाहा॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्वꣳ सहस्रा॒क्क्ष॒शते॑षुधे॥ नि॒शीर्य्य॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑शि॒वोनः॑ सुमना॑भव॥ ॐ अन्न॑पतेऽन्न॑स्यनोदेह्यनमी॒वस्य॑शु॒ष्मिणः॑॥ प्रप्र॑दा॒तारं॑तारिष॒ऊर्ज्जन्नो धेहि॒द्द्विप॑दे॒चतु॑ष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ अ॒ꣳशुना॑तेअ॒ꣳशुः पृ॑च्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॑॥ ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु॒मदा॑य॒रसो॒ अच्च्युतः॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ नम॑स्त॒ऽआयु॑धायाना॑ततायधृ॒ष्णवे॑॥ उ॒भाब्भ्या॑मुतते॒नमो॑बा॒हु॒ब्भ्या॒न्तव॒-धन्न्वने॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूङ्गिफलमेलालवङ्ग-नागवल्लिदलयुतंताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ याः॒फ॒लिनी॒र्य्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्प्पायाश्श्च॑पु॒ष्प्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑ मुञ्च॒न्त्वꣳह॑सः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीद्या मु॒तेमांकस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

ॐ आरात्रिपार्थिवह्रजः पितुरप्रायिधामभिः॥ दिवःसदाᳬसिबृहुतीवितिष्ठुसऽआत्वेषंव्वर्त्ततेतमः॥ ॐ इदᳬहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरᳬसर्वगणᳬस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्क्षन्तमुतमानऽउक्क्षितम्॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानःप्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से विशेषार्घ्य लेकर समर्पित करे—

करचरणकृतं वाकायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—दोनों हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करके समर्पण करे—

गङ्गोत्तमाङ्गकलितं ललितं विशालं,
ते मङ्गलं गरलनीलगलं ललामम्।
श्रीमुण्डमाल्य-वलयोज्वल-मञ्जुलीलं,
लक्ष्मीश्वरार्चित-पदाम्बुजमाभजामः॥१॥
दारिद्र्यदुखःदहनं कमनं सुराणां,
दीनार्त्तिदावदहनं दमनं रिपूणाम्।
दानं श्रियां प्रणमनं भुवनाधिपानां,
मानं सतां वृषभवाहनमामनामः॥२॥

वन्दीविमुक्तिमधिगच्छति तूर्णमेति,
स्वास्थ्यं रुजार्दित उपैति गृहं प्रवासी।
विद्या यशो विजय इष्ट-समस्त-लाभः,
सम्पद्यतेऽस्य सेवनात् शङ्करस्य सर्वम्॥३॥
न तापस्त्रिविधस्तेषां न शोको न रुजादयः।
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वाऽपि न विद्यते॥४॥
श्रीः प्रज्ञाऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम्।
विद्यां धर्मे मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रदेवताभ्यो नमः प्रार्थनां समर्पयामि।

पूजनसमर्पणम्—दाहिने हाथ में जल लेकर पूजन समर्पित करे—

अनया पूजया असंख्यातरुद्रदेवताः प्रीयन्तां न मम् ॥

असंख्यातरुद्राणां पूजनं परिपूर्णम्

कुशकण्डिकाविधिः

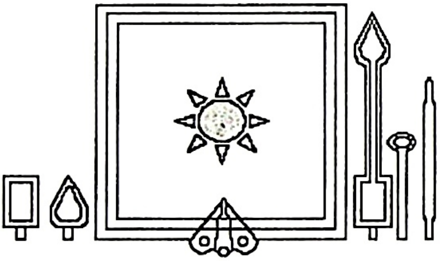

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्।

अग्नि के दक्षिण ब्रह्मा के लिए आसन रखे।

अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्।

अग्नि के उत्तर प्रणीताप्रोक्षणी के लिए दो आसन रखे।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्।

ब्रह्मासन पर ब्रह्मा को स्थापित करे।

यजमान बोले—**यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव।**

ब्रह्मा पद पर वृणीत ब्रह्मा बोले—**भवामि।**

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्।

ब्रह्मा के आदेश से प्रणीताप्रणयन करे।

तद्यथा—प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्।

प्रणीतापात्र में जल भर करके, कुशाओं से ढ़क करके, पहले प्रथम आसन पर रख कर, ब्रह्मा का मुख देख करके, दूसरे आसन पर रखे।

ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्।

ईशानकोण तथा पूर्व की तरफ कुश का अग्रभाग करके कुण्ड के चारो तरफ परिस्तरण करे।

तद्यथा—ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथा वृत्तिः।

जैसे—बर्हिमात्र कुशा का चतुर्थ भाग लेकर पूर्व दिशा में आग्नेयकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र कुश बिछाये, उत्तरदिशा में अग्निकोण से प्रणीतापात्र के बीच में पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये, पश्चिम दिशा में नैर्ऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र कुशा बिछाये, दक्षिण में नैर्ऋत्यकोण से ब्रह्मा के बीच पूर्वाग्र तथा ब्रह्मा से अग्निकोण तक पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाये इसी प्रकार पुनः दूसरी आवृत्ति से परिस्तरण करे।

पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशा पञ्च। उपयमनकुशा सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पात्रासादन—पवित्री बनाने के लिए तीन कुशा तथा दो कुशा रखे, प्रोक्षणीपात्र, घृतपात्र, चरुपात्र, सम्मार्जन के लिए पाँच कुशा, उपयमन के लिए सात कुशा, तीन सीधी वितस्त मात्र समिधा, स्रुक्, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, कल्पित बैल का मूल्य, अन्य हवनीय पदार्थ सभी क्रम से रखे।

पवित्रच्छेदनाति—द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मेलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।

पवित्रीछेदन—दो कुशा पर तीन कुशा को रखकर, दो कुशा को मिला कर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर सभी को अनामिका, अङ्गुष्ठ से पकड़कर तीन कुशा का छेदन कर,तीन कुशा का त्याग कर,दो कुशा का ग्रहण कर पवित्री बना कर पवित्री से प्रणीता के पात्र से प्रोक्षणीपात्र का तीन बार सिंचन कर जल भर कर उसमें पवित्री रख दें। प्रोक्षणीपात्र को वायें हाथ में रख कर दाहिने हाथ से ढ़ककर यथास्थान रखे।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधानां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणी निधाय।

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण कर, प्रोक्षणीपात्र में प्रणितापात्र से जल ग्रहण कर प्रोक्षणीपात्र के जल से पवित्री के द्वारा घृतपात्र, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, तथा अन्य सभी सामग्रियों का प्रोक्षण करके प्रोक्षणीपात्र को यथास्थान रखे।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकात्सेचनपूर्वकं तण्डुल-प्रक्षेपः। व्रह्मणोदक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ, अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवस्य समृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जन-कुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

घृतपात्र में घृत निकाल लें, चरुस्थाली को प्रणीता के जल से सिंचन करके उसमें खीर बनाने के लिए चावल निकालें, व्रह्मा के दक्षिण से लाकर घृत को अग्नि के दक्षिण रखें, चरु को पकने के लिए अग्नि पर रखें, जलती हुई लकड़ी लेकर ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशान पर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर अग्नि में डाल दें, आधे पके चरु को चलाये, स्रुवा को नीचे की तरफ मुख करके तपाकर, आधे पके चरु को चलाये, सम्मार्जन कुशा के द्वारा प्रणीता के जल से ऊर्ध्वमुख स्रुवा का मार्जन कर, स्रुवा के अग्रभाग को कुशाग्र से तथा स्रुवमूल का कुशमूल से मर्दन कर प्रणीता के जल से अभ्युक्षण कर फिर से तपा कर अग्नि व्रह्मा के मध्य रखे तथा सम्मार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे।

पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्यस्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

घृत को लाकर अग्नि के उत्तर में रखें, चरु को अग्नि से उतार कर अग्नि की प्रदक्षिणा करते हुए दक्षिण में रखे तथा घृत को भी प्रदक्षिणा क्रम से लाकर चरु के उत्तर रखे।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षुण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्।

इतरथावृतिः। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः।

घृतपात्र में घृत निकाले तथा निरीक्षण कर अपद्रव्य निकाले, पुनः प्रोक्षणी के जल से सिंचन करे। बायें हाथ में उपयमन कुशा लेकर, खड़े होकर तीन समिधाओं को घृत में बोर कर मौन ही अग्नि में प्रक्षेप करे, पवित्री के सहित प्रोक्षणी को लेकर जल गिराते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर ईशानपर्यन्त घुमाकर पुनः विपरीत क्रम से घुमाकर यथा स्थान रखे, पवित्री को प्रणीता में रखे, दक्षिण जानु को भूमि पर रख कर, ब्रह्मा को कुशाओं से स्पर्श कर स्रुवा से घृत आहुति प्रदान करे।

अग्नेरुत्तरभागे—अग्नि के उत्तरभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा।

इदं प्रजापतये न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

अग्नेर्दक्षिणभागे—अग्नि के दक्षिणभाग में आहुति प्रदान करे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।

इदं इन्द्राय न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

समिद्धतमे—अग्नि के मध्य समिधा में आहुति प्रदान करे।

ॐ अग्नये स्वाहा।

इदमग्नये न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सोमाय स्वाहा।

इदं सोमाय न मम। हुतशेष एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ततः सूर्यादिग्रहाणां तथा च अधिदेवताप्रत्याधिदेवतापञ्चलोकपालवास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रधानदेवतां तथा च आवाहितदेवतानां प्रत्येकं सम्मिलिततिलादिद्रव्यैः जुहुयात्। कुशकण्डिका करने के बाद सूर्यादि ग्रहों तथा अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्चलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपालादि देवताओं के साथ प्रधान देवता के लिए तिलादिमिश्रित द्रव्य से हवन करे।

सङ्कल्पः—**अस्मिन् श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम।**

यजमान बोले—**यथा दैवतानि सन्तु।**

कुशकण्डिकाकर्म परिपूर्णम्

●

हवनप्रकरणम्

वाराहुतिः—सर्व प्रथम गणेश तथा महागौरी को घी से आहुति प्रदान करे-

ॐ गुणानान्त्वागुणपतिᳪहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिᳪहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिᳪहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्द्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ स्वाहा॥

सूर्यादिग्रहानांहवनम्

ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्श्यन्॥ सूर्याय स्वाहा॥

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नᳪसुवद्ध्वम्महतेक्षत्रायमहतेज्ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यायेन्द्रियाय॥ इमममुष्ष्यपुत्रममुष्ष्यैपुत्रमस्यैव्विशऽएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकम्ब्राह्मणानाᳪराजा॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिवःकुकुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम्॥ अपाᳪरेताᳪसिजिन्वति॥ भौमाय स्वाहा॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्त्तेसᳪसृजेथामयञ्च॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्श्वेदेवायजमानश्चसीदत॥ बुधाय स्वाहा॥

ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजाततदस्म्मासुद्द्रविणन्धेहिचित्रम्॥ बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रम्पयःसोमम्प्रजापतिः॥ ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियंव्विपानᳪशुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु॥ शुक्राय स्वाहा।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥ शनैश्चराय स्वाहा॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधःसखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥ राहवे स्वाहा॥

ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥ केतवे स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ ईश्वराय स्वाहा॥

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्श्विनौव्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण॥ उमायै स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्दःप्प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवापुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यम्महिजातन्तेऽअर्व्वन्॥ स्कन्दाय स्वाहा॥

ओ३म् इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳬसुरेस्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ओ३म् आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्रह्मवर्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्यःशूरऽइषव्योतिव्याधी महारथोजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुःसप्तिःपुरन्धिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाःसभेयो युवास्ययजमानस्यवीरोजायतान्निकामेनिकामेनःपर्जन्योवर्षतुफलवत्योनओऽषधयः पच्यन्तांय्योगक्षेमोनःकल्पताम्॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ओ३म् सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिःसोमम्पिबवृत्रहाशूरविद्वान्॥ जहिशत्रूँ२॥रपमृधो नुदस्वाथाभयंकृणुहिविश्वतोनः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ओ३म् यमायत्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ओ३म् कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाऽक्षित्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधी भिरोषधीः॥ कालाय स्वाहा॥

ओ३म् चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

ओ३म् अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे॥देवाँ२॥ आसादयादिह॥ अग्नये स्वाहा॥

ओ३म् आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ओ३म् स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ओ३म् विष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसिविष्णवेत्वा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ओ३म् इन्द्रऽआसांनेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभि भञ्जतीनांजयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ओ३म् अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्व॥ इन्द्राण्यै स्वाहा॥

ओ३म् प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽ अस्तुवयᳬस्यामपतयोरयीणाम्॥ प्रजापतये स्वाहा॥

ओ३म् नमोस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्प्पेभ्यो नमः॥ सर्पेभ्यः स्वाहा॥

ओ३म् ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽ अस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ओ३म् गणानान्त्वागणपतिᳬहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिᳬहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिᳬहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये ॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतवसांवसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥ आकाशाय स्वाहा॥

ॐ यावांकशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशंनोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥ वास्तोष्पतये स्वाहा॥

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्न्यमस्म्माद्वैश्श्वानरात्पुरऽएतारमग्ग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यंवैश्श्वानरंक्षैत्रजित्त्यायदेवाः॥ क्षेत्राधिपतये स्वाहा॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्नेतवदेवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्श्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्व्रते॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्न्विहितस्कररस्य॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानो वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ वायोऽअस्मिन त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिःसदानः॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्न्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहनापर्व्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः॥ यःशꣳसतेस्तुवतेधायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ२॥ऽअवन्तुदेवाः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः॥ अनन्ताय स्वाहा॥

अनेन हवनाख्येन सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

सूर्याद्यनन्तान्तहवनं परिपूर्णम्

●

असंख्यातरुद्रहवनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तु-रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥ १०८ आहुति हवन करे।

असंख्यातरुद्र के लिए हवन के पश्चात् प्रधान देवता के लिए अहुतियाँ प्रदान करे।

अनेन हवानाख्येन असंख्यातरुद्राः प्रीयन्तां न मम।

हाथ में जल लेकर मन्त्र बोलकर गिरायें।

यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा॥

असंख्यातरुद्रहवनं परिपूर्णम्

●

प्रधानदेवतानां हवनम्

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा। सहस्र हवन करने के बाद अधोलिखित हवन करे।

ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरूहूताय महामायाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत् साक्षिणे संतापभूतव्यापिने महाघोराऽतिघोराय ॐ ॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ गिलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रँ रँ रँ रँ रँ रक्षरक्ष त्वं मां रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ऐँ ह्रूँ ह्रूँ रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघसर्वतोऽग्नि विद्युदर्क-संवर्तकपर्दिनी दिव्यकणिकाम्भोरुह विकटपद्ममालाधारिणि सितिकण्ठाभ खट्वां कपालधृक व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वर प्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवतापितृपिशाचोरग नागाऽसुरगरुणगन्धर्वकिन्नरविद्याधरयक्ष

राक्षसान् ग्रहाञ्च स्तम्भय स्तम्भय सपरिवारस्य मम शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये सर्वे ममोपरि अविद्यांकर्मकुर्वन्तिकारयन्ति तेषां बुद्धिर्घातयघातय तेषां रोमं कीलय कीलय सर्वान् शत्रून् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई मे आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय कीलय कीलय हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ सर्वसिद्धि महाभागे ममात्मनः सपरिवारस्य शान्ति कुरु कुरु स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ॐ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यँ यँ यँ यँ यँ रँ रँ रँ रँ रँ लँ लँ लँ लँ लँ वँ वँ वँ वँ वँ शँ शँ शँ शँ शँ षँ षँ षँ षँ षँ सँ सँ सँ सँ सँ हँ हँ हँ हँ हँ ळँ ळँ ळँ ळँ ळँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ क्षँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ क्लीँ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हूँ हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जूँ सः फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ नमो प्रत्याङ्गिरे ममात्मानः सपरिवारस्य शान्तिं रक्षां कुरु कुरु स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॐ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ नमो भगवती दुष्टचाण्डालिनि त्रिशूलवज्राङ्कुशशक्तिधारिणी रुधिरमांसवसा-भक्षिणी कपाल खट्वाङ्ग धारिणी मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दंष्ट्राकरालिनी मम शत्रूणां कृत मन्त्रतन्त्रयन्त्रप्रयोग विषचूर्णशस्त्राद्यविचारसर्वोपद्रवादिकं येन कृतंकारितंकुरुतेकारयन्तिकरिष्यन्ति कारयिष्यन्तितान् सर्वान् हन हन श्रीप्रत्यङ्गिरे त्वं ममात्मनः सपरिवारस्य रक्ष रक्ष ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ हूँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ ब्राह्मी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ वैष्णवी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ माहेश्वरी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ कौमारी मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ अपराजिता मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ वाराही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ नारसिंही मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ चामुण्डा मम शरीरं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ प्रत्यङ्गिरे मम शरीरं सर्वतो सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ भ्रामिणी मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ रौद्री मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय हुँ फट् स्वाहा॥ तिल और राई से आहुति प्रदान करे।

प्रधानदेवताहवनं परिपूर्णम्

आवाहितदेवानां होमः

गणेशाम्बिकावरुणषोडषमातृकासप्तघृतमातृकासर्वतोभद्रदेवानां हवनम्—

गणेशहवनम्—गणेश के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा।

अम्बिकाहवनम्—महागौरी के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिका ङ्काम्पीलवासिनीम्॥ अम्बिकायै स्वाहा ॥

वरुणहवनम्—वरुण के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

गणेशसहितषोडशमातृकाहवनम्—मातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा-निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणेशाय स्वाहा॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः॥ पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥ गौर्यै स्वाहा॥

ॐ हिरण्यरूपाऽउषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्श्च॥ आरोहतंव्वरुणमित्र गर्त्ततश्श्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चामित्रोऽसिव्वरुणोऽसि॥ पद्मायै स्वाहा॥

ॐ निवेशनः सङ्गमनोव्वसूनांव्विश्श्वारूपाभिचष्ट्टेशचीभिः॥ देवऽइवसवितासत्त्य धर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम् ॥ शच्यै स्वाहा॥

ॐ मेधाम्मेव्वरुणोददातुमेधामग्निः प्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चव्वायुश्श्चमेधान्धाता ददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ सवितात्त्वासवानांꣳसुवतामग्निर्ग्गृहपतिनाꣳसोमोव्वनस्प्पतीनाम्॥ बृहस्प्पतिर्व्वाचधर्मपतीनाम्॥ सावित्र्यै स्वाहा॥

ॐ विज्ज्यन्धतुः कपर्दिनोव्विशल्योबाणवाँ२॥उत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः॥ विजयायै स्वाहा॥

ॐ वुह्वीनांपिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्श्चाकृणोतिसमनावगत्य॥ इषुधिःसङ्काः पृतनाश्श्चसर्वाःपृष्ठेनिनद्धोजयतिप्प्रसूतः॥ जयायै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनांमरुतोयन्त्वग्रम्॥ देवसेनायै स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः प्प्रतितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त-पितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ स्वधायै स्वाहा॥

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यःसाधिपतिकेब्भ्यः॥ पृथिव्यैस्वाहाग्ग्नयेस्वाहान्तरिक्षाय स्वाहावायवेस्वाहा॥ दिवेस्वाहासूर्य्यायस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरःशुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वःपुनन्तु॥ विश्श्वःहिरिप्प्रं प्र वहन्तिदेविरुदिदाब्भ्यःशुचिरापूतऽएमि॥ दीक्षातपसोस्तनूरसितांत्वाशिवाꣳशग्ग्मांपरि दधेभद्द्रंवर्णंपुष्ष्यन्॥ मातृभ्यो स्वाहा॥

ॐ रयिश्श्चमेरायश्श्चमेपुष्टंचमेपुष्टिश्श्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्ण्णंचमेपूर्ण्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नंच्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ लोकमातृभ्यः स्वाहा॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ अङ्गान्न्यात्मन्भिषजातदश्श्विनात्मानमङ्गैःसमधात्त्सरस्वती॥ इन्द्रस्यरूपꣳशत मानमायुश्श्चन्द्रेणज्ज्योतिरमृतंदधानाः॥ पुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः॥ सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्श्वा नावेवसिन्धुंदुरितात्यग्निः॥ तुष्ट्यै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्त्रायस्वाहावाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा॥

सप्तघृतमातृकाहवनम्—घृतमातृकाओं के लिए आहुति प्रदान करे—

ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्त्यमशीय॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्यरसोयशःश्रीः श्रयतांमयिस्वाहा॥ श्रियै स्वाहा॥

ॐ श्रीश्श्चतेलक्ष्मीश्श्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्त्राणिरूपमश्श्विनौव्यात्तम्॥ इष्ष्णं निषाणामुंमऽइषाणसर्वलोकंमऽइषाण॥ लक्ष्म्यै स्वाहा॥

ॐ भद्रङ्कर्ण्णेभिः श्रृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः॥ धृत्यै स्वाहा॥

ॐ मेधांमेवरुणोददातुमेधामग्निःप्प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्श्चवायुश्श्चवायुश्श्चमेधां धाताददातुमेस्वाहा॥ मेधायै स्वाहा॥

ॐ प्प्राणायस्वाहाऽपानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा॥ चक्षुषेस्वाहाश्रोत्त्रायस्वाहावाचे स्वाहामनसेस्वाहा॥ स्वाहायै स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः॥ पितरंचप्प्रयन्त्स्वः॥ प्रज्ञायै स्वाहा॥

ॐ पावमानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवतियज्ञंवष्टुधियावसुः॥ सरस्वत्यै स्वाहा॥

सर्वतोभद्रदेवतानांहवनम्—सर्वतोभद्रदेवता के लिए आहुति प्रदान करे।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतऽसुरुचोवेनआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाऽसतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥ सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्प्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धयें॥ ईशानाय स्वाहा॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳशूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्त्विन्द्रः॥ इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ त्वन्नोऽअग्नेतवपायुभिर्म्मघोनोरक्षतन्न्वश्चवन्द्य॥ त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते॥ अग्नये स्वाहा॥

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा॥ स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मःपित्रे॥ यमाय स्वाहा॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥ अन्न्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥ वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आनोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्॥ वायोऽअस्मिन्नत्सवनेमादयस्वयूयंपात स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे स्वाहा॥

ॐ वसुभ्यस्त्वारुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वासञ्जानाथांद्यावापृथिवीमित्रावरुणौत्वावृष्ट्यावताम्॥ व्यन्तुवयोक्तꣳरिहाणामरुतांपृषतीर्गच्छवशापृश्निर्भूत्वादिवंगच्छततोनोवृष्टिमावह॥ चक्षुष्पाऽअग्नेऽसिचक्षुर्म्मेपाहि॥ अष्टवसुभ्यः स्वाहा॥

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुभ्यामुततेनमः॥ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा॥

ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः॥ आवोऽर्वाचीसुमतिर्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्याववरिवोवित्तरासत्॥ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा॥

ॐ अश्विनातेजसाचक्षुःप्प्राणेनसरस्वतीवीर्य्यम् ॥ वाचेन्द्रोबलेनेन्द्रायदधुरिन्द्रियम्॥ अश्विभ्यां स्वाहा॥

ॐ विश्वेदेवासऽआगतश्रृणुतामऽइमꣳहवम्॥ एदंबर्हिर्न्निषीदत॥ उपयामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यऽएषतेयोनिर्विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्यः॥ सपैतृक-विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥

ॐ अभित्यंदेवꣳसवितारमोण्योः कविक्क्रतुमर्च्चामिसत्त्यसवꣳरत्न्धामभिप्प्रियंमतिंकविम्॥ ऊर्द्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्द्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीत सुक्क्रतुः कृपास्वः॥ प्रजाब्भ्यस्त्वाप्प्रजास्त्वानुप्प्राणन्तुप्रजास्त्वमनुप्प्राणिहि॥ सप्तयक्षेभ्यःस्वाहा॥

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे येदिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः॥ अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा॥

ॐ ऋताषाड्ढतधामाग्ग्निर्ग्गन्धर्व्वस्तस्यौषधयोप्प्सरसोमुदोनाम॥ सनःऽइदम्ब्रह्म क्षत्त्रम्पातुतस्म्मैस्वाहा वाट्ताब्भ्यःस्वाहा॥ गन्धर्वाऽप्सरोभ्यः स्वाहा॥

ॐ यदक्क्रन्दःप्प्रथमं जाय[illegible]यमद्वादुत वा पुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्त्यंमहिजातंतेऽअर्वन्[illegible]स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः॥ नन्दीश्वराय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ शूलाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः॥ महाकालाय स्वाहा॥

ॐ शुक्क्रज्ज्योतिश्चचित्त्रज्ज्योतिश्चसत्यज्ज्योतिश्चज्ज्योतिष्माँश्च॥ शुक्क्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः॥ दक्षादिसप्तप्रजापतिभ्यः स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन॥ ससस्त्यश्वकःसुभद्द्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥ दुर्गायै स्वाहा॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्क्रमेत्त्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

ॐ पितृब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमःप्प्रपितामहेब्भ्यःस्वधायिब्भ्यःस्वधानमः॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरःपितरःशुन्धद्ध्वम्॥ स्वधासहितपितृभ्यः स्वाहा॥

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्त्थांयस्तेऽअन्न्यऽइतरोदेवयानात्॥ चक्षुष्मतेश्रृण्वतेतेब्ब्रवीमिमानःप्प्रजाꣳरीरिषोमोतवीरान्॥ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ गणपतये स्वाहा॥

ॐ अप्प्स्वग्ग्नेसधिष्ट्वसौषधीरनुरुध्यसे॥ गर्ब्भेसञ्जायसेपुनः॥ अद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ मरुतो यस्यहिक्षये पाथादिवोविमहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥ मरुद्भ्यः स्वाहा॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥ पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ पञ्चनद्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा॥

ॐ समुद्रोऽसिनभस्वानार्द्रदानुः॥ शम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा॥ मारुतोऽसि मरुतांगणःशम्भूर्म्मयोभूरभिमावाहि॥ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा॥

ॐ प्रपर्वतस्यवृषभस्यपृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः॥ विष्णोर्विक्रमणमसिविष्णोर्विक्रान्तमसिविष्णोःक्रान्तमसि॥ मेरवे स्वाहा॥

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेवसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम्॥ गदायै स्वाहा॥

ॐ त्रिꣳशद्धामविराजतिवाक्पतङ्गायधीयते॥ प्रतिवस्तोरहद्युभिः॥ त्रिशूलायस्वाहा॥

ॐ महाँ२॥इन्द्रोवज्रहस्तःषोडशीशर्म्मयच्छतु॥ हन्तुपाप्मानंयोऽस्मान्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोऽसिमहेन्द्रायत्त्वैषतेयोनिर्म्महेन्द्रायत्वा॥ वज्राय स्वाहा॥

ॐ वसुचमेवसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेऽर्थश्चमएमश्चमइत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ शक्तये स्वाहा॥

ॐ इडऽएह्यदितऽएहिकाम्म्याऽएत॥ मयिवःकामधरणंभूयात्॥ दण्डाय स्वाहा॥

ॐ खड्गोवैश्वदेवःश्वाकृष्णःकर्णोगर्दभस्तरक्षुस्तेरक्षसामिन्द्रायसूकरःसिꣳहोमारुतःकृकलासःपिप्पकाशकुनिस्तेशरव्यायैविश्वेषांदेवानांपृषतः॥ खड्गाय स्वाहा॥

ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमꣳश्रथाय॥ अथावयमादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ पाशाय स्वाहा॥

ॐ अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपाꣳशुश्चमेऽन्तर्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमेऽआश्विनश्चमेप्रतिप्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥ अङ्कुशाय स्वाहा॥

ॐ आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥ गौतमाय स्वाहा॥

ॐ अयंदक्षिणाविश्वकर्म्मातस्यमनोवैश्वकर्म्मणंग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मीत्रिष्टुभःस्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशःपञ्चदशाद्बृहद्भरद्वाजऽऋषिःप्रजापतिगृहीतयात्वयामनोगृह्णामिप्रजाभ्यः॥ भरद्वाजाय स्वाहा॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्यश्रोत्रꣳसौवꣳशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी-मन्थिनऽएकविꣳशऽएकविꣳशाद्वैराजंविश्वामित्रऽऋषिःप्रजापतिगृहीतयात्वयाश्रोत्रंगृह्णामिप्रजाभ्यः॥ विश्वामित्राय स्वाहा॥

ॐ त्र्यायुषंजमदग्ग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नोअस्तुत्र्यायुषम्॥ कश्यपाय स्वाहा॥

ॐ अयंपश्श्चाद्विश्श्वव्यचास्तस्यचक्षुर्वैश्श्वव्यचसंव्वर्षाश्श्राक्षुष्ष्यो जगतीव्वार्षी जगत्याऽऋक्क्सम्मृक्क्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्प्तदशः सप्प्तदशाद्वैरूपंजमदग्ग्निर्ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ जमदग्नये स्वाहा॥

ॐ अयंपुरोभुवस्तस्यप्प्राणोभौवायनोव्वसन्तः प्प्राणायनोगायत्त्रीव्वासन्तीगायत्र्यै गायत्रंगायत्त्रादुपाᳪंशुरुपाᳪंशोस्त्रिवृत्त्रिवृतोरथान्तरंव्वसिष्ठऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतयात्त्वया प्प्राणंगृह्णामिप्प्रजाब्भ्यः॥ वसिष्ठाय स्वाहा॥

ॐ अत्रपितरोमादयद्ध्वंय्यथाभागमावृषायद्ध्वम्॥ अमीमदन्तपितरोय्यथाभागमा वृषायिषत॥ अत्रये स्वाहा॥

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृभ्णानाः- सुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥ अरुन्धत्यै स्वाहा॥

ॐ अदित्त्यैरास्नासीन्द्राण्ण्याऽउष्ण्णीषः॥ पूषासिघर्म्मायदीष्ष्व॥ ऐन्द्र्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिका ङ्काम्पीलवासिनीम्॥ कौमार्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रायाहिधियेषितोव्विप्प्रजूतः सुतावतः॥ उपब्ब्रह्माणिव्वाग्घतः॥ ब्राह्म्यै स्वाहा॥

ॐ इन्द्रस्यक्क्रोडोऽअदित्यैपाजस्यंदिशांजत्रवोऽदित्यैभसज्जीमूतान्हृदयौपशे- नान्तरिक्षंपुरीततानभऽउदर्य्येणचक्रवाकौमतस्नाब्भ्यांदिवंव्वृक्काब्भ्यांगिरीन्प्लाशिभिरुप- लान्प्लीह्नाव्वल्मीकान्क्लोमभिग्ग्लौभिर्ग्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिब्भ्याᳪंसमुद्र मुदरेणवैश्श्वानरंभस्म्मना॥ वाराह्यै स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्का म्पीलवासिनीम्॥ चामुण्डायै स्वाहा॥

ॐ आप्प्यायस्वसमेतुतेव्विश्श्वतः सोमव्वृष्ष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्यसङ्गथे॥ वैष्णव्यै स्वाहा॥

ॐ यतेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचा कशीहि॥ माहेश्वर्यै स्वाहा॥

ॐ समक्ख्येदेव्व्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा॥ मामऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मोऽअहंतव व्वीरंव्विदेयतवदेविसन्दृशि॥ वैनायक्यै स्वाहा॥

आवाहितदेवतानां हवनं परिपूर्णम्

अग्निपूजनम्

संकल्प:—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ---गोत्रः ---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहास्वधायुताय श्रीइष्टदेवतासहिताय अग्निपूजनं करिष्ये।**

श्रीइष्टदेवताध्यानम्—हाथ में अक्षतपुष्प लेकर अग्नि में इष्ट का ध्यान करे।

ॐ पाशाङ्कशापासृक्कपालेऋणीषूञ्छूलहस्तैर्विभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां, देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम्॥१॥
ज्वलत्कोटिबालार्कभासारुणाङ्गीं सुलावण्यशृङ्गारशोभाभिरामाम्।
महापद्मकिञ्जल्कमध्ये विराजत्त्रिकोणोल्लसन्तीं भजे श्रीभवानीम्॥२॥
कणत्किंकिणीनूपुरोद्भासिरत्ना, प्रभालीढलाक्षार्द्रपादारविन्दाम्।
अजेशाच्युताद्यैः सुरैः सेव्यमानां महादेवि मन्मूर्ध्नि ते भावयाम॥३॥
सुशोणाम्बराबद्धनीवीविराजन् महारत्नकाञ्चीकलापं नितम्बम्।
स्फुरद्दक्षिणावर्तनाभिं च तिस्रो बली रम्यते रोमराजीं भजेहम्॥४॥
इष्टशक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैः दोर्धैदोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमा कल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥५॥
स्मर्त्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरं,
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिश्च यत् सिद्ध्यति।
यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद् गीयते,
तद्वस्तुस्थिति-सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः॥६॥

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्म्मान्विश्श्वानिदेववयुनानिविद्वान्॥ युयोद्ध्युस्म्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमउक्तिंविधेम॥ ॐ वैश्वानर जातवेदसे इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वह्नये वौषट्।

ॐ स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि॥

अग्निपूजनं परिपूर्णम्

●

स्विष्टकृद्धोमः

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

अग्निपूजनपूर्वक स्विष्टकृत् हवन के पश्चात् भूरादि नवाहुति प्रदान करे।

स्विष्टकृद्धवनं परिपूर्णम्

●

भूरादिनवाहुतिः

ॐ भूः स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥१॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ भुवः स्वाहा॥ इदं वायवे न मम॥२॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ स्वः स्वाहा॥ इदं सूर्याय न मम॥३॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानोव्विश्श्वाद्वेषांᳪसिप्रमुमुग्ध्यस्म्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥४॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ॥ अवयक्ष्वनोव्वरुणᳪरराणोव्वीहिमृडीकᳪसुहवोनऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥५॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्त्वमयाऽअसि॥ अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजᳪ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥६॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ येतेशतंव्वरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशाव्विततामहान्तः॥ तेभिर्न्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्व्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काः॥ स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमᳪश्रथाय॥ अथाव्वयमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम॥ स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम॥८॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥९॥ हुतशेष एक बूँद घृत प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

नवाहुतिः परिपूर्णम्

●

कुमारीसुवासिनीपूजनम्

पूजागृह में सुवासिनी को लाकर प्रदक्षिणा करके, उद्वर्तनादि से स्नपन कराकर वस्त्रादि से अलंकृत करके पीठ पर समावेशित कर, अपना षडङ्गादिन्यास कर पूजनीया कुमारी का न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लाँ कुलकुमारिके हृदयाय नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लीँ कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लैँ कुलकुमारिके कवचाय हुम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लौँ कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यास के बाद कुमारी के तत्तद अङ्गों पर मातृकान्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ अँ नमः कुलकुमारिके शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ आँ नमः कुलकुमारिके मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ इँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ईँ नमः कुलकुमारिके वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ उँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ऊँ नमः कुलकुमारिके वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ऋँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ॠँ नमः कुलकुमारिके वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ऌँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ॡँ नमः कुलकुमारिके वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ एँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ नमः कुलकुमारिके अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ओँ नमः कुलकुमारिके ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ औँ नमः कुलकुमारिके अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ अँ नमः कुलकुमारिके जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ अः नमः कुलकुमारिके कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ कँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ खँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ गँ नमः कुलकुमारिके दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ घँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ ङँ नमः कुलकुमारिके दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ चँ नमः कुलकुमारिके वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रैँ हूँ छँ नमः कुलकुमारिके वामकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जँ नमः कुलकुमारिके वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ झँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ ञँ नमः कुलकुमारिके वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ टँ नमः कुलकुमारिके दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ ठँ नमः कुलकुमारिके दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ डँ नमः कुलकुमारिके दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ ढँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ णँ नमः कुलकुमारिके दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ तँ नमः कुलकुमारिके वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ थँ नमः कुलकुमारिके वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ दँ नमः कुलकुमारिके वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ धँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ नँ नमः कुलकुमारिके वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ पँ नमः कुलकुमारिके दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ फँ नमः कुलकुमारिके वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ बँ नमः कुलकुमारिके पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ भँ नमः कुलकुमारिके नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ मँ नमः कुलकुमारिके उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ यँ नमः कुलकुमारिके हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ रँ नमः कुलकुमारिके दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ लँ नमः कुलकुमारिके ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ वँ नमः कुलकुमारिके वामांशे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ शँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ षँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ सँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ हँ नमः कुलकुमारिके हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ लँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ क्षँ नमः कुलकुमारिके कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।

ध्यानम्—

शङ्खेन्दुं धवलां दिव्यां द्विभुजां वरदाभयाम्।
चन्द्रमध्यमहामोजभावाभावविराजिताम् ॥

शङ्ख तथा इन्दु के समान धवल, दिव्य, दो भुजाओं वाली, वर तथा अभय प्रदान करने वाली, चन्द्र के मध्य, महा ओजवान्, भाव और अभावयुक्त देवी का ध्यान करता हूँ।

उक्त प्रकार से ध्यान करके पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदं पाद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदं मधुपर्कं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदमाचमनीयं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदमनुलेपनं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ ऐते अक्षताः कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ एतानि पुष्पाणि कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ एष धूपं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ एष दीपं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदं नैवेद्यं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदं ताम्बूलं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ इदं फलं कुलकुमारिकायै नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ स्फ्रँ हूँ एषा दक्षिणा कुलकुमारिकायै नमः।

पूजन के बाद कुमारी-सुवासिनी की प्रार्थना करे।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥१॥

जगत्पूज्य, सम्पूर्ण जगत् में वन्द्य, सर्वशक्तिस्वरूपिणी, जगन्माता कौमारी पूजन ग्रहण करें, आपको नमस्कार है॥१॥

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥२॥

त्रिपुरा देवी, सत्त्वरजतम तीन गुणोंवाली, सबको धारण करनेवाली, ज्ञानमार्गस्वरूप वाली, तीनों लोकों में वन्दित, त्रिमूर्ति रूपिणी का मैं पूजन करता हूँ॥२॥

कलात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥३॥

षोडश कलावाली, काल को भी भयभीत करनेवाली, करुणामयी, शिव के हृदय में रहनेवाली शिवा, करुणामयी जननी, हमेशा वर्तमान रहनेवाली कल्याणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥४॥

अणिमादि सिद्धियों को प्रदान करनेवाली, गुणों की खान, अकारादि स्वर रूपवाली, शक्ति की ही एक भेद रूप लक्ष्मी तथा रोहिणी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

कलाधारां कलारूपां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्॥५॥

षोडश कलाओं को धारण करनेवाली, कलाओं के रूपवाली, कालचक्र स्वरूपिणी, समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाली, सदैव करुणा की वर्षा करनेवाली, कामिनी देवी की मैं पूजा करता हूँ।

चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥६॥

चण्डधारा, चण्डमायारूपिणी, चण्डमुण्ड का विनाश करनवाली, देवताओं की ईश्वरी चण्डिका देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवी शाङ्करीं प्रणमाम्यऽहम्॥७॥

सुख और आनन्द को देनेवाली, शान्त रूप में स्थित, समस्त देवताओं के द्वारा पूज्य, सभी भूतों में व्याप्त रहनेवाली, शाङ्करी देवी की पूजा करता हूँ।

दुर्गमे दुःस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गे नमाम्यहम्॥८॥

दुर्गम, दुस्तर, दुःख त्रय (आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक) का विनाश करने वाली, दुर्गादेवी की मैं भक्ति पूर्वक पूजन करता हूँ, दुर्गा देवी को नमस्कार है।

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्॥९॥

सोने के रंग की आभा के सदृश सुन्दर, सुखसौभाग्य को देनेवाली, सुभद्र की जननी सुभद्रा देवी को मैं प्रणाम तथा पूजा करता हूँ।

ॐ ह्रीँ हंसः कुलकुमारिकां श्रीपादुकां पूजयामि।

प्रार्थना के बाद तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदानकर महाविद्या का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सन्ध्यायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ त्रिमूर्त्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सुभगायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उमायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुब्जिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालसङ्कर्षिण्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भैरव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्म्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पीठनायिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षेत्रज्ञायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चर्चिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि—मूलमन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदानकर प्रदक्षिणा पूर्वक प्रणाम करे—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुजनसमर्पणम्—

अनेन कुमारीसुवासिनीपूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

कुमारीसुवासिनीपूजनं परिपूर्णम्

●

छागादिबलिदानम्

छागादि (कूष्माण्ड) बलिदानम्—युग्म बलि को सिन्दूरादि से अलंकृत करके अर्घ्योदक जल से तीन बार सम्प्रोक्षण कर स्नान कराये—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालिके काली रक्षिणी स्वाहा।

ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती।
कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागर॥१॥
पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च।
पराय परमेष्ठिने नमः हूँकारमूर्तये॥२॥

वाराही, यमुना, गङ्गा, सरस्वती, कावेरी, चन्द्रभागा, सिन्धु सागर तथा भैरव, हेमकूट स्थित क्रोध मूर्ति परा-परमेष्ठी को पशुपाश-विनाश के लिए मैं नमस्कार करता हूँ।

गन्धोदक से तीन बार प्रोक्षण करके हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर मन्त्रपाठ कर समर्पित करे।

ॐ कूष्माण्ड त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थिता:।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥

बलिरूप से कूष्माण्ड तुम महाभाग्य से उपस्थित हुए हो, कूष्माण्डरूपी बलि को मैं सदा भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥१॥

चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने।
चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नम:॥२॥

समस्त आपत्तियों के विनाश तथा चण्डिका को प्रीति प्रदान करने के लिए, चण्डिका के बलि! तुम्हें नमस्कार है॥२॥

यज्ञार्थे पशव: सृष्टा: स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधो वध:॥३॥

यज्ञ के लिए स्वयम्भू ने पशुओं की निर्मित किया है, अत: यज्ञ में वध योग्य तुम्हारा घात करता हूँ॥३॥

पार्श्वपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जयन्त्यै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मङ्गलायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ काल्यै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ भद्रकाल्यै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ मानस्तोकायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विजयायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अपराजितायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अनन्तायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रुधिरवदनायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चण्डिकायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चन्द्रार्काभ्यां नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ बृहस्पतये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सरस्वत्यै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ उग्रदन्तिकायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महादन्तिकायै नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पृथिव्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ धर्माय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

लौहखड्गपूजनम्—

ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥१॥
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिकम्।
पिबमानं च रुधिरं भुञ्जानं कव्यसंहतिम्॥२॥

अतिशय उग्र तथा उग्र नयन, रक्त माला धारण किये हुए, रक्त का अनुलेपन किये हुए, कृष्ण वर्ण वाले, पिनाक धनुष धारण किये हुए, रक्त वस्त्र धारण किये हुए, हाथ में पान पात्र धारण किये हुए, हे खड्ग! पीने योग्य रुधिर तथा भोज्य कव्य समर्पित है।

ॐ कालिका काली वज्रेश्वेरी लौहदण्डाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। तीन बार बलि का संप्रोक्षण करे।

ॐ ह्रीँ। सिन्दूर से मन्त्र को खड्ग के उपर लिखे तथा बलि के कर्ण में बलि गायत्री सुनाये।

बलिगायत्री—

ॐ ह्रीँ बलिरूपाय विद्महे देविप्रियाय धीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात्।

खड्गप्रार्थना—

ॐ असिर्विनासनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोऽस्तु ते॥१॥

तीक्ष्ण धार, दुरासद, विनाशक, दक्ष, असि, धर्मपाल, श्रीगर्भ तथा विजय को नमस्कार है॥१॥

इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा।
नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः॥२॥

ब्रह्मा ने तुम्हारे इन आठ नामों को स्वयं रचा है, तुम्हारा कृत्तिका नक्षत्र तथा गुरु महेश्वर है॥२॥

रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः।
पितापितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा॥३॥

रोहिणी, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवता सदा हमारी रक्षा करें॥३॥

नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः।
भावशुद्धोऽमर्षणश्च अर्जितास्तथैव च॥४॥

नील-जीमूत के समान, काले दाँतों वाले, कृशोदर, भाव की शुद्धि, तथा अमर्षण के लिए तुम्हें अर्जित किया है॥४॥

इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः।
तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥५॥

इसी से महिषासुर का वध किया गया था, शुद्ध तीक्ष्ण धारवाले खड्ग! तुम्हें नमस्कार है॥५॥

श्रीप्रत्यङ्गिरा के जिह्वा की बुद्धि से एक बार में ही घात करे।

ॐ पशुपाशाय विद्महे विप्रकर्णाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

घात के बाद सम्पूर्ण रुधिर मुण्डादि देवी के आगे बराबर भाग करके दीपक जलाये।

ॐ क्रौं क्रौं नमो नमः।

प्रत्येक मुण्ड में दीप प्रज्वलित करके रुधिरादि से तर्पण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चामुण्डां तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ योगिनीं तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ डाकिनीं तर्पयामि नमः उत्तरे

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ विदारिकां तर्पयामि नमः आग्नेयाम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पूतनां तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकां तर्पयामि नमः ईशाने।

ॐ अद्य दशवर्षावच्छिन्नां श्रीमहाविद्याप्रत्यङ्गिराप्रीतिकामिमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै महाविद्यायै तुभ्यमहं सम्प्रददे। हाथ में जल लेकर समर्पित करे।

भगवती प्रत्यङ्गिरा देवी को कुष्माण्ड बलिदान प्रदान करने के बाद विधिपूर्वक पात्रादि संस्कार करके यजमान सपरिवार नीराजन करे।

नीराजनविधिः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट्। दीपपात्र का सम्प्रोक्षण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः। दीपपात्र का अभ्यर्चन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यँ। द्वादशबार जप कर संशोषण करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ रँ। षोडशबार जप कर संदहन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ लँ। वामहस्ततल को दक्षहस्तपृष्ठ पर रखकर निवेशन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ वँ। षोडशबार जप कर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करे।

घण्टापूजनम्—गन्धाक्षत से घण्टा का पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ जय ध्वनि मातः स्वाहा। घण्टा का पूजन करे।

दीपज्योतिपूजनम्—

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पाति नो भीतिर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते॥

भद्रकालि! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होने वाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमारी रक्षा करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कालिकायै ज्वालामालिन्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे।

जले ज्वाला स्थले ज्वाला ज्वाला पर्वतमस्तके।
त्रैलोक्यव्यापिनी ज्वाला ज्वाला देवि नमोऽस्तु ते॥

जल में, स्थल में, पर्वत के ऊपर, तीनों लोकों में व्याप्त ज्वाला (ज्योति) स्वरूपिणी महाकालिका ज्वाला देवी को नमस्कार है।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ महाविद्याकालिकायै ह्रीँ रत्नेश्वर्यै ज्वालायै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गयै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजनकर एक बार नाभि प्रदेश तक, दो बार स्तन मण्डल तक, चार बार मुखमण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक कुल चौदह बार आरती घुमाये।

नीराजनम् (आरती)—**ॐ आरांत्रिपार्थिवंवृद्धरजंः पितुरप्रायिधामभिः॥ दिवः-सदांॐसिबृहतीवितिष्ठसऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदॐहविःप्रजननंमेऽअस्तु-दशवीरॐसर्वगणॐस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्रजांबहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥**

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥

कर्पूर के समान गौर, करुणा के अवतार, भवानी के सहित शिव हमारे हृदय में वास करें, उनको नमस्कार है॥१॥

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्।
आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि॥२॥

कर्पूर से युक्त वत्ती को जलाकर दिव्य आरती करता हूँ, हे जगदीश्वर! इसे ग्रहण करें॥२॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥३॥

केले के वृक्ष से उत्पन्न कर्पूर से आरती करता हूँ, हे महादेवि! कृपापूर्वक दृष्टि से देख कर वर प्रदान कर्त्ता बने॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

मूल मन्त्र से पूजन कर एक बार नाभिप्रदेश तक, दो बार स्तनमण्डल तक, चार बार मुखमण्डल तक पुनः सात बार पूरे शरीर तक आरती घूमाये।

जलेन शीतलीकरणम्—शङ्खपात्र में जल लेकर देवता के चारों तरफ घुमाये—

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वपापं व्यपोहतु॥

पात्र के मध्य में जल रखकर देवता के ऊपर भ्रामित करके मनुष्यों के अङ्ग लगने पर सभी पापों से मुक्त कर देता है।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनों हाथ धोकर दोनों हाथों में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि बोलकर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिविधिः—दोनों हाथ में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

ॐ य॒ज्ञेन॑य॒ज्ञम॑यजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्मा॑णिप्प्रथ॒मान्न्या॑सन्॥ तेह॒नाकं॑म्महि॒मानः॑ सचन्त॒यत्र॒पूर्वे॒साद्ध्याः॒सन्ति॒दे॒वाः॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महे समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदपरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वरी॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरायै नमः साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि।

तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर योनि मुद्रा प्रदर्शित करके छत्रचामर डुला कर पुनः पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

बुद्धिः शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता॥१॥
ध्वनयो गीतिरूपेण शब्दवाद्यप्रभेदतः।
छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो॥२॥

सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्यावाशरात्मना।
अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना॥३॥
इन्द्रियाण्यश्च रूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना।
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः॥४॥
सर्वमन्य तवाक्लृप्तं तवोपकरणात्मना॥

प्रार्थना—

नमोऽस्तु ते सरस्वति त्रिशूल-चक्र-धारिणि,
सिताम्बरावृते शुभे मृगेन्द्रपीठसंस्थिते।
सुवर्णबन्धुराधरे सुझल्लरीशिरोरुहे,
सुवर्णपद्मभूषिते नमोऽस्तु ते महेश्वरि॥

कुमारीसुवासिनीपूजनं परिपूर्णम्

हवनाङ्गबलिदानम्

दिग्पालों, समस्त ग्रहमण्डलस्थ देवताओं को दधि(दही), मास(उर्द) तथा भक्त (चावल को उबाल कर) मिश्रित कर उसपर दीपक जला कर बलिदान प्रदान करे।

एकतन्त्रेण दिग्पालादिबलिदानम्—एकबार में ही सबका बलिदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दिग्पालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ दिविपृष्टोऽअरोचताग्निर्वैश्वानरोबृहन्॥ क्ष्मयांवृधानऽओजसाचनोहितो-ज्ज्योतिषाबाधतेनमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिग्पालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दिग्पालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिन् समर्पयामि।

भो दिग्पालाः! ऐषु सदीपदधिमाषभक्तबलिषु गृह्णन्तु स्वां स्वां दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन दिग्पालाः प्रीयन्तां न मम।

इन्द्राय बलिदानम्—इन्द्र के लिए बलिदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----**

गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इन्द्रदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तवलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

अग्नये बलिदाम्—अग्नि के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अग्निदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्नि! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयतां न मम।

यमाय बलिदानम्—यम के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन यमः प्रीयतां न मम।

निर्ऋतये बलिदाम्—निर्ऋति के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च निर्ऋतिदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋति! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयतां न मम।

वरुणाय बलिदानम्—वरुण के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरुणदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

भो वरुण! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहिय्यज्ञम्॥ वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायु! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष वलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

सोमाय बलिदानम्—सोम के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सोमदेवताप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयतां न मम।

ईशानाय बलिदानम्—ईशान के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ईश्वरप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ तमीशा॑नुञ्जग॑तस्तुस्थुष॒स्पतिं॑धियञ्जि॒न्वमव॑सेहूमहेव्व॒यम्॥ पूषानो॒यथा॒व्वेद॑सा॒म स॑द्वृधेर॑क्षिताषा॒युरद॑ब्धःस्व॒स्तये॑॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

भो ईशान! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ईश्वरः प्रीयतां न मम।

ब्रह्मणे बलिदानम्—ब्रह्मा के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ब्रह्माप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒स्मेरु॒द्रामे॒हना॒पर्व्व॑तासोव्वृत्र॒हत्ये॒भर॑हूतौस॒जोषाः॑॥ यःशंस॑तेस्तुव॒तेधायि॑प॒ज्ज्र ऽइन्द्र॑ज्ज्येष्ठाऽअ॒स्माँ२॥ऽअ॒वन्तुदे॒वाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मा! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयतां न मम।

अनन्ताय बलिदानम्—अनन्त के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं**

तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अनन्तप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

भो अनन्त! इमं बलिं गृहाण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

नवग्रहाणां बलिदानम्

एकतन्त्रेण ग्रहादिबलिदानम्—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ----- गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च ग्रहाणां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयोव्यन्तोविप्प्रायमतिम्॥ तेषांविशिप्प्रियाणांवोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधि-देवता सहितेभ्यः इमां सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहेभ्यः! ऐषु बलीन् गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय ग्रहाः प्रीयन्तां न मम।

सूर्याय बलिदानम्—सूर्य के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च सूर्यप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्त्यंच॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवो यातिभुवनानिपश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईश्वराग्निरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्यः प्रीयन्तां न मम।

चन्द्रमसे बलिदानम्—चन्द्रमा के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ- ----गोत्रः- ----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च चन्द्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ इमंदेवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यायेन्द्रयाय॥ इममुष्य्यपुत्रममुष्य्यैपुत्रमस्यैविशऽएपवोऽमीराजासोमोऽस्माकंब्राह्मणानाꣳराजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्राय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

चन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाऽऽपौरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो उमाऽऽपौरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय चन्द्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सोमः प्रीयतां न मम।

भौमाय बलिदानम्—भौम के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ----- गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च भौमप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।**

ॐ अ॒ग्निर्मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्पति॑: पृथि॒व्या ऽअ॒यम्॥ अ॒पा रेता॑ᳯसि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो स्कन्दभूमिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय भौमः प्रीयतां न मम।

बुधाय बलिदानम्—बुध के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बुधप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒ प्रति॑ जागृहि॒ त्वमि॑ष्टापू॒र्त्ते सᳯ सृ॑जेथाम॒यञ्च॑॥ अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ ऽअध्यु॒त्तर॑स्मि॒न्विश्वे॑ देवा॒ यज॑मानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो नारायणविष्णुरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बुधः प्रीयतां न मम।

बृहस्पतये बलिदानम्—बृहस्पति के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च बृहस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ बृहस्पतेऽअतिदुर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु॥ यद्दिदयच्छवसऽऋत प्प्रजाततदुस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम्।

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पतये देयबलये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पति! इमं वलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय बृहस्पति: प्रीयतां न मम।

शुक्राय बलिदानम्—शुक्र के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्र:-----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शुक्रप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्त्रंपयꣳसोमंप्प्रजापतिः॥ ऋतेनसत्त्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्क्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु॥

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्राय देयबलये नम: सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्रेन्द्राणिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शुक्र: प्रीयतां न मम।

शनैश्चराय बलिदानम्—शनि के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्र:-----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च शनिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चराय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम प्रजापतिरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय शनैश्चरः प्रीयतां न मम।

राहवे बलिदानम्—राहु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च राहुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाऽवृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो कालसर्परूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय राहुः प्रीयतां न मम।

केतवे बलिदानम्—केतु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च केतुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे॥ समुषद्भिरजायथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मचित्रगुप्तरूपाधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय केतुः प्रीयतां न मम।

केतु के बलिदान के बाद पञ्चलोकपालों के लिए पूर्व के ही समान विधिपूर्वक बलिदान प्रदान करे।

पञ्चलोकपालादिबलिदानम्

एकतन्त्रेण पञ्चलोकपालानां बलिदानम्—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पञ्चलोकपालानां प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्द्रिकाङ्का म्पीलवासिनीम्॥ ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥ ॐ घृतंघृतपावानः पिबतव्वसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशःप्प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥ ॐ यावाङ्कशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञं मिमिक्षताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिपञ्चलोकपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशादिपञ्चलोकपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गणेशादिपञ्चलोकपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो पञ्चलोकपालाः! इमं बलिं गृह्णन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः

क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवन्तु।

अनेन बलिदानेन गणेशादिपञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम।

गणेशाय बलिदानम्—गणेश के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च गणेशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ गुणानान्त्वागुणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

गणेशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो गणेश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन गणेशः प्रीयतां न मम।

दुर्गायै बलिदानम्—दुर्गा के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च दुर्गाप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकश्सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो दुर्गे! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा भव।

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयतां न मम।

वायवे बलिदानम्—वायु के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----

गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वायुप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ व्वायोयेतेंसहस्रिणोरर्थासस्तेभिरागहि॥ नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि।

भो वायु! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयतां न मम।

आकाशाय बलिदानम्—आकाश के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आकाशप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ घृतंघृतपावानःपिबतव्वसांव्वसापावानःपिबन्तान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा॥ दिशः प्प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयतां न मम।

अश्विनीकुमारौ बलिदानम्—अश्विनीकुमारों के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च अश्विनौ प्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ यावांकशामधुमत्याश्श्विनासूनृतावती॥ तयायज्ञंमिमिक्षताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अश्विनीभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अश्विनीकुमारौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ तुष्टिकर्तारौ वरदो भवतम्।

अनेन बलिदानेन अश्विनीकुमारौ प्रीयतां न मम।

वास्तोस्पतये बलिदानम्—वास्तुदेवता के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वास्तोस्पतिप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोस्पतये देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

वास्तोस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वास्तोस्पति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वास्तोस्पते प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपालाय बलिदानम्—एक पत्तल पर दधिमाषभक्त रखकर उसपर दीपक जला कर क्षेत्रपाल के लिए बलिदान प्रदान करे—

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च क्षेत्रपालप्रीतये दधिमाषभक्तबलिदानकर्म करिष्ये।

ॐ नुहिस्प्पशुमविंदन्नन्न्यमुस्म्माद्वैश्श्वानुरात्पुरऽएतारंमुग्नेः॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमंर्त्त्यंवैश्श्वनुरंक्षैत्रंजित्त्यायदेवाः॥

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां-बलिं-गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥१॥

भूतप्रेत गणों के साथ क्षेत्रपाल आपको नमस्कार है, इस पूजा तथा बलि को ग्रहण करके सदा के लिए सौम्य तथा प्रसन्न हो जायें॥१॥

पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥२॥

हमारे समस्त कामनाओं की पूर्ति करके हमें पुत्र, धन, आरोग्यता प्रदान करें तथा सदा सर्वदा निर्विघ्न करें॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय देयबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गण-सहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो क्षेत्रपाल! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे—

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्यावसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः ॥१॥

आदित्य, अष्टवसु, मरुतादि गण,अश्विनी कुमार, रुद्र, सुवर्ण, पन्नग, खग सभी इस बलि को ग्रहण करें॥१॥

असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेतालाः योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥२॥

असुर, यातुधान, पिशाच, राक्षसादि, शाकिनी, यक्ष, वेताल, योगिनी, पूतनादि, शिवायें इस बलि को ग्रहण करें॥२॥

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥३॥

जृम्भक, सिद्ध, गन्धर्वादि, सौम्य, विद्याधर, दिग्पाल, लोकपाल तथा जो हमारे जीवन में विघ्न करने वाले हैं, सभी इस प्रदत्त बलि को ग्रहण करें॥३॥

जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥४॥

शान्ति प्रदान करने वाले ब्रह्मा तथा ऋषि-महर्षि हमारे जीवन में विघ्न न करें, हमारे पापों का शमन करें, हमें पापमार्ग में न जाने दें॥४॥

सौम्याः भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
बलिं गृह्णन्तु ते सत्यं पालयन्ति सदा मम॥५॥

इस बलि को सभी भूतप्रेतादि सौम्य होकर ग्रहण कर नित्य सदा सर्वदा हमारा पालन तथा रक्षा करें।।५।।

भूतानि यानीह वसन्ति भूतले,
बलिं गृहित्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु,
रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।६।।

इस भूतल पर वास करने वाले जो भूतप्रेतादि गण हैं, हमारे द्वारा विधिवत् प्रदत्त पूजा तथा बलि को ग्रहण करके अपना वास स्थान कहीं अन्यत्र बना लें तथा हमारा जीवन निर्विघ्न करें।।६।।

अब्राह्मण नापितादि कोई यजमान के मस्तक पर वामावर्त घुमाकर घर के बाहर चौराहे पर ले जाकर रख दे तथा आचार्यादि यजमान के मस्तक पर अधोलिखित मन्त्र से जल छिड़के।

ॐ हिङ्कारायस्वाहाहिंकृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहाऽवक्रन्दायस्वाहाप्प्रोथतेस्वाहा-प्रप्प्रोथायस्वाहागन्धायस्वाहाघ्रातायनिविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहासन्दितायस्वाहा-वल्गतेस्वाहाऽसीनायस्वाहाशयानायस्वाहास्वपतेस्वाहाजाग्रतेस्वाहाकूजतेस्वाहा-प्प्रबुद्धायस्वाहाविजृम्भमाणायस्वाहाविचृत्तायस्वाहासꣳहानायस्वाहोपस्थिताय-स्वाहाऽयनायस्वाहाप्प्रायणायस्वाहा।।

बलिदानं परिपूर्णम्

पूर्णाहुतिः

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वरदनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।।**

ॐ पूर्णादर्व्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत।। व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳसतक्रतोः।। ॐ पुर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ२।।ऽउदारदुपाꣳशुनासमममृतत्त्वमानट्घृतस्यनामगुह्यं व्यदस्तिजिह्वादेवानामृतस्यनाभिः।। व्वयंनामप्प्रव्वामाघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः।। उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानंचतुःश्रृङ्गोऽवमीद्गौरऽएतत्।। चत्त्वारिश्श्रृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्द्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य।। त्रिधाबद्धोव्वृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्त्याँ२।।ऽआविवेश।। त्रिधाहितंपणिभिर्गुह्यमानंगविदेवासोघृतमन्न्वविन्दन्।। इन्द्रऽएकꣳसूर्य्यऽएकञ्जजानव्वेनादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः।। एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्द्राच्छतव्व्रजारिपुणानावचक्षे।। घृतस्यधाराऽअभिचाकशीमिहिरण्ययोव्वेतसोमध्यऽआसाम्।। सम्म्यक्स्रवन्ति

सुरितानधेनाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः॥ एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयोघृतस्यमृगाऽइवक्षिपणो रीषमाणः॥ सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽ अरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिःपिन्वमानः॥ अभिप्रवन्तसमनेवयोषाः कल्याण्यःस्मयमानासोऽअग्निम्॥ घृतस्यधाराःसमिधोनसन्त ताजुषाणोहर्य्यति जातवेदाः॥ कन्याऽइववहतुमेतवाऽउऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि॥ यत्रसोमः सूयतेयत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते॥ अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्मासुभद्रा द्रविणानिधत्त॥ इमंयज्ञंनयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते॥ धामन्तेविश्वंभुवनमधि श्रितमन्तःसमुद्रेहृद्यन्तरायुषि॥ अपामनीकेसमिथेयऽआभृतस्तमश्याममधुमन्तं तऽऊर्म्मिम्॥ पुनस्त्वाऽऽदित्यारुद्रावसवःसमिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्वंवर्द्धयस्वसत्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्॥ कविꣳ सम्राजमतिथिंजनानामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः॥ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्ण्णापुनरापत॥ वस्नेवविक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳशतक्रतोःस्वाहा॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम॥

पूर्णाहुति करने के बाद वसोद्धारा होम करे।

पूर्णाहुतिहोमः परिपूर्णम्

वसोर्द्धाराहोमः

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः------नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारा होष्यामि॥

कुण्ड के ऊपर वसोर्द्धारा पूर्व दिश की तरफ करके उसके ऊपर घृतपात्र रखकर नीचे यव मात्र छिद्र रखकर अग्नि के ऊपर स्रुक् के मुख में सुवर्णनिर्मित जिह्वा बाँधकर वसोद्धारा छोड़े।

ॐ सप्ततेऽअग्नेसमिधःसप्तजिह्वाःसप्तऽऋषयःसप्तधामप्प्रियाणि॥ सप्तहोत्राः सप्तधात्त्वायजन्तिसप्तयोनीरापृणस्वघृतेनस्वाहा॥ शुक्रज्ज्योतिश्च्चचित्रज्ज्योतिश्च्च सत्यज्ज्योतिश्च्चज्ज्योतिष्माँश्च्च॥ शुक्रश्च्चऋतपाश्च्चात्यꣳहाः॥ ईदृङ्प्रति सदृङ्॥ मितश्च्चसम्मितश्च्चसभराः॥ ऋतश्च्चसत्यश्च्चध्रुवश्च्चवरुणश्च्च॥ धर्त्ताचविधर्त्ताचविधारयः॥ ऋतजिच्चसत्यजिच्चसेनजिच्चसुषेणश्च्च॥ अन्ति मित्रश्च्चदूरेऽअमित्रश्च्चगणः॥ ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊपुणसःदृक्षासःप्रतिसदृक्षासऽ एतन॥ मितासश्च्चसम्मितासोनोऽअद्यसभरसोमरुतोयज्ञेऽअस्मिन्॥ स्वतवाँश्च प्रघासीचसान्तपनश्च्चगृहमेधीच॥ क्रीडीचशाकीचोज्जेषी॥ इन्द्रंदैवीर्विशो

मुरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्न्यथेन्द्रंदैवीर्विशोमुरुतोऽनुवर्त्मानोगऽभवन्॥ एवमिमंयजमानं दैवींश्च्चविशोमानुषीश्च्चानुवर्त्मानोभवन्तु॥ इमछंस्तनमूर्ज्जस्वन्तंधयापांप्रपीनमग्ने सरिरस्यमद्ध्ये॥ उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियछंसदनमाविशस्व॥ घृतंमिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृतेश्श्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षि हव्यम्॥ ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोःपवित्रमसिसहस्रधारम्॥ देवस्त्वासवितापुनातु वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वा॥ ॐ कामधुक्षः स्वाहा॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम॥

अग्निप्रदक्षिणा—हाथ जोड़कर अपने परिवार तथा शुभेक्षुओं के साथ सपत्नी यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे—

ॐ अग्ग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्श्वानिदेववयुननिविद्वान्॥ युयोद्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठांतेनमऽउक्तिंविधेम॥

अग्नि की परिक्रमा करके यजमान अग्नि के पश्चिम दिशा में पूर्वमुख अपने आसन पर बैठे।

श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणे हवनकर्म परिपूर्णम्

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

आचार्य कुण्ड के ईशानकोण से भस्म लेकर पहले आचार्य के सहित समस्त ब्राह्मण फिर यजमान के शरीर में भस्म लेपन करे।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। मन्त्र से ललाट पर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। मन्त्र से ग्रीवा पर भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। मन्त्र से दक्षिणबाहुमूल पर भस्म लगाये।

ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्। मन्त्र से हृदय पर भस्म लगाये।

संस्रवप्राशनम्। प्रोक्षणीपात्र जल का यजमान को प्राशन अथवा घ्राण कराये।

आचमनम्। पश्चात् आचमन कराये।

पवित्राभ्याम् मार्जनम्। प्रणितापात्रस्थित पवित्री से मार्जन करे।

अग्नैपवित्रप्रतिपत्तिः। पवित्री को अग्नि मे प्रक्षेप करे।

हवनीयकुण्डभस्मधारणं परिपूर्णम्

विभिन्नदानादिसङ्कल्पः

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्रह्मा पूर्णपात्र ग्रहण कर बोले—**ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीस्त्वा प्रतिगृह्णातु।**

प्रणीतापात्र के जल से ब्रह्मा यजमान के ऊपर उपयमनकुशा से अभिषेक करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उपयमनकुशा का अग्नि में प्रक्षेप कर, ब्रह्म ग्रन्थि को खोल दें।

यजमानाय श्रेयोदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयो दानं करिष्ये।**

सौमनस्य मस्तु। पुष्प प्रदान करे।

अक्षतं चारिष्टं चास्तु। अक्षत प्रदान करे।

भवन्नियोगेन मया अस्मिन् श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टाजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहवनादिकर्मणः च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।

यजमान बोले—**भवामि।**

श्रेयोदान के बाद आचार्यादि ब्राह्मणों को कर्मदक्षिणा (मुख्य दक्षिणा) तुरन्त अवश्य दे देना चाहिए, विलम्ब करने से प्रायश्चित्त होता है।

आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये॥**

आचार्याय गोदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः------प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं**

----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्रप्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

ब्रह्मणेवृषभदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं वृषभनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्राय प्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

गाणपत्ये अश्वदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं अश्वनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय प्रवराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय गाणपत्ये तुभ्यमहं सम्प्रददे।

उपद्रष्टाय गन्त्रीदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं गन्त्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे उपद्रष्टत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सदस्याणां सुवर्णदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकामुकगोत्रेभ्यः अमुकामुक-प्रवरेभ्यः अमुकामुकशर्मणेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे।

भूयसीदक्षिणदानम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणि न्यूनातिरिक्त-दोषपरिहार्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं निष्क्रयभूतं द्रव्यं नानानाम-गोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥

सङ्कल्प करके ब्रह्मणों तथा अन्य बहनों तथा गरीब लोगों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनम्

सङ्कल्पः—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ-----गोत्रः-----प्रवरः-----नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।

दानादिसङ्कल्पः परिपूर्णः

●

आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनम्

सङ्कल्पः—ॐ तत्सद्यपूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ---गोत्रः---प्रवरः---नामाऽहं कृतस्य श्रीप्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितमहागणपत्यादिदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये॥

सङ्कल्प करके आवाहित देवताओं का यथोपचार उत्तर पूजन करे पश्चात् प्रधान पीठ सहित समस्त पीठों को दक्षिणा के सहित आचार्य को दान करे।

महागणपतिपूजनम्

ॐ गुणानान्त्वागुणपतिꣳहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धिसहिताय महागणाधिपतये नमः ध्यायामि, उत्तर-पूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

महागौरीपूजनम्

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्श्चन॥ ससस्त्यश्श्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।

स्वस्तिकलशस्थदेवतानां पूजनम्

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अपांपतये वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

षोडशमातृकानां पूजनम्

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥२॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादि आत्मनः कुलदेवतान्त आवहितषोडशमातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सप्तघृतमातृकानां पूजनम्

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥१॥
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतुद्भवम्॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसरस्वन्त्यन्तसप्तघृतमातृभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानां पूजनम्

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्याद्यावाहितसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रधानकलशस्थदेवानां पूजनम्

ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ध्यायामि उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

श्रीप्रत्यङ्गिरापूजनम्

ध्यानम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर आसन ध्यान कर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—दोनों हाथ से पाद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—दोनों हाथ से अर्घ्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ कांसोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः अर्घ्यं समर्पसरमि।

आचमनम्—दोनों हाथ से आचमनीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः आचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—दोनों हाथ से स्नानीयपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादुशीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—दोनों हाथ से पञ्चामृतपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—दोनों हाथ से जलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

पुनराचमनीयम्—दोनों हाथ से आचमनीय जल लेकर समर्पित करे—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुनराचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रनिवेदनम्—दोनों हाथ से वस्त्र लेकर समर्पित करे—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—दोनों हाथ से यज्ञोपवीत लेकर समर्पित करे—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः यज्ञोपवीत समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से सुगन्धिद्रव्य लेकर समर्पित करे—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिवोपह्वये श्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिादेव्यै नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—दोनों हाथ से अक्षत लेकर समर्पित करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्पमाला लेकर समर्पित करे—

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम!।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से अबीरबुक्का लेकर समर्पित करे—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः सुगन्ध्युक्त-अबीरकुंकुमादिनानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—दोनों हाथ से सिन्दूर लेकर समर्पित करे—

ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जवाकुसुमसन्निभम्।
पूजितोऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि। ततः नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूपदीपौ प्रज्वाल्य।

धूपसमर्पणम्—दोनों हाथ से धूपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—दोनों हाथ से दीपपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः दीपज्योतिं समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—दोनों हाथ से नैवेद्यपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—दोनों हाथ से करोद्वर्तन लेकर समर्पित करे—

ॐ नानासुगन्धिद्रव्यञ्च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं मातृकां प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ सें ताम्बूल लेकर समर्पित करे—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूङ्गीफलं एलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—दोनों हाथ से फलपात्र लेकर समर्पित करे—

ॐ द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाऽऽम्रंकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्यादि फलानि प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—दोनों हाथ से दक्षिणा लेकर समर्पित करे—

ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—दोनों हाथ से नीराजन लेकर घुमाये—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः निराजनं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वां विन्देयं पुरुषानहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै **सशक्तिकायै** श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—दोनों हाथ से पुष्प लेकर समर्पित करे—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रियः पञ्चदर्थञ्च श्रीकामः सततं जपेत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै **सशक्तिकायै** श्रीप्रत्यङ्गिरादेव्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अनेन पूजनेन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयन्तां न मम।

भैरवपूजनम्—

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुः,
जयतिवटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गाय सपरिवाराय सावरणाय सायुधाय **सशक्तिकाय** वटुकभैरवाय नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

भैरव पूजन करने के बाद ग्रहमण्डलस्थ देवताओं का पूजन करे।

ग्रहमण्डलस्थदेवानामुत्तरपूजनम्

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो॒व्व्यन्तोव्विप्रायम॒तिम्॥ तेषां॒व्विशिप्प्रियाणांव्वोऽहमिष॒मूर्ज्ज॒ᳪ॒ समग्ग्रभमु॒पयामगृहीतो॒ऽसीन्द्रायत्त्वा॒जुष्ट॑गृह्णाम्म्ये॒षते॒योनि॒रिन्द्रायत्त्वा॒जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यनन्तग्रहमण्डलस्थदेवताभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

असंख्यातरुद्राणामुत्तरपूजनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः ध्यायामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

नीराजनम् (आरती)—

ॐ इ॒दᳪ॒हुविः॒प्प्र॒जननंमेऽअस्तु॒दशवीरᳪ॒सर्व्वगणᳬस्व॒स्तये॥ आ॒त्म॒सनिप्प्रजा॒सनि पशु॒सनिलोक॒सन्न्यभय॒सनि॥ अ॒ग्निः॒प्प्र॒जांबहु॒लांमेकरो॒त्वन्नंपयो॒रेतोऽअ॒स्म्मासु॒धत्त॥ ॐ आरा॒त्रिपार्थिवᳪ॒रजः॒पितु॒रप्प्रायि॒धामभिः॥ दिवः॒सदाᳬसिबृह॒तीवि तिष्ठ॒स॒ऽआत्त्वे॒षंव्वर्त्त॒तेतमः॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी॥१॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
मैया टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नयना,
निर्मल से दोऊ नयना, चन्द्रवदन नीको॥२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।
मैया रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला,
लाल पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे॥३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

केहरि वाहन राज़त, खड्ग खप्पर धारी।
मैया खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत,
ऋषि जन मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी॥४॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर,
अगणित सूर्य प्रभाकर, राजत सम ज्योति॥५॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
मैया महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना,
मधुर विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥६॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मैया शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे,
मधु कैटभ संहारे, सुर भयहीन करे॥७॥
ॐ जय अम्बे गौरी।

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
मैया तुम कमला रानी।
आगम निगम बखनी,
वेद पुराण बखनी, तुम शिव पटरानी॥८॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
मैया नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदङ्ग,
बाजत ढोल मृदङ्ग, अरु बाजत डमरू॥९॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
मैया तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता,
सन्तन की सुख करता, सुख सम्पति करता॥१०॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मैया वरद अभय धारी।
मन वाच्छित फल पावत,
मन इच्छित फल पावत, सेवत नर नारी॥११॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
मैया धूप दीप बाती।
श्रीमाल केतु में राजत,
विन्ध्याचल में विराजत, कोटि रतन ज्योति॥१२॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
ये अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावें।
मैया जो कोई नर गावें।
कहत शिवानन्द स्वामी,
भजत हरिहर स्वामी, सुख सम्पति पावे॥१३॥
ॐ जय अम्बे गौरी।
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।
मैया हरि ब्रह्मा शिव जी।

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि॥
कदलीगर्भसम्भूतं, कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि॥

जलेन शीतलीकरणम्—

पात्रमध्ये स्थितं तोयं, भ्रामितं देवतोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां, सर्वं पापं व्यपोहतु॥

पात्र में जल लेकर देवता के उपर चारो तरफ घुमाने के बाद यजमान के ऊपर छिड़कने से सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है।

पुष्पैः देवाभिवन्दनम्, आरार्तिक्यग्रहणम्, हस्तौ प्रच्छालनम्, पुष्पसंग्रहणम्, मन्त्रपुष्पाञ्जलिः। पुष्प से देवताओं का अभिनन्दन करके आरती ग्रहण करने के बाद दोनो हाथ धोकर दोनों हाथों में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि बोल कर भगवती को तथा सभी देवताओं को समर्पित करे।

पुष्पाञ्जलिः—दोनों हाथों में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे—

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणायकुर्महे समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्तिसाम्राज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदपरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वरि!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मण्डपस्थआवाहितदेवतासहितायै साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आवाहितदेवतानांविसर्जनम्

स्तुत्यादि पाठ करने के बाद देवी के सहित समस्त देवताओं को अपने अपने लोक में पधारने के लिए प्रार्थना कर ब्रह्मणों, कुमारियों तथा सुवासिनियों को भोजन कराकर दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर आशिर्वाद ग्रहण करे।

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रप्रवरः नामाऽहं कृतस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरण कर्माङ्गत्वेन आवाहितदेवतानां उत्थापनं विसर्जनं करिष्ये॥**

सानुनय अग्नि तथा आवाहित समस्त देवताओं का यथोपचार पुष्पाक्षतादि से पूजन कर गणेश तथा महागौरी को छोड़कर अन्य समस्त देवताओं तथा अग्नि को स्वस्वलोक गमनार्थ विदा कर बाद समस्त पीठों का आचार्य को दान करके यज्ञकर्म का विसर्जन करे।

ॐ उत्तिष्ठब्ब्रह्मणस्पतेदेवयन्तस्त्वेमहे॥ उपप्प्रयन्तुमरुतःसुदानवऽइन्द्र-प्प्राशूर्ब्भवासचा॥ ॐ यज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वांयोनिंगच्छस्वाहा॥ एषतेयज्ञो-यज्ञपतेसहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तंजुषस्वस्वाहा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥२॥

प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥१॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्युनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥२॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥३॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥४॥

ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणा श्रीमहापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम।

आवाहितदेवतानां विसर्जनं परिपूर्णम्

●

आचार्यायप्रधानपीठादिदानम्

सङ्कल्पः—**पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकनामाऽहं कृतस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च इमानि सोपष्करसहितानि प्रधनपीठादीनि अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकनामाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

ब्राह्मणों के सहित आचार्य परिवार तथा सपत्नी यजमान का रुद्रकलश तथा प्रधानकलश के जल को एकत्र कर अभिषेक (मार्जन) करें।

यजमान-अभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥६॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः॥७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥९॥

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशे भवत्सरित्॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थोवरुणस्यऽऋतसदन्न्य सिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैवाचोयन्तुर्यन्त्रियैदधामिबृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्याम्॥ सरस्वत्यैवाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्॥ अश्विनोभैषज्येनतेजसेब्रह्म वर्चसायाभिषिञ्चामि॥ सरस्वत्यैभैषज्येनवीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रंतन्नऽ

आसुर्व॥ धामुच्छदुग्निरिन्द्रोब्ब्रह्मादेवोबृहुस्प्पतिः॥ सचेतसोविश्वेदेवाय्ज्ञम्प्रावन्नतनः शुभे॥ त्वंश्वाविष्टुदाशुषोनृःपाहिश्रृणुधीगिरः॥ रक्षातोकमुतत्म्मना॥ ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमी वस्यशुष्मिणः॥ प्रप्रदातारंतारिषुऊर्जनोधेहिद्विपदेचतुष्पदे॥ ॐ द्यौःशान्तिरुन्तरिक्षःशान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः॥ वनुस्प्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वःशान्तिःशान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्करु॥ शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नः प्पशुब्भ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

अभिषेक करने के बाद यजमान ब्राह्मणों को अतिरिक्त दक्षिणा प्रदान करे।

छायापात्रदानम्

कांस्य पात्र में घृत भर कर उसमें द्रव्य डाल कर मुख अवलोकन कर संकल्प करे।

सङ्कल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ----गोत्र: -----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये॥

ॐ रूपेणवोरूपमब्भ्यागांतुथोवोविश्ववेदाविभजतु॥ ऋतस्यपथाप्प्रेतचन्द्र दक्षिणाविस्वःपश्श्यव्युन्तरिक्षंयतस्वसदुस्यैः॥

सङ्कल्प:—पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ----गोत्र: -----प्रवर:-----नामाऽहं कृतस्य प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणकर्मण: साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं इदमवलोकितं कांस्यपात्रस्थितं सदक्षिणाकमाज्यं मृत्युञ्जय-दैवतं मृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थञ्च अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

संकल्प करके यजमान ब्राह्मण को आज्यपात्र दे दे, ब्राह्मण आज्य पात्र ग्रहण कर स्वस्ति वाढय बोलकर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करे।

छायापात्रदानं परिपूर्णम्

●

अपराधक्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥१॥

हे परमेश्वर! मैं आवाहन तथा विसर्जन नहीं जानता, पूजा भी नही जानता हूँ, अत: हमें क्षमा करें॥१॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥२॥

हे देवताओं के ईश्वर! मैने मन्त्र, क्रिया तथा भक्ति से हीन जो भी पूजन किया है, वह हमारी पूजा अपकी कृपा से पूर्ण हो जाये॥२॥

जपच्छिद्रं तपःच्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिन्द्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः॥३॥

हे परमेश्वर! हमारे द्वारा किये गये जप, तप तथा शान्ति कर्म के जो कोई दोष हों सभी दोष ब्राह्मणों की कृपा से समाप्त हो जाये और हमारा कार्य पूर्ण हो जाये॥३॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥४॥

हे परमेश्वर! मैने अहर्निश दिनरात सहस्रों अपराध किये हैं, आप अपना दास समझ करके हमें क्षमा कर दें॥४॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥५॥

हे परमेश्वर! ज्ञान में अज्ञान में जो कुछ भी हमने आपके प्रति कम तथा अधिक कार्य किया हो, उस सभी को क्षमा करके हमारे ऊपर प्रसन्न हो जायें॥५॥

कर्मणा मनसा वाचा प्रत्यङ्गिरा मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरी॥६॥

कर्म से, मन से, वचन से हमने प्रत्यङ्गिरापुरश्चरण किया उससे सन्तुष्ट होकर हमारे ऊपर प्रसन्न हो जाओ॥६॥

यजमानरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान को दाहिने हाथ में रक्षा बाधें—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यꣳशतानीकायसुमनस्यमानाः॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्—आचार्य यजमान पत्नी को रक्षा बाधें—

ॐ तंपत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्त्रैर्भ्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः॥ नाकंगृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोकेतृतीयेपृष्ठेऽअधिरोचनेदिवः॥

यजमानतिलक—आचार्य सपरिवार यजमान को तिलक करे—

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्श्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्दधातु॥

यजमान-आशीर्वादः—आचार्य यजमान को आशीर्वाद स्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्यारुद्द्रावसंवः समिन्धतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः॥ घृतेनत्वंतन्वंं वर्द्धयस्वसत्त्याःसन्तुयजमानस्यकामाः॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥१॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः॥२॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥४॥

यजमानपत्नी आशीर्वाद—आचार्य यजमानपत्नी को आशीर्वादस्वरूप फलादि प्रदान करे—

ॐ अनाधृष्टपुरस्तादग्ग्रेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवतीदक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्त्ये प्प्रजांमेदाः सुषदापश्चाद्देवस्यसवितुराधिपत्त्येचक्षुर्म्मेदाऽआश्श्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्त्ये रायस्पोषंमेदाः॥विधृतिरुपरिष्ट्ाद्बृहस्पतेराधिपत्त्यऽओजोमेदाविश्श्वाब्भ्योमानाष्ट्राब्भ्यस्पाहि मनोरश्श्वासि॥

श्रीप्रत्यङ्गिरापुनश्चर्या: वैदिकविधि: परिपूर्ण:

●

प्रत्यङ्गिरा एक अनुभव—भगवती प्रत्यङ्गिरा की इस वैदिक विधि का अनेकों बार प्रयोग करके सङ्कल्पित कार्य की पूर्ति का फल पाया गया है तथा कई बार हमारे शिष्यों ने भी अपने यजमानों के लिए प्रयोग करके विभिन्न प्रकार की सफलता प्राप्त कर लोगों को सन्तुष्ट किया है। यह प्रयोग नितान्त सरल और सहज है। इसको सम्पादित कराना भी अत्यन्त सरल है और सफलता भी निश्चित रूप से प्राप्त होते देखी गयी है। आशा है कर्मकाण्डी विद्वान् इस विधि का आश्रय लेकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। इस प्रयोग में केवल सात्त्विक मानस का होना ही आवश्यक है। सद् उद्देश्यों की पूर्ति सात्त्विक विधि से करना ही श्रेयस्कर होता है।

॥ श्रीः॥

कौशिकीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः

नित्य क्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः— ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मानामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल अशुभदृष्टि समस्त दुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वक त्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानां कृतयन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहे वास्त्वादिदोषानां सद्यः समाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वक सकलाभिष्टसिद्ध्यर्थं श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं कौशिकीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगपुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

वैदिकविधि से स्थापन पूजन करने के बाद न्यासादि करने के बाद जप करे।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिराशताक्षरामन्त्रस्य भैरव ऋषिः अनुष्टुप्-

छन्दः कौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवता हूँ बीजं ह्रीँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीकौशिकी-प्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थे न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भैरवऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हूँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कौशिकीप्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे मम शत्रून् स्फारय स्फारय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा सर्वाङ्गे।

मातृकान्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षंकीलकं, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता-प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

प्रणायामः—अधोलिखित विधि से प्राणायाम करे—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हुम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

अन्तर्मातृकान्यासः

ध्यानम्—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोःयन्मध्यवक्षस्थलं,
भस्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ।

मुद्राभक्षणगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्तम्बुजेः ,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥

मानसोपचारपूजनविधिः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ वायवात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

चक्रन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धुम्राभे षोडशदलपद्मे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदल पद्मे प्रवालसन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूत सन्निभे दशदलपद्मे नाभ्योरुपरि मणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युसन्निभेषडदलपद्मे स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ शँ षँ सँ ळँ नमः सुवर्णाभेचतुर्दलपद्मे मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ क्षँ नमः द्विदलपद्मे चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रारेहिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते अकखादित्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते ॐ परबिन्दूभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक बिन्दुचिदात्मक ध्यान करके उससे टपकते हुए अमृत के द्वारा सभी मातृकाओं का तर्पण(सिंचन) करना चाहिये, फिर ध्यान करे।

ध्यानम्—

आधारे लिङ्गनाभे प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदले दशारे षडचतुष्के।
वासन्ते बलमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणां,
हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्वविधि से मानसोपचार पूजन करे।

चक्रतत्त्वन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ लँ पृथ्वीतत्त्वाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ वँ जलत्त्वाय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ रँ अग्नितत्त्वाय नमः मणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ यँ वायुतत्त्वाय नमः अनाहते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ हँ आकाशतत्त्वाय नमः विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ हँ ळँ क्षँ मनोबुद्धितत्त्वाय नमः आज्ञाचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ चिदाहङ्कारात्मने नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

बहिर्मातृकान्यासः

विनियोग—ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये श्रीमत्प्रत्यङ्गिरादेवता प्रीतये विनियोगः।

प्राणायाम—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करने के बाद ऋष्यादि न्यास करे—

ऋष्यादिन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हूम्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऋँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ॠँ नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ एँ नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ओँ नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ क्षँ प्राणात्मनेज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

मातृकान्यास करने के बाद मन्त्रपदों का न्यास करे।

मन्त्रपदन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ अँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ आँ ऐं नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ इँ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ईँ श्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ उँ स्फ्रैं नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ऊँ स्फ्रैं नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ऋँ हुं नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हू ॠँ प्रत्यङ्गिरे नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ लृँ विकटदंष्ट्रे नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ॡँ ह्रीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ एँ ह्रीँ नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ऐँ कालिके नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ओँ कालि नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ औँ स्फ्रैं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ अँ स्फ्रैं नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ अः कारिणी नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ कँ मम नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ खँ समस्त नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ गँ शत्रून् नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ घँ छेदय नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ङँ छेदय नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ चँ खादय नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ छँ खादय नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ जँ सर्वान् नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ झँ दुष्टान् नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैं हूँ टँ मारय नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ठँ खड्गेन नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ छिन्धि नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ढँ छिन्धि नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णँ किलि नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तँ किलि नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ थँ चिकि नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दँ चिकि नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धँ पिब नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नँ पिब नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पँ रुधिरं नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फँ स्फ्रैँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ स्फ्रैँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भँ किरि नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मँ किरि नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ कालि त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ कालि असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ महाकालि मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ महाकालि मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शँ ह्रीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ षँ ऐँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ हुँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ हुँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ळँ फट् परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ क्षँ स्वाहा प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

मातृकापुटितपदन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ ॐ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ आँ ऐँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ इँ ह्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ईँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ उँ स्फ्रैँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऊँ स्फ्रैँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऋँ हुं ऋँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हू ॠँ प्रत्यङ्गिरे ॠँ नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लृँ विकटदंष्ट्रे लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लॄँ ह्रीँ लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ एँ ह्रीँ एँ नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ कालिके ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ओँ कालि ओँ नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ औँ स्फ्रैँ औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ स्फ्रैँ अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अः कारिणी अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कँ मम कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खँ समस्त खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ गँ शत्रून् गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ घँ छेदय घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ङँ छेदय ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चँ खादय चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छँ खादय छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ जँ सर्वान् जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ झँ दुष्टान् झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ञँ मारय ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ टँ मारय नमः दक्षोरु न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ठँ खड्गेन ठँ नमः दक्षिण जानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ छिन्धि डँ नमः दक्षिण गुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ढँ छिन्धि ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णँ किलि णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तँ किलि तँ नमः वामोरु न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ थँ चिकि थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दँ चिकि दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धँ पिब धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नँ पिब नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पँ रुधिरं पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फँ स्फ्रैँ फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ स्फ्रैँ बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भँ किरि भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मँ किरि मँ नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ कालि यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ कालि रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ महाकालि लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ महाकालि वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शँ ह्रीँ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ षँ ऐँ षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ हुं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ हुं हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ळँ फट् ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ क्षँ स्वाहा क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

पदपुटितमातृकान्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ॐ अँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ आँ ऐँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ इँ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ श्रीँ ईँ श्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ उँ स्फ्रैँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ ऊँ स्फ्रैँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हुं ऋँ हुं नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ प्रत्यङ्गिरे ॠँ प्रत्यङ्गिरे नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ विकटदंष्ट्रे ऌँ विकटदंष्ट्रे नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ ॡँ ह्रीँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रौँ एँ ह्रौँ नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कालिके ऐँ कालिके नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कालि ओँ कालि नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ औँ स्फ्रैँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ अँ स्फ्रैँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कारिणी अः कारिणी नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मम कँ मम नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ समस्त खँ समस्त नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शत्रून् गँ शत्रून् नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छेदय घँ छेदय नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छेदय ङँ छेदय नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खादय चँ खादय नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खादय छँ खादय नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सर्वान् जँ सर्वान् नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दुष्टान् झँ दुष्टान् नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मारय ञँ मारय नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मारय टँ मारय नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खड्गेन ठँ खड्गेन नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छिन्धि डँ छिन्धि नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छिन्धि ढँ छिन्धि नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ किलि णँ किलि नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ किलि तँ किलि नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चिकि थँ चिकि नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चिकि दँ चिकि नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पिब धँ पिब नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पिब नँ पिब नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रुधिरं पँ रुधिरं नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ फँ स्फ्रैँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ बँ स्फ्रैँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ किरि भँ किरि नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ किरि मँ किरि नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ कालि यँ कालि त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ कालि रँ कालि असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ महाकालि लँ महाकालि मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ महाकालि वँ महाकालि मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ह्रीँ शँ ह्रीँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ऐँ षँ ऐँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ हुँ सँ हुँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ हुँ हँ हुँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ फट् ळँ फट् परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ स्वाहा क्षँ स्वाहा प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

मन्त्रवर्णन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ऐँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ श्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ स्फ्रँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ स्फ्रँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ हुँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ प्र नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ त्य नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ङ्गि नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ रे नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ वि नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ट नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ दं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रँ हूँ ष्ट्रे नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ह्रीँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ के नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णी नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्त नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ श नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ त्रू नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न् नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छे नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छे नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खा त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खा मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ र्वा आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न्दु परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ष्टा प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न्मा ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ र परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य आत्मने नमः हृदयादि वामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मा शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ र मज्जात्मने नमः हृदयादि वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ख मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ड्गे मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न असृगात्मने नमः दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छि त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न्धि नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छि नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न्धि नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चि नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चि नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पि नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ब नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पि नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ब नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रु नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धि नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ र नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हुं नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हुं नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्री स्फ्रैँ हूँ ट् नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्वा नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा नमः शिरसि न्यस्यामि।

मन्त्रवर्णन्यास के बाद मातृकापुटित मन्त्रवर्ण न्यास करे।

मातृकापुटितमन्त्रवर्णन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ ॐ अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ आँ ऐँ आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ इँ ह्रीँ इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ईँ श्रीँ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ उँ स्फ्रैँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऊँ स्फ्रैँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऋँ हुं ऋँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ॠँ प्र ॠँ नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऌँ त्य ऌँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ॡँ ङ्गि ॡँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ एँ रे एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ वि ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ओँ ट ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ औँ दं औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ ष्ट्रे अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अः ह्रीँ अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कँ ह्रीँ कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खँ का खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ गँ लि गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ घँ के घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ङँ का ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चँ लि चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छँ स्फ्रैँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ जँ स्फ्रैँ जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ झँ का झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ञँ रि ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ टँ णी टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ठँ म ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ म डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ढँ स ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णँ म णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तँ स्त तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ थँ श थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दँ त्रू दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धँ न् धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नँ छे नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पँ द पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फँ य फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ छे बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भँ द भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मँ य मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ खा यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ द रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ य लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ खा वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शँ द शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ षँ य षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ स सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ र्वा हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ळँ न्दु ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ क्षँ ष्टा क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ क्षँ न्मा क्षँ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ळँ र ळँ परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ य हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ मा सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ षँ र षँ मज्जात्मने नमः हृदयादि वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ शँ य शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ ख वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ ड्गे लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ न रँ असृगात्मने नमः दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ छि यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ मँ न्धि मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ भँ छि भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ बँ न्धि बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फँ कि फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ पँ लि पँ नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ नँ कि नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ धँ लि धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ दँ चि दँ नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ थँ कि थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ तँ चि तँ नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णँ कि णँ नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ढँ पि ढँ नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ डँ ब डँ नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ठँ पि ठँ नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ टँ ब टँ नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ञँ रु ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ झँ धि झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ जँ र जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छँ स्फ्रैँ छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ चँ स्फ्रैँ चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ङँ कि ङँ नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ घँ रि घँ नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ गँ कि गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खँ रि खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कँ का कँ नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अः लि अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ अँ का अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ औँ लि औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ओँ म ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ हा ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ एँ का एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ लॄँ लि लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ लृँ म लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ॠँ हा ॠँ नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऋँ ऐँ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऊँ हुँ ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ उँ हुँ उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ईँ फ ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ इँ ट् इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ आँ स्वा आँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ अँ हा अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

मन्त्रवर्णपुटितमातृकान्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ॐ अँ ॐ नमः शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ऐँ आँ ऐँ नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ह्रीँ इँ ह्रीँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ श्रीँ ईँ श्रीँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ स्फ्रेँ उँ स्फ्रेँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ स्फ्रेँ ऊँ स्फ्रेँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ हुँ ऋँ हुँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ प्र ॠँ प्र नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ त्य लृँ त्य नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ङ्गि लॄँ ङ्गि नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ रे एँ रे नमः उर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ वि ऐँ वि नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ट ओँ ट नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ दं औँ दं नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ष्ट्रे अँ ष्ट्रे नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ह्रीँ अः ह्रीँ नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ह्रीँ कँ ह्रीँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ का खँ का नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि गँ लि नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ के घँ के नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का ङँ का नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि चँ लि नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ छँ स्फ्रैँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ जँ स्फ्रैँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का झँ का नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि ञँ रि नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ णी टँ णी नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म ठँ म नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म डँ म नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स ढँ स नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म णँ म नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्त तँ स्त नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ श थँ श नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ त्रू दँ त्रू नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ न् धँ न् नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छे नँ छे नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द पँ द नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य फँ य नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ छे बँ छे नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द भँ द नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य मँ य नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खा यँ खा त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द रँ द असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य लँ य मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ खा वँ खा मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ द शँ द अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ य षँ य मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स सँ स शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ र्वा हँ र्वा आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ न्दु ळँ न्दु परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ष्टा क्षँ ष्टा प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ न्मा क्षँ न्मा ज्ञानशक्त्यात्मने नमः कट्यादिमस्तकान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ र ळँ र परमात्मने नमः कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ य हँ य आत्मने नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ मा सँ मा शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ र षँ र मज्जात्मने नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ य शँ य अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ख वँ ख मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ड्गे लँ ड्गे मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ न रँ न असृगात्मने नमः दक्षांशे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ छि यँ छि त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ न्धि मँ न्धि नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ छि भँ छि नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ न्धि बँ न्धि नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ कि फँ कि नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ लि पँ लि नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ कि नँ कि नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ लि धँ लि नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ चि दँ चि नमः वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ कि थँ कि नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ चि तँ चि नमः वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ कि णँ कि नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ पि ढँ पि नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ व डँ ब नमः दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ पि ठँ पि नमः दक्षजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ ब टँ ब नमः दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ रु ञँ रु नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ हूँ धि झँ धि नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ र जँ र नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ छँ स्फ्रैँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्फ्रैँ चँ स्फ्रैँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि ङँ कि नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि घँ रि नमः दक्षकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ कि गँ कि नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रि खँ रि नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का कँ का नमः दक्षिणबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि अः लि नमः कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का अँ का नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि औँ लि नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म ओँ म नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा ऐँ हा नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ का एँ का नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लि ॡँ लि नमः वामकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ म ऌँ म नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा ॠँ हा नमः वामनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ऐँ ऋँ ऐँ नमः दक्षिणनासापुटे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हुं ऊँ हुं नमः वामकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हुं उँ हुं नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ फ ईँ फ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ ट् इँ ट् नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ स्वा आँ स्वा नमः मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हा अँ हा नमः शिरसि न्यस्यामि।

जपविधिः

मूलमन्त्रप्राणायाम—मूलमन्त्र से पूरक-कुम्भक-रेचन पूर्वक प्राणायाम करे—

मन्त्रकुल्लुका—

ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतु—

ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतु—

क्रीँ । बीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाण—

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ हुँ प्रत्यङ्गिरे विकटदंष्ट्रे ह्रीँ ह्रीँ कालिके कालि स्फ्रैँ स्फ्रैँ कारिणी मम समस्तशत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि ऐँ हुँ हुँ फट् स्वाहा अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधन—

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐक्रीँ क्रीँ क्रीँ । दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोग—

ह्रीँ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ हुँ प्रत्यङ्गिरे विकटदंष्ट्रे ह्रीँ ह्रीँ कालिके कालि स्फ्रैँ स्फ्रैँ कारिणी मम समस्त शत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि ऐँ हुँ हुँ फट् स्वाहा ह्रीँ। श्वासप्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपन—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ हुँ प्रत्यङ्गिरे विकटदंष्ट्रे ह्रीँ ह्रीँ कालिके कालि स्फ्रैँ स्फ्रैँ कारिणी मम समस्त शत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि ऐँ हुँ हुँ फट् स्वाहा ॐ। मन्त्र को ॐ से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मालाप्रार्थना—

ॐ मां माले माहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ निर्विघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ मध्यमा अङ्गुलि के मध्य पर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित करके, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृदपद्म में प्रत्यङ्गिरा देवता का तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत् भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृत पान करते हुए न्यूनतम दससहस्र अथवा विहित संख्या जप करे।

ध्यानम्—

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्विभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशासितभीमदंष्ट्रा भूयात् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

ध्यान करने के बाद मानसोपचार पूजन करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ यँ वायवात्मकं धूपं सम्र्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ हूँ सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

मूलमन्त्रः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ हुँ प्रत्यङ्गिरे विकटदंष्ट्रे ह्रीँ ह्रीँ कालिके कालि स्फ्रैँ स्फ्रैँ कारिणी मम समस्तशत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि ऐँ हुँ हुँ फट् स्वाहा॥

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थनापूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यं च सर्वदा॥

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक-रेचन-पूर्वक प्राणायामादि उत्तर न्यास करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी के वर्म, पटल, पद्धति, स्तोत्र तथा सहस्रनाम का पाठ करे।

श्रीप्रत्यङ्गिरावर्म

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरावर्मस्य श्रीभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवता सर्वशत्रून् विनाशार्थे सर्वत्रविजयप्राप्त्यर्थे श्रीप्रत्यङ्गिरा-देवता प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

कालिका मे शिरः पातु भद्रकाली हृदितथा।
ग्रीवायां नित्यकाली च भुजयोश्च प्रत्यङ्गिरा॥१॥

श्रीकालिका हमारे शिर की रक्षा करें, भद्रकाली हमारे हृदय की रक्षा करें, नित्यकाली हमारे ग्रीवा की रक्षा करें, दोनों भुजाओं की श्रीप्रत्यङ्गिरा रक्षा करे॥१॥

कण्ठे शिवाग्निकाली च पृष्ठे शिवाग्निनित्यकाली।
शिवाग्निभद्रकाली च सदा पातु कटिद्वयम्॥२॥

हमारे कण्ठ की काली के सहित शिव तथा अग्नि रक्षा करें, हमारे पृष्ठ भाग की नित्यकाली के साथ शिव तथा अग्नि रक्षा करें, सम्पूर्ण कटि भाग को भद्रकाली शिव और अग्नि के सहित रक्षा करें॥२॥

नेत्रयोः पातु मे ब्राह्मी वैष्णवी कर्णयोस्तथा।
माहेश्वरी नासां पातु कपालं कौमारी सदा॥३॥

हमारे दोनों नेत्रों की ब्राह्मी रक्षा करें, हमारे दोनों कानों की वैष्णवी रक्षा करें, हमारें नासिका की माहेश्वरी रक्षा करें, कौमारी हमारे कपाल की सदा रक्षा करें॥३॥

अपराजिता पातु मे रसनां गलघण्टिका।
सुखप्रदा महाविद्या वाराही सर्वदा सदा॥४॥

हमारे रसना तथा गलघण्टिका की अपराजिता रक्षा करें, वाराही महाविद्या हमारे लिए सदा सर्वदा सुख प्रदान करें॥४॥

नारसिंही स्तनद्वन्द्वं कुक्षि मे पातु चण्डिका।
लिङ्गं मे स्तम्भिनी पातु गुदायां मोहिनीस्तथा॥५॥

नारसिंही हमारे दोनों स्तनों की रक्षा करें, चण्डिका हमारे कुक्षि की रक्षा करें, स्तम्भिनी हमारे लिङ्ग की रक्षा करें तथा मोहिनी हमारे गुदा की रक्षा करें॥५॥

क्षोभिणी उरुद्वयञ्च जानौ मे द्राविणी सदा।
जङ्घ्योः जृम्भिणी पातु गुल्फयोः भ्रामिणी सदा॥६॥

हमारे दोनों उरुओं की क्षोभिणी रक्षा करें, द्राविणी हमारे दोनों जानुओं की रक्षा करें, जृम्भिणी हमारे जङ्घाओं की रक्षा करें, हमारे गुल्फों की भ्रामिणी रक्षा करें॥६॥

रौद्री पादमूलं पातु पादोपरि संहारिणी।
स्वाग्रे मे सदा पातु असिताङ्गभैरवस्तथा॥७॥

रौद्री हमारे दोनों पादमूलों की रक्षा करें, पैर के ऊपर संहारिणी हमारी रक्षा करें, हमारे आगे सदा सर्वदा असिताङ्गभैरव रक्षा करें॥७॥

रुरुभैरवो मे पातु दक्षिणपार्श्वे ते सदा।
पृष्टभागे सदा पातु चण्डभैरवरूपिणम्॥८॥

रुरुभैरव हमारे दक्षिण भाग की रक्षा करें, हमारे पीठ की सदैव ही चण्डभैरव रूप धारण करने वाले रक्षा करें॥८॥

क्रोधभैरव मे नित्यं वामभागे सदावतु।
उन्मत्तभैरवश्चात्र ममैशानकोणस्तथा॥९॥

हमारे वाम भाग का क्रोधभैरव रक्षा करें तथा उन्मत्त भैरव हमारे ईशान कोण से रक्षा करें॥९॥

अग्निकोणे सदा पातु कपालभैरवस्तदा।
नैर्ऋत्यकोणे मे पातु देवो भीषणभैरवः॥१०॥

कपालभैरव अग्नि कोण से सदा हमारी रक्षा करें तथा भीषण भैरव देवता हमारे नैर्ऋत्य कोण से सदा रक्षा करें॥१०॥

संहारभैरवो देवो वायवः सर्वदा सदा।
सभायां मे श्रीभैरवी गमने च महाभैरवी॥११॥

संहार भैरव देवता हमारे वायु कोण से सदा रक्षा करें तथा सभा में श्रीभैरवी हमारी रक्षा करें, मार्ग में गमन काल में महाभैरवी हमारी सदैव रक्षा करें॥११॥

विवादे सिंहभैरवी देवी पातु सदा मम।
क्रीडायां भैरवी धूम्रा भ्रमणे भीमभैरवी॥१२॥

वादविवाद काल में सदा हमारी सिंहभैरवी रक्षा करें, क्रीडा के समय हमारी धूम्र भैरवी रक्षा करें तथा भ्रमण के समय भीम नाम वाली भैरवी सदा सर्वदा हमारी रक्षा करें॥१२॥

उन्मत्तकामवेलायां भैरवि पातु मे सदा।
योषितां मे सदा पातु वशीकरणभैरवी॥१३॥

उन्मत्त भैरवी हमारी कामादि क्रीडा के समय सदा रक्षा करें स्त्रियों के बीच में वशीकरण भैरवी सदा हमारी रक्षा करें॥१३॥

मोहनभैरवी पातु मदने मम सर्वदा।
सर्वत्र सर्वदा पातु देवी प्रत्यङ्गिरा सदा॥१४॥

मोहन भैरवी मदनक्रिया के समय सदा हमारी रक्षा करें तथा श्रीप्रत्यङ्गिरा भगवती सदा सर्वदा सर्वत्र सर्वविधि से रक्षा करें॥१४॥

फलश्रुति

अथ ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।
श्रीसाधकमङ्गलं नाम महाविद्यौघविग्रहम्॥१५॥

हे देवि! यह समस्त ओघों को समाप्त करने वाला साधकों का सदैव मङ्गल करने वाला परम अद्भुत दिव्य कवच तुमसे कहा॥१५॥

त्रैलोक्यरक्षणं ब्रह्मन् कवचं मन्मुखोदितम्।
गुरुपूजां विधायाऽथ विधिवत् प्रपठेत्ततः॥१६॥

इस कवच को हमारे मुख से ब्रह्मा धारण करके इस त्रिलोक की रक्षा करते हैं। विधिवत् गुरु की पूजा करके गुरुमुख से विधिवत् सुन करके इसे धारण करना चाहिए।।१६।।

कवचं हि सकृद्वाऽपि यावज्जीवं च वा पुनः।
एतच्छतार्द्धमावृत्या त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।१७।।

इस कवच को धारण करने से तीनों लोकों में साधक की रक्षा होती है। इस कवच का पचास पाठ करने वाला त्रैलोक्य का विजय कर लेता है।।१७।।

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः।
बह्वपत्या जीवतो का भवत्येव न संशयः।।१८।।

इस कवच का पाठ करने वाले को ब्रह्मास्त्र इत्यादि उसके शरीर को स्पर्श भी नहीं कर पाते साधक वहुत पुत्र पौत्रों वाला हो करके जीवन यापन करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।।१८।।

न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्।।१९।।

यह परम अद्भुत दिव्य कवच कभी भी अशिष्य को नहीं देना चाहिए, अभक्त को तो विशेष रूप से नहीं देना चाहिए, केवल भक्ति से युक्त श्रद्धावान् शिष्य को ही देना चाहिये, जो गुरु तथा देवता में श्रद्धा भक्ति तथा प्रेम करता हो, उसे ही देना चाहिये अन्यथा वह मृत्यु को प्राप्त करता है।।१९।।

स्पर्द्धामुद्धय कमला वाग्देवी मन्दिरे सुखे।
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम्।।२०।।

इस कवच का पाठ करने वाले भक्त के घर में स्पर्धा का परित्याग करके लक्ष्मी तथा सरस्वती सुखपूर्वक पौत्र तक यानि तीन पीढ़ी तक दृढ़तापूर्वक रहती हैं।।२०।।

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेद् महाप्रत्यङ्गिराम्।
शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपे तस्य विद्या न सिद्ध्यति।।२१।।

इस कवच के परिज्ञान किये बिना ही जो महाप्रत्यङ्गिरा की उपासना करता है, वह सैकड़ों लाखों बार ही जप कर ले, उसे प्रत्यङ्गिरा विद्या कभी सिद्ध नहीं होती है।।२१।।

साधकमङ्गलनामकौशिकीप्रत्यङ्गिरावर्म परिपूर्णम्

●

श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्

विनियोग:—**ॐ अस्य श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रस्य श्रीभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवता श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

अथ कालीस्तवं वक्ष्ये यथाऽवदन् पूर्वशः।
बीजमुच्चारयेत् पूर्वं वाचकेन पठेत् स्तवम्॥१॥

अथ काली स्तव कहते हैं, यह श्रीप्रत्यङ्गिरा का शरीर कहा जाता है, इसका पाठ करने के पूर्व सर्वप्रथम मूलबीजों का उच्चारण करना चाहिये, उसके बाद पाठ करना चाहिये॥१॥

ॐ देवि जय चामुण्डे जय भूतापहारिणी।
जय सर्वगते देवि प्रत्यङ्गिरा नमोऽस्तु ते॥२॥

हे चामुण्डा! सभी भूतों का अपहरण करने वाली देवी जय हो, जय हो, हे देवि! सर्वत्र व्याप्त रहनेवाली प्रत्यङ्गिरा सदा जय हो, जय हो॥२॥

विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरूपाक्षे त्रिलोचने।
भीमरूपे शिवे विद्ये महाकाये महोदये॥३॥

हे शुभे! शुद्ध, विश्वमूर्ति, विरूपाक्षी, त्रिलोचना, भीमरूपा, शिवरूपिणी, महाकाय धारण करनेवाली, सभी प्राणियों पर दया करनेवाली प्रत्यङ्गिरा जय हो॥३॥

मनोभवे जये जम्भे भूताक्षि भीतभीक्षये।
महामारि विचित्राङ्गि गीतनृत्यप्रिये शुभे॥४॥

हे मन में रमण करने वाली मनोभवा देवि! जय हो, हे जम्भे जय हो, हे भूताक्षि जय हो, हे भय को नाश करने वाली जय हो, हे विचित्र अङ्गोंवाली महामारी रूपिणी, नृत्य तथा गीतों से प्रेम करने वाली, सदा शुभ करनेवाली हमारा सदा शुभ करें॥४॥

विकरालि महाकालि कालिके पापहारिणि।
पाशहस्ते दण्डहस्ते भीमरूपे भयानके॥५॥

हे कालिके! विकराल रूपवाली, महाकाली, समस्त पापों को नष्ट करनेवाली, हाथ में पाश, दण्ड धारण करनेवाली, भयानक विशाल रूपोंवाली हमारा कल्याण करें॥५॥

खड्गादिधारिणी देवि महाभयविनाशिनी।
कपाल धारिणी देवि कल्याणकारिणी सदा॥६॥

हे हाथों में खड्गादि धारण करनेवाली देवि! महाभय का विनाश करनेवाली, कपाल धारण करनेवाली देवी, भक्तों का सदा कल्याण करने वाली महाभगवती हमारा सदा कल्याण करे॥६॥

डमरुधारिणी अम्बा रक्षतु शत्रूदुषकान्।
त्रिशूलेन रक्ष देवि! भक्तानां भयहारिणी॥७॥

हे डमरु धारण करनेवाली अम्बा! सभी शत्रूओं और दुष्टों से हमारी रक्षा करें। भक्तों के भय का हरण करनेवाली हे देवि! अपने त्रिशूल से हमारी रक्षा करें॥७॥

चामुण्डे ज्वालमालास्थे तीक्ष्णदंष्ट्रे महाबले।
शवासनस्थिते देवि प्रेतासनगते गिरौ॥८॥

ज्वालामालिका स्वरूपिणी चामुण्डा, तीक्ष्ण दाँतोंवाली, महान् बाल शालिनी, शवासन पर आरूढ़, प्रेत पर आरूढ़ महादेवी हमारी रक्षा करें॥८॥

भीमाक्षि भीषणे देवि सर्वभूतभयङ्करि।
करालि विकरालीति महाकाली कपालिनि॥९॥

हे देवि! भीमाक्षि, भीषण रूपवाली, सर्वभूत स्वरूपिणी, महाभयङ्करी, करालिनी, विकरालिनी, कपाल धारण करनेवाली, महाकाली हमारी रक्षा करें॥९॥

कालि करालविक्रान्ते कालरात्रि नमोऽस्तु ते।
सर्वशस्त्रावृते देवि सर्वदेवनमस्कृते॥१०॥

हे कालि!, हे कराला!, हे विक्रान्ता!, हे कालरात्रि! सर्वशास्त्रावृता, सभी देवताओं द्वारा नमस्कृत देवि! हमारा कल्याण करो॥१०॥

सर्वज्ञानप्रदे भद्रे प्रत्यङ्गिरा नमोऽस्तु ते।
व्याघ्रचर्माम्बरावृते कर्त्रि खर्परधारिणि॥११॥

सभी ज्ञान को प्रदान करनेवाली, सबका सदा कल्याण करनेवाली व्याघ्र चर्म से आवृत हाथ में खप्पर धारण करनेवाली प्रत्यङ्गिरा हमारा कल्याण करें॥११॥

वज्रपुष्पप्रिये शुभ्रे प्रत्यङ्गिरा नमोऽस्तु ते।
स्तोत्रेणानेन देवि त्वां मे स्तुवन्ति वरानने॥१२॥

वज्र पुष्प से प्रेम करनेवाली, शुभ्रा, प्रत्यङ्गिरा आपको नमस्कार है। हे वरानना देवि! इस स्तोत्र के द्वारा हमने आपकी स्तुति की है॥१२॥

तेषां त्वं वरदानेन भव सर्वगता सती।
यश्चेदं श्रावयेद् भक्त्या स्नात्वा वै पौष्करे जले॥१३॥

हे सति! इस स्तोत्र से प्रसन्न होकर सदा वरदान प्रदान करो, जो इस महा स्तोत्र को पुष्कर के जल में स्नान करके शुद्ध होकर सुनता है॥१३॥

सर्वमेतत् फलं प्राप्य ब्रह्मलोके महीयते।
यश्चेदं पूजयेद् भक्त्या पुस्तकेऽपि स्थितं बुधः॥१४॥

इस स्तोत्र के प्रभाव से ब्रह्मलोक में वास करता है। जो बुद्धिमान् इस स्तोत्र की पुस्तक का भक्तिपूर्वक पूजन करता है॥१४॥

तेन त्विष्टं भवेत् सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
जायन्ते बहवः पुत्राः धनधान्यं तथास्त्रियः॥१५॥

उस भक्त की इस त्रैलोक्य में समस्त कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। उसके बहुत पुत्रपौत्र होते हैं तथा वह धनधान्य और स्त्रियों से परिपूर्ण होता है॥१५॥

रत्नान्यश्वाः गजाश्चाग्र्यास्तेषामाशु भवन्त्युत।
यश्चेदं तिष्ठति गेहे तस्येदं जायते ध्रुवम्॥१६॥

इस स्तोत्र के प्रभाव से देवी कौशिकी प्रत्यङ्गिरा भद्रकाली को प्रसन्न करके सभी प्रकार के रत्नों, अश्वादिकों, हाथियों से उसका घर परिपूर्ण भरा रहता है॥१६॥

इदं स्तोत्रं सदा भक्त्या प्रपठेत् पाठयेत् च यः।
तस्य विघ्नाः प्रलीयन्ते शत्रुहीना भवेत् सदा॥१७॥

इस स्तोत्र को सदा भक्तिपूर्वक जो पाठ करता है तथा पाठ करवाता है उसे कभी किसी प्रकार के विघ्न नहीं होते तथा वह सदा शत्रुहीन होता है॥१७॥

श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरास्तुतिः परिपूर्णः

●

प्रत्यङ्गिरापटलः

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरापटलस्तोत्रस्य श्रीभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवता श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे मम समस्त कामनासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।**

मन्दरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम्।
समुपागम्य चरणैः पार्वती परिपृच्छति॥१॥

मन्दराचल पर्वत पर सुखपूर्वक बैठे हुए भगवान् महामाहेश्वर के सन्निकट भगवती पार्वती ने पैदल जाकर उनसे पूछा?॥१॥

देव्युवाच

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।
नरनारीहितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥२॥

देवी ने कहा—हे महेश्वर! समस्त स्त्री-पुरुषों के हित के लिए तथा बालकों की रक्षा के लिए शुभ फल देने वाली महाविद्या प्रत्यङ्गिरा ही सबको धारण करना चाहिए॥२॥

राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां च महेश्वर!।
विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणाऽर्थसाधिनी॥३॥

हे महेश्वर! यह प्रत्यङ्गिरा महाविद्या माण्डलिक (सम्राट्), राजाओं, दीनजनों तथा विद्वानों का एवं द्विजजातिमात्र का विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करती है तथा विशेषरूप से सभी कामनाओं को पूरा करनेवाली है॥३॥

महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च।
व्याघ्र-दंष्ट्रा-कराघाते नदी-नद-समुद्रगे॥४॥

भयङ्कर से भयङ्कर महाभय उपस्थित होने पर, बिजली एवं अग्नि के द्वारा भय उपस्थित होने पर, व्याघ्र के द्वारा घिर जाने पर, नदी, नद, समुद्र का भय उपस्थित होने पर इस महाविद्या से भयों का निराकरण करके कामनाओं की पूर्ति करना चाहिए।।४।।

श्मशाने दुर्गमे घोरे संग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अभिचारेषु सर्वेषु रणे राजकुलेषु च॥५॥

श्मशान में, दुर्गम स्थान में, शत्रु के द्वारा घोर संग्राम में घिर जाने पर, मारणादि घोर अभिचार में राजकुलों के कोप से ग्रस्त हो जाने पर इस महाविद्या को धारण तथा पाठ करना चाहिए।।५।।

धारिता पाठिता देवि! समीहित-फलप्रदा।
पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान्॥६॥

समस्त आपत्ति विपत्ति उपस्थित होने पर इस महाविद्या के धारण करना तथा पाठ करना अथवा ब्राह्मणों के द्वारा पाठ करवाना चाहिए तथा अपने समस्त मनोरथों को पूरा करना चाहिए।।६।।

सौभाग्यजननीं नित्यं नृणां वश्यकरीं तथा।
तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ! कथयस्व मयि प्रभो!॥७॥

हे प्रभो! हे महामहेश्वर! समस्त मनुष्यों को समस्त प्रकार का सौभाग्य प्रदान करनेवाली, सौभाग्यों की जननी (जिनके रहने मात्र से समस्त सौभाग्य उदित हो जाते हैं), राजाओं तथा अन्य मनुष्यों को सदैव वश में करनेवाली, उन सुन्दर महाविद्या को हमसे कहें।।७।।

भैरव उवाच

साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणी!।
त्वद्वाक्येन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः॥८॥

भैरव बोले—हे समस्त जगत् का हित करनेवाली, हे माहाभागे पार्वति! तुम्हें शतश: साधुवाद है, जो इस प्रकार का प्रश्न किया, हे दैत्यनिषूदिनि! तुम्हारे पूछने पर मैं उस महाविद्या प्रत्यङ्गिरा को तुमसे कहता हूँ।।८।।

देवी प्रत्यङ्गिरा विद्या सर्वग्रहनिवारिणी।
मर्दिनी सर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी॥९॥

यह महाविद्या प्रत्यङ्गिरा देवी सभी ग्रह बाधाओं को दूर करनेवाली है, समस्त दुष्टों का मर्दन करनेवाली तथा सारे पापों को विनष्ट करनेवाली है।।९।।

सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकरी तथा।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषुपवनेषु च॥१०॥

यह महाविद्या मनुष्यों को समस्त प्रकार का सौभाग्य प्रदान करती है तथा पुष्टि प्रदान करती है। चतुष्पथ में, घोर अरण्य में, महाभयानक तूफान में इस महाविद्या का स्वयं पाठ करना चाहिए या पाठ करवाना चाहिए॥१०॥

राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता॥११॥

राजद्वार में, दुर्भिक्ष आदि पड़ने पर, इस महाविद्या का पाठ करना या पाठ कराना चाहिए तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति करनी चाहिए॥११॥

लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युर्नास्ति कदाचन॥१२॥

इस महाविद्या के मन्त्र एवं यन्त्र को लिख कर बाँहु, हाथ, कण्ठ, तथा शिर पर धारण करनेवाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है तथा पाठ करनेवाले की अकालमृत्यु कभी नहीं होती है॥१२॥

धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम्।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता॥१३॥

योग से युक्त होकर जो साधक इस महाविद्या को धारण करता है, उसकी रक्षा इस विद्या के द्वारा निश्चित ही रक्षा होती हैं। प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को धारण करता है या अर्चन करता है उसका सभी प्रकार से निश्चय ही शुभ होता हैं॥१३॥

गृहे चैवाऽष्टसिद्धिश्च देव-राक्षस-पन्नगाः।
न तस्य पीडां कुर्वन्ति यं चाऽन्ये पीडकग्रहा॥१४॥

जो साधक प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को धारण करता है अथवा अर्चन करता है उसे अष्टसिद्धियाँ अवश्य प्राप्त हो जाती हैं। उसे देव, दानव, यक्ष, गन्धर्व, पन्नगादि तथा पीड़ा प्रदान करने वाले ग्रह उसे कभी पीड़ा नहीं देते हैं॥१४॥

विद्यानामुत्तमाविद्या पठिता वाऽर्चिता सदा।
यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता॥१५॥

यह प्रत्यङ्गिरा महाविद्या सभी महाविद्याओं में उत्तम महाविद्या है, इन्हें प्रत्यङ्गिरा इसी लिए कहते हैं कि पाठ, अर्चन करने वाले साधक के प्रत्येक अङ्ग में ये स्थित हो जाती हैं॥१५॥

सिद्धा सुसिद्धिदा नित्या विद्येयं परमा स्मृता।
श्रीमता घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी॥१६॥

यह महाविद्या स्वयं सिद्ध है तथा अपने साधक को भी सिद्धि प्रदान करती है। यह विद्या नित्य तथा सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है। यह परम ध्यान करने योग्य महाविद्या है। इस घोररूपिणी श्रीविद्या को हमने ही घोररूप धारण करके व्याख्यान किया था॥१६॥

प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता रिपून् हन्यान्न संशयः।
हरिचन्द्रनमिश्रेण गोरोचन-कुंकुमेन च॥१७॥

इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या को हमने ही कहा था, यह शत्रुओं का निश्चय ही नाश करती हैं इसमें कोई संशन नहीं है। हरिचन्दन का गोरोचन तथा कुंकुम के साथ मिश्रण बना करके॥१७॥

लिखित्वा भूर्जपत्रेषु धारणीया सदा नृभिः।
पुष्पधूपैर्विचित्रैश्च बल्युपहारपूजनैः॥१८॥

पूर्व निर्मित मिश्रण से भोजपत्र के ऊपर इस प्रत्यङ्गिरा विद्या का लेखन करके पुष्प, धूपदीप तथा बलि इत्यादि उपचारों से पूजन करके मनुष्यों को सदैव धारण करना चाहिए॥१८॥

पूजयित्वा यथान्यायं शान्तकुम्भेन वेष्टयेत्।
धारयेद्य इमां विद्यां निश्चितां रिपुनाशिनीम्॥१९॥

इस महाविद्या का लेखन कर विधिपूर्वक पूजन करके शान्ति कलश के समान अवेष्ठित करके जो मनुष्य धारण करता है, तो यह महाविद्या धारण करने वाले के शत्रुओं को निश्चय ही नाश कर देता है॥१९॥

विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिराविधानतः।
यद्यत् स्पृशति हस्तेन यद्यत् खादति जिह्वया॥२०॥

साधक विधानपूर्वक प्रत्यङ्गिरा का अर्चन करके शत्रुओं को नष्ट कर देता है। प्रत्यङ्गिरा का अनुष्ठान करने वाला साधक जो-जो स्पर्श करता है, जो-जो अपने मुख से खाता है वह सभी॥२०॥

अमृतं तद्भवेत् सर्वं मृत्युर्नास्ति कदाचन।
कर्मणा यो जपेद्यस्तु कृत्रिमं दारुणं सदा॥२१॥

अमृत हो जाता है, कर्म योग से जो इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या का सदा जप करता है, उसकी कृत्रिम तथा दारुण अकाल मृत्यु कभी नहीं होती है॥२१॥

भक्षितं तृप्तिमत्याशु नरस्य तस्य सुव्रते!।
तथाऽस्यां पठ्यमानायां जीर्यते नात्र संशयः॥२२॥

हे सुव्रते! प्रत्यङ्गिरा मन्त्र का पाठ करनवाले साधक के द्वारा खाये हुए पदार्थ शीघ्र पच कर उर्जा देते हैं तथा इस स्तोत्र के पाठक के खाये हुए भोजन स्वयं जीर्ण हो जाते हैं॥२२॥

नृणां रक्षाकरी देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता।
सर्वमन्त्रविनाशी च गोलकस्थान्तरः परा॥२३॥

सभी कार्यों को सिद्ध करनेवाली, मनुष्यों(साधकों) की रक्षा करनेवाली, अन्त:गोलक में रहनेवाली, सभी यन्त्रतन्त्रमन्त्र के अभिचारिक प्रयोगों को समाप्त करनेवाली, इस परामहाविद्या महेश्वरी का साधक ध्यान, मनन, निधिध्यासन करके अपने समस्त कार्यों को सिद्ध कर लेता है।।२३।।

सर्वव्याधिहरी विद्या सिद्धिदात्री महेश्वरी।
प्राप्नोति वसुधां सर्वां रिपुहस्तगतां श्रियम्।।२४।।

सभी व्याधियों का हरण करनेवाली, सिद्धिदात्री महेश्वरी का विधिपूर्वक अर्चन करने से बुद्धिमान साधक शत्रुओं के हाथ में चली गयी अपनी भूमि तथा श्रेय को प्राप्त करता है।।२४।।

वशास्तस्यैव तिष्ठन्ति शत्रवः प्राणहारकाः।
अभ्यस्यतां याति विद्यां सिद्धिविद्याप्रसादतः।।२५।।

प्राणापहारक शत्रु भी इस महाविद्या के साधक के वशीभूत हो जाते हैं। इस महाविद्या प्रत्यङ्गिरा के द्वारा, जपानुष्ठान करके, उसके फलस्वरूप, प्रत्यङ्गिरा का साधक समस्तविद्या(ज्ञान) प्राप्त कर लेता है।।२५।।

अवला च वशात्तस्य सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः।
चराऽचरमिदं सर्वं सशैलवनकाननम्।।२६।।

हे सुव्रते! इस महाविद्या के प्रभाव से अनेक सुन्दर से सुन्दर स्त्रियाँ उस साधक के वश में हो जाती हैं। यह पर्वत, जङ्गल सहित समस्त चराचर जगत् जो नरनारियों से व्याप्त है, सभी इस महाविद्या के जपानुष्ठान से प्राप्त हो जाते हैं।।२६।।

नरनारीसमाकीर्णं साधकस्य च सुव्रते!।
सर्वत्र वशतां यान्ति यजमानस्य नित्यशः।।२७।।

हे सुव्रते! इस महाविद्या के अनुष्ठान करने वाला साधक समस्त नरनारियों को आकर्षित कर लेता है। इस महाविद्या के नित्यनियमित अर्चन करने वाले साधक के वश में सभी हो जाते हैं।।२७।।

गोलकस्य प्रभावेण प्रत्यङ्गिरा प्रभावतः।
त्रिपुरश्च मया दग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता।।२८।।

इस अन्त:प्रत्यङ्गिरा महाविद्या के गोलक के प्रभाव से हमने पूर्व में त्रिपुर को जला दिया था।।२८।।

निर्जितास्त्राऽसुराः सर्वे देवैर्विद्याभिमानिभिः।
गोलकं च प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ते च सुव्रते!।।२९।।

इस प्रत्यङ्गिरा महाविद्या का अनुष्ठान करके देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त किया था। हे सुव्रते! अब मैं उस औषधि के समान गोलक का निरूपण तुमसे करता हूँ।।२९।।

पञ्चवर्णैः पञ्चदलैः द्वारर्धे द्वारशोभितम्।
द्वात्रिंशत्पत्रमध्ये तु लिखेन्मन्त्रस्य दैवतम्॥३०॥

द्वार के अर्ध भाग(मध्य) में पाँच वर्णों वाले पाँच पत्तों से सुशोभित करके, उनके बीच बत्तीस पत्रों पर मन्त्र के देवताओं को लिखे॥३०॥

कूटस्थं कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण च संयुक्तं रक्षेच्च साधकोत्तमः॥३१॥

चारो दिशाओं में मन्त्र के कूटाक्षर को लिखे, फिर चारों कोनों में बीजपञ्चक लिखे, इस प्रकार से लिखने के बाद हूँ फट् लिख करके यन्त्र बनाकर धारण करके साधक अपनी तथा अपनों की रक्षा करे॥३१॥

विष्णुक्रान्ता मदनकं कुंकुमं रोचनं तथा।
आरुष्करं विपारिष्टं सिद्धार्थं मालतीं तथा॥३२॥

विष्णुकान्ता, दमनक, कुंकुम(रोली), गोरोचन, अरुष(अगुरु), विषारिष्ट(विषहरी), सिद्धार्थ तथा मालती के पुष्पों तथा पदार्थों को मिलाकर गोलक के मध्य में स्थापित करे॥३२॥

एतद् द्रव्यगणं भद्रे! गोलमध्ये निधापयेत्।
सम्भृतं धारयन्मन्त्री साधको मन्त्रवित् सदा॥३३॥

हे भद्रे! पूर्व कथित पदार्थों को ग्रहण करके गोलक के मध्य स्थापित करके मन्त्रवित् साधक को सदा धारण करना चाहिए॥३३॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि प्रत्यङ्गिरां सुभाषिताम्।
दिव्यमन्त्रपदैश्चित्तैः सुखोपायैः सुखप्रदैः॥३४॥

अब मैं समस्त सुख का उपाय, समस्त सुख को प्रदान करने वाला, प्रत्यङ्गिरा महामन्त्र को कहता हूँ जिसे दत्तचित्त होकर सुनो॥३४॥

पठेद्रक्षाभिधानेन मन्त्रराजः प्रकीर्तितः।
अथाऽतो मन्त्रपदानि भवन्ति तानि मन्त्रणाम्॥३५॥

इसे मन्त्रराज कहते हैं, यह शत्रु विनाशक तथा भक्तों का रक्षक है, इसका अपने रक्षा करने के लिए प्रयोग करना चाहिये। अब मैं महामन्त्र के पदों को उच्चारित करता हूँ स्वस्थ चित्त से इसे सुनना चाहिए॥३५॥

श्रीप्रत्यङ्गिरापटलं परिपूर्णम्

●

श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरापद्धतिः

विनियोग– ॐ अस्य श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरापद्धतिस्तोत्रस्य श्रीभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरादेवता श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे सकलमनोरथ सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

कूटस्था कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण समोपेतं रक्ष त्वं साधकोत्तमम्॥१॥

चारों दिशाओं में कूट वर्णों को तथा चारों कोनों पर बीजपञ्चक लिखना चाहिए। फिर रक्ष त्वं साधकोत्तमम लिखना चाहिए॥१॥

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।
जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च॥२॥

स्तम्भिनी, मोहिनी, क्षोभिणी, द्राविणी, जृम्भिणी, भ्रामणी, रौद्री, संहारिणी तथा शोषिणी ये सभी प्रत्यङ्गिरा की शक्तियाँ हैं॥२॥

शक्तयः शोषिणी चैव शत्रुपक्षनियोजितः।
साधिताः साधकेन्द्रेण सर्वशत्रुविनाशिनी॥३॥

इन शक्तियों का शत्रुनाश के लिए नियोजित किया जाता है, साधक इस शक्तियों के सहित प्रत्यङ्गिरा को सिद्ध कर लेता है, तो वह साधक के शत्रुओं का विनाश कर देती है॥३॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ भ्रामिणी मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ रौद्री मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय हुँ फट् स्वाहा॥ ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्फ्रेँ स्फ्रेँ ह्रूँ ह्रूँ संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय हुँ फट् स्वाहा॥

य इमां धारयेद्विद्यां त्रिसन्ध्यं वाऽपि यः पठेत्।
सोऽपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून्न संशयः॥४॥

इस विद्या को धारण करके प्रातः, मध्याह्न, सायं तीनों कालों में जो पाठ करता है वह अपने अतिदुष्ट शत्रुओं को भी समाप्त कर देता है, इसमें कोई संशय नहीं है॥४॥

सर्वं हि रक्षयेद् विद्यां महाभयविपत्तिषु।
महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित्॥५॥

महाभय उपस्थित होने पर, महाविपत्ति काल में, घोरतम भय होने पर इस विद्या से

से रक्षा करनी चाहिये, त्रिकाल पाठ करने वाले साधक को कोई भय नहीं होता है।।५।।

सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवि न संशयः।
अष्टोत्तरशतं जपेत्साक्षाद् सिद्धीश्वरो भवेत्।।६।।

इस मर्त्यलोक में समस्त कामनाओं की पूर्ति कर लेता है, इस विद्या का अष्टोत्तरशत जप करने से सिद्धि होती है, वह साधक सिद्धीश्वर हो जाता है।।६।।

मूलमन्त्रः—ॐ ऐँ ह्लीँ श्रीँ स्फ्रैँ स्फ्रैँ हुँ प्रत्यङ्गिरे! विकटदंष्ट्रे! ह्लीँ ह्लीँ कालिकालि! स्फ्रैँ स्फ्रैँ कारिणि मम शत्रून् छेदय छेदय खादय खादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रैँ स्फ्रैँ किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि श्रीँ ह्लीँ ऐँ हुँ हुँ फट् स्वाहा।।

ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुप्-प्रकीर्तितम्।
देवता कौशिकी प्रोक्ता नाम प्रत्यङ्गिरैव सा।।७।।

इस माला मन्त्र के भैरव ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, इसके देवता कौशिकी हैं, इसे ही प्रत्यङ्गिरा भी कहते हैं।।७।।

कूर्चबीजं षडङ्गानि कल्पयेत् साधकोत्तमः।
सर्वाकृष्टोपचारैस्तु ध्यायेत् प्रत्यङ्गिरां शुभाम्।।८।।

इस मन्त्र का उत्तम साधक कूर्चबीज तथा षडङ्ग न्यास को स्वयं बना ले। प्रत्यङ्गिरा भगवती को आकृष्ट करने वाले अनेक उत्तमोत्तम उपचारों से पूजन कर उसका ध्यान इस प्रकार करना चाहिए।।८।।

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं, सम्बिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसम्।
पिङ्गोर्ध्वकेशाऽसितभीमदंष्ट्रा, भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।९।

खड्ग, कपाल, डमरु तथा त्रिशूल को अपने हाथों में तथा मस्तक पर आभूषण रूप में चन्दमा को धारण किये हुए, जिनके पीले पीले केश ऊपर की तरफ विखरे हुए फैले है तथा दाँत काले और महाभयानक हैं वे भगवती भद्रकाली हमें विभूति प्रदान करें।।९।।

प्रयोग एवं फलश्रुतिः

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमेकविंशतिवासरान्।
शत्रून्नाशयेत्तञ्च प्रकारोऽयं सुनिश्चितम्।।१०।।

इस प्रकार से ध्यानोपचारादि पूजन करके इक्कीस दिन तक नियमित निशा काल में पाठ करने से शत्रुओं का निश्चय ही नाश हो जाता है, यह निश्चित है।।१०।।

अथाऽष्टम्यामर्धरात्रौ शरत्काले महानिशि।
आराधिता च सा काली तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत्।।११।।

शरत् काल के नवरात्र में, जब अर्धरात्रि में अष्टमी की महानिशा हो, उस समय आराधना करने से यह प्रत्यङ्गिरा भगवती अवश्य ही सिद्धि प्रदान करती हैं॥११॥

सर्वोपचारसम्पन्नो रक्तवस्त्रफलादिभिः।
पुष्पैश्च रक्तवर्णैश्च साधयेत् कालिकापराम्॥१२॥

पूजा की सम्पूर्ण सामग्री एकत्रित कर साधक लाल वस्त्र, लाल फल, तथा लाल रंग के पुष्पों से परा भगवती महाकाली का पूजन करे॥१२॥

वर्षादूर्ध्वमजं मेषं मृगं वा विविधं बलिम्।
दद्याद् पूर्वं महेशानि! ततस्तु जपमाचरेत्॥१३॥

हे महेशानि! सर्वप्रथम वर्षान्त जप करे, फिर जपोपरान्त बकरा अथवा भेंड़ा अथवा मृग तथा अन्यान्य विविध बलि देनी चाहिए तथा एक वर्ष तक जप करना चाहिए॥१३॥

एकहायनतः काली सत्यं सत्यं सुसिद्धिदा।
मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्याद् विचक्षणः॥१४॥

मूलमन्त्र से रात्रिकाल में हवन करना चाहिए, ऐसा करने से काली एक वर्ष में सुसिद्ध हो जाती है, यह सत्य है और परम सत्य है॥१४॥

मरीचि-लाजा-लवणैः सर्षपैर्मारणं भवेत्।
महासङ्कटरोगे च न भयं जायते क्वचित्॥१५॥

कालीमरीच, धान का लावा, नमक तथा सरसों मिलाकर होम करने से मारण प्रयोग किया जाता है, उक्त विधि से हवन करने से महासङ्कट तथा रोग का कभी भय नहीं होता है, साधक निर्भय हो जाता है॥१५॥

प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः।
साध्यनामाङ्कितंकृत्वा शत्रुमय्याञ्च पुत्तलीम्॥१६॥

श्मशान से प्रेत का शरीरांश (राखादि) ले करके गोलक बनाकर (यन्त्र का निर्माण करके) उसमें शत्रु की पुत्तली बना कर॥१६॥

जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ प्रक्षिपेत् ततः।
एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रान्मरणं रिपोः॥१७॥

उस पुत्तली में जीव की प्रतिष्ठा करके उसका हनन करके चिता की अग्नि में फेंककर जला कर दशहजार मन्त्र का जप करे, तो शत्रु तीन दिन में ही मर जाता है॥१७॥

महाज्वरो भवेत्तस्य तप्तताम्रशलाकया।
गुदाद्वारे प्रविन्यस्य सप्ताहान्मरणं रिपोः॥१८॥

जलती हुई ताँबे की सलाई उपर्युक्त विधि से निर्मित शत्रु की पुत्तली के गुदाद्वार में

घुसेड़ देने से शत्रु को महाज्वर हो जाता है, वह सात रात्रि के भीतर ही मर जाता है॥१८॥

पुष्पसमर्पणविधिः

भुक्तौ मुक्तौ शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशेत्।
आकृष्टो च वशीकारे रक्तपुष्पं च समर्पयेत्॥१९॥

भुक्ति, मुक्ति और शान्ति की कामना के लिए पुष्पार्चन श्वेत पुष्प से करना चाहिए। आकर्षण, वशीकरण में रक्त पुष्प से समर्चन करना चाहिए॥१९॥

स्तम्भने मोहने चैव पीतं पुष्पं विनिर्दिशेत्।
उच्चाटने मारणे च कृष्णं पुष्पं च आनयेत्॥२०॥

स्तम्भन और मोहन कार्य में पीले पुष्प से अर्चन करना चाहिए, उच्चाटन और मारण कार्य के लिए काले पुष्प से अर्चन करना चाहिए॥२०॥

अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्पं वर्णकम्।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि॥२१॥

इसी प्रकार से कामनाओं के अनुसार विभिन्न वर्णों के पुष्पों का चयन तथा ध्यान करना चाहिए, इस पुष्पार्चन की विधि को जप के पूर्व करना चाहिए॥२१॥

प्रत्यङ्गिरा एक अनुभव—प्रस्तुत प्रत्यङ्गिरा प्रयोग अत्यन्त सरल है, इसका प्रयोग हमने एक शिष्य के यहाँ कुछ सामाजिक विपत्ति आने पर प्रयोग कराया था, इस प्रयोग को करते ही उनकी समस्त परेशानियाँ ऐसे समाप्त हो गयीं, जैसे उस प्रकार की कोई परेशानी कभी हुई ही नहीं और वे सहज हो गये, उसके बाद इस प्रयोग पर उनकी अत्यधिक श्रद्धा हो गयी, तब से इस प्रयोग को सीख कर वे स्वयं कई बार प्रयोग कर चुके हैं और अन्य लोगों को भी आपत्ति-विपत्ति आने पर इस प्रयोग को करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा आनन्दपूर्वक सम्पन्न भी कराते हैं तथा सफल होते हैं।

यह प्रयोग करने में अत्यन्त ही सरल एवं छोटा है तथा सफलता प्रदान करने वाला है, पाठक गण इस प्रयोग को सीख कर अपने लिए तथा अन्य जनों के विपत्तियों से छुटकारे के लिए प्रयोग कर सकते हैं, बिना ठीक से सीखे इस प्रयोग को न करे। आशा है जनसामान्य इसका लाभ उठायेंगे। शुभं भवतु।

श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरापद्धतिः परिपूर्णः

●

परिशिष्टभागः २

।। श्रीः ।।

परकृत्यानिवारिणीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः

नित्यक्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि मातृका न्यासादि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्निद्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद मासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादिसकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्टद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल-अशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादि-पीडादिनां निवृत्तिपूर्वकं त्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत-सर्वेषामन्यानां कृतं यन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृतं समस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहेवास्त्वादि दोषानां सद्यःसमाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादि प्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वकसकलाभिष्टसिद्ध्यर्थं श्रीकौशिकीप्रत्यङ्गिरा-देवताप्रीत्यर्थं कौशिकीप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगपुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

वैदिकविधि से स्थापन पूजन करने के बाद न्यासादि करने के बाद जप करे।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीपरकृत्यानिवारिणीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य श्रीब्रह्मात्रऋषिः

उष्णिक्छन्दः महाकाश-माहावायु-महाऽग्नि-महाजल-महापृथ्वी-महापर्वत देवताः हूँ बीजं ह्रीँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि।

ॐ उष्णिक्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ महाकाशमाहावायुमहाऽग्निमहाजलमहापृथ्वीमहापर्वतदेवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ हूँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ महाकाशमाहावायुमहाऽग्निमहाजलमहापृथ्वीमहापर्वतदेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ह्राँ हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्।

ॐ ह्रैँ कवचाय हुम्।

ॐ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यासः—

ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

मातृकान्यासः

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वतीदेवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकं, श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

प्रणायामः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः। एक बार जपते हुए पूरक करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ। चार बार जपते हुए कुम्भक करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ। दो बार जपते हुए रेचन करे।

ऋष्यादिन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वतीदेवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हूम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

प्राणायाम तथा कराङ्गन्यास करने के बाद अन्तर्लिपि न्यास करे।

अन्तर्मातृकान्यासः

ध्यानम्—

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोः यन्मध्यवक्षस्थलं,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रसकलामापीनतुङ्गस्तनीम्।
मुद्रामक्षणगुणं सुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्च हस्तम्बुजेः,
बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

मानसोपचारपूजनम्—लेलिहान मुद्रा से न्यास करे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः यँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः सँ सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि नमः।

चक्रन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः नमः धुम्राभे षोडशदलपद्मे विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ नमः द्वादशदलपद्मे प्रवाल-सन्निभे हृदयोपर्यनाहते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः नीलजीमूतसन्निभे दशदलपद्मे नाभ्योरुपरिमणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः बँ भँ मँ यँ रँ लँ नमः विद्युसन्निभेषडदलपद्मेस्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः वँ शँ षँ सँ ळँ नमः सुवर्णाभेचतुर्दलपद्मे मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः हँ क्षँ नमः द्विदलपद्मे चन्द्राभे भ्रूमध्ये आज्ञायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ नमः सहस्रारे हिमसन्निभे सर्ववर्णविभूषिते अकखादि त्रिरेखासु आलक्षत्रयभूषिते ॐ पर विन्दुभ्यो नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक बिन्दुचिदात्मक ध्यान करके उससे टपकते हुए अमृत रस के द्वारा सभी मातृकाओं का तर्पण (सिंचन) करना चाहिये। फिर इष्टदेवता का ध्यान करे।

ध्यानम्—

आधारे लिङ्गनाभे प्रगटितहृदये तालुमूले ललाटे,
द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदले दशारे षट्चतुष्के।
वासन्ते बलमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणां,
हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

मानसोपचारपूजनम्—ध्यान के बाद पुनः पूर्वविधि से मानसोपचार पूजन करे।

चक्रतत्त्वन्यासः

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः लँ पृथ्वीतत्त्वाय नमः मूलाधारे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः वँ जलतत्त्वाय नमः स्वाधिष्ठाने न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः रँ अग्नितत्त्वाय नमः मणिपुरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः यँ वायुतत्त्वाय नमः अनाहते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः हँ आकाशतत्त्वाय नमः विशुद्धचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः हँ ळँ क्षँ मनोबुद्धितत्त्वाय नमः आज्ञाचक्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ ॡँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ चिदाहङ्कारात्मने नमः सहस्रारे न्यस्यामि।

बहिर्मातृकान्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मात्रृषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये श्रीमद्प्रत्यङ्गिरादेवता प्रीतये विनियोगः।

प्राणायामः—पूर्वोल्लिखित मातृका प्राणायाम विधि से प्राणायाम करे।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ गायत्री छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ सरस्वती देवतायै नमः हृदये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ हल्भ्यो बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईँ शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐँ कवचाय हूम्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ पँ फँ बँ भँ मँ औँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

मातृकान्यासः–

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः आँ नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः इँ नमः दक्षिणनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ईँ नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः उँ नमः दक्षिणकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ऊँ नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ऋँ नमः दक्षिणनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ॠँ नमः वामनाशापुटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः लृँ नमः दक्षिणकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः लॄँ नमः वामकपोले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ऐँ नमः अधरोष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः ओँ नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः औँ नमः अधोदन्तपंक्तौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अँ नमः जिह्वाग्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः अः नमः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः कँ नमः दक्षबाहुमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः खँ नमः दक्षिणकूर्परे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः घँ नमः दक्षिणकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः चँ नमः वामबाहुमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः छँ नमः वामकूर्परे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः जँ नमः वाममणिबन्धे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः झँ नमः वामकराङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः टँ नमः दक्षोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः ठँ नमः दक्षिणजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः डँ नमः दक्षिणगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः तँ नमः वामोरुं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः थँ नमः वामजानुनि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः दँ नमः वामगुल्फे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः नँ नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः पँ नमः दक्षिणपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः फँ नमः वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः बँ नमः पृष्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः भँ नमः नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः मँ नमः उदरे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः यँ त्वगात्मने नमः हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः लँ मांसात्मने नमः ककुदि न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः वँ मेदात्मने नमः वामांसे न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः षँ मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः हँ आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तं न्यस्यामि।
ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्ष्रौँ हंसः ळँ परमात्मने नमः हृदयादिकट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ क्षौँ हंसः क्षँ प्राणात्मने ज्ञानात्मने नमः हृदयादिमूर्धान्तं न्यस्यामि।

मातृकान्यास करने के बाद बीजन्यास करे।

मन्त्रबीजन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अं नमः ललाटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ कं नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ चं नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ टं नमः दक्षकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ तं नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ पं नमः दक्षनासायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ यं नमः वामनासायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ शं नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ ह्रीं नमः हृदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हं नमः उदरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ सः नमः नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हुं नमः गुह्ये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ फट् नमः उरुद्वयोः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ स्वा नमः जङ्घयोः न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ हा नमः पादयोः न्यस्यामि।

मूलमन्त्रव्यापकन्यासः—

ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं हंसः हुं फट् स्वाहा।

जपविधिः

मूलमन्त्रप्राणायामः—

मूलमन्त्र से पूरक कुम्भक रेचन पूर्वक प्राणायाम करे।

मन्त्रकुल्लुका—

ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतुः—

ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतुः—

क्रीँ । बीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दश बार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणम्—

ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं हंसः हुं फट् स्वाहा। अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधनम्—

क्रीँ क्रीँ क्रीँ ॐ क्रीँ क्रीँ क्रीँ। दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोगः—

ह्रीँ ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं हंसः हुं फट् स्वाहा। श्वासप्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्—

ॐ ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं हंसः हुं फट् स्वाहा ॐ। मन्त्र को ॐ से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मालाप्रार्थना–

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ ऐं ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला का यथोपचार पूजन करके दक्षिण हाथ मध्यमाङ्गुलि के मध्यपर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित करके, प्रत्येक्र गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृदपद्म में प्रत्यङ्गिरादेवता का तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत् भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृतपान करते हुए न्यूनतम दससहस्र अथवा विहित संख्या जप करे।

ध्यानम्—

खड्गंकपालंडमरुंत्रिशूलं सम्विभ्रतिं चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशासितभीमदंष्ट्रा भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

वायें हाथ में खड्ग तथा कपाल और दाहिने हाथ में डमरु तथा त्रिशूल धारण की हुई चन्द्रप्रभा के समान ऊर्ध्वकेश श्यामल तथा बड़े दातोंवाली भद्रकाली का ध्यान करने के बाद पूर्व में बतायी हुई विधि से मानसोपचार पूजन करे।

मूलमन्त्र:—

ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं हंस: हुं फट् स्वाहा।

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नम:। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुन: पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूलमन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचन पूर्वक प्राणायामादि उत्तरन्यास करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी के वर्म, पटल, पद्धति, स्तोत्र तथा सहस्रनाम का पाठ करे, सर्वप्रथम मूलमन्त्र से तीनबार प्राणायाम करे।

पद्धति:

अथाऽत: सम्प्रवक्ष्यामि परकृत्या निवारिणि।
देवीप्रत्यङ्गिरानाम सर्वापद् विनिवारिणिम्॥१॥

भक्तों के समस्त आपत्तियों का निवारण करने वाली दुष्ट शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचारों को नष्ट करनेवाली प्रत्यङ्गिरा नाम की विद्या के विषय में प्रवचन करता हूँ॥१॥

ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं तथा समुच्चरेत्।
हंसं उक्त्वा हुं तथाऽस्त्रं स्वाहान्तं षोडशाक्षर:॥२॥

ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं के बाद हंस: उच्चारण के बाद हुं फट् के बाद स्वाहा का उच्चारण करना चाहिये, इस प्रकार यह सोलह अक्षरों वाला महामन्त्र सभी प्रकार के शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचार को नष्ट करने के लिए है॥२॥

मुनिर्विधाता छन्दोष्णिग् देवता: षट् प्रकीर्तिता:।
महावायुर्महापृथ्वी महाकाशस्तथैव च॥३॥

इस मन्त्र के ब्रह्मा ऋषि, उष्णिक् छन्द तथा छ: देवता कहे गये हैं, वे देवता महाकाश, महावायु तथा महापृथ्वी के साथ॥३॥

महासमुद्रनामा च महापर्वत एव च।
महाऽग्निश्चेति हुं बीजं ह्रीं शक्ति: परिकीर्तिता॥४॥

महासमुद्र, महापर्वत, महाअग्नि हैं, इस मन्त्र के बारे में हुँ बीज तथा ह्रीं शक्ति कही गयी है॥४॥

लज्जाया तु षडङ्गानि षड्दीर्घान्वितयाऽऽचरेत्।
मत्रदेवीस्ततो मन्त्री ध्यायेत् सुस्थिरमानस:॥५॥

लज्जाबीज के षड्दीर्घ से षडङ्गन्यास करना चाहिये (यथा **अङ्गन्यास—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। करन्यास—ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।** उक्त निर्दिष्टविधि न्यास के बाद महादेवी का मन्त्रोपासना करने वाले साधक स्थिर मन से देवी का ध्यान करे॥५॥

ध्यानम्

नानारत्नार्चिराक्रान्तं वृक्षाम्भःस्रवणैर्युतम्।
व्याघ्रादि-पशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत्॥६॥

ध्यान—अनेक प्रकार के रत्नप्रभा से जगमगाते हुए, वृक्ष, झरना तथा व्याघ्रादि पशुओं से, अनेक पर्वतश्रेणियों से युक्त महापर्वत का ध्यान करे॥६॥

मत्स्य-कूर्मादि-बीजाढ्यं नवरत्न-समन्वितम्।
घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत्॥७॥

मत्स्य, कूर्मादि जन्तु ही जिसके बीज हैं, अनेक प्रकार के रत्नों से व्याप्त, घनी छाया वाले तथा कल्लोल लहरों से व्याप्त महासमुद्र का ध्यान करे॥७॥

ज्वालावली-समाक्रान्तं जगत्त्रितयमद्भुतम्।
पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रुशान्तये॥८॥

तीनों लोकों को अपनी ज्वाला के लपटों से आक्रान्त करते हुए पीले वर्ण वाले महा-अग्नि का शत्रुओं के शमन करने के लिए ध्यान करे॥८॥

त्वरा समुत्थरावौघमलिनं रुद्धभूदिवम्।
पवनं संस्मरेद् विश्वजीवनं प्राणरूपतः॥९॥

बहुत बड़ी आंधी के साथ घनघोर कोलाहल करते हुए, पृथ्वी और आकाश को धूल से आच्छादित करते हुए, विश्व के जीवन एवं प्राण स्वरूप जीवन प्रदान करनेवाले वायु का ध्यान करे॥९॥

नदीपर्वतवृक्षादि कलिताग्राससङ्कुला।
आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीहमन्त्रिणा॥१०॥

मन्त्रानुष्ठान करने वाले साधक को नदी, पर्वत, वृक्षादि से व्याप्त, ग्रामादि से संयुक्त, सारे संसार की आधारभूता महापृथ्वी का ध्यान करे॥१०॥

सूर्यादिग्रह-नक्षत्र-कालचक्रसमन्वितम् ।
निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रयः पदम्॥११॥

सूर्यादि ग्रहनक्षत्रों के कालचक्र से समन्वित, समस्त प्रणियों के आश्रय स्थानभूत निर्मल आकाश का ध्यान करे॥११॥

पुरश्चरणमाह

एवं षड्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश।
जपेन्मन्त्रं दशांशेन षड्द्रव्यैः होममाचरेत्॥१२॥

इस प्रकार से छ: देवताओं का ध्यान करके साधक मन्त्र का सोलह हजार जप करे। तदनन्तर षड् द्रव्यों से ही दशांश हवन करे॥१२॥

व्रीहयस्तण्डुला आज्यं सर्षपाश्च यवास्तिला:।
एतैर्हुत्वा यथाभागं पीठे पूर्वोदिते यजेत्॥१३॥

धान, चावल, घी, सरसों, यव और तिल ये षड् द्रव्य कहे गये है। इन सबको यथा विहित भाग में मिला करके हवन करे तथा पूर्वोक्त पीठ पर पूजन करके अपने समस्त कार्यों को सिद्ध करे॥१३॥

पद्धति: परिपूर्णा

●

स्तोत्रम्

ॐ किं किं दु:खं सकलजननि क्षीयते न स्मृतायां,
का का कीर्तिः कुलकमलिनि प्राप्यते न स्मृतायाम्।
किं किं सौख्यं सुरवरनुते प्राप्यते न स्मृतायां,
कं कं योगं त्वयि न तनुते वित्तमालम्बिकायाम्॥१॥

समस्त कलाओं से युक्त (षोडशकलावाली) जननी का ध्यान करने से साधक क्या क्या दु:ख नहीं समाप्त कर देता है, मूलाधार निवासिनी कुलकमलिनि (कुण्डलिनी) का ध्यान करके क्या क्या कीर्ति नहीं प्राप्त कर लेता है, देवताओं को वरदान देने वाली का ध्यान करके क्या क्या सुख नहीं प्राप्त कर लेता है, शरीर के अङ्ग अङ्ग में विद्यमान अम्बिका प्रत्यङ्गिरा का ध्यान करके क्या क्या योग नहीं कर लेता है अर्थात् साधक पूर्ण कलाओंवाली, कुलदेवी तथा देवताओं के द्वारा पूजित, देवी प्रत्यङ्गिरा भगवती का ध्यानार्चन करके सब कुछ पा लेता है॥१॥

स्मृता भव भयं हंसि पूजितासि शुभङ्करी।
स्तुता त्वं वाञ्छितं देवि ददासि करुणाकरे॥२॥

इस हंसी देवि! का ध्यान करने से भवसागर का भय समाप्त हो जाता है, करुणा वर्षाने वालीदेवी की स्तुति करने से ये देवी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देती हैं॥२॥

परमानन्दबोधाब्धिरूपे तेजः स्वरूपिणि।
देववृन्दशिरोरत्ननिघृष्टचरणाम्बुजे ॥३॥

परमानन्दज्ञानसागरस्वरूपिणी तेज:स्वरूपवाली का चरण कमल को देववृन्द के शिरभाग को धारण करने से साधक अपने समस्त कामनाओं को पूरा कर लेता है॥३॥

चिद्विश्रान्तिमहासक्ता मात्रे देवि नमोऽस्तु ते।
सुष्टिस्थित्युपसंहारहेतुभूतेसनातनि ॥४॥

सृष्टिस्थितिसंहार की कारणभूता सनातनी, चित्त में स्थित चिद्रूपिणी देवी को नमस्कार करने में आसक्त रहने वाला अपने समस्त कामनाओं को पूरा कर लेता है॥४॥

गुणत्रयात्मिकाऽसि त्वं जगतः कारणेच्छया।
अनुग्रहाय भक्तानां गृहीतदिव्यविग्रहे॥५॥

जगत् की कारणभूता इच्छारूपिणी तीन गुणों से युक्त दिव्य विग्रहों का ध्यान करने से अनुग्रह प्राप्त करके भक्त अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है॥५॥

भक्तस्य मे नित्यपूजायुक्तस्य परमेश्वरि।
ऐहिकामुष्मिकीं सिद्धिं देहि त्रिदशवन्दिते॥६॥

भक्त अपनी नित्य पूजा में त्रयोदशी तिथि को उपवास करके परमेश्वरी का ध्यानार्चन करके अपनी समस्त कामनाओं को सद्यः पूर्ण कर लेता है॥६॥

तापत्रयपरिम्लानभाजनं त्राहि मां शिवे।
नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि॥७॥

तापत्रय से ग्रस्त होकर हे शिवे! हमारा त्राण करो, मैं आपके सिवा अन्य न ही बोलता हूँ, न सुनता हूँ, न ध्यान ही करता हूँ॥७॥

न भजामि पूजयामि देवि! त्वं न चाश्रयामि।
त्यक्त्वा त्वदीयचरणाम्बुजमादरेण॥८॥

हमने न अन्य का भजन ही किया, न पूजन ही किया, न किसी का आश्रय ही किया, हे देवि! तुम्हारे चरणकमल के अलावा किसी का आश्रय नहीं लिया है॥८॥

भक्त्या यद्यर्चनं कुर्मः देवि! कृपया मे प्रसीद।
मां त्राहि देवि कृपया मयि देहि सिद्धिम्॥९॥

हे देवि! भक्तिपूर्वक जो अर्चन किया उससे प्रसन्न होकर हमारा त्राण करो और हमें सिद्धि प्रदान करो॥९॥

अज्ञानाद् वा प्रमादाद् वा वैकल्यात् साधनस्य च।
यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥१०॥

अज्ञान वश या प्रमाद वश या विकलता वश हमने जो साधना की, उसमें कोई कमी या अधिकता हो गयी हो, उसको क्षमा कर वर प्रदान करो॥१०॥

द्रव्यहीनं क्रियाहीनं श्रद्धामन्त्रविवर्जितम्।
तत् सर्वं कृपया देवि क्षमस्व त्वं दयानिधे॥११॥

द्रव्य से हीन, क्रिया से हीन, श्रद्धा और मन्त्र के बिना ही किया गया कार्य क्षमा करके हमारे ऊपर कृपा प्रदान करो॥११॥

यन्मया क्रियते पापं तन्महत् स्वल्पमेव वा।
तत् सर्वं च जगद्धात्रि क्षन्तव्यमयमञ्जलिः॥१२॥

हमारे द्वारा किये गये पापों को अल्प समझ करके उन सबको क्षमा करके हे जगद्धात्रि! हमारी इस पुष्पाञ्जलि को ग्रहण करके हमारी कामनाओं का पूर्ण कर दो॥१२॥

परकृत्यानिवारिर्णाप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः परिपूर्णम्

●

अन्यों के द्वारा ईर्ष्या वस किये जानेवाले कृत्या को समाप्त करनेवाली भगवती प्रत्यङ्गिरा का यह प्रयोग, कई बार प्रयोग करके सङ्कल्पित कार्य की पूर्ति में सफलता पायी गयी है तथा कई बार सुहृद् जनों के द्वारा परेशान लोगों के लिए प्रयोग करके सफलता प्राप्त करते देखा गया है। यह प्रयोग नितान्त सरल और सहज है, इसको सम्पादित कराना भी अत्यन्त सरल है और सफलता भी निश्चित रूप से प्राप्त होते देखी गयी है। इस विधि में सात्विक होना अनिवार्य है, ईर्ष्या और किसी के अहित की भावना से इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

परिशिष्टभागः ३

॥ श्रीः॥

शत्रूनिषूदिनिप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः

नित्य क्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि मातृका न्यासादि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकल अशुभ-दृष्टिसमस्तदुःखञ्चनिवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वक त्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृतं सर्वेषामन्यानांकृत यन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृत समस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मत्गृहेवास्त्वादिदोषानां सद्यःसमाप्ति-पूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्य वंशाभिवृद्धि समस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामना-परिपूर्तिपूर्वकसकलाभिष्टसिद्ध्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रपुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

वैदिकविधि से स्थापनपूजन करके मातृका न्यासादि के बाद जप करे।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशत्रुनिषूदिनिप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छन्दः

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताः ह्रूँ बीजं ह्रीँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

विनियोग करने के बाद न्यासादि करे।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि।

ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ हुँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—	**कराङ्गन्यासः—**
ॐ ह्राँ हृदयाय नमः।	**ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा।	**ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।**
ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्।	**ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रैँ कवचाय हुम्।	**ॐ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्।	**ॐ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**
ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।	**ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

ऋष्यादि षडङ्गन्यास करने के बाद मन्त्रपदन्यास करे।

मन्त्रपदन्यासः—

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीँ नमः ललाटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः नमः भ्रूमध्ये न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ कृष्णवाससे नमः दक्षनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ शतसाहस्रहिंसिनि नमः वामनेत्रे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सहस्रवदने नमः दक्षकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ महाबले नमः वामकर्णे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ अपराजिते नमः दक्षनासायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रत्यङ्गिरे नमः वामनासायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि नमः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ परमन्त्रोत्सादिनी नमः दक्षभुजे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वभूतदमनि नमः वामभुजे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वदेवान् नमः दक्षहस्ते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ बन्ध नमः वामहस्ते न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ बन्ध नमः दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वविघ्नान् नमः पृष्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ छिन्धि दक्षोरौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ छिन्धि वामोरौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षोभय दक्षजानौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ क्षोभय वामजानौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ परयन्त्राणि दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्फोटय वामजङ्घायां न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ स्फोटय दक्षगुल्फे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ सर्वशृङ्खलान् वामगुल्फे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रोटय दक्षपादे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ त्रोटय वामपादे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ज्वलज्ज्वालाजिह्वे नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ करालवदने उदरे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ प्रत्यङ्गिरे हृदि न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ ह्रीँ ललाटे न्यस्यामि।

ॐ ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

मूलमन्त्रव्यापकन्यासः—

ॐ ह्रीँ नमः कृष्णवाससे शतसहस्त्रहिंसिनि सहस्त्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः॥

जपविधिः

मूलमन्त्रप्राणायामः—मूलमन्त्र से पूरक कुम्भक रेचन पूर्वक प्राणायाम करे।

मन्त्रकुल्लुकाः—ॐ क्रीँ हूँ स्त्रीँ ह्रीँ ह्रीँ फट्। सिर पर दस बार जप करे।

मन्त्रसेतुः—ॐ । ॐकार का हृदय पर दस बार न्यास करे।

मन्त्रमहासेतुः—क्रौं । बीज का कण्ठस्थित विशुद्ध चक्र पर दशबार न्यास करे।

मन्त्रनिर्वाणम्—ॐ अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ बँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ ह्रीँ नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्र वदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः अँ आँ इँ ईँ उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृँ लॄँ एँ ऐँ ओँ औँ अँ अः कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ ञँ टँ ठँ डँ ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ वँ भँ मँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ क्षँ ॐ। दस बार सिर पर न्यास करे।

मुखशोधम्—क्रौं क्रौं क्रौं ॐ क्रौं क्रौं क्रौं। दस बार वाचिक जप करे।

प्राणयोगः—ह्रीँ ॐ ह्रीँ नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्व-देवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः ह्रीँ। श्वासप्रश्वास के साथ दस बार जप करे।

उद्दीपनम्—ॐ ॐ ह्रीँ नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्व-देवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः ॐ। मन्त्र को ॐ से सम्पुटित करके हृदय पर दस बार जप करे।

मालाप्रार्थना—

ॐ मां माले माहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ ऐँ ह्रीँ श्रीँ अक्षमालिकायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

माला पूजन कर दक्षिणमध्यमाङ्गुलि के मध्यपर्व पर स्थापित कर, हाथ को हृदय प्रदेश में स्थापित कर, प्रत्येक गुटिका को सरकाते हुए, सुमेरु अलङ्घनपूर्वक, हृत्पद्म में प्रत्यङ्गिरादेवता तथा सहस्रार में श्रीगुरु का ध्यान करते हुए, जिह्वा में मन्त्र को दीपशिखावत् भावना करते हुए, सहस्रार से अमृतस्राव पूर्वक अमृतपान करते हुए दस सहस्र जप करे।

ध्यानम्—

सिंहारूढाऽतिकृष्णाङ्गी ज्वालावक्त्रां भयङ्कराम्।
शूलखड्गकरां वस्त्रे दधतीं नूतने भजे॥

ध्यान करने के बाद पूर्व निर्दिष्ट विधि से मानसोपचार पूजन करे।

मूलमन्त्रः—

ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्रणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः॥

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करे।

**ॐ त्वं माले सर्वदेवानां पीतिदा शुभदाभव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥**

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचन पूर्वक प्राणायामादि उत्तर न्यास करके श्रीप्रत्यङ्गिरादेवी के वर्म, पटल, पद्धति, स्तोत्र तथा सहस्रनाम का पाठ करे।

पटलस्तोत्रम्

अथ प्रत्यङ्गिरामालामन्त्रः सिद्धः प्रकीर्त्यते।

अब प्रत्यङ्गिरा माला मन्त्र कहता हूँ—

**ॐ ह्रीं नमः कृष्णवासे शतेसहस्रहिंसिनीम्॥१॥
देवि! सहस्रवदने महाबलेऽपराजिते।
प्रत्यङ्गिरे पदसैन्य-परकर्म पदं वदेत्॥२॥
विध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनीति ततो वदेत्।
सर्वभूतेति दमनि सर्वदेवान् वदेत् ततः॥३॥
बन्धयुग्मं सर्वविद्या द्विछिन्धि क्षोभयद्वयम्।
परयन्त्राणीति वदेत् स्फोटय द्वितयं ततः॥४॥
सर्वशृङ्खलाँस्त्रोटय त्रोटय ज्वल चोच्चरेत्।
ज्वालाजिह्वे करालेति वदने प्रत्यमुच्चरेत्॥५॥
गिरे ह्रीँ नम इत्येषा सपादशतवर्णवान्।**

ॐ ह्रीँ नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध

बन्ध सर्वविद्याश्छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीँ नमः॥ यही १२५ वर्णो वाला माला मन्त्र कहा गया है, जिसके प्रयोग से साधक अपने को सुखी कर लेता है।

ब्रह्माऽनुष्टुब्मुनिश्छन्दो देविप्रत्यङ्गिरा मता॥६॥

इस मन्त्र के ब्रह्मा ऋषि, अनुष्टुप्छन्द, तथा देवता प्रत्यङ्गिरा है॥६॥

बीजशक्तिं तारमाये कृत्यानाशेति योजनम्।
षडङ्गानां विधिश्चात्र षड्दीर्घान्वितमायया॥७॥

तार (ॐ) बीज है, माया (ह्रीँ) शक्ति, काम (क्लीँ) कीलक है, इस मन्त्र का समस्त कृत्या के विनाश में योजन करना चाहिये, षड्दीर्घ से अन्वित माया बीज से षडङ्ग न्यास करना चाहिये॥७॥

ध्यानम्

सिंहारूढाऽतिकृष्णाङ्गीं ज्वालावक्त्रां भयङ्कराम्।
शूलखड्गकरां वस्त्रे दधतीं नूतने भजे॥८॥

सिंह पर आरुढ़ , अत्यन्त काले मुख से ज्वाला उगलने के कारण महाभयानक, हाथों में त्रिशूल तथा खड्ग लिये, नूतन वस्त्र धारण किये हुए प्रत्यङ्गिरा देवी का भजन करता हूँ॥८॥

पुरश्चरणम्

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्त्रं तिलराजिकाः।
हुत्वा सिद्धः मनुर्मत्रीः प्रयोगेषु शतंजपेत्॥९॥

इस मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये तथा एक हजार राई तथा कालातिल मिलाकर प्रत्यङ्गिरा प्रसन्नता के लिए हवन करना चाहिये। उसके बाद काम्यप्रयोगों में केवल एक सौ की संख्या में जप करे॥९॥

ग्रहभूताकारिष्टं सिञ्चेन्मन्त्रं जपन् जलैः।
विनाशयेत् परकृतं यन्त्र-मन्त्रादिसाधनम्॥१०॥

ग्रहभूतादिजन्य अरिष्ट निवारण के लिए मन्त्र का जप करते हुए रोगी पर जल छिड़कते हुए मार्जन करना चाहिये, इस मन्त्र का जप करने वाला भक्त दुष्टशत्रुओं के द्वारा समस्त मन्त्रतन्त्रयन्त्र इत्यादि समस्त कुप्रयोगों को नष्ट कर देता है॥१०॥

शत्रूनिषूदिनिप्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः परिपूर्णः

●

परिशिष्टभागः ४

॥ श्रीः॥

अथर्ववेदीयसिद्धप्रत्यङ्गिराप्रयोगः

नित्यक्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि मातृका न्यासादि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा-राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि-सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्ठद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकलअशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च-निवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वक त्रिविध-तापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानांकृत यन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृत समस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहेवास्त्वादिदोषानां सद्यःसमाप्तिपूर्वकं दीर्घ-आयुः-आरोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्ति पूर्वक-सकलाभिष्टसिद्ध्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं वैदिकसिद्धप्रत्यङ्गिरामन्त्र पुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य श्रीअङ्गिराऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताः क्रीँ बीजं ह्रीँ शक्तिः हूँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ अङ्गिराऋषये नमः शिरसि।

ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ क्रीँ बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ हूँ कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—

ॐ क्राँ हृदयाय नमः।

ॐ क्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ क्रूँ शिखायै वषट्।

ॐ क्रैँ कवचाय हुम्।

ॐ क्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यासः—

ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्रीँ तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ क्रूँ मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ क्रैँ अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ क्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्

कृष्णवर्णां वृहद्रूपां रक्तकुञ्चिनमूर्धजाम्।
शिरःकपालमालाञ्च विकेर्शीं घूर्णिताननाम्॥१॥
रक्तनेत्रामतिक्रुद्धां लम्बजिह्वामधोमुखीम्।
दंष्ट्रकरालवदनां नेत्रभ्रुकुटितेक्षणाम्॥२॥
ऊर्ध्वदक्षिणहस्तेन बिभ्रतीञ्च परश्वधम्।
अधोदक्षिणहस्तेन विभ्राणां शूलमूर्ध्वगाम्॥३॥
तथोर्ध्ववामहस्तेन धारयन्तीं तथाङ्कुशम्।
अधोवामकरेणाथ विभ्राणां पाशमेव च॥४॥

ध्यान करने के बाद पूर्व निर्दिष्ट विधि से मानसोपचार पूजन कर पाठ जप करे।

मूलमालामहामन्त्रः

ॐ नमः कृष्णवर्ण शोभिते सकलसेवक जनोपद्रवकारक दुष्टग्रहगजघण्टासङ्कट-संहारिणि॥ अनेकसिंहकोटिचारिणि कालान्तकि नमोऽस्तु ते॥

ॐ दुर्गे सहस्त्रवदने अष्टादशभुजलताभूषिते महाबलपराक्रमे अत्यद्भुतेऽपराजिते देवि प्रत्यङ्गिरे सर्वातिशायिनि परकर्मविध्वंसिनि परयन्त्रमन्त्रतन्त्रप्रचूर्णादि प्रयोगकृत-

वशीकरणस्तम्भनजृम्भणादिदोषनिचयोच्छेदिनि सर्वशत्रूच्चाटिनि मारिणि मोहिनि वशीकारिणि स्तम्भिनि जृम्भिणियाकर्षिण्यन्धकारिणि सर्वदेवताग्रहयोगग्रहयोगिनी ग्रहदानवग्रहदैत्यग्रहराक्षसग्रहब्रह्मराक्षसग्रहसिद्धग्रहयक्षग्रहगुह्यकग्रहविद्याधरग्रह-किन्नरग्रहगन्धर्वग्रहअप्सरोग्रहभूतग्रहप्रेतग्रहपिशाचग्रहकूष्माण्डग्रहगजादिकग्रहमातृग्रह-पितृग्रहवेतालग्रहराजग्रहचौरग्रहगात्रग्रहास्वदेवताग्रहगोत्रदेवताग्रहाधिग्रहविद्याग्रहरतिग्रह-छायाग्रहशल्यग्रहसर्पग्रहविशल्यग्रहकालग्रहसर्वदोषग्रहविदारिणि सर्वदुष्टभक्षिणि सर्वपापनिषूदिनि सर्वयन्त्रस्फोटिनि सर्वश्रृंखलात्रोटिनि सर्वमुद्राविदारिणि ज्वालाजिह्वे विकारालवक्त्रेरौद्रमूर्तेदेवि प्रत्यङ्गिरे सर्वं देहि यशोदेहि पुत्रान् देहि आरोग्यं देहि भुक्तिमुक्त्यादिकंदेहि सर्वसिद्धिंदेहि मम सपरिवारं रक्ष रक्ष पूजाजपहोमध्यानार्चनादिकं कृतं न्यूनमधिकं वा परिपूर्णं कुरु कुरु अभिमुखी भव भव क्षमस्वापराधम्॥

अनेन महामन्त्र पाठाख्येन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

स्तोत्रपद्धतिः

ॐ नमः प्रत्यङ्गिरे देवि! प्रतिकूलान्विघातिनि।
नमः सर्वगते शान्ते परचक्रविमर्दिनि॥१॥
नमः सर्वप्रदे सौम्ये परबन्धविदारिणि।
नमो जगत्त्रयाधारे परमन्त्रविदारिणि॥२॥
नमस्ते चण्डिके चण्डि महामहिषघातिनि।
नमो ब्रह्मणि देवेशि रक्तबीजनिपातिनि॥३॥
नमः कुमारि वैकुण्ठि दुष्टदर्पनिषूदिनि।
नमो वाराहि चेन्द्राणि परे निर्वाणदायिनि॥४॥
नमस्ते देवि चामुण्डे चण्डमुण्डविदारिणि।
नमो मातर्महालक्ष्मी संसारार्णवतारिणि॥५॥
निशुम्भदैत्यसंहारि कालान्तिके नमोऽस्तु ते।
एवं स्तुता महादेवि शिवेन परमात्मना॥६॥

ॐ नमः कृष्णवर्ण शोभिते सकलसेवक जनोपद्रवकारक दुष्टग्रहगजघण्टासङ्घट्ट संहारिणि॥ अनेकसिंहकोटिचारिणि कालान्तिके नमोऽस्तु ते॥

ॐ दुर्गे सहस्त्रवदने अष्टादशभुजलताभूषिते महाबलपराक्रमे अत्यद्भुतेऽपराजिते देवि प्रत्यङ्गिरे सर्वातिशायिनि परकर्मविध्वंसिनि परयन्त्रमन्त्रतन्त्रप्रचूर्णादि प्रयोगकृत-वशीकरणस्तम्भनजृम्भणादिदोषनिचयोच्छेदिनि सर्वशत्रूच्चाटिनि मारिणि मोहिनि वशीकारिणि स्तम्भिनि जृम्भिणियाकर्षिण्यन्धकारिणि सर्वदेवताग्रहयोगग्रहयोगिनी ग्रहदानवग्रहदैत्यग्रहराक्षसग्रहब्रह्मराक्षसग्रहसिद्धग्रहयक्षग्रहगुह्यकग्रहविद्याधरग्रह-किन्नरग्रहगन्धर्वग्रहअप्सरोग्रहभूतग्रहप्रेतग्रहपिशाचग्रहकूष्माण्डग्रहगजादिकग्रहमातृग्रह-

पितृग्रहवेतालग्रहराजग्रहचौरग्रहगात्रग्रहास्वदेवताग्रहगोत्रदेवताग्रहाधिग्रहविद्याग्रहरतिग्रह-छायाग्रहशल्यग्रहसर्पग्रहविशल्यग्रहकालग्रहसर्वदोषग्रहविदारिणि सर्वदुष्टभक्षिणि सर्वपापनिषूदिनि सर्वयन्त्रस्फोटिनि सर्वशृंखलात्रोटिनि सर्वमुद्राविदारिणि ज्वालाजिह्वे विकारालवक्त्रे रौद्रमूर्ते देवि प्रत्यङ्गिरे सर्वं देहि यशो देहि पुत्रान् देहि आरोग्यं देहि भुक्तिमुक्त्यादिकं देहि सर्वसिद्धिं देहि मम सपरिवारं रक्ष रक्ष पूजाजपहोम-ध्यानार्चनादिकं कृतं न्यूनमधिकं वा परिपूर्णं कुरु कुरु अभिमुखी भव भव क्षमस्वापराधम्॥

उवाचेदं प्रहृष्टाङ्गी शृणुष्व परमेश्वर।
एतत्प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रं ये पठन्ति द्विजोत्तमाः॥७॥
शृवन्तः साधयन्तश्च तेषां सिद्धिप्रदा भवेत्।
श्रीश्च कुब्जी महाकुब्जी कालिकागुह्यकालिका॥८॥
त्रिपुरा त्वरिता नित्या त्रैलोक्यविजया जया।
जिताऽपराजिता देवी जयन्ती भद्रकालिका॥९॥
सिद्धलक्ष्मीर्महालक्ष्मीः कालरात्रिर्नमोऽस्तु ते।
कालीकरालविक्रान्ते कालिके पापहारिणि॥१०॥
विकरालमुखे देवि ज्वालामुखि नमोऽस्तु ते।
एवं पञ्चपुष्पाञ्जलयः प्रत्यङ्गिरायै निवेदयेत्॥११॥

पुनः हृदयादि न्यास करके मानसोपचार पूजन करके दुर्गागायत्री दशबार जप करे।

ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥

इदं प्रत्यङ्गिरास्तोत्रं यः पठेत् नियतः शुचिः।
तस्य सर्वार्थसिद्धिस्यान्नात्रकार्या विचारणा॥१२॥
शत्रवो नाशमायान्ति महानैश्वर्यवान् भवेत्।
इदं रहस्यं परमं नाख्येयं यस्य कस्यचित्॥१३॥
सर्वपापहरं पुण्यं सद्यः प्रत्ययकारकम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्॥१४॥

फलश्रुतिः

मन्त्रसूक्तगणैः कार्यं राजकर्मोभिचारकम्।
असाध्यमपि यत्किञ्चित्साधयेत् त्रिविधं कृतम्॥१५॥
एकं द्वित्रीणि वा कुर्यात् बहुभिर्बहुधा कृतम्।
असकृत् क्रियमाणं हि दुःसाध्यमपि साधयेत्॥१६॥

अथर्ववेदीयसिद्धप्रत्यङ्गिराप्रयोगः परिपूर्णः

परिशिष्टभागः ५

।। श्रीः।।

सिद्धप्रत्यङ्गिरासहस्राक्षरमन्त्रप्रयोगः

नित्यक्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि मातृका न्यासादि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि-सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्टद्वादशस्थानस्थित समस्तग्रहजन्यसकल अशुभदृष्टिं समस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादि-पीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वक त्रिविधतापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृतं सर्वेषामन्यानांकृतयन्त्रमन्त्र-तन्त्रादिकृतसमस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहेवास्त्वादिदोषानां सद्यःसमाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यवंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्ति-पूर्वकसकलाभिष्टसिद्ध्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं प्रत्यङ्गिरासहस्राक्षरीमन्त्रस्य पुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

वैदिकविधि से स्थापन पूजन करने के बाद न्यासादि करने के बाद जप करे।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्राक्षरीमन्त्रस्य श्रीभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः

श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता: क्रौँ बीजं ह्रीँ शक्ति: हूँ कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थे ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:—

ॐ भैरवऋषये नम: शिरसि।

ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नम: मुखे।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नम: हृदि।

ॐ क्रौँ बीजाय नम: गुह्ये।

ॐ ह्रीँ शक्तये नम: पादयो:।

ॐ हूँ कीलकाय नम: नाभौ।

ॐ श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताभ्यो नम: सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यास:—

ॐ क्राँ हृदयाय नम:।

ॐ क्रीँ शिरसे स्वाहा।

ॐ क्रूँ शिखायै वषट्।

ॐ क्रैँ कवचाय हुम्।

ॐ क्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ क्र: अस्त्राय फट्।

कराङ्गन्यास:—

ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नम:।

ॐ क्रीँ तर्जनीभ्यां नम:।

ॐ क्रूँ मध्यमाभ्यां नम:।

ॐ क्रैँ अनामिकाभ्यां नम:।

ॐ क्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नम:।

ॐ क्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

ध्यानम्

सिंहारूढां कृष्णवस्त्रां भीषणां नीलविग्रहाम्।
ज्वालामुखीं शूलकरां ग्रसितां रिपुमञ्जसाम्॥१॥
व्याघ्रचर्माम्बरधरां सितशार्दूलवाहिनीम्।
विकरालमुखीं तिग्मां द्रंष्ट्रां कृच्छ्धातिभूषणाम्॥२॥
दधतीं धुरिकावज्रशूलतोमरकाङ्करै:।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गीं नीलकुञ्चितकुन्तलाम्॥३॥
भयङ्करीति दुष्टानां भक्तानामभयङ्करीम्।
चिन्तनीयां सदैवारीन् चेतसा परमेश्वरीम्॥४॥

ध्यान करने के बाद पूर्व निर्दिष्ट विधि से मानसोपचार पूजन करे।

सहस्राक्षरीमूलमन्त्र:

ॐ नमश्चामुण्डायै अभयवरकपालमालाधरे गृद्ध्रोलूककङ्कपरिवारे श्मशानप्रिये नररुधिरमांसप्रिया भोजने सिद्धविद्याधरवन्दितचरणे ब्रह्मसूर्यशशियमवरुणकुबेर-

विष्णुपूजिते रुद्रकोटिनिर्गतशरीरे द्वादशादित्यप्रभे एहि चामुण्डास्वरूपिण्यस्मिन्मण्डले प्रविश शीघ्रं दक्षिणां दिशमसिभिः पूरय पूरय धुनु धुनु विधुन विधुन कट्टु कट्टु चूर्णय चूर्णय आवेशयावेशय प्रवेशय स्फोटय स्फोटय त्रोटय त्रोटय धियं रोधय रोधय पातालं स्तम्भय स्तम्भय परमुद्रां स्फोटय स्फोटय अन्यभूतानि जंभय ब्रह्मराक्षसानुत्सादयोत्सादय भूतप्रेतपिशाचान्मोचय मोचय वृक्षान् संक्रामय संक्रामय नदीं चालय चालय अग्निं स्तम्भय स्तम्भय नदाङ्कीलय कीलय अङ्गारान् वृक्षस्योपरि पातय पातय सीलिवमभितोलूखले पीडय पीडय नदीं परिवर्तय परिवर्तय पात्रं पूरय पूरय भूतं भव्यं भविष्यं यत् किञ्चित् कथय कथय हन हन दह दह पच पच मथ मथ प्रमथ प्रमथ कट कट ग्रस ग्रस विद्रावय विद्रावय उत्सादय उत्सादय विष्णुचक्रेण रुद्रत्रिशूलेन इन्द्रवज्रेण वरुणपाशेन यमदण्डेन गरुडपंखपातेन विषं निर्विषं कुरु कुरु ज्वरं नाशय नाशय विरोधीं स्फोटय स्फोटय यन्त्रं भञ्जय भञ्जय सत्यं साधय साधय सिद्धिं प्रयच्छ सर्वसत्त्वानि वशं कुरु कुरु पातय पातय पश्चिमदिशं स्तम्भय स्तम्भय दक्षिणादिशं रोधय रोधय ज्वालिनि जृम्भाणि स्तम्भिनि भृकुटी विचित्रहारमण्डलविभूषितनानानागवासुकीकृतंहारभूषणशरीरे नमो लेलिहानि विकृत-मेखले मरुहृच्छरीरे चन्द्रर्काभा प्रभञ्जनीये विद्युत्स्फटिकसंकाशाट्टहासिनीये वेतालप्रिये क्रींकारहुङ्कार जृम्भणीये मुसलपट्टीशतोमरछुरिकाविग्रहे सहस्त्रबाहुधारिणी ॐकारहृदये विष्णुभावशरीरे सर्वदुष्टान् विनाशय विनाशय विदारय विदारय योजनशतं रक्ष रक्ष नगराणां निर्विषं कुरु कुरु पवनान्नाशय नाशय भयान्मोचय मोचय वृक्षाश्चूर्णय चूर्णय शस्त्रमस्त्रं नष्टं कुरु कुरु सेनां त्रोटय त्रोटय गोभक्षकाणां तुण्डं बन्धं कुरु कुरु ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ हः एकविंशति जपादाग्निविधारयोर्ध्वप्रलम्बकेशे नीलाम्बरे सितशार्दूलप्रिये महाआवर्तबले भैरवरूपेण हर हर प्रयच्छ प्रयच्छ रुद्ररूपेण यत्कालदृष्टं तत्सर्वमुल्कापयोल्कापयकालकूटं विषं निर्विषं कुरु कुरु ज्वरं नाशय नाशय एकाहिक्यं द्व्याहिक्यं त्रयाहिक्यं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सन्निपातं सततज्वरं तात्क्षणिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वा गुग्गुलुधूपेनाष्टाभिमन्त्रितं तेन ज्वरं नाशय नाशय गौरसर्षपाभिमन्त्रितं तेन कुमारिकं पिण्डं बध्नामि अन्तरिक्षगतं बध्नामि श्रोत्रं बध्नामि पातालं बध्नामि-आकर्षयब्रह्मक्षत्रियवैश्यशूद्राङ्गनानांचाण्डालाष्टप्रकृतीनांभस्मोद्धूलितशरीरे नमः ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ हः ऐँ ह्रीँ क्लीँ नमः॥

फलश्रुतिः

मृतवत्सा तु या नारी च गर्भे न मुञ्चति।
बालो रोदिति यस्यास्ति स्तनपानं पिबेन्न चेत्॥१॥

जिस नारी को गर्भ नहीं रुकता है अथवा जो नारी मृतवत्सा है; इस उपासना से उनके घर में बालक रुदन करता है अर्थात् वह पुत्रवान् हो जाती है॥१॥

सर्वासु ग्रहबाधाषु गुगुलं सप्तमन्त्रितम्।
विधाय धूपयेत्तेन सर्वबाधा प्रशाम्यति॥२॥

सभी ग्रहबाधाओं में गुगुल को सात बार अभिमन्त्रित करके धूप देने से सभी बाधायें समाप्त हो जाती हैं।

युद्धादौ मन्त्रयेच्छत्रं तेनासौ विजयी भवेत्।
अरिष्टशान्तये तोयमष्टवाराभिमन्त्रितम्॥३॥

युद्ध के प्रारम्भ में इस मन्त्र से आच्छादित करने से विजय प्राप्त होती है। अरिष्ट की शान्ति के लिए जल को आठ बार अभिमन्त्रित करके पिलाने से दोष समाप्त होता है।

प्राशयेदभिषिञ्चेद्वा यथा सूर्योदये तमः।
डाकिनी भूतग्रहादौ जाप्या इति सहस्राक्षरी॥४॥

सूर्योदय से पूर्व आठ बार अभिमन्त्रित किये हुए जल को पीने से या अभिसिञ्चन करने से डाकिन्यादि भूत-ग्रहादि की बाधा इस सहस्राक्षरी प्रयोग से समाप्त हो जाते हैं।

सिद्धप्रत्यङ्गिरासहस्राक्षरमन्त्रप्रयोग: परिपूर्ण:

●

प्रत्यङ्गिरा एक अनुभव—हमारे एक बड़े ही नजदीकी साधक ने एक समय उनके ऊपर विपत्ति आने पर इस प्रयोग को अपने विपत्तियों से छुटकारा पाने के लिए प्रयोग किया। फलस्वरूप उनकी विपत्ति सहज ही समाप्त हो गयी और वे सुखी हो गये, उनकी प्रत्यङ्गिरा के इस प्रयोग पर अत्यधिक श्रद्धा है, तब से इसका प्रयोग वे कई बार कर चुके हैं और अन्य लोगों को भी आपत्ति-विपत्ति आने पर इस प्रयोग को करने के लिए प्रेरित करते हैं, अधिकतर वे सफल ही होते हैं।

यह प्रयोग करने में अत्यन्त ही सरल एवं छोटा है तथा सफलता प्रदान करने वाला है। पाठकगण इस प्रयोग को सीख कर अपनी तथा समाज के अन्य जनों की विपत्तियों के निवारण के लिए प्रयोग कर सकते हैं, अवश्यकता केवल इसे ठीक से सीखने जानने की है। आशा है जनसमान्य इसका लाभ उठायेंगे। शुभं भवतु।

।। श्रीः ।।

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिराविधिः

नित्यक्रिया सन्ध्या वन्दनादि के पश्चात् शरीरशुद्धि के लिए भूतशुद्धि मातृका न्यासादि करने के बाद हाथ में जलादि पदार्थ ग्रहण करके सङ्कल्प करे।

सङ्कल्पः—ॐ विष्णुः-विष्णुः-विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकंटकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे पुण्यपवित्रमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक राशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथाराशि-स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मा नामाऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य च दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यादि-सकलदोषपरिहारार्थं मम जन्मकुण्डल्यां, चन्द्रकुण्डल्यां, भावकुण्डल्यां ये केचन चतुर्थाष्टमषष्टद्वादशस्थानस्थितसमस्तग्रहजन्यसकलअशुभदृष्टिसमस्तदुःखञ्च निवृत्तिपूर्वकं सकलानिष्टयोगेन शरीरे व्यवहारे च उत्पन्नानां उत्पद्यमानानां च समस्तविघ्नानां दुःखानां शरीरस्थितकष्टानां ज्वरादिपीड़ादिनां निवृत्तिपूर्वक त्रिविध-तापोपशमनार्थं भूतप्रेतपिशाचडाकिन्यादिकृत सर्वेषामन्यानांकृतं यन्त्रमन्त्रतन्त्रादिकृत समस्ताभिचारादिनाञ्च अस्मद् गृहेवास्त्वादिदोषानां सद्यःसमाप्तिपूर्वकं दीर्घायुरारोग्य-ऐश्वर्य वंशाभिवृद्धिसमस्तसुखसौभाग्यादिप्राप्त्यर्थं सकलकामनापरिपूर्तिपूर्वक-सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीप्रत्यङ्गिरादेवताप्रीत्यर्थं प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

वैदिकविधि से स्थापन-पूजन करने के बाद न्यासादि करके जप करे।

विनियोगः—अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीप्रत्यङ्गिरा-

देवता ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं श्रीप्रत्यङ्गिराप्रीत्यर्थे परकृत्यनिवारणे ममाखिलाप्तये च न्यासे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मणऋषये नमः शिरसि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनुष्टप्छन्दसे नमः मुखे।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऐं बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः हृदयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूमिव शिखायै वषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां ब्रह्मणा कवचाय हुम्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट्।

करन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां कृत्यां तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूमिव मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां ब्रह्मणा अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्मः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

पदन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां शिरसि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कल्पयन्ति भ्रूमध्ये।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नः मुखे।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अरयः कण्ठे।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां दक्षिणवाहौ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृत्यां वामवाहौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूं हृदि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इव नाभौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां दक्षिणोरौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मणा वामोरौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्म: दक्षिणजानौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक् वामजानौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्तारं दक्षिणपादे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋच्छतु वामपादे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे।

मन्त्रवर्णन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां शिरसि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क ललाटे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्प दक्षनेत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं य वामनेत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं न्ति दक्षनासायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नः वामनासायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ मुखे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र कण्ठे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यः दक्षभुजे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रू वामभुजे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रां हृदये।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृ नाभौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्यां दक्षपार्श्वे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व वामपार्श्वे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दक्षकट्याम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इ वामकट्याम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व दक्षोरौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां वामोरौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्र दक्षजानौ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्य वामजानौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं णा दक्षजङ्घायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ वामजङ्घायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प दक्षगुल्फौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नि वामगुल्फौ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र्णु दक्षपादे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्मः वामपादे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्र वामपादात्कट्यन्तम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्य दक्षपादात्कट्यन्तम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्क वामकट्यादिहृदयान्तम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र्त्ता दक्षकट्यादिहृदयान्तम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रं हृदयाद्वामकराङ्गुल्यन्तं।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋ हृदयाद्दक्षकराङ्गुल्यन्तं।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ ग्रीवायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुः शिरसि।

ध्यानम्—

आशाम्बरामुक्तकुचाघनच्छविर्ध्येयासचर्मासिकराहिभूषणा ।
दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिताहितान्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता॥

ध्यान करके प्रत्यङ्गिरा संस्कार किये हुए माला से एक अयुत (दशहजार) जप करने के बाद जप करके महादेवी को समर्पित करके विधि पूर्वक अग्नि स्थापित करके एक सहस्र हवन करे।

मूलमन्त्रः—

ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव तां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमिच्छतु ह्रीं ॐ॥ दश हजार जप करके दशांश हवन करे।

मालाविसर्जनम्

जप के पश्चात् माला को सिर पर रखकर माला की प्रार्थना पूर्वक विसर्जन करे अर्थात् मालाधार पर रखे।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

ॐ ह्रीँ सिद्ध्यै नमः। सिर से माला को हाथ में लेकर।

माला का पुनः पूजन करके मालाधार पर माला को स्थापित करके मूल मन्त्र से पूरक, कुम्भक, रेचन पूर्वक प्राणायामादि करके पुनः उत्तर न्यास करे।

जपाङ्गोत्तरन्यासः

हृदयादिन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः हृदयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूमिव शिखायै वषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां ब्रह्मणा कवचाय हूम्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट्।

करन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां कल्पयन्ति नोऽरयः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां कृत्यां तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूमिव मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां ब्रह्मणा अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्मः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु करतलकरपृष्टाभ्यां नमः।

पदन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां शिरसि न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कल्पयन्ति भ्रूमध्ये न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नः मुखे न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अरयः कण्ठे न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूरां दक्षिणबाहौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृत्यां वामबाहौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वधूं हृदि न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इव नाभौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां दक्षिणोरौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मणा वामोरौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अपनिर्णुद्मः दक्षिणजानौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यक् वामजानौ न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर्तारं दक्षिणपादे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋच्छतु वामपादे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्यङ्गिरायै नमः सर्वाङ्गे न्यस्यामि।

वर्णन्यासः—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यां शिरसि न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क ललाटे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ल्प दक्षनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं य वामनेत्रे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं न्ति दक्षनासायां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नः वामनासायां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ मुखे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र कण्ठे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यः दक्षभुजे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रू वामभुजे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रां हृदये न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कृ नाभौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्यां दक्षपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व वामपार्श्वे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं धूं दक्षकट्यां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इ वामकट्यां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं व दक्षोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तां वामोरौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ब्र दक्षजानौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्म वामजानौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं णा दक्षजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अ वामजङ्घायां न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प दक्षगुल्फौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नि वामगुल्फौ न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र्णु दक्षपादे न्यस्यामि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं द्यः वामपादे न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं प्र वामपादात्कट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं त्य दक्षपादात्कट्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्र वामकट्यादिहृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं र्त्ता दक्षकट्यादिहृदयान्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रं हृदयाद्वामकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऋ हृदयाद्दक्षकराङ्गुल्यन्तं न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ ग्रीवायां न्यस्यामि।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तुः शिरसि।

ध्यानम्—

आशाम्बरामुक्तकुचाघनच्छवि-
र्ध्येयासचर्मासिकराहिभूषणा।
दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिताहितान्वया,
प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता॥

समर्पणम्—

अनेन जपाख्येन श्रीप्रत्यङ्गिरादेवता प्रीयतां न मम।

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिरामन्त्रजपविधिः परिपूर्णः

●

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिरापद्धतिः

ॐ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव।
तां ब्रह्मणाऽपनिर्णद्मः प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु॥१॥

हमारे शत्रुओं के द्वारा जो क्रूर कृत्या का विधान किया गया हो, उसे हमारी इच्छा है कि ये प्रत्यङ्गिरा महाब्रह्मविद्या समाप्त करे॥१॥

ह्रीं मुन्याद्या विनियोगान्ता मालामन्त्रवदस्य तु।
षडङ्गानि च पादेन पादार्धैश्चरणेन च॥२॥

ह्रीं मनु तथा मालामन्त्र से विनियोगादि करके षड्दीर्घ से युक्त करके षडङ्गन्यासादि करे॥२॥

कुर्याद्वेदादिषड्दीर्घ हृल्लेखापुटितेन च।
शिरोभ्रूमध्यवदनगलबाहुद्वयेष्वथ ॥३॥

चार बार ह्रीं का षड्दीर्घ से पुटितयुक्त करके शिर, भ्रूमध्य, शरीर, गला, दोनों बाहुओं पर न्यास करना चाहिये॥३॥

ह्नाभिपार्श्वकट्यन्धु पादेषु पदशो न्यसेत्।
व्यापकान्तं समस्तेन कृत्वा ध्यायेन्महेश्वरीम्॥४॥

ह्रीँ से नाभि, कमर, दोनों पार्श्व, पैर और पैर के अन्य भागों पर न्यास कर व्यापक न्यास करना चाहिये॥४॥

खड्गचर्मधरां कृष्णां मुक्तकेशीं विवाससाम्।
दंष्ट्राकरालवदनां भीषणां सर्पभूषणाम्॥५॥

हाथों में खड्ग तथा चर्म धारण की हुई, दिगम्बर, खुले हुए बालोंवाली, बड़े-बड़े दाँतोंवाली, भीषण विकराल शरीरवाली, सर्प के आभूषणों से सुसज्जित तथा॥५॥

ग्रसन्तीं वैरिणो ध्यायेत् प्रेरितां शिवतेजसाम्।

शङ्कर के तेज से युक्त, शत्रुओं को खाती हुई प्रत्यङ्गिरा देवी का ध्यान करना चाहिये।

मेरुतन्त्रोक्तपुरश्चरणमाह—

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्री प्रयतमानसः॥६॥

देवी में मन लगाकर साधक दशहजार जप करे॥६॥

दशांशं जुहुयात् पश्चादपामार्गेध्मराजिकाम्।
सर्पिषा च समायुक्तां ततः सिद्धो भवेन्मनुः॥७॥

अपामार्ग की समीधा में तिल और राई को घी से सम्पृक्त कर दशांश हवन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है॥७॥

प्रयोगेषु जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं बुधः।
तावतैव तु होमेन परकृत्याविनश्यति॥८॥

प्रयोग काल में अष्टोत्तरशत जप करे, अष्टोत्तरशत ही हवन करे, अष्टोत्तरशत ही तर्पण करे तथा अष्टोत्तरशत ही मार्जन करे, तो परकृत्य समाप्त हो जाता है॥८॥

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिरा यन्त्रमाह—

त्रिकोणं च चतुःपत्रं वसुपत्रं ततः परम्।
कलापत्रं च भूबिम्बं चतुरस्त्रत्रयावृतम्॥९॥

त्रिकोण, चतुःपत्र, अष्टपत्र, षोडशपत्र तथा एक भूपुर से आवृत इस प्रत्यङ्गिरा का यन्त्र मेरुतन्त्र में बताया गया है॥९॥

मेरुतन्त्रोक्तप्रत्यङ्गिराविधिः परिपूर्णः

●

।। श्रीः ।।

साम्बसदाशिवपूजनम्

पुरश्चरण कर्म की परिसमाप्ति के बाद लघुरुद्राभिषेक श्रीसाम्बसदाशिव का पूजन नर्मदेश्वर शिवलिङ्ग पर अवश्य करे जिससे सद्यः पूर्णरूप से समस्त पाप नष्ट हो जाये तथा साधक को तुरन्त सिद्धि लाभ प्राप्त हो सके, भगवान् सदाशिव ही परमेष्ठि गुरु है बिना उनके कृपा के मन्त्रोपासना में सिद्धि तथा ध्रुवता नहीं मिलती है अतः साधक अपने हित की कामना से सदाशिव का पूजन अवश्य करे।

ध्यानम्—ॐ नमस्तेरुद्रमुन्न्यवऽउतोतइऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः॥

जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शङ्करः।
जयेश्वरः जयेशान जयसर्वज्ञ कामदः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनम्—ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकण्ठ जय धूर्जटेः।
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्—ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीः पुरुषञ्जगत्॥

जय पापहरानङ्ग निःसङ्गाभङ्गनाशकः।
जय त्वं त्रिदशाधार त्रिलोकेश त्रिलोचनः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—ॐ शिवेनवचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानःसर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽसत्॥

जय त्वं शिवशङ्कर त्रिलोकेश त्रिलोचनः।
देव त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभिरूर्जितः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्याङ्गाचमनम्—ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्योभिषक्॥ अहींश्च्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्चयातुधान्न्योधराचीः परासुव॥

शशिशेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रियः।
शिवात्मकः शिवः श्रीद सुहृच्छ्रीशतनो जय॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्याङ्गाचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

स्नानीयम्—ॐ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्क्षुश्श्रिताः सहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे॥

सर्व सर्वेश भूतेश गिरिश त्वं गिरीश्वरः।
जयोग्ररूप भीमेश भव भर्ग जय प्रभो॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

स्नानाङ्गाचमनीयम्—ॐ असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्ट्टोमृडयातिनः॥

जय दक्षाऽध्वरध्वंसिन्नन्धकध्वंसकारकः।
रुण्डमालिन् कपालिस्त्वं भुजङ्गनिजभूषणः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः स्नानाङ्गाचमनार्थे गङ्गोदकं समर्पयामि।

पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्व्यांपयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः॥ पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥

दिगम्बर दिशांनाथ व्योमकेश चितांपतेः।
जयाधार निराधार भस्माधार धराधरः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम्—ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्॥

देवदेवमहादेव देवतेशादिदैवतः।
वह्निवीर्य जयस्थाणो जयायोनिजसम्भवः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेश्रितोघृतम्वस्यधाम॥ अनुष्ष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंवृषभवक्षिहव्यम्॥

भवशर्वमहाकाल भस्माङ्ग सर्पभूषणः।
त्र्यम्बकस्थपते वाचांपते भो जगतांपतेः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्—ॐ मधुवाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः॥ माद्ध्वीर्न्नःसन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवᳬरजः॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्यः॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुनः॥

शिपिविष्टविरूपाक्षः जयलिङ्गवृषध्वजः।
नीललोहित पिङ्गाक्षः जय खट्वाङ्गमण्डनः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्—ॐ अपाᳬरसमुद्द्वयसᳬसूर्येसन्तᳬसमाहितम्॥ अपाᳬरसस्ययो रसस्तंवोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्त्वाजुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्राय त्वाजुष्टतमम्॥

कृत्तिवासअहिर्बुध्न्यः मृडानीशजटाम्बुभृत्।
जगद् भ्रातर्जगन्मातर्जगत्तातजगद्गुरोः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान—ॐ पञ्चनद्द्यःसरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः॥ सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्॥

पञ्चवक्त्रमहावक्त्रकालवक्त्रगजास्यभृत् ।
दशबाहोमहाबाहोमहावीर्यमहाबलः ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, मिलितपञ्चमृतस्नानान्ते शुद्धोदकं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शुद्धवालःसर्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाःश्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्रानभोरूपाःपार्ज्जन्न्याः॥

अघोरघोरवक्त्रत्वं सद्योजातं उमापते।
सदानन्दमहानन्द नन्दमूर्तेजयेश्वरः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रनिवेदनम्—ॐ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्क्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः॥

गङ्गाधरं शशिकिशोरधरं त्रिलोकी,
रक्षाधरं निखिलचन्द्रधरं त्रिधारम्।

भस्मावधूलनधरं गिरिराजकन्या,
दिव्यावलोकनधरं वरदं प्रपद्ये॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन॥ महेरणाय-चक्षसे॥

काशीश्वरं सकलभक्तजनार्तिहारं,
विश्वेश्वरं प्रणतपालन-भव्यभारम्।
रामेश्वरं विजयदान-विधानधीरं,
गौरीश्वरं वरदहस्तधरं नमामः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रनिवेदनम्—ॐ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्॥ याश्श्चतेहस्तऽ-इषवःपराताभगवोवप॥

गङ्गोत्तमाङ्गकलितं ललितं विशालं,
तं मङ्गलं गरलनीलगलं ललामम्।
श्रीमुण्डमाल्यवलयोज्ज्वलमञ्जुलीलं ,
लक्ष्मीश्वरार्चितपदाम्बुजमाभजामः ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्राङ्गाचमनीयजलम्—ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥

दारिद्र्यदुःखदहनं कमनं सुराणां,
दीनार्तिदावदहनं दमनं रिपूणाम्।
दानं श्रियां प्रणमनं भुवनाधिपानां,
मानं सतां वृषभवाहनमामनामः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतनिवेदनम्—ॐ विज्ज्यन्धनुःकपर्दिनोविशल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्यथाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः॥

श्रीकृष्णचन्द्रशरणं रमणं भवान्याः,
शाश्वत्प्रपन्नभरणं धरणं धरायाः।
संसारभारहरणं करुणं वरेण्यं,
सन्तापतापकरणं करवै शरण्यम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयजलम्—ॐ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ॥ आपो जनयथाचनः॥

चण्डापिचण्डिलवितुण्डधृताभिषेकं ,
श्रीकार्तिकेयकलनृत्यकलावलोकम् ।
नन्दीश्वरास्यवरवाद्यमहोत्सवाढ्यं ,
सोल्लासहासगिरिजेगिरिशन्तमीडे ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीताङ्गाचमनीयं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यसमर्पणम्—ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः॥ त्वामोषधेसोमोराजाविद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

श्रीमोहिनीनिविडरागभरोपगूढ ,
योगेश्वरेश्वरहृदम्बुजवासरासम् ।
सम्मोहनं गिरिसुताञ्चित चन्द्रचूड़ं
श्रीविश्वनाथमधिनाथमुर्पमिनित्यम् ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतसमर्पणम्—ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत॥ अस्तोषतस्वभानवोविप्प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥

सत्यं ब्रवीमि परलोहितं ब्रवीमि,
सारं ब्रवीम्युपनिषद् हृदयं ब्रवीमि।
संसारमुल्बणमसारमवाप्य जन्तोः,
सारोऽयमीश्वरपदाम्बुरुहस्य सेवा॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालासमर्पणम्—ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदद्ध्वंपुष्प्पवतीःप्प्रसूवरीः॥ अश्श्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्ष्णवः॥

ये नाऽर्चयन्ति गिरिशं समये प्रदोषे,
ये नाऽर्चितं शिवमपि प्रणमन्ति चाऽन्ये।
एतत् कथां श्रुतिपुटैर्न पिबन्तिमूढाः,
ते जन्मजन्मसु भवन्ति नरादरिद्राः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां परिधापयामि।

दूर्वासमर्पणम्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषष्प्परि॥ एवानोदूर्वेप्प्रतनु सहस्रेणशतेन च॥

ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य,
कुर्वन्त्यनन्यमनसोंऽघ्रिसरोजपूजाम् ।
नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्राः,
सौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोके॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यसमर्पणम्—ॐ अहिरिवभोगैःपर्य्येतिवाहुंज्यायाहेतिंपरिवाधमानः॥ हस्तघ्नोविश्श्वावयुनानिविद्द्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः॥

कैलासशैलभुवने त्रिजगज्जनित्रीं,
गौरीं निवेश्य कनकार्चितरत्नपीठे।
नृत्यं विधातुमभिवछति शूलपाणौ,
देवाः प्रदोषसमये नु भजन्ति सर्वे॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरसमर्पणम्—ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोवातप्रमियःपतयन्तियह्वाः॥ घृतस्यधाराऽअरुषोनवाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिःपिन्वमानः॥

वाग्देवीधृतवल्लकीशतमुखोवेणुं दधत् पद्मजः,
तालोन्निद्रकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता।
विष्णुःसान्द्रमृदङ्गवादनपटुर्देवाः समन्तात्स्थिताः,
सेवन्ते तमनुप्रदोषसमये देवं मृडानीपतिम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

धूपसमर्पणम्—ॐ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः॥ तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज॥

गन्धर्वयक्षपतगोरगसिद्धसाध्य,
विद्याधराऽमरवराप्सरसां गणांश्च।
येऽन्ये त्रिलोकनिलयाः सहभूतवर्गाः,
प्राप्ये प्रदोषसमये हरपार्श्वसंस्थाः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः धूपं समर्पयामि।

दीपसमर्पणम्—ॐ परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्वृमक्तुविश्श्वतः॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्॥

अतः प्रदोषे शिव एक एव,
पूज्योऽथ नान्ये हरिपद्मजाद्याः।
तस्मिन् महेशे विधिनेज्यमाने,
सर्वे प्रसीदन्ति सुराधिनाथाः॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः दीपज्योतिः समर्पयामि।

नैवेद्यसमर्पणम्—ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वःसहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनःसुमनाभव॥

शिवंशान्तंशुद्धं प्रकटमकलङ्कं श्रुतिनुतं,
महेशानं शम्भुं सकलसुरसंसेव्यचरणम्।

गिरीशं गौरीशं भवभयहरं निष्कलमजं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा॥ ॐ अपानाय स्वाहा॥ ॐ समानाय स्वाहा॥ ॐ उदानाय स्वाहा॥ ॐ व्यानाय स्वाहा॥ मध्ये पानीयं जलं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनसमर्पणम्—ॐ अ॒ङ्ग॒शुना॑तेअ॒ङ्ग॒शुः॑पृच्च्यतां॒परु॑षा॒परुः॑॥ ग॒न्धस्ते॒सोम॑मवतु मदा॑युरसो॒ऽअच्च्यु॑तः॥

सदासेव्यं भक्तेर्हृदि हृदि वसन्तं गिरिशय-
मुमाकान्तं क्षान्तं करधृतपिनाकं भ्रमहरम्।
त्रिनेत्रं पञ्चास्यं दशभुजमनन्तं शशिधरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलादिसमर्पणम्—ॐ नम॑स्त॒ऽआयु॑धाया॒ना॑तताय॒धृष्णवे॑॥ उ॒भाब्भ्यां॑मुतते॒-नमो॑बा॒हुब्भ्या॒न्तव॒धन्न्व॑ने॥

चिताभस्मालिप्तं भुजगमुकुटं विश्वसुखदं,
धनाध्यक्षस्याङ्गं त्रिपुरवधकर्तारमनघम्।
करोटीखट्वाङ्गेह्युरसि च दधानं सृतिहरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः मुखशुद्ध्यर्थे पूगीफलमेलालवङ्गादि-नागवल्लीदलसहितताम्बूलवीटिकां समर्पयामि।

फलादिसमर्पणम्—ॐ याः॒फ॒लिनी॒र्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पायाश्च॑पु॒ष्पिणीः॑॥ बृह॒स्प्पति॑प्प्रसूता॒स्तानो॑मु॒ञ्च॒त्व॒ꣳह॑सः॥

सदोत्साहं गङ्गाधरमचलमानन्दकरणं,
पुरारातिं भातं रतिपतिहरं दीप्तवदनम्।
जटाजूटैर्जुष्टं रसमुखगणेशानपितरं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः ऋतुकालोद्भवफलानि समर्पयामि।

दक्षिणासमर्पणम्—ॐ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः॒सम॑वर्त्त॒ताग्ग्रे॑भू॒तस्य॑जा॒तः॒पति॒रेक॑ऽआसीत्॥ सदा॑धारपृथि॒वीद्यामु॒तेमांकस्मै॑दे॒वाय॑ह॒विषा॑विधेम॥

वसन्तं कैलासे सुरमुनिसभायां हि निनरां,
ब्रुवाणं सद्धर्मं निखिलमनुजानन्दजनकम्।
महेशानी साक्षात् सनकमुनि देवर्षिसहिता,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनसमर्पणम्—ॐ आरात्रिपार्थिवंरजः पितुरप्रायिधामभिः॥ दिवःसदाꣳसिबृहतीविर्तिष्ठसऽआत्त्वेषंवर्त्ततेतमः॥ ॐ इदꣳहविःप्रजननंमेऽअस्तुदशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्मसनिप्रजासनिपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि॥ अग्निःप्रजां बहुलांमेकरोत्वन्नंपयोरेतोऽअस्मासुधत्त॥

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीश!।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश!॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
शिव कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने॥
कोकिलकूजति खेलत हंसावन ललिता।
शिव हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
शिव शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे
तन्मध्ये शिवनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
शिव रञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत
ब्रह्मादिक सुर सेवत नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
बिबुधबधुर्वहु नृत्यति हृदये मुदसहिता।
शिव हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते
किन्नर गायन कुरुते सप्तस्वरसहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
शिव मृदङ्ग वादयते।

क्वण क्वण ललिता वेणुं
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
शिव नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक ताम्॥
तां तां लुप चुप डां डां डमरूं वादयते।
शिव डमरूं वादयते।
अङ्गुष्ठाङ्गुलिनादं
अङ्गुष्ठाङ्गुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
कपूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
शिव पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
शिव पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
मुण्डैः रचयति मालां पन्नगमुपवीतम्।
शिव पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजा
वामविभागे गौरी रूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरं कृतभस्माभरणम्।
शिव कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं
इति शिवशङ्कररूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
शिव झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा

नीराजयते विष्णुं वेदऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
शिव हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं
अवलोकयति सुरेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
शिव हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं
शम्भोस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिव पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति
हरसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥१॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्मः पश्य मे वरदो भव॥२॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिसमर्पणम्—ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोंव्वीरान्रुद्रभामिनोंव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे॥

शिवां स्वे वामाङ्गे गुहगणपतिं दक्षिणभुजे,
गले कालं व्यालं जलधिगरलं कण्ठविवरे।
ललाटे श्वेतेन्दुं जगदपि दधानं च जठरे,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

परिक्रमासमर्पम्—ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥ मानोंव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानःप्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः॥

सुराणां दैत्यानां बहुलमनुजानां बहुविध,
तपःकुर्वाणानां झटिति फलदातारमखिलम्।
सुरेशं विद्येशं जलनिधिसुताकान्तहृदयं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः परिक्रमां समर्पयामि।

परिक्रमा के पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध, सर्षपादि द्रव्यों को अर्घ्यपात्र में लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करे।

विशेषार्घ्यसमर्पणम्—दोनों हाथों से विशेषार्घ्य प्रदान करे।

करचरणकृतं वा कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वा पराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेत् क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

ॐ भूर्भुवःस्वः साम्बसदाशिवाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना कर समर्पण करे।

वसानं वैयाघ्रीं मृदुललितां कृत्तिमजरां,
वृषारूढं सृष्ट्यादिषु कमलजाद्यात्मवपुषम्।
अतर्क्यं निर्मायं तदपि फलदं भक्तसुखदं,
महादेवं वन्दे प्रणतजनतापोपशमनम्॥
जय देव जगन्नाथ जय शङ्कर शाश्वत।
जय सर्व सुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित॥
जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद।
जय नित्य निराधार जय विश्वम्भराव्यय॥
जय विश्वैकवन्द्येश जय नागेन्द्रभूषण।
जय गौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्धशेखर॥

पूजनसमर्पणम्—**अनया पूजया साम्बसदाशिवः प्रीयन्तां न मम॥**

श्रीसाम्वसदाशिवपूजनं परिपूर्णम्

परिशिष्टभागः ८

।। श्रीः।।

उपासना में उपयोगी बातें

शान्ति आदि षड्कर्म—शान्ति, वश्य, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण ये शास्त्रों में षड् कर्म कहे जाते हैं। मानव जीवन तथा तन्त्रशास्त्र में इनकी उपयोगिता क्या है? इसको जानना आवश्यक है।

इनकी केवल मानव जीवन में ही उपयोगिता नहीं है, बल्कि इनके सही उपयोग से ही एक सुस्वस्थ सुव्यवस्थित समाज का सृजन भी किया जा सकता है। यदि मनुष्य इनके सही अर्थ को समझ ले तथा इनका सही सही उचित अर्थों में ही उपयोग करे, तो वह अपना तथा समाज का समुचित हित कर सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम इसका यथार्थ उपयोग जानना आवश्यक है, जब तक इसका यथार्थ उपयोग नहीं जानेगा, तो वर्तमान समाज की तरह से दिग्भ्रमित अर्थ करके अपना तथा समाज का अहित ही करेगा।

शान्तिकर्म—मनःस्थैर्यं शान्तिः। इसका अर्थ ही होता है शान्तिप्रदायी कर्म, ये शान्तिप्रदायी कर्म (क्रियायें) ही शान्ति कर्म कहे जाते हैं।

मानव शरीर में रोगादि विभिन्न प्रकार के प्रकोपों को शान्त करके शरीर में शान्ति का विस्तार करना ही शान्ति कर्म है। इसमें मनुष्य के मन, बुद्धि तथा शरीर स्थित समस्त विकारों को शान्त किया जाता है। जिससे समस्त विकृतियाँ उससे दूर हो जाये और वह मन की विश्रान्ति की चरमावस्था को प्राप्त करके अपने परम सुख को प्राप्त करके अपने को कृतार्थ करे। अर्थात् मन की चञ्चलता और वाह्यवृत्ति के प्रति राग समाप्त होकर परमात्मा में लग जाये।

मनुष्य का शरीर विधाता की एक विलक्षण कृति है। इस शरीर में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रत्येक अवयवों के विशेष संग्रह से एकीकृतरूप पूर्णचैतन्य व्यवहारवान् स्वरूप है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकृति रूप है। जिससे ही समस्त चराचर जगत की सृष्टि होती है। जिसका नियन्त्रक ब्रह्माण्ड के नायक परब्रह्म की नियति नामक शक्ति है, इस नियति संज्ञक शक्ति के द्वारा अनायास ही समस्त ब्रह्माण्ड नियन्त्रित रूप से संचरित होता है।

अपने मूल बीज रूप से जीव गर्भ में प्रविष्ट होता है। उसका प्रकृत्यात्मक शरीर विकसित होकर जब लोक में प्रत्यक्ष अवतरित होता है, तो उसका सामान्य ही विकास होता है। शरीर भी अल्प ही विकसित होता है। उसके इस अल्पविकसित शरीर का पोषण उसके जन्य-जनकादि के द्वारा पोषित होकर कुछ समयों में शरीर के बाह्य अवयवों का पूर्ण विकास हो जाता है। लेकिन उसके कुछ आन्तरिक अवयवों का विकास उसके अज्ञान प्रपञ्च में फँस जाने के कारण अवरुद्ध हो जाता है तथा उसका पूर्ण विकास वहीं रुक जाता है। जब उसका विकास पूर्णता को नहीं प्राप्त हो पाता, तो वह एक अज्ञात अशान्ति से ग्रस्त हो जाता है, और अवशिष्ट जीवन को विषाद ग्रस्त कर लेता है, फलत: वह धीरे धीरे पूर्णत: अशान्त हो जाता है। अशान्त होने के ही कारण जीव अज्ञान के महासागर में बहता रहता है तथा इससे उसकी मुक्ति असम्भव हो जाती है। फलत: वह अपने जीवन को अज्ञानमय दु:खमूलक बना लेता है। इसी अज्ञानमय दु:खमूलक जीवन को शान्ति प्रदान करके सुखमूलक बनाने का कर्म ही शान्ति कर्म कहलाता है।

उपासनाओं में शान्तिकर्म सभी प्रकार के दु:खों को शान्त करके सुख प्रदान करते हैं तथा अज्ञान को समाप्त करके ज्ञान की प्राप्ति कराते हैं। इन कर्मों का उद्देश्य जीवन को महान् विश्रान्ति प्रदान करके, सुख प्रदान करना है।

वश्यकर्म—स्वार्थवशदनुकूलव्यवहारः वश्यः। वशकर्म का अर्थ होता है वश में किये रहना। अपने अधिकार में करके अपने अनुकूल ही व्यवहार कराना।

जीव के शरीर में उसके विभिन्न शारीरिक अभिलाषाओं की अनुपूर्ति के लिए उसके शरीर के विभिन्न अवयवात्मक अङ्ग पूर्ण विकसित रूप में स्थित हैं। उन अङ्गों के आनुपूर्वी रूप में उनकी आङ्गिक सत्ता है। जो जीव के लिए ही उपयोगी है तथा उसी की आवश्यकताओं की पूर्ति में स्वतन्त्र कारक है। ये एक सेवक की भाँति ही उसकी सेवा में सदैव लगे रहते हैं। ये सेवक यद्यपि इनकी स्वतन्त्र सत्ता है, तो भी ये जीव की सेवा में रहते हैं। अज्ञान में पड़ करके, अपने मूल कर्म का परित्याग कर, स्वतन्त्र संचरण करने लग जाते हैं, इनके स्वतन्त्र संचरण करने से जीव अशान्त अवस्था में आ जाता है और दु:ख से ग्रस्त हो जाता है। अपनी अनुशानहीनता और स्वतन्त्र संचार को अनुशासित करके अपने नैसर्गिक योग्यता में पुन: लाकर व्यवस्थित करने के लिए ही वश्यादिकर्म किये जाते हैं। इस वश्यकर्म के प्रभाव से ये सदैव जीव के वशीभूत रहकर ही उसकी ही सेवा में लगे रहे, यही इनकी अनादि योग्यता है। ये अपनी योग्यता का परित्याग न करे तथा ये जीव की पुन: (नैसर्गिक कार्य) सेवा में लगे रहे, जिससे अशान्ति प्रकट न हो और जीव अपने विश्रान्ति की अवस्था में सुस्थिर रह सके। अर्थात् इन्द्रीयादि को वश में करना ही वशीकरण कर्म है।

स्तम्भनकर्म—अव्यवहृदावरोधनं स्तम्भनम्। स्तम्भन कर्म में वे कार्य आते हैं जो स्तम्भित कर दे अर्थात् रोक करके स्थिर कर दे। रोका उसे जाता है, जो कहीं गमन करता हो। गमन कर्त्ता के गमन कार्य को रोक कर स्थिर करके स्थापित कर दे, वही कार्य स्तम्भन कर्म कहलाता है।

जीव के विभिन्न कार्यों के सम्पादनार्थ ही उसके अङ्गीभूत रूप से विभिन्न अवयव हैं, जिन्हें अङ्गों के रूप में उन्हें सम्बोधित किया जाता है, इन अङ्गों के अलग अलग कार्य हैं, इन अङ्गों के सभी कार्य जीव के ही प्रतिपूरक हैं, जो इनके द्वारा जीव के लिये ही किये जाते हैं इनके अपने अपने कार्यों को छोड़ करके अन्यान्य कार्यों में लग जाने से इनके अपने कार्य बाधित हो जाते हैं जिसके फलस्वरूप अशान्ति की उपस्थिति हो जाती है और जीव पुनः दुःख से आक्रान्त हो जाता है।

ये सभी अङ्ग अपने अपने ही कार्य में लगे रहें और अन्यों के कार्यों में अनुलिप्त भाव से न लग जायें अर्थात् अपने ही कार्य में अनुलिप्त रहें, अन्य अङ्गों में इनकी निर्लिप्तता बनी रहे तथा ये सभी एक दूसरे के सहयोगी रहें, इसके लिए इनपर अनुशासन रखना तथा इनका अपने अपने ही कर्म में प्रवृत्त रहना, इसके लिए स्तम्भनकर्म किये जाते हैं। ये स्तम्भनकर्म इनको रोक करके इन्हीं में स्थिर कर देते हैं। इनके स्थिर हो जाने से विकृतियाँ नहीं आती हैं जिसके फलस्वरूप शान्ति प्राप्त हो जाती है।

विद्वेषणकर्म—विद् वेषणं विद्वेषणं। सर्वथा विपरीतप्रवृत्तिः। स्वयोग्यताप्रतिकूल-कार्यानुरक्तिं प्रति विपरीतकरणं विद्वेषणम्। विपरीतता का प्रवाह करना ही विद्वेषण है। वाह्यवृत्तियों से विपरीत करना, उनसे मन को हटाना विद्वेषण है।

जीव के आनुषांगिक अङ्ग अपने विहित कार्यों से प्रतिकूल व्यवहार में अनुलिप्त हो जायें, तो उनकों अनुलिप्त कार्यों से छुड़ा करके उनके नैसर्गिक कार्यों में लगाने में विद्वेषण का प्रयोग होता है, जिससे अपने प्रतिकूल कार्यों को न करे और शान्ति प्राप्त हो सके।

उच्चाटनकर्म—उद् चाटयतीति उच्चाटनम्, उद् उपरि चट् विस्फोटे मोचने, बाह्यविस्फोटनम्, बाह्यवृत्तिषु विस्फोटनमुच्चाटनम्। बाह्यवृत्तियों से विस्फोटित हो जाये, हट जाये अर्थात् बाह्यवृत्तियों के स्थान से हटाने को ही उच्चाटन कहते हैं।

जव जीव के अङ्ग, आङ्गिक विषयों का परित्याग करके अन्यान्य विषयों में प्रवृत्त हो जायें और वापस अपने विहित प्रवृत्तियों में न आये तब उन्हें उच्चाटनादि कर्मों के द्वारा पुनः वापस अपने ही विषयों में प्रवृत्ति की स्थिरता के लिए उच्चाटनकर्म किया जाता है।

मारणकर्म—हरणं मारणम्, अप्रवृत्तवृत्तीनां प्रवृत्तिषु निवृत्तिर्हरणम्, स्वविहित-कार्यपरित्याग अन्यकार्यप्रवृत्तिषु निवृत्तिः। अन्यप्रवृत्तिपरित्यागपूर्वकं स्वविहित-

प्रवृत्तिस्थिरता। हरणं मारणं=हरण को मारण कहते हैं। जिन प्रवृत्तियों में प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिये और उसमें जीवाङ्गों को लिप्त होने पर यदि किसी उपाय से उन विषयों से अप्रवृत्ति नहीं होती है, तो उन प्रवृत्तियों को अन्त:करण से नष्ट करने के लिए मारणादि कर्म किया जाता है। जिससे कि उनको समाप्त करके शान्ति हो सके और जीव को सुखमय विश्रान्ति प्राप्त हो जाये। अर्थात् सांसारिक वृत्तियों का विनाश ही मारण कर्म है। संसार के प्रति लोभ-मोह का विनाश होना ही मारण कर्म है।

ब्रह्मत्वप्राप्ति ही मनुष्य जीवन का फल है, ब्रह्मत्वप्राप्त करके ही इस संसार सागर के बन्धनों से सद्य: मुक्ति मिल सकती है। बिना ब्रह्मत्व के सद्य: पापों की परिसमाप्ति नहीं होती है। केवल ब्रह्मत्वप्राप्ति से ही घोरातिघोर पाप सद्य: भस्म हो जाते हैं और मनुष्य पूर्ण शुद्ध अन्त:करण होता है।

ब्रह्मत्वप्राप्ति के लिए विभिन्न शास्त्रों में तरह तरह के साधन बताये गये हैं। जिसमें बहुत से साधन अत्यधिक श्रमसाध्य एवं कठिन है। जिनका सेवन इस अशान्त वातावरण में पूर्ण रूप से सम्भव नहीं हैं तथा वे समस्त साधन पशुशास्त्र के अनुपूरक होने के कारण पाशविक ही हैं। उनसे पशुता का विनाश नहीं हो पाता है। केवल तन्त्र शास्त्र ही एक मात्र ऐसा साधन है, जिसमें कोई नियम और परिहार नहीं हैं। केवल श्रद्धया या अश्रद्धया कर्म करने की आवश्यकता है। कर्म करने पर फलप्राप्ति अवश्य ही होती है। इसमें कोई संशय नहीं है। इसके फलप्राप्ति का काल भी अधिकतम तीन ही वर्ष कहा गया है। तीन वर्ष बाद साधक निश्चय ही अपने फल को प्राप्त करता है। इसमें जीवन भर भक्ति नहीं करनी पड़ती।

तन्त्रशास्त्र की उच्चस्तरीय उपासना मन्त्रयोगात्मक है। इसमें मन्त्र के साथ साथ योग की क्रियायें भी साधक का पोषण करती हैं। इस शास्त्र में अष्टाङ्ग योग का व्यवहार किया जाता है। मन्त्रयोग में अष्टाङ्ग योग सगर्भित होते हैं।

अष्टाङ्ग योग में मुख्यत: आठ भागों में आठ तरह के कार्य किये जाते हैं, जो मन्त्र-गर्भित होते हैं, जिससे उन कर्मों का फलवान् होना पूर्ण निश्चित हो जाता है।

अष्टाङ्गयोग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि कर्म किये जाते हैं। इनमें सभी समाधि के ही अनुपूरक हैं, समाधि ही इनका फल है, इसमें ही जीव अपने स्वरूप में प्रविष्ट करके परमविश्रान्ति को प्राप्त करता है। यह परम विश्रान्ति ही उसके जीवन का परमलक्ष्य होता है। यही सिद्धि का फलदायक है। इसी से मनुष्य अपने परम फल को प्राप्त करता है। इसे ही तन्त्रशास्त्र में शान्ति कर्म का फल माना जाता है। इससे ही जीव अपने आत्मस्वरूप में विश्रान्ति को प्राप्त करता है। इसी को उपासनाओं का परम फल कहा जाता है। इसकी प्राप्ति आने वाले कठिनाईयों को समाप्त करने के लिए तन्त्रशास्त्र में षड्कर्मों का प्रतिपादन किया गया है।

ये षट्कर्म योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार के साथ साथ राजयोग को भी हठात् पूर्ण करा देते हैं, उनमें आने वाली कठिनाईयों को समाप्त करके उपासना का फल प्राप्त कराते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार तो शरीर को सिद्ध करने में साधन हैं, लेकिन समाधि के पूरक धारणा, ध्यान में कठिनाई आती है तो उसकी पूर्ति में षट्कर्म (शान्ति-आकर्षण-वशीकरण-मोहन-उच्चाटन-मारण) इनको सहज ही पूरा कर देते हैं।

षट्कर्म में वश्यकर्म बाह्य विषयों के प्रति मन को अपने वश में रखने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। इससे मन इन्द्रियों के वशीभूत नहीं रहता है। वह दैवी वृत्तियों की कामना में प्रवृत्त हो जाता है। स्तम्भनकर्म से इन्द्रियाँ अपने नैसर्गिक क्रियाओं में स्तम्भित हो जाती है। विद्वेषण से जो दैवी कृत्य प्रतिकूल वासनात्मक वृत्तियाँ मन से नहीं जाती हैं उनसे विद्वेष हो जाता है। उच्चाटन से मन बाह्यविषयों से उच्चाटित हो जाता है तथा वह अपने परमात्मरूप के प्रति आकर्षित हो जाता है। मारण कर्म से मन के भीतर जन्म जन्मान्तर से पड़े हुए संस्कार पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं और जीव शुद्ध हो जाता है। पूर्ण शुद्ध होकर ही मनुष्य अपनी परमशान्ति के प्रति आकर्षित होकर प्रवृत्त होता है तथा शान्तिकर्म में पूर्णतः संलिप्त होकर अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। इन षट्कर्मों सही सदुपयोग मनुष्य जीवन में आने वाली साधनात्मक कठिनाईयों को समाप्त करने के लिए होता है। जिससे जीव अपने पूर्ण ब्रह्म भाव को प्राप्त करके सर्व शक्तिमान् बन कर मुक्त हो जाये।

आज कल इन षट्कर्मों का प्रयोग मनुष्य विभिन्न आसक्तियों में पड़कर करता है। जिससे वह किसी न किसी तरह से पापों का संग्रह करके अपने भवसागर के बन्धन को और गहरा बना लेता है। इस प्रकार वह अपने को अनभिज्ञ कष्टों में डाल देता है। जिससे छुटकारा पाना उसके लिए नितान्त दुरुह हो जाता है। वह पुनः असत्य के भँवर में पड़कर घुमता रहता है। अतः तन्त्रशास्त्र के किसी भी कार्य को किसी अतियोग्य गुरु से पूर्ण रूप से जान कर ही प्रवृत्त होना चाहिये अन्यथा केवल अनिष्ट ही होता है।

षट्कर्मों में ज्ञेय—षड्कर्मो में प्रवृत्त होने के लिए उनके कुछ विशेष विषयों का अनिवार्यतः ज्ञान आवश्यक होता है, अन्यथा कर्म में अनुलिप्त नहीं होना चाहिए।

१—**देवता**—काली, दुर्गा, वामा, ज्येष्ठा, रौद्री, लक्ष्मी तथा रत्यादि देवता शान्ति कर्म के देवता कहे गये हैं। शान्त्यादि कर्मों में इनका प्रयोग करना चाहिये। दीक्षा में प्राप्त मन्त्र के देवता भी शान्तिकर्म में प्रयोग किये जाते हैं।

२—**देवताओं के वर्ण**—श्वेत, अरुण, (हल्दी जैसा) पीत, मिश्रित, धूम्र और कृष्ण ये उन देवताओं के वर्ण होते हैं। प्रत्येक षट्कर्मों के प्रारम्भ में तत्तद् वर्ण के पुष्पों से अभ्यर्चन करना चाहिये।

३—**ऋतु**—एक अहोरात्र में बसन्तादि षड्-ऋतुयें होती हैं। एक अहोरात्र में ६० घटी का मान होता है। इसी में छः ऋतुओं का क्रम से मान होता हैं, अतः एक एक ऋतु १०-१० घटी का होता है। सूर्योदय से क्रमशः १० घटी वसन्त का होता है, फिर आगे १० घटी तक ग्रीष्म, उसके बाद १० घटी तक वर्षा तदनन्तर उसके बाद १० घटी तक शरद्, तदनन्तर १० घटी तक हेमन्त और फिर १० घटी तक शिशिर होता है। इस प्रकार २४ घण्टे या ६० घटी में छः ऋतुयें होती हैं। हेमन्त, वसन्त, शिशिर, ग्रीष्म, वर्षा एवं शरद्—इन छः ऋतुओं का साधक को शान्ति आदि कर्म में अपने अभीष्ट के अनुसार प्रयोग करना चाहिये। उपासनाओं में इनका विचार करके ही उपासना करनी चाहिये।

४—**दिशा**—ईशान, उत्तर, पूर्व, नैर्ऋत्य, वायव्य और आग्नेय ये क्रमशः शान्ति आदि छः कर्मों की दिशायें मानी गयी है। शान्ति आदि कर्मों के अनुसार उनकी दिशाओं का निर्धारण करके उस दिशा की तरफ मुख करके जप करना चाहिये।

५—**दिन**—शुक्ल पक्ष की द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी को बुध एवं बृहस्पति वार होने पर शान्ति कर्म करना चाहिये। शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, षष्ठी, नवमी एवं त्रयोदशी को सोमवार एवं बृहस्पति वार होने पर वशीकरण कर्म प्रशस्त माना गया है। इसी प्रकार यदि कृष्ण पक्ष की अष्टमी, नवमी, दशमी एवं एकादशी को शुक्र या शनिवार हो तो विद्वेषण फलवान होता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी एवं चतुर्दशी को शुक्र या शनिवार हो, तो उच्चाटन फल प्राप्ति के लिए कर्म करना श्रेयस्कर होता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी एवं अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को रवि, मङ्गल या शनिवार हो, तो फलसिद्धि के लिए स्तम्भन एवं मारण शुभ होता है।

६—**आसन**—शान्ति आदि षट्कर्मों में क्रमशः पद्मासन, स्वस्तिकासन, विकटासन, कुक्कुटासन, वज्रासन एवं भद्रासन का उपयोग श्रेयस्कर कहा गया है, शान्त्यादि कर्मानुसार प्रयोग करना चाहिये।

७—**विन्यास**—शान्ति आदि कर्मों में क्रमशः ग्रन्थन, विदर्भ, सम्पुट, रोधन, योग एवं पल्लव ये छः विन्यास बतलायें गये हैं। अभीष्ट कर्म में तत्तद् फलप्राप्ति में तत्तद् निर्दिष्ट विन्यास करना चाहिये।

८—**मण्डल**—भूमि, जल, अग्नि, वायु तथा आकाशादि षट्कर्मों के मण्डल बतलाये गये हैं। कर्मानुसार इन मण्डलों का उपयोग फलप्राप्ति के लिए साधक उपयोग करता है। अर्द्धचन्द्र जैसी आकृति वाला तथा दोनों ओर दो कमलों के चिह्नवाला जल मण्डल कहा गया है। यह शान्तिकर्म में प्रशस्त माना गया है। शान्ति कर्म की कामना हेतु जल मण्डल का प्रयोग करना चाहिये। स्वस्तिक गर्भित त्रिकोण को वह्निमण्डल कहते हैं। यह वश्य कर्म में श्रेयस्कर होता है। इसका प्रयोग वश्यकर्म में करना चाहिये।

वज्रसहित चतुरस्र भूमि का मण्डल कहलाता है। यह स्तम्भन कर्म में प्रयोग किया जाता है। स्तम्भन की फलप्राप्ति इससे सहज होती है। आकाश मण्डल वृत्ताकार होता है। यह विद्वेषण में फलप्राप्ति कारक होता है। इसी प्रकार छः बिन्दुओं से आवृत वृत्त वायु मण्डल होता है। यह उच्चाटन कर्म में प्रशस्त होता है तथा पूर्वोक्त वह्निमण्डल का उपयोग मारण में प्रयोग किया जाता है। विभिन्न कर्म में प्रवृत्त साधक शान्त्यादि कर्मानुसार इन मण्डलों का चयन करके प्रयोग करे।

योगयुक्त उपसनाओं में षट्चक्र भेदन मात्र से ही समस्त षट्कर्मों की पूर्ति हो जाती है और उनका फल भी मिल जाता है, षट्चक्र भेदकों को अलग से षट्कर्म करने की आवश्यकता नहीं होती है।

९—**मुद्रा**—शान्ति आदि षड्कर्मों में पद्म, पाश, गदा, मुसल, वज्र तथा खड्ग मुद्राओं का प्रयोग होता है। इसके साथ ही कर्म के ही अनुसार मृगी, हंसी तथा सूकरी होम की मुद्रायें होती हैं। मध्यमा, अनामिका तथा अङ्गुष्ठ के संयोग से मृगी मुद्रा बनती है। इसका प्रयोग शान्ति तथा वशीकरण में होता है। कनिष्ठिका को छोड़ कर सभी अङ्गुलियों के मिलाने से हंसी मुद्रा बनती हैं इसका प्रयोग विद्वेषण तथा स्तम्भनादि कार्यों में किया जाता है। हाथ के संकोच से सूकरी मुद्रा बनती है, इसका प्रयोग उच्चाटन एवं मारण में प्रयोग किया जाता है। साधकों को अपने अभीष्ट कार्यों की परिसिद्धि के लिए शान्त्यादि कर्मानुसार इनका प्रयोग करना चाहिये। इनका विधिवत् परिज्ञान करना अनिवार्य है। तभी कार्य में सफलता सम्भव हो पाती है।

१०—**अक्षर**—चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश के वर्णो को क्रमशः शान्ति आदि षट्कर्मों के अनुसार प्रयोग करना चाहिये। सोलह स्वर तथा स एवं ठ ये १८ वर्ण चन्द्र वर्ण होते हैं। वर्णों में से चन्द्र वर्णों को अलग करने पर शेष आकाशादि के वर्णों को वश्यादि कर्मों में ग्रहण किया जाता है। किसी किसी के मत में स, व, ल, ह, य एवं र को चन्द्र, जल, भूमि, आकाश, वायु एवं अग्नि का वर्ण कहा गया है। इनका भी प्रयोग षट्कर्मों में अभिष्टानुसार साधक वर्ग करते हैं।

११—**भूतोदय**—आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पञ्चमहाभूत कहलाते हैं। शरीर में जब इनकी प्रबलता हो, तो उस समय अथवा कर्म के अनुसार भूतों का उदय करके कर्म को करने से फलप्राप्ति सद्यः होती है। जव दोनों नासापुटों के नीचे से श्वास चल रहा हो, तो जल का उदय कहा जाता है। यह शान्ति कर्म में सिद्धिदायक होता है। नासिका के मध्य से दण्ड की तरह सीधा श्वास जब गमन करता हो, तो पृथ्वीतत्त्व का उदय होता है। यह स्तम्भन में सिद्धिदायक होता है। नाक के छेदों के बीच में ही श्वास की गति होने से आकाशतत्त्व का उदय होता है। यह विद्वेषणकार्य में शुभफलदायी कहा गया है। नासापुटों के ऊपर से श्वास की गति होने पर अग्नि तत्त्व का उदय होता है। उस

समय मारण एवं वशीकरण इन दोनों कर्मों को करने से सफलता मिलती है। श्वास की तिर्यक्गति होने पर वायु तत्त्व का उदय होता है, यह उच्चाटन कार्य में प्रशस्त मानी गयी है। साधक अभीष्ट सिद्धि के अनुसार भूतों का उदय शरीर में कराकरके अपने कर्म को सम्पादित करे।

१२—**समिधा**—दूर्वा, अनार, अमलतास, धत्तूरबीज, आम तथा खैर की समिधाओं का प्रयोग षट्कर्मों के लिए तन्त्रशास्त्रों में वर्णित है। शान्तिकर्म में गाय का घी मिलाकरके दूर्वा की समिधा में, वश्यकर्म में बकरी का घी मिलाकर अनार की समिधा में, स्तम्भनकर्म में भेड़ का घी मिलाकर अमलतास की समिधा में, विद्वेषणकर्म में अतसी का तेल मिलाकर धतूरे की समिधा से, उच्चाटनकार्य में सरसों का तेल मिलाकर आम की समिधा से तथा मारणकार्य में कटुतैल मिलाकर खैर की समिधा से होम करना श्रेयस्कर कहा गया है।

१३—**माला**—शान्ति आदि कर्म में क्रमशः शंख की, कमलगट्टा की, नींबू की, नीम की, घोड़े के दाँत तथा गदहे के दाँत की जपमाला बनानी चाहिये। कार्यानुसार मालाओं का प्रयोग करना चाहिये। मालाओं में गणनाओं की रीति भी अलग अलग होती है। शान्ति, वश्य, पुष्टि, भोग एवं मोक्ष के लिए जप करते समय मध्यमा मध्यपर्व में स्थित माला को अङ्गुठे से घुमाना चाहिये। स्तम्भनादि में साधक को अनामिका एवं अङ्गुठे से जप करना चाहिये, विद्वेषण एवं उच्चाटन में साधक को तर्जनी एवं अङ्गुठे से जप करना चाहिये तथा मारण कार्य में साधक को कनिष्ठिका तथा अङ्गुठे से जप करना चाहिये, शान्त्यादिकर्मों में मणियों की सख्यायें अलग अलग होती हैं, शुभ कार्यों में १०८, ५४, २७ मणियों की माला का प्रयोग होता है तथा अभिचार में १५ मणियों की माला का प्रयोग किया जाता है।

१४—**अग्नि**—अग्नि के लिए अलग-अलग लकड़ियों का प्रयोग किया जाता है। शान्ति कार्य में बेल, आक, ढाक की तथा दूध वाले वृक्ष की समिधाओं का प्रयोग किया जाता है। अशुभ कार्यों में कुचिला, बहेड़ा, नीबू, धतूरा एवं लिसोड़े (लसटोर) की लकड़ियों का प्रयोग अग्नि प्रज्वलित करने के लिए किया जाता है। शान्ति कर्म में अग्नि की सुप्रभा नामक जिह्वा का पूजन करना चाहिये। वश्य कर्म में रक्तासंज्ञक जिह्वा का, स्तम्भन में हिरण्या नामक जिह्वा का, विद्वेषण कार्य में गगना नामक जिह्वा का, उच्चाटन कार्य में अतिरक्तिका नामक जिह्वा का तथा मारण में अग्नि की कृष्णा नामक जिह्वा का पूजन करना चाहिये, शान्ति एवं वश्यकर्म में होम के दशांश तुल्य ब्राह्मणों को भोजन कराना उत्तम माना जाता है, होम की संख्या के पच्चीसवें भाग तुल्य ब्राह्मणों को भोजन कराना मध्यम तथा होम संख्या के शतांश तुल्य ब्राह्मणों को भोजन कराना अधम माना जाता है। स्तम्भन में शान्ति कर्म की ब्राह्मणभोजन संख्या से तीन गुने ब्राह्मणों को भोजन

कराना चाहिये तथा मारण में होम की संख्या के बराबर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। शान्ति कर्म में अतिकुलीन, षडङ्गवेदों के ज्ञाता, पवित्र एवं सदाचार में परायण ब्राह्मणों को विविध प्रकार का भोजन कराना चाहिये, उन ब्राह्मणों का सुन्दर वस्तुओं तथा विविध द्रव्यों से पूजन करना चाहिये, उन्हें देवता मान कर बारम्बार प्रणाम करना चाहिये, मधुर वाणी से तथा सुवर्णादि देकर उन्हे सन्तुष्ट करना चाहिये, उनका आशीर्वाद लेने से अभिचार जनित पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं और साधक को मनोवाञ्छित सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

१५—**लेखन द्रव्य**—शान्ति आदि षट्कर्मों में चन्दन, गोरोचन, हल्दी, गृहधूम, चिता का अङ्गार तथा विषाष्टक यन्त्र लिखने के द्रव्य होते हैं। साधकों को अपने अभीष्ट सिद्धि के लिये तत्तद् द्रव्यों का प्रयोग करना चाहिये। पीपल, मिर्च, सोंठ, बाज का बीट, अण्डीर, गृहधूम, धतूरे का रस तथा लवण इन आठ वस्तुओं को विषाष्टक कहते हैं। शान्ति और वश्य कर्म में भोजपत्र पर, स्तम्भन कर्म में बाघाम्बर पर, विद्वेषण में गदहे की खाल पर, उच्चाटन कार्य में ध्वजा के वस्त्र पर तथा मारण में मनुष्य की हड्डी पर मान्त्रिक को यन्त्र लिखना चाहिये।

१६—**कुण्ड**—शान्ति आदि षट्कर्मों में क्रमशः वृत्ताकार, पद्माकार, चतुरस्र, त्रिकोण, षट्कोण एवं अर्धचन्द्राकार कुण्ड पश्चिम, उत्तर, पूर्व, नैर्ऋत्य, वायव्य एवं दक्षिण दिशा में बनाने चाहिये।

१७—**स्रुवा-स्रुची**—शान्ति में सुवर्ण के तथा वश्य में यज्ञवृक्ष के स्रुवा एवं स्रुची बनाने चाहिये। स्तम्भनादि कार्यों में लोहे का प्रणीता, प्रोक्षणी, स्रुवा, स्रुची इत्यादि समस्त यज्ञपात्र बनाना चाहिये।

१८—**लेखनी**—शान्ति कर्म में सुवर्ण, चाँदी या चमेली की यन्त्र लेखनी बनानी चाहिये, वश्य में दूब की, स्तम्भन में अगस्त्य वृक्ष की या अमलतास की लेखनी का प्रयोग करना चाहिये, विद्वेषण में करञ्ज की लेखनी का प्रयोग करना चाहिये, उच्चाटन में बहेड़े की तथा मारण कार्य में मनुष्य की हड्डी की लेखनी का प्रयोग करना चहिये। शुभ कर्मों में साधक को शुभ मुहूर्त में यन्त्रादि लेखन करना चाहिये तथा अशुभ कार्यो को रिक्ता तिथि मङ्गलवार एवं विष्टि करण में करना चाहिये।

१९—**तर्पण एवं भक्ष्य वस्तुयें**—शान्ति एवं वश्य कर्म में हविष्यान्न, स्तम्भन में खीर, विद्वेषण में उर्द एवं मूँग, उच्चाटन में गेंहू तथा मारण में मान्त्रिक को मसूर एवं काली बकरी के दूध की खीर खानी चाहिये। शान्ति एवं वश्य में हल्दी मिला जल, स्तम्भन एवं मारण में मिर्च मिला गुनगुना जल तथा विद्वेषण एवं उच्चाटन में भेड़ का खून मिला हुआ जल तर्पण में प्रयोग करना चाहिये।

२०—**पात्र**—शान्ति एवं वश्य कर्म में सोने के पात्र में, स्तम्भन में मिट्टी के पात्र

में, विद्वेषण में खैर के पात्र में, उच्चाटन में लोहे के पात्र तथा मारण में मुर्गी के अण्डे में तर्पण करना चाहिये। इन पदार्थों की यथार्थ रूप से जानकारी षट्कर्मों में होने से इनके कार्य में सुविधा मिलती है।

२१—**सावधानियाँ**—शान्ति, वश्य, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन एवं मारण आदि कार्यों की विधियाँ सर्वत्र प्रकाशित हैं। विधिवत् न्यासादि करके आत्मरक्षा करने के बाद ही काम्य कर्मों को करना चाहिये, अन्यथा हानि तथा असफलता ही मिलती है।

विषयों में आसक्त चित्त वाले मनुष्यों के लिए प्राचीन आचार्यों ने विविध प्रकार के काम्य प्रयोग बतलाये हैं, परन्तु ये हितकर कभी नहीं होते है। इस लिए योग्य गुरु के ही निर्देश में इन कर्मों को सही अर्थ में जान करके ही प्रयोग करना चाहिये। काम्य कर्मों को विधिवत् सही सही करने पर केवल उतना ही फल मिलता है, जिसके लिये किया गया है। किन्तु यदि निष्काम उपासना के विधियों का आश्रय लेकर उपासना करने से आत्मिक विकास होता है और समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इस लिए मनुष्यों को चाहिये कि आसक्ति का परित्याग करके निष्काम भाव से उपासना करे।

२२—**निष्काम उपासना से ज्ञानप्राप्ति एवं मुक्ति**—वेदों में कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड एवं ज्ञानकाण्ड ये तीन काण्ड बतलाये गये हैं। इनमें प्रारम्भ में दो काण्ड साधन हैं तथा तृतीय ज्ञानकाण्ड ही साध्य है। इस लिये वेदोक्त शुभ विधियों से ही उपासना करनी चाहिये। उससे साधक का अन्त:करण शुद्ध हो जाता है और साधक को ज्ञान मिल जाता है, कार्य, कारण एवं भूतों के संघात रूपी शरीर में स्थित जीव ही परब्रह्म हैं। इसका बोध हो जाता है, यह जान कर साधक मुक्त हो जाता है। इस संसार में मनुष्य देह प्राप्त करके विधिवत् दीक्षादि ग्रहण करके देवताओं की उपासना कर जो इस संसार-बन्धन से मुक्त न हो, वह ही महापापी है, उसकी मुक्ति साधन में कभी प्रवृत्ति ही नहीं होती है, वह केवल महिष के समान उदर तथा इन्द्रियादि भोग में ही लिप्त रहता है, उसका उद्धार कभी नहीं होता है। इस लिए आसक्ति को छोड़कर देवोपासना आदि कर्मों से यथार्थ षट्कर्मों का सही प्रयोग करके कामक्रोधादि शत्रुओं का नाश करके आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए सत्पुरुषों को सदैव प्रयास करना चाहिये।

२३—**पुरश्चरण से पहिले भविष्य विचार**—देवोपासना करने वाले को सर्वप्रथम भविष्य का विचार करना चाहिये। स्नान एवं दानादि शुभ कर्मों को करने के बाद आत्मशुद्धि के लिये भगवान् विष्णु का ध्यानादि करके शुद्धासन पर सोना चाहिये तथा सर्वगुरु शिव से अधोलिखित प्रार्थना करनी चाहिये।

भगवन् देवदेवेश शूलभृद् वृषवाहन।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत:॥१॥
नमो अजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने।

नमो अजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः॥२॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरः॥३॥

इन मन्त्रों से भगवान् शिव की प्रार्थना करके निश्चिन्ततापूर्वक सोना चाहिये तथा प्रात:काल उठने पर रात्रि में देखा हुआ स्वप्न अपने गुरुदेव को बताना चाहिये, उनके न होने पर साधक को स्वयं विचार करना चाहिये।

२४—**शुभस्वप्न**—लिङ्ग, चन्द्र एवं सूर्य के बिम्ब, सरस्वती, गङ्गा, गुरु, रक्तसागर में तैरना, युद्ध में विजय, अग्नि का पूजन, मोर, हंस या चक्र वाले रथ पर बैठ कर भ्रमण करना या बैठना, सम्भोग, सारस पर बैठना, भूमिलाभ, प्रासाद, रथ, कमल, छत्र, कन्या, फल वाले वृक्ष, सर्प, दीपक, घोड़ा, पुष्प, वृक्ष, पर्वत, शराब, घड़ा, ग्रह, तारे, स्त्री, सूर्योदय एवं अप्सराओं को देखना, महल, पर्वत, एवं विमान में बैठना, आकाशयात्रा, मांस एवं शराब का खाना-पीना, शरीर पर विष्ठा लगाना, खून से नहाना, दही एवं चावल खाना, राज्याभिषेक होना, गौ, बैल, ध्वजा, सिंह एवं सिंहासन को देखना, शंख एवं वाद्यों, गोरोचन, दही, चन्दन एवं दर्पण इन सबका स्वप्न में दिखलाई देना शुभकारक होता है।

२५—**अशुभस्वप्न**—तेल एवं उबटन लगाये हुए, काला या नङ्गा व्यक्ति, गड्ढा, कौआ, सूखा एवं काँटेदार वृक्ष, चाण्डाल, बड़े कन्धे वाला मनुष्य और बगैर छत वाला महल या खण्डहर इनका स्वप्न में दिखाई देना अशुभ होता है।

२६—**दुःस्वप्न के बाद पुरश्चरण की रीति**—दुःस्वप्न दिखलाई पड़ने पर उनकी शान्ति अनिवार्य रूप से करनी चाहिये और कोशिश करके मन्त्र का परित्याग करना चाहिये। फिर भी यदि उस मन्त्र का पुरश्चरण करना ही चाहता हो, तो आत्मशान्ति करके एकाग्र मन से पुरश्चरण करना चाहिये। इस प्रकार जप करने से साधक को ३ वर्ष तक विघ्न-बाधाओं की सम्भावना रहती है। अत: विघ्न निवारण के उपायों को करते हुए तत्पर रहना चाहिये। सिद्धि का मन में पूर्ण विश्वास लेकर एकाग्र मन से निरन्तर जप करने वाला साधक चौथे वर्ष में अवश्य ही सिद्धि को प्राप्त करता है।

२७—**मन्त्र सिद्धि के लक्षण**—मन का प्रसन्न एवं सन्तुष्ट होना, दुन्दुभि, गीत एवं ताल का शब्द सुनना, गन्धर्वों को देखना, अपने तेज को सूर्य के समान देखना, निद्रा, क्षुधा एवं जप में आनन्द की अनुभूति होना, स्वस्थ एवं गम्भीर होना, क्रोध एवं लोभ का अभाव होना—मन्त्रवेत्ता साधक को जब ये चिह्न दिखई दे, तब मन्त्र की सिद्धि तथा देवता की प्रसन्नता जानना चाहिये।

२८—**मन्त्र सिद्धि के बाद कर्तव्य**—सिद्धि प्राप्त करने के बाद मन्त्रवेत्ता साधक

प्रतिपादित अयमात्मा ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि इस तत्त्वज्ञान का साक्षात् अनुभव कर व्यक्ति कृतार्थ हो जाता है तथा संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है।

प्रस्तुत विषयों का प्रतिपादन केवल एक पक्ष मात्र है, इन विषयों पर केवल सांकेतिक दिग्दर्शन मात्र ही किया गया है भविष्य में इन विषयों की सम्पूर्ण दिग्दर्शनात्मक जानकारियाँ लोककल्याण के लिए प्रस्तुत की जायेगी।

पुरश्चरण के बाद के कृत्य—किसी भी देवता के प्रीत्यर्थ पुरश्चरण करने के बाद भगवान् भूतभावनसदाशिव का अर्चनपूजन तथा जलाभिषेक अवश्य करना चाहिये।

विशेष बात—प्रत्यङ्गिरा महाविद्या का प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को सफल बनाने के लिए अवश्य ही करना चाहिये, इस घोर कलियुगीय वातावरण में यह महाविद्या सज्जनों की रक्षा करके सुखी बनाती है। इस पुस्तक में उल्लिखित समस्त सामग्री पूर्णरूप से विधियुक्त तथा प्रामाणिक है और इनका प्रयोग भी कई बार किया गया है, फिर भी बिना पूर्णरूप से विधियों को सीखे केवल पुस्तक के अधार पर ही कोई भी प्रयोग न करे, क्योंकि पुस्तकों में क्रियाओं के सैद्धान्तिक पक्ष ही उद्धृत होते हैं। क्रियात्मक पक्ष तो सामने बैठ कर सीखने से ही आता है, इसलिए किसी भी प्रयोग को पूर्णरूप से सीख करके ही प्रयोग करे। प्रयोगों को विधिपूर्वक सीखने के लिए इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क कर सकते हैं।

शिवं भवतु **रामप्रिय पाण्डेय**

॥ ॐ शान्तिः ॥ ॐ शान्तिः ॥ ॐ शान्तिः ॥

परिशिष्टभागः ९

॥ श्रीः॥

पूजनोपयोगीसामग्री

रोली—१०० ग्रा०
मौली—१ वण्डल बड़ारील
अबीर—१०० ग्रा०
बुक्का—१० ग्रा०
कपूर—१०० ग्रा०
लवङ्ग—२५ ग्रा०
इलायची—२५ ग्रा०
चावल खड़ा—५ कि०ग्रा०
रङ्ग (लाल, हरा, पीला, काला—१० ग्रा० प्रत्येक)
दियासलाई—१बण्डल
धूपबत्ती—५ बण्डल
यज्ञोपवीत—४० पीस
घी—३ कि०ग्रा०
शहद—१०० ग्रा०
चीनी—१०० ग्रा०
रुई—५० ग्रा०
इत्र—१० मि०ग्रा०
गुलाब जल—१०० मि०ग्रा०
पीली सरसों—१० ग्रा०
पञ्चरत्न—८ पुड़िया
सप्तमृत्तिका—८ पुड़िया
सर्वौषधी—८ पुड़िया
जौ—१०० ग्रा०
शतावरी—५० ग्रा०
सुपाड़ीबड़ी—१.५ कि०ग्रा०
पञ्चमेवा—५०० ग्रा०
गरिगोला—१ नग
नारियल—१२ नग
मेंहदी—१०० ग्रा०
हल्दी—१०० ग्रा०
कालीमिर्च—१०० ग्रा०
पाँच रङ्ग की ध्वजा—१ नग
लाल रङ्ग की ध्वजा—२ नग
हरे रङ्ग की ध्वजा—२ नग
काले रङ्ग की ध्वजा—२ नग
पीले रङ्ग की ध्वजा—२ नग
पलास का पत्तल—१० नग
कालाउर्द—५०० ग्रा०
तिल का तेल—५०० ग्रा०
सफेद कपड़ा—५ मी०
लाल कपड़ा—१ मी०
धोती सूती—१ नग
गमछा—१० नग

साड़ी-साया-ब्लाउज—१ सेट
सुहाग पिटारी—१ नग
कलश बड़ा मिट्टी का ढक्कन सहित—१ नग
कलश छोटा मिट्टी का ढक्कन सहित—७ नग
कसोरा—२५ नग
दीया—१०० नग
दोना—१०० नग
पूर्णपात्र—१ नग
चरुपात्र—१ नग
चौकी—२ नग
पाटा—३ नग
दूध—१०० ग्रा०
दही—१०० ग्रा०
पान का पत्ता—२५ पीस प्रतिदिन
फल—१ कि०ग्रा०
मीठा—१ कि०ग्रा०
माला—२५ नग
फूल—५०० ग्रा०
दूर्वा—१ मुट्ठा
तुलसी—१० नग
विल्वपत्र—५० नग
आम्रपल्लव—१० नग
कुशा—१०० नग
गोबर—१०० ग्रा०
गोमुत्र—१०० ग्रा०
हवन सामग्री—
काला तिल—५ कि०ग्रा०
सफेद तिल—१ कि०ग्रा०
पीला सरसों—१ कि०ग्रा०
राई—१ कि०ग्रा०
कमलगट्टा—१ कि०ग्रा०
गुगुल—१०० ग्रा०
लोहबान—१०० ग्रा०
सुगन्धवाला—१०० ग्रा०
लाल चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सफेद चन्दन का चूरा—१०० ग्रा०
सेंधा नमक चूरा—५०० ग्रा०
धान का लावा—१०० ग्रा०
पञ्चमेवा—१०० ग्रा०
धत्तुर फल का बीज—१०० ग्रा०
मदार का पत्ता—१०० नग
मदार की लकड़ी—१०८ नग
आम की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
बेर की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
लाल चिचिडी की लकड़ी—१० कि०ग्रा०
पीपल की लकड़ी—५ कि०ग्रा०
गाय की गोहरी—१०० नग
गुलर की लकड़ी—१००८ नग
पलास की लकड़ी—१००८ नग
वट की लकड़ी—१००८ नग

ब्रह्मास्त्रविद्या एवं बगलामुखी साधना। डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी
भूतडामरतन्त्रम्। श्री एस. एन. खण्डेलवालकृत हिन्दी टीका
भारतीय शक्ति-साधना। (शक्ति-विज्ञान : स्वरूप एवं सिद्धान्त)। डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'
Mahanirvanatantram. Sanskrit Text, Transliteration and English Translation with Copious Notes. Edited by M. N. Dutta
मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य। डॉ. शिवशङ्कर अवस्थी
महाकालसंहिता (कामकला कालीखण्ड)। 'ज्ञानवती' हिन्दीभाष्य सहित। प्रो. राधेश्याम चतुर्वेदी
महाकालसंहिता (गुह्यकालीखण्ड)। 'ज्ञानवती' हिन्दीभाष्यसहित। प्रो. राधेश्याम चतुर्वेदी। (1-5 भाग)
मन्त्रमहोदधि। 'नौका' संस्कृत टीका तथा 'अरित्र' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-डॉ. सुधाकर मालवीय
महानिर्वाणतन्त्र। हिन्दी टीका सहित। श्रीकपिल देव नारायण
मुद्राविज्ञान-साधना। डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी
राधातन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन.खण्डेलवाल
रुद्रयामलतन्त्र। हिन्दी टीका सहित। टीकाकार-डॉ. सुधाकर मालवीय
रेणुकातन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। श्रीकपिल देव नारायण
ललितासहस्रनाम। भास्करराय प्रणीत 'सौभाग्यभास्करभाष्य' एवं श्रीभारतभूषणकृत विस्तृत हिन्दी व्याख्या।
ललितोपाख्यानम्। (तन्त्र)। मूलमात्र
वर्णबीजप्रकाश। श्रीसरयूप्रसाद द्विवेदी। सम्पा.-डॉ. परमहंसमिश्र
वरिवस्यारहस्यम्। 'प्रकाश' संस्कृत एवं डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द' कृत हिन्दी टीका सहित।
विज्ञानभैरवः। श्रीबापूलाल आँजना विरचित कारिकानुवाद विवृतभागस्थ हिन्दी व्याख्या
बृहत्तन्त्रसारः। कृष्णानन्द आगमवागीशकृत। 'साधनात्मक' हिन्दीटीका सहित। श्रीकपिलदेव नारायण
श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् । 'साधनात्मक' हिन्दीटीका सहित। श्रीकपिलदेव नारायण (1-5 भाग सम्पूर्ण)
श्रीविद्यासपर्या पद्धति। ब्रह्मश्रीशङ्करामशास्त्री
श्रीविद्या-साधना। (श्रीविद्या का सर्वाङ्गपूर्ण शास्त्रीय विवेचन)। डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी
शारदातिलकम्। 'पदार्थादर्श' संस्कृत टीका एवं डॉ. सुधाकर मालवीयकृत हिन्दी-टीका सहित।
षट्चक्रनिरूपणम्। पूर्णानन्दयति। शिवोक्त पादुकापञ्चक सहित। श्रीभारतभूषणकृत हिन्दी व्याख्या सहित।
सप्तशतीसर्वस्वम्। नानाविधसप्तशतीरहस्यसंग्रहः। पं. सरयू प्रसाद द्विवेदी
सर्वोल्लासतन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। टीकाकार-श्री एस. एन. खण्डेलवाल।
सार्द्ध-नवचण्डि-पुरश्चरण। डा. रामप्रिय पाण्डेय
सिद्धनागार्जुनतन्त्रम्। श्री एस. एन. खण्डेलवाल कृत हिन्दी टीका सहित।
सौन्दर्यलहरी। 'लक्ष्मीधरी' संस्कृत एवं 'सरला' हिन्दी व्याख्या। सुधाकर मालवीय
स्पन्दकारिका। विस्तृत हिन्दी व्याख्या, तुलनात्मक अध्ययन एवं टिप्पणी सहित। डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी
Spandanirnaya (The Divine Vibration). Sanskrit with English Translation by Madhusudan Kaul.
स्वच्छन्दतन्त्रम्। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। प्रो. राधेश्याम चतुर्वेदी (1-2 भाग)
सिद्धसिद्धान्तपद्धति। हिन्दी अनुवाद सहित। स्वामी द्वारकादास शास्त्री।
The Doctrine of the Tantrayukti-s (Methodology of Ancient Indian Sciences) Dr. W. K. Lele

●

तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः

अन्नदाकल्पतन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन.खण्डेलवाल

अहिर्बुध्न्यसंहिता (श्रीपाञ्चरात्रागमान्तर्गता) 'सरला' हिन्दीटीकासहित। डॉ. सुधाकर मालवीय

आगमतत्त्वविलास। हिन्दी-टीका सहित। श्री एस. एन.खण्डेलवाल। (1-4 भाग सम्पूर्ण)

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृत्तिविमर्शिनी। अभिनवगुप्त। सम्पादक–मधुसूदनकौल शास्त्री (1-3 भाग)

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी। (ज्ञानाधिकार)। (प्रथम अधिकार के पाँचवे आह्निक की सप्तम कारिका से लेकर आह्निक के अन्त तक की 'लीला' हिन्दी व्याख्या। टीकाकार–डॉ. दयाशङ्कर शास्त्री

एकजटातारासाधनतन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन.खण्डेलवाल

Kamakala Vilasa : Text with 'Cidwalli' Sanskrit Commentary and English Translation, Notes etc. Dr. R. P. Dwivedi & Dr. S. Malaviya

कामकलाविलासः। चिद्वल्ल्या संवलितः। सरोजिनी हिन्दी व्याख्या सहित। डॉ. श्यामकान्त द्विवेदी 'आनन्द

कामाख्यातन्त्रम्। 'ज्ञानवती' हिन्दी टीका सहित। आचार्य राधेश्याम चतुर्वेदी

कुण्डलिनी शक्ति। (योग-तान्त्रिक साधना-प्रसङ्ग) श्री अरुणकुमार शर्मा

कुलार्णवतन्त्रम्। 'नीरक्षीरविवेक' हिन्दीटीका। डॉ. परमहंस मिश्र

गायत्री-मन्त्रार्थ भास्कर। भाषा टीका सहित। पं. यमुना प्रसाद द्विवेदी

गायत्रीमहातन्त्रम्। आचार्य राधेश्याम चतुर्वेदिप्रणीत। हिन्दीभाष्य विभूषित

तन्त्रविज्ञान और साधना। श्री सीताराम चतुर्वेदी

तन्त्रसारः। अभिनवगुप्तपादाचार्य विरचित। हिन्दीटीका सहित। (1-2 भाग)। डॉ. परमहंस मिश्र

तन्त्रराजतन्त्रम्। हिन्दी टीका सहित। श्रीकपिलदेव नारायण

तन्त्रसारसङ्ग्रहः। नारायण विरचित। सव्याख्या। आंग्ल एवं संस्कृत भूमिका सहित।

तन्त्रालोक। अभिनवगुप्तपादाचार्य। जयरथकृत'विवेक' टीका एवं पं. राधेश्याम चतुर्वेदीकृत हिन्दीटीका

त्रिपुरारहस्यम्। डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्रकृतहिन्दी अनुवाद सहित। ज्ञानखण्ड एवं महात्म्यखण्ड

त्रिपुरार्णवतन्त्रम्। (उपासनाखण्ड) हिन्दीटीका सहित। डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र

दक्षिणकालिकासपर्यापद्धतिः। डा. रामप्रिय पाण्डेय

दुर्गासप्तशती। दुर्गाप्रदीप-गुप्तवती-चतुर्धरी-शान्तनवी-नागोजीभट्टी-जगच्चन्द्रिका-दंशोद्धार नामक सप्तटीकायुक्त।

दुर्गासप्तशती। मूलमात्र। नव-शत-सहस्रचण्डी-पल्लवयोजनाविधि-कवचअर्गला-कीलक-कुञ्जिकास्तोत्र सहित।

दुर्गासप्तशती। प. रामतेज पाण्डेय शास्त्रीकृत हिन्दी व्याख्या सहित। सम्पादक–डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

देवीरहस्यम्। (परिशिष्ट सहित) श्रीरुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत हिन्दीटीका सहित। श्री कपिलदेव नारायण

नीलसरस्वतीतन्त्रम्। श्री एस. एन. खण्डेवालकृत हिन्दी टीका।

नित्याषोडशिकार्णवः। संस्कृत एवं हिन्दी-टीका सहित। श्री एस.एन. खण्डेलवाल

नित्योत्सव। हिन्दी-टीका सहित। श्रीपरमहंस मिश्र

नेत्रतन्त्रम्। क्षेमराजकृत 'नेत्रोद्योत' संस्कृत एवं श्रीराधेश्याम चतुर्वेदीकृत 'ज्ञानवती' हिन्दीटीका सहित

परलोकविज्ञान। श्री अरुणकुमार शर्मा

प्राणतोषिणी। मूलमात्र। श्रीरामतोषण भट्टाचार्य।

पुरश्चर्यार्णवः। श्रीनेपालमहाराजाधिराज प्रतापसिंह साहदेवविरचित। सम्पादक–म. म. मुरलीधर झा

प्रपञ्चसारसारसंग्रहः। गीर्वाणेन्द्रसरस्वतीविरचित। के. एस. सुब्रह्मण्यशास्त्री सम्पादित।